सत्यमेव जयते

पद्म पुरस्कार 2026
Padma Awards 2026

मई 25, 2026
May 25, 2026

राष्ट्रपति भवन
Rashtrapati Bhawan

नई दिल्ली
New Delhi

सम्मान प्राप्तकर्ताओं की सूची
List of Recipients

पद्म विभूषण
Padma Vibhushan

SHRI DHARMENDRA SINGH DEOL (POSTHUMOUS) **1**
श्री धर्मेन्द्र सिंह देओल (मरणोपरांत)

DR. (SMT.) N. RAJAM **2**
डॉ. (श्रीमती) एन. राजम्

पद्म भूषण
Padma Bhushan

SHATAVADHANI DR. R. GANESH **3**
शतावधानी डॉ. आर. गणेश

SHRI BHAGAT SINGH KOSHYARI **4**
श्री भगत सिंह कोश्यारी

SHRI UDAY SURESHKUMAR KOTAK **5**
श्री उदय सुरेशकुमार कोटक

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA (POSTHUMOUS) **6**
प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा (मरणोपरांत)

DR. KALLIPATTI RAMASAMY PALANISWAMY **7**
डॉ. कल्लिपट्टि रामासामी पलनिस्वामी

SHRI PIYUSH PANDEY (POSTHUMOUS) **8**
श्री पियूष पान्डेय (मरणोपरांत)

पद्म श्री

Padma Shri

SHRI BISHWA BANDHU (POSTHUMOUS) 9

श्री विश्वबन्धु (मरणोपरांत)

SHRI BHARAT SINGH BHARTI 10

श्री भरत सिंह भारती

SHRI TAGA RAM BHEEL 11

श्री तगा राम भील

MS. HARMANPREET KAUR BHULLAR 12

सुश्री हरमनप्रीत कौर भुल्लर

SHRI RATILAL MOHANLAL BORISAGAR 13

श्री रतिलाल मोहनलाल बोरीसागर

SHRI KUMAR BOSE 14

श्री कुमार बोस

SHRI JANARDAN BAPURAO BOTHE 15

श्री जनार्दन बापूराव बोथे

SWAMI BRAHAMDEV 16

स्वामी ब्रह्मदेव

SHRI PROSENJIT CHATTERJEE 17

श्री प्रोसेनजीत चटर्जी

SMT. DEVAKI AMMA G 18

श्रीमती देवकी अम्मा जी

DR. RAMCHANDRA GODBOLE 19
डॉ. रामचंद्र गोडबोले

SMT. SUNEETA GODBOLE 20
श्रीमती सुनीता गोडबोले

SHRI TECHI GUBIN 21
श्री तेची गुबिन

DR. H. V. HANDE 22
डॉ. एच. वी. हण्डे

SHRI GAFRUDDIN MEWATI JOGI 23
श्री गफरूद्दीन मेवाती जोगी

SHRI MIR HAJI KASAM 24
श्री मीर हाजी कासम

SHRI RAGHUVIR KHEDKAR 25
श्री रघुवीर खेडकर

SHRI R. KRISHNAN KITNA (POSTHUMOUS) 26
श्री आर. कृष्णन किटना (मरणोपरांत)

PROF. DR. LARS-CHRISTIAN KOCH 27
प्रो. डॉ. लार्स–क्रिश्चियन कोच

PROF. MAMIDALA JAGADESH KUMAR 28
प्रो. मामिडाला जगदीश कुमार

SHRI PRAVEEN KUMAR 29
श्री प्रवीण कुमार

SHRI K. VIJAY KUMAR 30
श्री के. विजय कुमार

SHRI SHRIRANG DEVBA LAD 31
श्री श्रीरंग देवबा लाड

SHRI ANKEGOWDA M 32
श्री अंकेगौड़ा एम

PROFESSOR (DR.) SAROJ MANDAL 33
प्रोफेसर (डॉ.) सरोज मंडल

PROF. BUDDHA RASHMI MANI 34
प्रो. बुद्ध रश्मि मणि

SHRI NILESH VINODCHANDRA MANDLEWALA 35
श्री निलेश विनोदचंद्र मांडलेवाला

DR. MAHENDRA KUMAR MISHRA 36
डॉ. महेन्द्र कुमार मिश्र

SMT. TRIPTI MUKHERJEE 37
श्रीमती तृप्ति मुखर्जी

SHRI HARIMADHAB MUKHOPADHYAY (POSTHUMOUS) 38
श्री हरिमाधब मुखोपाध्याय (मरणोपरांत)

DR. A. E. MUTHUNAYAGAM* 39
डॉ. ए. ई. मुथुनायगम *

SHRI SATYANARAYAN NANDLAL NUWAL 40
श्री सत्यनारायण नंदलाल नुवाल

SHRI K. PAJANIVEL 41
श्री के. पजानिवेल

SHRI DHARMIKLAL CHUNILAL PANDYA 42
श्री धार्मिकलाल चुनीलाल पंडया

SHRI KAILASH CHANDRA PANT 43
श्री कैलाश चन्द्र पन्त

SHRI GARIMELLA BALAKRISHNA PRASAD (POSTHUMOUS) 44
श्री गरिमेल्ला बालकृष्ण प्रसाद (मरणोपरांत)

PROF. (DR.) RAJENDRA PRASAD 45
प्रो. (डॉ.) राजेंद्र प्रसाद

DR. GUDURU VENKAT RAO 46
डॉ. गुडुरु वेंकट राव

SMT. DEEPIKA REDDY 47
श्रीमती दीपिका रेड्डी

DR. PALKONDA VIJAY ANAND REDDY 48
डॉ. पलकोंडा विजय आनंद रेड्डी

SHRI HARICHARAN SAIKIA 49
श्री हरिचरण शइकीया

PROF. VEMPATY KUTUMBA SASTRY 50
प्रो. वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री

PROF. SHAFI SHAUQ 51
प्रो. शफी शौक़

SHRI BALDEV SINGH 52
श्री बलदेव सिंह

SHRI YUMNAM JATRA SINGH (POSTHUMOUS) 53
श्री युमनाम जात्रा सिंह (मरणोपरांत)

DR. ASHOK KUMAR SINGH 54
डॉ. अशोक कुमार सिंह

SMT. SIVASANKARI 55
श्रीमती शिवशंकरी

DR. R. SREEDHER 56
डॉ. आर. श्रीधर

PROF. SHYAM SUNDAR 57
प्रो. श्याम सुन्दर

DR. S. G. SUSHEELAMMA 58
डॉ. एस. जी. सुशीलम्मा

SHRI N. SWAMINATHAN 59
श्री एन. स्वामिनादन

DR. KEWAL KRISHAN THAKRAL 60
डॉ. केवल कृष्ण ठकराल

DR. GOPAL JI TRIVEDI (POSTHUMOUS) 61
डॉ. गोपाल जी त्रिवेदी (मरणोपरांत)

SHRI ARVIND VAIDYA 62
श्री अरविंद वैद्य

PROF. JUZER VASI 63
प्रो. जुज़र वासी

DR. NARAYAN VYAS 64
डॉ. नारायण व्यास

SHRI HALLY WAR 65
श्री हैली वार

PROF. GAMBIR SINGH YONZONE 66
प्रो. गम्बीर सिंह योन्जन

Note : *Not present in the Investiture ceremony
*सम्मान समारोह मे उपस्थित नही

SHRI DHARMENDRA SINGH DEOL (POSTHUMOUS)

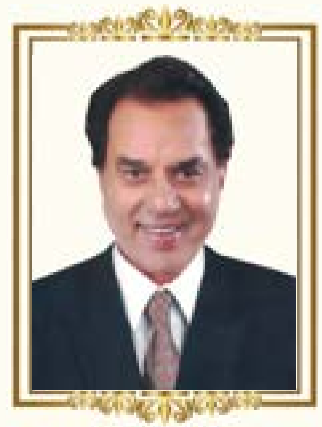

Shri Dharmendra Singh Deol was a legendary icon of Indian cinema and a former Member of Parliament. He is celebrated as one of the most versatile and commercially successful actors in the history of the Hindi film industry. Popularly known as the "He-Man" of Bollywood, he has enjoyed a prolific career spanning over six decades, starring in more than 300 films and holding the record for the highest number of hit films in Hindi cinema. His exceptional contribution to the arts has not only shaped mainstream Bollywood but has also left an indelible mark on the cultural fabric of India.

2. Born on 8th December, 1939, in Nasrali, Punjab, Shri Dharmendra's journey from humble roots to superstardom began after being noticed in a Filmfare talent contest. He made his debut in 1960 with 'Dil Bhi Tera Hum Bhi Tere' and rose to prominence with critically acclaimed performances in films like Bandini (1963) and Satyakam (1969), the latter of which brought him widespread praise for his portrayal of an idealist. His role as 'Veeru' in the 1975 blockbuster Sholay remains a milestone in Indian cinema, a film that became an integral part of popular culture and held the record for the highest-grossing Hindi film for nearly two decades.

3. Beyond his cinematic achievements, Shri Dharmendra served as a Member of Parliament in the 14th Lok Sabha, representing the Bikaner constituency in Rajasthan from 2004 to 2009. During his tenure, he was known for his emotional bond with his constituents and his dedication to local issues such as cleaning public spaces, renovating infrastructure, and supporting farmers' rights. He also established Vijayta Films in 1983, a production house that launched the careers of his sons and produced the National Award-winning film Ghayal. His enduring legacy is further reflected in his spontaneous poetry, which he used to express deep reflections on life and human experience.

4. Shri Dharmendra is the recipient of numerous prestigious awards and honours for his lifelong dedication to the arts. He was conferred with the Filmfare Lifetime Achievement Award in 1997 for his immense contributions to Bollywood. In 2012, the Government of India honored him with the Padma Bhushan, the country's third-highest civilian award.

5. Shri Dharmendra passed away on 24th November, 2025.

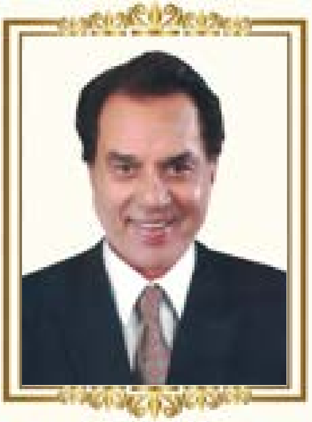

श्री धर्मेन्द्र सिंह देओल (मरणोपरांत)

श्री धर्मेन्द्र सिंह देओल भारतीय सिनेमा के एक महान व्यक्तित्व और पूर्व सांसद थे। उन्हें हिंदी फिल्म उद्योग के इतिहास में सबसे बहुमुखी और व्यावसायिक रूप से सफल अभिनेताओं में से एक के रूप में जाना जाता है। वह बॉलीवुड के "ही–मैन" के रूप में लोकप्रिय थे और उनका छह दशक से अधिक का शानदार करियर रहा है। उन्होंने 300 से अधिक फिल्मों में अभिनय किया है और हिंदी सिनेमा में सबसे अधिक हिट फिल्मों का रिकॉर्ड बनाया है। कला में उनके असाधारण योगदान ने न केवल मुख्यधारा के बॉलीवुड को बढ़ाया है, बल्कि भारत के सांस्कृतिक ताने–बाने पर भी अमिट छाप छोड़ी है।

2. 8 दिसंबर, 1939 को पंजाब के नसराली में जन्मे श्री धर्मेन्द्र का साधारण परिवार से निकलकर सुपरस्टारडम तक का सफर फिल्मफेयर प्रतिभा प्रतियोगिता में देखे जाने के बाद शुरू हुआ। उन्होंने 1960 में 'दिल भी तेरा हम भी तेरे' के साथ अपनी शुरुआत की और बंदिनी (1963) और सत्यकाम (1969) जैसी फिल्मों में प्रशंसित प्रदर्शन के साथ प्रमुखता से उभरे। सत्यकाम (1969) ने उन्हें एक आदर्शवादी व्यक्ति के चित्रण हेतु व्यापक प्रशंसा दिलाई। वर्ष 1975 की ब्लॉकबस्टर शोले में 'वीरू' के रूप में उनकी भूमिका भारतीय सिनेमा में मील का पत्थर बनी हुई है, यह एक ऐसी फिल्म थी जो लोकप्रिय संस्कृति का एक अभिन्न अंग बन गई और लगभग दो दशक तक सबसे ज्यादा कमाई करने वाली हिंदी फिल्म का रिकॉर्ड बनाया।

3. अपनी सिनेमाई उपलब्धियों के अलावा, श्री धर्मेन्द्र ने वर्ष 2004 से 2009 तक राजस्थान के बीकानेर निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हुए 14वीं लोक सभा में संसद सदस्य के रूप में कार्य किया। अपने कार्यकाल के दौरान, उन्हें अपने निर्वाचन क्षेत्रों के साथ भावनात्मक संबंध और सार्वजनिक स्थानों की सफाई, बुनियादी ढांचे के नवीकरण और किसानों के अधिकारों का समर्थन करने जैसे स्थानीय मुद्दों के प्रति उनके समर्पण के लिए जाना जाता था। उन्होंने 1983 में विजेता फिल्म्स प्रोडक्शन हाउस की भी स्थापना की, जिसने उनके बेटों के करियर की शुरुआत की और राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्म घायल का निर्माण किया। उनकी स्थायी विरासत उनकी सहज कविताओं में परिलक्षित होती है, जिसका प्रयोग उन्होंने जीवन और मानवीय अनुभव पर गहरे चिंतन व्यक्त करने के लिए किया था।

4. श्री धर्मेन्द्र ने कला के प्रति अपने आजीवन समर्पण के लिए कई प्रतिष्ठित पुरस्कार और सम्मान प्राप्त किए हैं। बॉलीवुड में उनके अपार योगदान के लिए उन्हें 1997 में फिल्मफेयर लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया था। वर्ष 2012 में, भारत सरकार ने उन्हें देश के तीसरे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म भूषण से सम्मानित किया।

5. श्री धर्मेन्द्र का 24 नवंबर, 2025 को निधन हो गया।

DR. (SMT.) N. RAJAM

Dr. (Smt.) N. Rajam is a violin virtuoso among the finest and most distinguished artists in the field of music. Her deft fingers coax enchanting melodies from the tuneful strings of the violin. She pioneered a revolutionary approach to classical music by introducing the "Gayaki Ang"—a technique that renders the vocal style of music on the violin—earning her global renown as the "Singing Violin."

2. Born on 16^{th} March, 1939 in Ernakulam in a family stepped in musical tradition, Dr. Rajam embarked on her violin journey at the tender age of three under the tutelage of her father, Shri Vidwan A. Narayana Iyer, a distinguished exponent of Carnatic music. She further enriched her musical foundation by learning from the legendary vocalist Vidwan Musiri Subramania lyer. She mastered the Carnatic style at a remarkably young age before venturing into the Hindustani idiom. lt was under the tutelage of the inimitable doyen Pandit Omkarnath Thakur, she absorbed the intricacies of Hindustani music. At the age of fifteen, she made a revolutionary entry into North Indian classical music by adapting the Western violin to express the Hindustani vocal style, introducing the "Khayal Gayaki Ang" with such consummate artistry that it left musicians and violinists across the nation spellbound. Her legendary duets with Ustad Bismillah Khan, T.N. Krishnan, and N. Ramani were immensely popular with audiences and remain cherished in the annals of Indian classical music.

3. Beyond her illustrious performing career, Dr. Rajam served with distinction as a Professor in the Faculty of Performing Arts at Banaras Hindu University (BHU) for nearly four decades. She rose to become the Head of the Department and subsequently the Dean of the Faculty, earning the prestigious title of "Emeritus Professor" by BHU in recognition of her exceptional contributions to music and music education. She has nurtured numerous distinguished disciples, including her daughter Sangeeta Shankar (a Sangeet Natak Akademi Award winner) and many other accomplished musicians who carry forward her legacy.

4. Dr. Rajam has performed extensively across the globe, captivating audiences in numerous countries including the United States of America, Canada, Russia, France, Italy, Germany, Holland, Switzerland, the Netherlands, New Zealand, Australia, and throughout Europe. Her concerts have graced the most prestigious music festivals worldwide, where her "Singing Violin" has mesmerized listeners. Professional violinists from across the world regularly seek her guidance to refine and elevate their craft. Her extraordinary technique, which enables the violin to express the full spectrum of vocal articulations in Hindustani classical music, remains unparalleled and continues to inspire musicians across continents.

5. Dr. Rajam has been the recipient of numerous prestigious awards and honours. She has been conferred with Padma Shri in 1984, Padma Bhushan in 2004, Sangeet Natak Akademi Award in 1990 in recognition of her exceptional contributions to Hindustani music. In 2012, she was bestowed with the Sangeet Natak Akademi Fellowship, the highest honour in the performing arts conferred by India's National Academy for Music, Dance and Drama. Among her many other accolades are the Puttaraja Sanmaana in 2004, the Bhimsen Joshi Lifetime Achievement Award, and numerous honours from state governments and cultural organizations.

डॉ. (श्रीमती) एन. राजम्

डॉ. (श्रीमती) एन. राजम् संगीत के क्षेत्र में बेहतरीन और सबसे प्रतिष्ठित कलाकारों में से एक वायलिन कलाविज्ञ हैं। उनकी उँगलियाँ वायलिन के तारों को छूते ही समाँ बाँध देती हैं। उन्होंने वायलिन पर संगीत की गायन शैली प्रस्तुत करने की "गायकी अंग" नामक तकनीक की शुरुआत कर शास्त्रीय संगीत को एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण प्रदान किया जिससे वे विश्वभर में "सिंगिंग वायलिन" के नाम से प्रसिद्ध हुईं।

2. 16 मार्च, 1939 को एर्नाकुलम के संगीत परंपरा के एक परिवार में जन्मी, डॉ. राजम् ने कर्नाटक संगीत के एक प्रतिष्ठित प्रतिपादक अपने पिता, श्री विदवान ए. नारायण अय्यर के संरक्षण में तीन साल की उम्र में अपनी वायलिन यात्रा शुरू की। उन्होंने प्रसिद्ध गायक विदवान मुसिरी सुब्रमण्यम अय्यर से विद्या ग्रहण कर संगीत की अपनी नींव को और समृद्ध किया। हिंदुस्तानी शैली में कदम रखने से पहले उन्होंने काफी कम उम्र में ही कर्नाटक शैली में महारत हासिल कर ली। दिग्गज पंडित ओंकारनाथ ठाकुर के संरक्षण में रहकर उन्होंने हिंदुस्तानी संगीत की जटिलताओं को समझा। पंद्रह साल की उम्र में, उन्होंने पश्चिमी वायलिन को हिंदुस्तानी गायन शैली में ढालकर उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में क्रांतिकारी प्रवेश किया और "ख्याल गायकी अंग" को इतनी उत्कृष्ट कलात्मकता के साथ पेश किया, जिसने देश भर के संगीतकारों और वायलिन वादकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उस्ताद बिस्मिल्लाह खान, टी. एनकृष्णन और एन. रमानी के साथ उनकी प्रसिद्ध जुगलबंदी दर्शकों के बीच बेहद लोकप्रिय थी और उन्हें आज भी भारतीय शास्त्रीय संगीत के इतिहास में याद किया जाता है।

3. अपने शानदार अभिनय करियर के अतिरिक्त, डॉ. राजम् ने लगभग चार दशकों तक बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के प्रदर्शन कला संकाय में प्रोफेसर के रूप में उत्कृष्ट कार्य किया। वे विभाग की प्रमुख बनीं और बाद में संकाय की डीन बनीं। इसके साथ उन्हें संगीत और संगीत शिक्षा में असाधारण योगदान के लिए बीएचयू द्वारा "एमेरिटस प्रोफेसर" की प्रतिष्ठित उपाधि प्रदान की गई। उन्होंने कई प्रतिष्ठित हस्तियों को विद्या प्रदान की, जिनमें उनकी बेटी संगीता शंकर (संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार विजेता) और कई अन्य कुशल संगीतकार शामिल हैं, जिन्होंने उनकी विरासत को आगे बढ़ाया।

4. डॉ. राजम् ने संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, रूस, फ्रांस, इटली, जर्मनी, हॉलैंड, स्विट्जरलैंड, नीदरलैंड, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया और सम्पूर्ण यूरोप सहित कई देशों में दर्शकों को मनमोहित करते हुए दुनिया भर में बड़े पैमाने पर प्रदर्शन किया। उनके संगीत समारोहों ने दुनिया भर के सबसे प्रतिष्ठित संगीत समारोहों की शोभा बढ़ाई, जहां उनके "सिंगिंग वायलिन" ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। दुनिया भर के पेशेवर वायलिन वादक अपनी कला को निखारने और उन्नत करने के लिए नियमित रूप से उनका मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं। वायलिन जैसे वाद्ययंत्र को हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की मुखर अभिव्यक्ति का माध्यम बनाने की उनकी असाधारण तकनीक आज भी अद्वितीय है जो विश्वभर के संगीतकारों को प्रेरित करती है।

5. डॉ. राजम् को कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। हिंदुस्तानी संगीत में उनके असाधारण योगदान के लिए उन्हें वर्ष 1984 में पद्म श्री, वर्ष 2004 में पद्म भूषण, वर्ष 1990 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्ष 2012 में उन्हें संगीत, नृत्य और नाटक के क्षेत्र में भारत की राष्ट्रीय अकादमी द्वारा प्रदर्शन कला के सर्वोच्च सम्मान, संगीत नाटक अकादमी फेलोशिप से सम्मानित किया गया। वर्ष 2004 में पुट्टराज सम्मान, भीमसेन जोशी लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड और राज्य सरकारों और सांस्कृतिक संगठनों द्वारा भी उन्हें सम्मानित किया गया।

SHATAVADHANI DR. R. GANESH

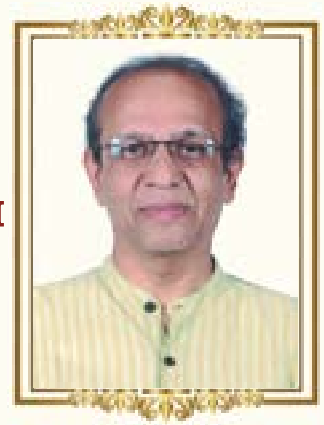

Shatavadhani Dr. R. Ganesh is a master of *Avadhana*, a classical art form unique to India, which involves solving a variety of poetic challenges with verses composed extempore, without any aids like pen and paper. It tests creativity and scholarship to the extreme and exhibits the performer's ability to multitask and think laterally. Credited with reviving the art form in Kannada, he has performed more than 1,300 *Ashatavadhanas* and 5 *Shatavadhanas* till date, primarily in Kannada and Sanskrit. He has performed in all formats of the art, introduced several novel components and inspired a crop of young performers to keep alive this ancient art form.

2. Born on 4th December, 1962, in Kolar, Karnataka, Dr. R. Ganesh holds a bachelor's degree in Mechanical Engineering, a master's degree each in Materials Science and Metallurgy and Sanskrit and a D.Litt. in Kannada. He is a polymath specializing in poetics, prosody, literature, philosophy and classical arts, and has a nuanced understanding of the Indian cultural heritage. Kannada, Sanskrit, Prakrit, Pali, Telugu, Tamil, Hindi, Greek, Latin and Italian are among the languages he knows. He has taught and worked at prestigious institutions such as NIMHANS, IGNCA and Bharatiya Vidya Bhavan.

3. Apart from enriching literature, Dr. R. Ganesh has made a lasting contribution to the fields of music, dance and theatre. He has conceptualized novel art forms such as (1) *Kavya-Chitra-Gita-Nrtya,* a confluence of poetry, painting, music and dance and (2) *Ekavyakti-Yakshagana*, a genre of solo classical dance having its roots in *Yakshagana*, a traditional theatrical art form of Karnataka. He has given a sound aesthetic framework to such aspects of the art as costumes, movements, themes and music. He has similarly conceived *Ekavyakti-Talamaddale,* a verbal art form in which an artist puts on the role of a character and presents various episodes as soliloquies. Some of these have been performed over a thousand times in India and abroad. He has reconstructed the *Purvaranga* of *Natyashastra* and directed the production of Sanskrit plays on this basis. Further, he has introduced the concept of *Ashta-nayakas* to traditional dance and theatre and conceptualized a programme to sensitize the laity on classical Indian music.

4. Dr. R. Ganesh is also a prolific author, having more than seventy books to his credit. He has written poems, plays, monographs, biographies, literary essays, analytical papers and scholarly treatises in Kannada, Sanskrit and English. Aside from authoring independent works, he has edited and translated several books. A much-sought-after speaker, he discourses on various aspects of the Indian cultural heritage. More than 15,000 hours of his lectures in Kannada are available online. In addition to delivering public talks, he conducts several study circles with a small group of serious-minded people. In these sessions, he discusses a variety of texts—both ancient and modern—in detail. Through his original findings, he has contributed significantly to literary aesthetics and prosody.

5. Dr. R. Ganesh has been conferred numerous awards and honours which include: Honorary Doctorate by Central Sanskrit University, New Delhi; Rajyotsava Award by Government of Karnataka; Sahitya Akademi Translation Award and Maharshi Badrayan Vyas Samman by the President of India.

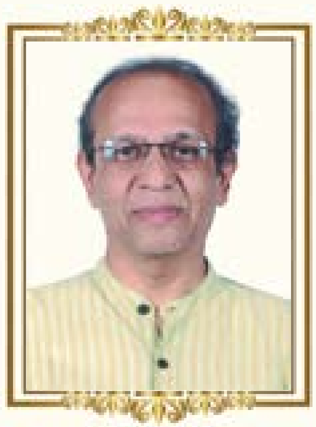

शतावधानी डॉ. आर. गणेश

शतावधानी डॉ. आर. गणेश भारत की अनूठी शास्त्रीय कला अवधान के विशेषज्ञ हैं, जिसमें कलम और कागज जैसी किसी भी सहायता के बिना, तात्कालिक छंदों के साथ विभिन्न काव्यात्मक चुनौतियों को हल करना शामिल है। यह चरम स्तर पर रचनात्मकता और विद्वता को परखता है और कलाकार की बहुविध कार्य करने और बाद में सोचने की क्षमता को प्रदर्शित करता है। कन्नड़ में कला के इस रूप को पुनर्जीवित करने के श्रेय के साथ, उन्होंने मुख्य रूप से कन्नड़ और संस्कृत में अब तक 1,300 से अधिक अष्टावधान और 5 शतावधान का प्रदर्शन किया है। उन्होंने कला के सभी प्ररूपों में प्रदर्शन किया है, कई उपन्यास घटकों को प्रस्तुत किया है और युवा कलाकारों को इस प्राचीन कला रूप को जीवित रखने के लिए प्रेरित किया है।

2. 4 दिसंबर, 1962 को कर्नाटक के कोलार में जन्मे डॉ. आर. गणेश के पास मैकेनिकल इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री, सामग्री विज्ञान और धातुकर्म विज्ञान और संस्कृत में मास्टर डिग्री और कन्नड़ में डी.लिट है। वह काव्यशास्त्र, छंदशास्त्र, साहित्य, दर्शन और शास्त्रीय कलाओं में विशेषज्ञता रखने वाले बहुश्रुत व्यक्ति हैं, और उन्हें भारतीय सांस्कृतिक विरासत की सूक्ष्म समझ है। वह कन्नड़, संस्कृत, प्राकृत, पाली, तेलुगु, तमिल, हिंदी, ग्रीक, लैटिन और इतालवी भाषाओं के जानकार हैं। उन्होंने निमहांस, आईजीएनसीए और भारतीय विद्या भवन जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में पढ़ाया और कार्य किया है।

3. डॉ. आर. गणेश ने साहित्य को समृद्ध करने के अलावा, संगीत, नृत्य और रंगमंच के क्षेत्र में एक स्थायी योगदान दिया है। उन्होंने (1) कविता, चित्रकला, संगीत और नृत्य का संगम काव्य–चित्र–गीता–नृत्य, और (2) एकल शास्त्रीय नृत्य की एक शैली एकव्यक्ति–यक्षगान जिसकी जड़ें यक्षगान में हैं, जो कर्नाटक का एक पारंपरिक नाट्य कला रूप है जैसे कला के नवीन रूपों की संकल्पना की है। उन्होंने कला के ऐसे पहलुओं जैसे वेशभूषा, गतियों, विषयों और संगीत को एक ठोस सौंदर्य ढांचा दिया है। उन्होंने इसी तरह एकव्यक्ति–तालमद्दले की कल्पना की है, जो एक मौखिक कला है जिसमें एक कलाकार एक चरित्र की भूमिका निभाता है और विभिन्न प्रसंगों को स्वगत के रूप में प्रस्तुत करता है। इनमें से कुछ का प्रदर्शन भारत और विदेशों में एक हजार से अधिक बार किया गया है। उन्होंने नाट्यशास्त्र के पूर्वरंग का पुनर्निर्माण किया है और इसी आधार पर संस्कृत नाटकों के निर्माण का निर्देशन किया है। इसके अलावा, उन्होंने अष्ट–नायकों की अवधारणा को पारंपरिक नृत्य और रंगमंच से परिचित कराया है और शास्त्रीय भारतीय संगीत पर आम लोगों को संवेदनशील बनाने के लिए एक कार्यक्रम की अवधारणा तैयार की है।

4. डॉ. आर. गणेश कलम के धनी भी हैं और उन्होंने सत्तर से अधिक पुस्तकें लिखी हैं। उन्होंने कन्नड़, संस्कृत और अंग्रेजी में कविताएं, नाटक, मोनोग्राफ, जीवनी, साहित्यिक निबंध, विश्लेषणात्मक पत्र और विद्वतापूर्ण लेख लिखे हैं। स्वतंत्र कार्यों के लेखन के अलावा, उन्होंने कई पुस्तकों का संपादन और अनुवाद किया है। एक लोकप्रिय वक्ता के रूप में, वह भारतीय सांस्कृतिक विरासत के विभिन्न पहलुओं पर व्याख्यान देते हैं। कन्नड़ में उनके 15,000 घंटे से अधिक व्याख्यान ऑनलाइन उपलब्ध हैं। सार्वजनिक भाषण देने के अलावा, वह गंभीर सोच वाले लोगों के एक छोटे समूह के साथ कई अध्ययन मंडलियों का संचालन करते है। इन सत्रों में, वह प्राचीन और आधुनिक दोनों तरह के विभिन्न ग्रंथों पर विस्तार से चर्चा करते हैं। अपने मूल निष्कर्षों के माध्यम से, उन्होंने साहित्यिक सौंदर्यशास्त्र और छंदशास्त्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

5. डॉ. आर. गणेश को कई पुरस्कार और सम्मान से सम्मानित किया गया है जिनमें केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा मानद डॉक्टरेट; कर्नाटक सरकार द्वारा राज्योत्सव पुरस्कार और भारत के राष्ट्रपति द्वारा साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार और महर्षि बदरायण व्यास सम्मान शामिल हैं।

SHRI BHAGAT SINGH KOSHYARI

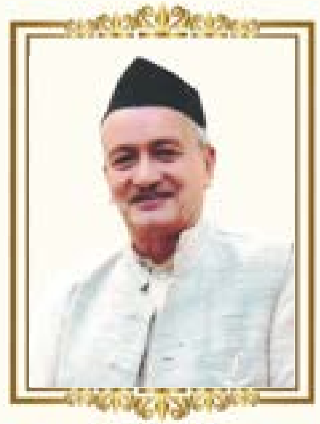

Shri Bhagat Singh Koshyari, fondly known as *'Bhagat Da'* in the State of Uttarakhand, is a distinguished social worker, educationist, journalist, and devoted nationalist leader, who has dedicated his life to public service and the upliftment of the poor and marginalised sections of society. A committed Swayamsevak of the RSS, he is known for his simplicity, discipline, and deep love for learning.

2. Born on 17th June, 1942 in the hilly terrain remote village of Palanadhura in Bageshwar district, Uttarakhand, Shri Koshyari, despite his rural background pursued higher education with determination and completed his postgraduate degree in English Literature in 1964 from Almora College, affiliated with Agra University. He began his professional career as a Lecturer in Raja Ka Rampur (Etah, Uttar Pradesh) during 1964-1965. However, inspired by the vision of nation-building through education, he devoted himself entirely to academic and social service from 1965 onwards.

3. Shri Koshyari started teaching at Saraswati Shishu Mandir, Kasganj (Uttar Pradesh) where he worked to impart Bharatiya values along with modern education to young children. In 1966, he founded 'Saraswati Shishu Mandir' in Pithoragarh, a border district of Uttarakhand, thereby strengthening educational opportunities in remote areas. He also played an important role in establishing Vivekanand Inter College in Pithoragarh and remained actively associated with Saraswati Vihar, Nainital. He served as the Vibhag Karyawah of the RSS for several years and later became the Secretary of the Uttaranchal Utthan Parishad, an organization devoted to the development of primary and secondary education in Uttarakhand for decades. From 1979 to 1990, he was a member of the Executive Council of Kumaon University, contributing significantly to educational policy and institutional growth. He also initiated the publication of the Hindi weekly "Parvat Piyush" from Pithoragarh to promote awareness and social consciousness. During the National Emergency, he was arrested under the Maintenance of Internal Security Act (MISA), reflecting his active involvement in public life.

4. In 1997, Shri Koshyari was nominated to the Uttar Pradesh Legislative Council. After the formation of Uttarakhand in November, 2000, he became a Cabinet Minister in the State's first Cabinet and later served as the Chief Minister of Uttaranchal (now Uttarakhand) for a short period. He also worked as the Leader of the Opposition in the Uttarakhand Legislative Assembly. In 2008, he was elected to the Rajya Sabha, and in 2014, he was elected to the Lok Sabha from the Nainital-Udham Singh Nagar constituency. As the Energy Minister in Uttarakhand, he played a significant role in advancing the long-pending Tehri Hydro Project, which involved the relocation of the historic town and district headquarters of Tehri. This ambitious project now generates approximately 2400 MW of electricity and supplies water to Uttar Pradesh, Delhi, and other regions. He also served as the Chairperson of the Petitions Committee in both the Rajya Sabha and the Lok Sabha, where he submitted detailed recommendations on important public issues such as One Rank One Pension, rail connectivity, and infrastructure development, including the Rishikesh- Karanaprayag railway line. He was later appointed as the Governor of Maharashtra on 5th September, 2019, where he served effectively and visited almost all the state's districts, as well as several historically significant forts. Further, in August 2020, he was also appointed as the Governor of Goa (Additional Charge).

5. Apart from his contributions to education and politics, Shri Koshyari is also an author. He wrote and published two books titled "*Uttaranchal Pradesh Kyon*" and *"Uttaranchal Pradesh: Sangharsh Evam Samadhan,"* which reflect his vision and commitment toward the development of Uttarakhand. His life stands as an inspiring example of dedication, leadership, and unwavering service to the nation.

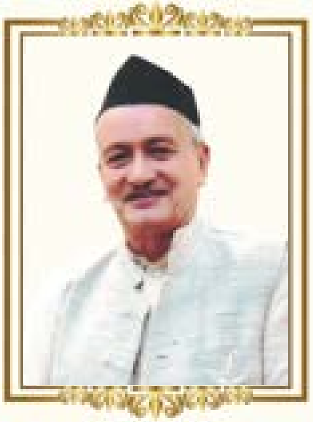

श्री भगत सिंह कोश्यारी

श्री भगत सिंह कोश्यारी, जिन्हें उत्तराखंड राज्य में 'भगत दा' के नाम से जाना जाता है, एक प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षाविद्, पत्रकार और समर्पित राष्ट्रवादी नेता हैं, जिन्होंने अपना जीवन जन सेवा और समाज के गरीब और पिछडे वर्गों के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया है। वह आरएसएस के एक निष्ठावान स्वयंसेवक हैं और अपनी सादगी, अनुशासन और सीखने के प्रति गहरे प्रेम के लिए जाने जाते हैं।

2. 17 जून, 1942 को उत्तराखंड के बागेश्वर जिले के पहाड़ी इलाके के सुदूर गांव पलानधुरा में जन्मे श्री कोश्यारी ने अपनी ग्रामीण पृष्ठभूमि के बावजूद दृढ़ संकल्प के साथ उच्च शिक्षा प्राप्त की और 1964 में आगरा विश्वविद्यालय से संबद्ध अल्मोड़ा कॉलेज से अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर की डिग्री पूरी की। उन्होंने 1964–1965 के दौरान राजा का रामपुर (एटा, उत्तर प्रदेश) में व्याख्याता के रूप में अपने पेशेवर करियर की शुरुआत की। हालांकि, शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण की दृष्टि से प्रेरित होकर, उन्होंने 1965 के बाद से स्वयं को पूरी तरह से शैक्षणिक और समाज सेवा के लिए समर्पित कर दिया।

3. श्री कोश्यारी ने सरस्वती शिशु मंदिर, कासगंज (उत्तर प्रदेश) में पढ़ाना शुरू किया, जहां उन्होंने छोटे बच्चों को आधुनिक शिक्षा के साथ–साथ भारतीय मूल्य प्रदान करने का काम किया। वर्ष 1966 में, उन्होंने उत्तराखंड के एक सीमावर्ती जिले पिथौरागढ़ में 'सरस्वती शिशु मंदिर' की स्थापना की, जिससे दूरदराज के क्षेत्रों में शिक्षा के अवसरों को मजबूत किया गया। उन्होंने पिथौरागढ़ में विवेकानंद इंटर कॉलेज की स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और सरस्वती विहार, नैनीताल से सक्रिय रूप से जुड़े रहे। उन्होंने कई वर्षों तक आरएसएस के विभाग कार्यवाह के रूप में कार्य किया और बाद में उत्तरांचल उत्थान परिषद के सचिव बने, जो दशकों तक उत्तराखंड में प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के विकास के लिए समर्पित संगठन है। वर्ष 1979 से 1990 तक, वह कुमाऊं विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद के सदस्य थे, जिन्होंने शैक्षिक नीति और संस्थागत विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने जागरूकता और सामाजिक चेतना को बढ़ावा देने के लिए पिथौरागढ़ से हिंदी साप्ताहिक "पर्वत पीयूष" के प्रकाशन की भी शुरुआत की। राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान, उन्हें आंतरिक सुरक्षा रखरखाव अधिनियम (मीसा) के तहत गिरफ्तार किया गया था, जो सार्वजनिक जीवन में उनकी सक्रिय भागीदारी को दर्शाता है।

4. वर्ष 1997 में श्री कोश्यारी को उत्तर प्रदेश विधान परिषद के लिए नामित किया गया था। नवंबर, 2000 में उत्तराखंड के गठन के बाद, वह राज्य के पहले मंत्रिमंडल में कैबिनेट मंत्री बने और बाद में थोड़े समय के लिए उत्तरांचल (अब उत्तराखंड) के मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया। उन्होंने उत्तराखंड विधानसभा में विपक्ष के नेता के रूप में भी काम किया। वर्ष 2008 में, वह राज्य सभा के लिए चुने गए और 2014 में, वह नैनीताल–ऊधम सिंह नगर निर्वाचन क्षेत्र से लोक सभा के लिए चुने गए। उत्तराखंड में ऊर्जा मंत्री के रूप में, उन्होंने लंबे समय से लंबित टिहरी हाइड्रो परियोजना को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसमें टिहरी के ऐतिहासिक शहर और जिला मुख्यालय का स्थानांतरण शामिल था। यह महत्वाकांक्षी परियोजना अब लगभग 2400 मेगावाट बिजली पैदा करती है और उत्तर प्रदेश, दिल्ली और अन्य क्षेत्रों को पानी की आपूर्ति करती है। उन्होंने राज्य सभा और लोक सभा दोनों में याचिका समिति के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया, जहां उन्होंने ऋषिकेश–कर्णप्रयाग रेलवे लाइन सहित वन रैंक वन पेंशन, रेल कनेक्टिविटी और बुनियादी ढांचे के विकास जैसे महत्वपूर्ण सार्वजनिक मुद्दों पर विस्तृत सिफारिशें प्रस्तुत कीं। बाद में उन्हें 5 सितंबर, 2019 को महाराष्ट्र के राज्यपाल के रूप में नियुक्त किया गया, जहां उन्होंने प्रभावी ढंग से सेवा की और राज्य के लगभग सभी जिलों के साथ–साथ कई ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण किलों का दौरा किया। इसके अलावा, अगस्त 2020 में, उन्हें गोवा के राज्यपाल (अतिरिक्त प्रभार) के रूप में भी नियुक्त किया गया था।

5. शिक्षा और राजनीति में उनके योगदान के अलावा, श्री कोश्यारी एक लेखक भी हैं। उन्होंने "उत्तरांचल प्रदेश क्यों" और "उत्तरांचल प्रदेशः संघर्ष एवं समाधान" नामक दो पुस्तकें लिखी और प्रकाशित की, जो उत्तराखंड के विकास के प्रति उनकी संकल्पना और प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं। उनका जीवन राष्ट्र के प्रति समर्पण, नेतृत्व और अटूट सेवा का एक प्रेरक उदाहरण है।

SHRI UDAY SURESHKUMAR KOTAK

Shri Uday Sureshkumar Kotak, a veteran Indian banker and financial services pioneer, is recognised for his transformative role in building one of India's leading private sector banks and shaping the modem financial landscape.

2. Born on 15th March, 1959, Shri Kotak founded Kotak Mahindra Finance Ltd. in 1985 with modest seed capital, which rapidly diversified into a range of financial services including investment banking, stock broking, insurance, car finance, and mutual funds. In March 2003, Kotak Mahindra Finance became Kotak Mahindra Bank Ltd, the first non-banking financial company in India to receive a banking licence from the Reserve Bank of India, a landmark event in Indian banking history. He led the bank through major expansions including the acquisition of ING Vysya Bank in 2014, strengthening its market position among India's top private sector banks. He served as Managing Director & CEO of Kotak Mahindra Bank for several decades, stepping down in 2023 and continuing as a non-executive Director.

3. Shri Kotak has played an important role in defining and developing India's banking & financial sector over four decades. He leads several key bodies, serving as Co-Chairman of the Indo-UK Financial Partnership (IUKFP) as well as a member of the International Advisory Board of the Government of Singapore Investment Corporation. He has served on the International Advisory Panel of Monetary Authority of Singapore until December, 2023 and was President of the Confederation of Indian Industry (CII) from June, 2020 until May, 2021. From October, 2018 to April, 2022, the Government of India appointed him Non-Executive Chairman of a specially constituted board of Infrastructure Leasing & Financial Services Ltd. (IL&FS, a financial institution) to steer IL&FS out of a deep crisis, an assignment he undertook as national duty. In 2017, a Committee on Corporate Governance constituted by SEBI under his leadership recommended sweeping changes towards more robust and transparent corporate governance.

4. Shri Kotak also has a vision for equitable prosperity that extends beyond financial services. The Kotak Education Foundation (KEF), a philanthropic trust founded by Shri Kotak, works with some of India's most economically underprivileged communities, attempting to alleviate poverty through education and livelihood programs.

5. Shri Kotak was honoured with the 'Lifetime Achievement Award' at the Mint India Investment Summit 2025 and the 'Lifetime Achievement Award' by CNBC-TV18 at the India Business Leader Awards 2023. In the past, he has been a recipient of the 'Ernst & Young World Entrepreneur of the Year Award' in 2014, 'Economic Times Business Leader of the Year Award' in 2015, 'Businessman of the Year 2016' by Business India, 'Lifetime Achievement Award' at Financial Express' Best Banks' Awards 2016, 'USIBC Global Leadership Award' at the 2018 India Ideas Summit organised by the U.S.-India Business Council, 'Best CEO in Banking Sector' by the Business Today Best CEO Awards 2019 and 'India Business Leader of the Year' by CNBC-TV18 at the India Business Leader Awards 2021.

श्री उदय सुरेशकुमार कोटक

श्री उदय सुरेशकुमार कोटक, एक अनुभवी भारतीय बैंकर और वित्तीय सेवाओं के अग्रणी, को भारत के निजी क्षेत्र के अग्रणी बैंकों में से एक के निर्माण और आधुनिक वित्तीय परिदृश्य परिवर्तन लाने में उनकी परिवर्तनकारी भूमिका के लिए जाना जाता है।

2. 15 मार्च, 1959 को जन्मे, श्री कोटक ने मामूली प्रारम्भिक राशि के साथ कोटक महिंद्रा फाइनेंस लिमिटेड की स्थापना की, जो निवेश बैंकिंग, स्टॉक ब्रोकिंग, बीमा, कार फाइनेंस और म्यूचुअल फंड सहित वित्तीय सेवाओं की प्रकृति में तेजी से बदलाव लेकर आया। मार्च 2003 में, कोटक महिंद्रा फाइनेंस कोटक महिंद्रा बैंक लिमिटेड बन गया, जो भारतीय रिजर्व बैंक से बैंकिंग लाइसेंस प्राप्त करने वाली भारत की पहली गैर–बैंकिंग वित्तीय कंपनी है, जो भारतीय बैंकिंग इतिहास में एक ऐतिहासिक घटना है। उन्होंने वर्ष 2014 में, आईएनजी वैश्य बैंक के अधिग्रहण सहित प्रमुख विस्तार के माध्यम से बैंक का नेतृत्व किया, जिससे भारत के शीर्ष निजी क्षेत्र के बैंकों के बीच इसकी बाजार स्थिति सुदृढ बनीं। उन्होंने कई दशकों तक कोटक महिंद्रा बैंक के प्रबंध निदेशक और सीईओ के रूप में कार्य किया, वर्ष 2023 में अपना पद छोड़ दिया और एक गैर–कार्यकारी निदेशक के रूप में कार्य करते रहे।

3. श्री कोटक ने चार दशकों में भारत के बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र को परिभाषित करने और विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वह कई प्रमुख निकायों का नेतृत्व करते रहे हैं, वह इंडो–यूके फाइनेंशियल पार्टनरशिप (आईयूकेएफपी) के सह–अध्यक्ष के साथ–साथ सिंगापुर निवेश निगम सरकार के अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार बोर्ड के सदस्य के रूप में भी कार्य करते हैं। उन्होंने दिसंबर, 2023 तक सिंगापुर के मौद्रिक प्राधिकरण के अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार पैनल में कार्य किया है और जून, 2020 से मई, 2021 तक भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) के अध्यक्ष रहे। अक्टूबर, 2018 से अप्रैल, 2022 तक, भारत सरकार ने उन्हें आईएलएंडएफएस को गहरे संकट से बाहर निकालने के लिए विशेष रूप से गठित इंफ्रास्ट्रक्चर लीजिंग एंड फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड (आईएल एंड एफएस, एक वित्तीय संस्थान) के बोर्ड का गैर–कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किया, जिस कार्य को उन्होंने राष्ट्रीय कर्तव्य के रूप में ग्रहण किया। वर्ष 2017 में, उनके नेतृत्व में सेबी द्वारा गठित कॉर्पोरेट गवर्नेंस संबंधी एक समिति ने अधिक सुदृढ और पारदर्शी कॉर्पोरेट प्रशासन की दिशा में व्यापक बदलाव की सिफारिश की।

4. श्री कोटक के पास समान समृद्धि के लिए एक दृष्टिकोण भी है, जो वित्तीय सेवाओं से परे है। कोटक एजुकेशन फाउंडेशन (केईएफ), उनके द्वारा स्थापित एक लोकोपकारी ट्रस्ट है, जो भारत के कुछ सबसे आर्थिक रूप से वंचित समुदायों के साथ काम करता है, जो शिक्षा और आजीविका संबंधी कार्यक्रमों के माध्यम से गरीबी को कम करने का प्रयास करता है।

5. श्री कोटक को मिंट इंडिया इन्वेस्टमेंट समिट 2025 में 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड' और इंडिया बिजनेस लीडर अवाड्र्स 2023 में सीएनबीसी–टीवी 18 द्वारा 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड' से सम्मानित किया गया। इससे पहले उन्हें वर्ष 2014 में 'अर्न्स्ट एंड यंग वर्ल्ड एंटरप्रेन्योर ऑफ द ईयर अवार्ड', वर्ष 2015 में 'इकोनॉमिक टाइम्स बिजनेस लीडर ऑफ द ईयर अवार्ड', बिजनेस इंडिया द्वारा 'बिजनेसमैन ऑफ द ईयर 2016', फाइनेंशियल एक्सप्रेस में 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड' बेस्ट बैंक्स अवाड्र्स 2016, यूएस–इंडिया बिजनेस काउंसिल द्वारा आयोजित वर्ष 2018 इंडिया आइडियाज समिट में 'यूएसआईबीसी ग्लोबल लीडरशिप अवार्ड' से सम्मानित किया जा चुका है, बिजनेस टुडे बेस्ट सीईओ अवाड्र्स 2019 द्वारा 'बेस्ट सीईओ ऑफ द बैंकिंग सेक्टर' और सीएनबीसी–टीवी 18 द्वारा इंडिया बिजनेस लीडर अवाड्र्स 2021 में 'इंडिया बिजनेस लीडर ऑफ द ईयर' से सम्मानित किया गया।

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA (POSTHUMOUS)

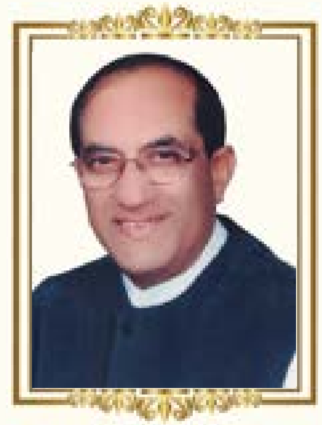

Prof. Vijay Kumar Malhotra was a distinguished Indian politician, academic, and sports administrator.

2. Born on 3rd December, 1931 in Lahore during British India, Prof. Malhotra rose from RSS roots to become a cornerstone of the BJP in Delhi, blending intellectual rigor with administrative prowess. He second of seven children, migrated from Lahore post-Partition and pursued Hindi literature, earning a Ph.D. on poet Sohan Lal Dwivedi. He taught as a professor at PGDAV College, Delhi, for nearly 36 years, instilling discipline and values in generations of students. His scholarly pursuits extended to authoring books like Hindutva Shadyantron Ke Ghere Mein and Kamal Shashwat Sanskritik Prateek, alongside prolific writing for journals.

3. Entering politics via RSS and Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad, Prof. Malhotra became Delhi's youngest Chief Executive Councillor (equivalent to Chief Minister) in 1967 at the age of 35, ushering a "Golden Era" of infrastructure like new flyovers, schools and colleges. A five-time MP and two-time MLA, he notably defeated former Prime Minister Shri Manmohan Singh in 1999 and was the sole BJP winner MP in Delhi in 2004. He was jailed for 19 months during the Emergency. He chaired key Parliamentary Committees, including Public Accounts, and led BJP campaigns, notably sweeping all seven Delhi seats in 2014.

4. A pioneer in sports, Prof. Malhotra served over 40 years as the President of Archery Association of India since 1973, elevating the sport globally, and as acting President, IOA (2011— 2012) post-CWG scandal. He acted as Chef-de-Mission at 1974 Asian Games, chaired Olympic preparation committees for record medals in 2002, and later led the All India Council of Sports. His efforts secured world-class equipment for athletes and hosted the 2010 Commonwealth Games in Delhi. His clean image, mentorship, and contributions—from Malhotra Committees on Housing and Education to rehabilitating slums—left an indelible mark on Delhi.

5. Prof. Malhotra passed away on 30th September, 2025.

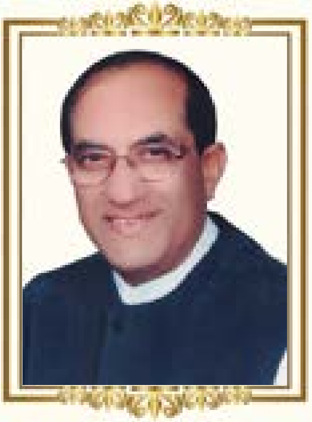

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा (मरणोपरांत)

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा एक प्रतिष्ठित भारतीय राजनीतिज्ञ, अकादमिक और खेल प्रशासक थे।

2. 3 दिसंबर, 1931 को ब्रिटिश भारत के दौरान लाहौर में जन्मे प्रो. मल्होत्रा आरएसएस के निचले कैडर से बढ़ते हुए दिल्ली में भाजपा की आधारशिला बन गए, वह प्रशासनिक कौशल के साथ बौद्धिक रूप से समृद्ध थे। वह सात बच्चों में से दूसरी सन्तान थे, विभाजन के बाद लाहौर से चले आए और हिंदी साहित्य की पढ़ाई की और कवि सोहन लाल द्विवेदी पर पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने लगभग 36 वर्षों तक दिल्ली के पीजीडीएवी कॉलेज में प्रोफेसर के रूप में पढ़ाया और अलग–अलग पीढ़ियों के छात्रों में अनुशासन और मूल्यों को स्थापित किया। उनकी विद्वतापूर्ण कार्यों के दायरे में विपुल लेखन के साथ–साथ हिंदुत्व षडयंत्र के घेरे में और कमल शाश्वत सांस्कृतिक प्रतीक जैसी पुस्तकों का लेखन शामिल है।

3. आरएसएस और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के माध्यम से राजनीति में प्रवेश करते हुए, प्रो. मल्होत्रा 1967 में 35 वर्ष की आयु में दिल्ली के सबसे कम उम्र के मुख्य कार्यकारी पार्षद (मुख्यमंत्री के बराबर) बने, और नए फ्लाईओवर, स्कूलों और कॉलेजों जैसे बुनियादी ढांचे के 'स्वर्ण युग' की शुरुआत की। वह पांच बार सांसद और दो बार विधायक रहे। उन्होंने वर्ष 1999 में पूर्व प्रधान मंत्री श्री मनमोहन सिंह को हराया और 2004 में दिल्ली में एकमात्र भाजपा के विजेता सांसद थे। आपातकाल के दौरान उन्हें 19 महीने की जेल हुई थी। उन्होंने लोक लेखा सहित प्रमुख संसदीय समितियों की अध्यक्षता की और भाजपा अभियानों का नेतृत्व किया, जिसमें 2014 में दिल्ली की सभी सात सीटों पर उल्लेखनीय जीत हासिल की।

4. खेलों में अग्रणी, प्रो. मल्होत्रा ने 1973 से भारतीय तीरंदाजी संघ के अध्यक्ष के रूप में 40 से अधिक वर्षों तक सेवा की, खेल को विश्व स्तर पर ऊपर उठाया, और सीडब्ल्यूजी घोटाले के बाद आईओए (2011–2012) के कार्यवाहक अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। उन्होंने 1974 के एशियाई खेलों में शेफ–डी–मिशन के रूप में काम किया, वर्ष 2002 में रिकॉर्ड पदक के लिए ओलंपिक की तैयारी के लिए गठित समितियों की अध्यक्षता की और बाद में अखिल भारतीय खेल परिषद का नेतृत्व किया। उनके प्रयासों से एथलीटों के लिए विश्व स्तरीय उपकरण प्राप्त किए गए और दिल्ली में 2010 राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी की गई। आवास और शिक्षा पर मल्होत्रा समितियों से लेकर मलिन बस्तियों के पुनर्वास तक उनकी स्वच्छ छवि, मार्गदर्शन और योगदान ने दिल्ली पर एक अमिट छाप छोड़ी।

5. प्रो. मल्होत्रा का 30 सितंबर, 2025 को निधन हो गया।

DR. KALLIPATTI RAMASAMY PALANISWAMY

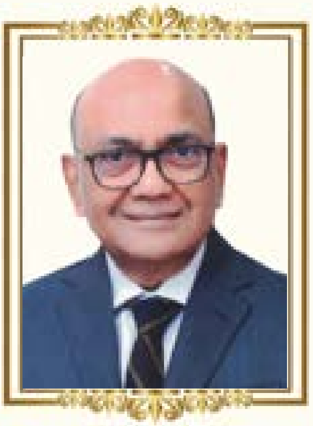

Dr. Kallipatti Ramasamy Palaniswamy is an eminent gastroenterologist with over four decades of experience.

2. Born on 15th March, 1949 in a remote village at Kallipatti, Erode District, Tamil Nadu, to an agricultural family, Dr. Palaniswamy graduated with an MBBS from Mysore University in 1972. He completed his MD (Internal Medicine) in 1977 and DM (Gastroenterology) in 1981 from Madras Medical College (Tamil Nadu). In 1986, he founded and set up the Department of Gastroenterology at Stanley Medical College. He served the poor population of North Chennai as Professor and Head of Department until 2000, during which he established a highly advanced gastroenterology department. After retiring from government service, he joined Apollo Hospitals, Chennai, as Senior Consultant and Head of Department of Gastroenterology where he was instrumental in establishing a highly sought-after training program for the National Board.

3. In 1999-2000, Dr. Palaniswamy served as President of the Society for Gastrointestinal Endoscopy of India (SGEI), where he initiated a task force to form guidelines for disinfection and maintenance of endoscopes and accessories. He served as President of the Indian Society of Gastroenterology (ISG) in 2004-2005, highlighting the importance of including the Hepatitis B vaccine in universal vaccination programs of developing countries. In 2015, he received an honorary Fellowship of the Royal College of Physicians (FRCP) - Glasgow. He was Organizing Secretary of the Annual Conference of the Indian Society of Gastroenterology held in Chennai in 2003. As Organizing Chairman of the Chennai Digestive Diseases Week (DDW) in 2008, he introduced—for the first time in India—a hands-on Endoscopic Ultrasound (EUS) workshop conducted by international experts on an anesthetized live pig model. From 2011 onwards, he has held various positions in committees of the World Gastroenterology Organisation (WGO), including member of the Foundation Committee, Nomination Committee, and currently the Train the Trainer Committee. In this capacity, he has conducted walkathons and public interactions to create awareness on various digestive health issues. In 2011, he was Organizing Secretary for the Train The Trainers (TTT) program by the WGO—the first such event in South East Asia, held in Chennai to improve global training standards in gastroenterology. His illustrious accomplishments include his appointment as Secretary General of the World Congress on Endoscopic Ultrasound, held in India in 2014. This landmark event, attended by world-renowned experts and national/international faculty, was organized for the first time in South East Asia.

4. Dr. Palaniswamy is deeply committed to serving the underprivileged. For over three decades, he has volunteered his services at the Ramakrishna Mutt dispensary in Chennai. He organized an international conference and public awareness program in Chennai in March, 2025, followed by a similar public awareness program in his native village Kallipatti in July, 2025 to promote screening colonoscopy and awareness on early diagnosis of colon cancer. He has been conducting annual camps for over ten years in the village Kallipatti, Erode district. He has been instrumental in bringing in infrastructural development in the village Kallipatti - namely the bridge across the Bhavani River, electrical substation, development of a new building at the primary health centre and a check- dam to improve the ground water.

5. In recognition of his contributions to the field of medicine and his commitment to inclusive public healthcare delivery, Dr. Palaniswamy was conferred the Padma Shri in 2007. He received an Honorary D.Sc. from The Tamil Nadu Dr. M.G.R. Medical University in 2014, the "Inspiring Doctor of India" Award by The Economic Times and "Legends in the Field of Gastroenterology" by The Times of India in 2018, "Lifetime Achievement Award" from the Indian Society of Gastroenterology (ISG) in 2019 and Masters award by the World Gastroenterology Organisation (MWGO)- the highest award given by the World Gastroenterology Oraganisation in 2022.

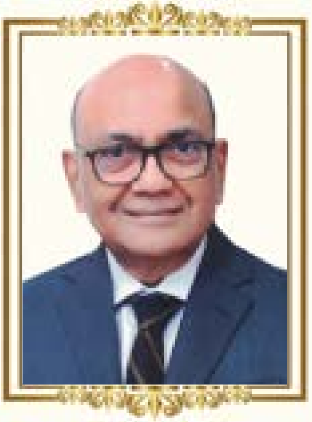

डॉ. कल्लिपट्टि रामासामी पलनिस्वामी

डॉ. कल्लिपट्टि रामासामी पलनिस्वामी चार दशकों से अधिक का अनुभव रखने वाले एक प्रतिष्ठित गैस्ट्रोएंटेरोलॉजिस्ट हैं।

2. 15 मार्च, 1949 को तमिलनाडु के इरोड जिले के कलिपट्टी के एक दूरदराज के गांव में एक कृषि परिवार में जन्मे डॉ. पलनिस्वामी ने वर्ष 1972 में मैसूर विश्वविद्यालय से एमबीबीएस की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने वर्ष 1977 में एमडी (आंतरिक चिकित्सा) और वर्ष 1981 में मद्रास मेडिकल कॉलेज (तमिलनाडु) से डीएम (गैस्ट्रोएंटरोलॉजी) की डिग्री पूरी की। वर्ष 1986 में, उन्होंने स्टेनली मेडिकल कॉलेज में गैस्ट्रोएंटरोलॉजी विभाग की स्थापना की। उन्होंने वर्ष 2000 तक उत्तरी चेन्नई के लिए गरीब आबादी की प्रोफेसर और विभाग प्रमुख के रूप में सेवा की, जिसके दौरान उन्होंने एक अत्यधिक एडवांस गैस्ट्रोएंटरोलॉजी विभाग की स्थापना की। सरकारी सेवा से सेवानिवृत्त होने के बाद, वह अपोलो हॉस्पिटल्स, चेन्नई में वरिष्ठ सलाहकार और गैस्ट्रोएंटरोलॉजी विभाग के प्रमुख के रूप में शामिल हुए, जहां उन्होंने राष्ट्रीय बोर्ड के लिए एक अत्यधिक मांग वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम को स्थापित करने में प्रमुख भूमिका निभाई।

3. वर्ष 1999–2000 में, डॉ. पलनिस्वामी ने भारत की गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल एंडोस्कोपी सोसाइटी (एसजीईआइ) के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया, जहां उन्होंने एंडोस्कोप और सहायक उपकरणों की कीटाणुशोधन और रखरखाव के लिए दिशानिर्देश बनाने हेतु एक कार्य बल शुरू किया। उन्होंने वर्ष 2004–2005 में इंडियन सोसायटी ऑफ गैस्ट्रोएंटरोलॉजी (आईएसजी) के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया, जिसमें विकासशील देशों के सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रमों में हेपेटाइटिस बी वैक्सीन को शामिल करने के महत्व पर उन्होंने प्रकाश डाला। वर्ष 2015 में, उन्हें रॉयल कॉलेज ऑफ फिजिशियन (एफआरसीपी) – ग्लासगो की मानद फेलोशिप मिली। वह वर्ष 2003 में चेन्नई में आयोजित इंडियन सोसायटी ऑफ गैस्ट्रोएंटरोलॉजी के वार्षिक सम्मेलन के आयोजक सचिव थे। वर्ष 2008 में चेन्नई पाचन रोग सप्ताह (डीडीडब्ल्यू) के आयोजक अध्यक्ष के रूप में, उन्होंने–भारत में पहली बार–एक एनेस्थेटाइज्ड लाइव पिग मॉडल पर अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों द्वारा आयोजित एक हैंड्स–ऑन एंडोस्कोपिक अल्ट्रासाउंड (ईयूएस) कार्यशाला शुरू की। वर्ष 2011 से, उन्होंने विश्व गैस्ट्रोएंटरोलॉजी संगठन (डब्ल्यूजीओ) की समितियों में विभिन्न पदों पर कार्य किया है, जिसमें फाउंडेशन समिति, नामांकन समिति और वर्तमान में ट्रेन द ट्रेनर समिति की सदस्यता शामिल हैं। इस पद पर कार्य करते हुए, उन्होंने विभिन्न पाचन स्वास्थ्य मुद्दों के संबंध में जागरूकता पैदा करने के लिए वॉकथॉन और लोगों के साथ संवाद कार्यक्रम आयोजित किए। वर्ष 2011 में, वह डब्ल्यूजीओ द्वारा ट्रेन द ट्रेनर्स (टीटीटी) कार्यक्रम के लिए आयोजक सचिव रहें, जो दक्षिण पूर्व एशिया में इस तरह का पहला आयोजन था, जो चेन्नई में गैस्ट्रोएंटरोलॉजी में वैश्विक प्रशिक्षण संबंधी मानकों को बेहतर बनाने के लिए आयोजित किया गया था। उनकी शानदार उपलब्धियों में वर्ष 2014 में भारत में आयोजित एंडोस्कोपिक अल्ट्रासाउंड पर विश्व कांग्रेस के महासचिव के रूप में उनकी नियुक्ति शामिल है। इसमें विश्व प्रसिद्ध विशेषज्ञों और राष्ट्रीय ६ अंतर्राष्ट्रीय संकाय द्वारा भाग लिया गया तथा दक्षिण पूर्व एशिया में इस तरह का ऐतिहासिक कार्यक्रम पहली बार आयोजित किया गया था।

4. डॉ. पलनिस्वामी वंचितों की सेवा करने के लिए पूरे मन से प्रतिबद्ध हैं। तीन दशकों से अधिक समय से चेन्नई के रामकृष्ण मठ औषधालय में स्वेच्छा से अपनी सेवाएं दी हैं। उन्होंने मार्च, 2025 में चेन्नई में एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसके बाद जुलाई, 2025 में अपने पैतृक गांव कलिपट्टी में कोलोनोस्कोपी की जांच और कोलोन कैंसर के प्रारंभिक निदान के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए इसी तरह का जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। वह इरोड जिले के कलिपट्टी गांव में दस वर्षों से अधिक समय से वार्षिक शिविरों का आयोजन कर रहे हैं। उन्होंने कलिपट्टी गांव में अवसंरचनात्मक विकास लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई – जिसमें भवानी नदी पर पुल, विद्युत उपकेंद्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में एक नए भवन का विकास और भूजल में सुधार के लिए चेक– बांध बनाना शामिल है।

5. चिकित्सा के क्षेत्र में उनके योगदान और लोगों को समावेशी स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को मान्यता देते हुए, डॉ. पलनिस्वामी को वर्ष 2007 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया। उन्हें वर्ष 2014 में डॉ. एम.जी.आर. मेडिकल यूनिवर्सिटी तमिलनाडु से मानद डी.एससी. की डिग्री प्रदान की गई। वर्ष 2018 में द इकोनॉमिक टाइम्स द्वारा 'इंस्पायरिंग डॉक्टर ऑफ इंडिया' पुरस्कार और द टाइम्स ऑफ इंडिया द्वारा 'लीजेंड्स इन द फील्ड ऑफ गैस्ट्रोएंटेरोलॉजी' पुरस्कार प्रदान किया गया। वर्ष 2019 में इंडियन सोसायटी ऑफ गैस्ट्रोएंटरोलॉजी (आईएसजी) से 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड' और वर्ष 2022 में वर्ल्ड गैस्ट्रोएंटरोलॉजी ऑर्गनाइजेशन (एमडब्ल्यूजीओ) द्वारा दिया जाने वाला सर्वोच्च पुरस्कार – मास्टर्स अवार्ड प्रदान किया गया ।

SHRI PIYUSH PANDEY (POSTHUMOUS)

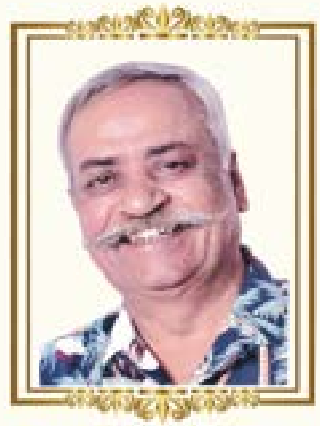

Shri Piyush Pandey had the most transformative impact on the advertising industry. Over, the decades, he became a defining figure in Indian advertising, and his influence extended beyond mere creativity to encompass strategic vision, industry leadership, and a profound understanding of cultural nuances.

2. Born on 5th September 1955, Shri Pandey's career was marked by a series of ground-breaking campaigns that set new standards in Indian advertising. His work was renowned for its ability to connect deeply with audiences. Campaigns like “Do Boond Zindagi Ki” for polio eradication, and "Mile Sur Mera Tumhara" were not just advertisements; they were cultural touchstones. His creative acumen was pivotal in shaping the trajectory of Indian advertising. As a leader in the industry, he not only drove creative excellence but also mentored and inspired a new generation of advertising professionals. His role in leading Ogilvy India, Ogilvy Worldwide, his contributions to industry forums and advisory councils demonstrated his commitment to advancing the field. His leadership extended to his involvement in social causes and philanthropic efforts, reflecting his holistic approach to the role of advertising in society.

3. Shri Pandey was named the most Influential Advertising Man in India by Economic Times, the leading business daily, 14 years in a row. With over 800 national and international advertising awards, Shri Pandey was the most awarded Indian in the world of advertising. In 2002, he became the first Indian to bag a double Gold at the Cannes Lions International Advertising Festival. He was honoured with the 'Lion of St. Mark' award at the Cannes Lions International Festival of Creativity in 2018. This marked a historic moment for the Indian advertising industry. He was the first Indian/Asian to be announced by the London International Awards (LIA), as the person to win the 2024 Created for Creatives Legend Award. This award is given to a leader of the industry, who through their talent, vision and generosity has demonstrated outstanding creativity. He also was the first Indian/Asian to be named Lotus Legend at ADFEST 2024.

4. Shri Pandey was awarded the Padma Shri in 2016. He was honoured with the Lifetime Achievement Award by India's premier advertising body, the Advertising Agencies Association of India (AAAI), in 2010. He received the Rajiv Gandhi Award for his excellence in the field of advertising and communication, in 2002. He was also honoured by esteemed cultural institutions, receiving the Maharaja Sawai Madho Singh II Award (2014) from the Royal Family of Jaipur and the Maharana Mewar Foundation Award (2015). His work will always inspire and influence the advertising landscape, reinforcing his status as a true pioneer in the industry.

5. Shri Pandey passed away on 24th October, 2025.

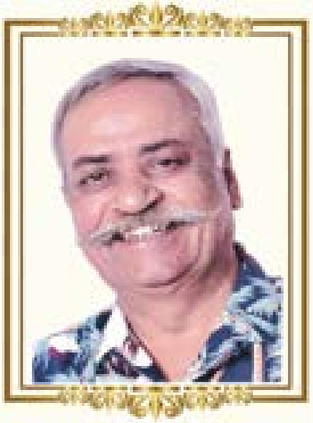

श्री पियूष पान्डेय (मरणोपरांत)

श्री पियूष पान्डेय भारतीय विज्ञापन में एक निर्णायक हस्ती थे। उनका विज्ञापन उद्योग पर सबसे अधिक परिवर्तनकारी प्रभाव था। उनका प्रभाव केवल रचनात्मकता तक सीमित न रहकर सामरिक दृष्टि, उद्योग नेतृत्व और सांस्कृतिक बारीकियों की गहन समझ पर भी पड़ा।

2. 5 सितंबर 1955 को जन्मे, श्री पान्डेय का करियर कई महत्वपूर्ण अभियानों से सुसज्जित था, जिसने भारतीय विज्ञापन के क्षेत्र में नए मानक स्थापित किए। वे दर्शकों से गहराई से जुड़ने की क्षमता के कारण प्रसिद्ध थे। पोलियो उन्मूलन के लिए "दो बूंद जिंदगी की" और "मिले सुर मेरा तुम्हारा" जैसे अभियान केवल विज्ञापन नहीं थे; वे सांस्कृतिक मानदंड थे। उनका रचनात्मक कौशल भारतीय विज्ञापन क्षेत्र को दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण था। इस क्षेत्र में एक अग्रणी के रूप में, उन्होंने न केवल रचनात्मक उत्कृष्टता को बढ़ावा दिया, बल्कि विज्ञापन पेशेवरों की एक नई पीढ़ी को मार्गदर्शन और प्रेरित भी किया। ओगिल्वी इंडिया, ओगिल्वी वर्ल्डवाइड का नेतृत्व करने में उनकी भूमिका, उद्योग मंचों और सलाहकार परिषदों में उनके योगदान से विज्ञापन क्षेत्र को उन्नत बनाने की उनकी प्रतिबद्धता झलकती है। वे सामाजिक और परोपकारी कार्यों में भी भागीदार रहे, जो समाज में विज्ञापन की भूमिका के प्रति उनके समग्र दृष्टिकोण को दर्शाता है।

3. श्री पान्डेय को अग्रणी बिजनेस दैनिक इकोनॉमिक टाइम्स द्वारा लगातार 14 वर्षों तक भारत में सबसे इन्फ्लूएन्शल ऐड्वर्टाइज़िंग मैन नामित किया गया। 800 से अधिक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विज्ञापन पुरस्कारों के साथ, वे विज्ञापन की दुनिया में सबसे अधिक सम्मानित भारतीय थे। वे वर्ष 2002 में, कान्स लायंस इंटरनेशनल एडवरटाइजिंग फेस्टिवल में दो बार स्वर्ण पदक जीतने वाले पहले भारतीय बने। उन्हें वर्ष 2018 में कान्स लायंस इंटरनेशनल फेस्टिवल ऑफ क्रिएटिविटी में 'लायन ऑफ सेंट मार्क' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह भारतीय विज्ञापन उद्योग के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक क्षण था। वे लंदन इंटरनेशनल अवार्ड्स (एलआईए) द्वारा वर्ष 2024 क्रिएटेड फॉर क्रिएटिव्स लीजेंड अवार्ड जीतने वाले पहले भारतीय/एशियाई थे। यह पुरस्कार उद्योग जगत के उस अग्रणी को दिया जाता है, जिसने अपनी प्रतिभा, दूरदर्शिता और उदारता से उत्कृष्ट रचनात्मकता का प्रदर्शन किया हो। वे एडीएफईएसटी 2024 में लोटस लीजेंड नामित होने वाले पहले भारतीय/ एशियाई भी थे।

4. श्री पान्डेय को वर्ष 2016 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया। उन्हें वर्ष 2010 में भारत की प्रमुख विज्ञापन संस्था, एडवरटाइजिंग एजेंसीज एसोसिएशन ऑफ इंडिया (ए.ए.ए.आई.) द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। उन्हें वर्ष 2002 में विज्ञापन और संचार के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए राजीव गांधी पुरस्कार मिला। उन्हें जयपुर के शाही परिवार से महाराजा सवाई माधो सिंह द्वितीय पुरस्कार (वर्ष 2014) और महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन अवॉर्ड (वर्ष 2015) जैसे प्रतिष्ठित सांस्कृतिक संस्थानों द्वारा भी सम्मानित किया गया। उनका योगदान हमेशा विज्ञापन के क्षेत्र को प्रेरित और प्रभावित करेगा और उन्हें इस क्षेत्र के अग्रणी के रूप में सदैव याद किया जाएगा।

5. श्री पान्डेय का 24 अक्टूबर, 2025 को निधन हो गया।

SHRI BISHWA BANDHU (POSTHUMOUS)

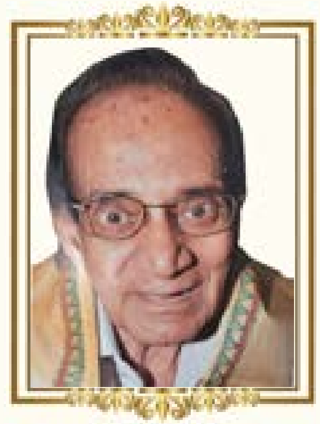

Shri Bishwa Bandhu was a pioneering exponent of Folk Dance and one of the most distinguished cultural icons of Bihar. A visionary dancer, choreographer, guru and institution-builder, he devoted his entire life to the preservation, revitalization and creative reinterpretation of Indian dance traditions. Through his lifelong commitment to dance education and cultural leadership, he played a seminal role in shaping Bihar's modern dance movement and in establishing Folk dance as a powerful medium of artistic expression and social awakening.

2. Born on 23rd November, 1930, trained in the rich confluence of Indian classical, folk and creative dance traditions, Shri Bishwa Bandhu evolved a distinctive artistic language inspired by the ideals of the Uday Shankar Dance Style. His work seamlessly blended classical discipline, folk vitality and contemporary sensibility, making dance accessible to wider audiences while retaining its spiritual and aesthetic depth. As a performer and choreographer, he presented innovative dance productions rooted in Indian philosophy, mythology and social themes, thereby expanding the expressive scope of Indian dance.

3. Shri Bishwa Bandhu was the Founder of Surangan, one of Bihar's most respected cultural institutions, which has remained continuously active for over six decades. Under his visionary guidance, Surangan emerged as a major centre for dance training, choreography, research and performance. Through this institution, he nurtured generations of dancers, many of whom later became accomplished performers, teachers and cultural leaders in India and abroad. Committed to the democratization of art, he always imparted dance training free of cost, a tradition that continues at Surangan even today. Over the course of his illustrious career, he gave dance performances on more than 6,000 stages, leaving an indelible mark on India's cultural landscape. His role as a guru was defined by discipline, compassion and an unwavering sense of cultural responsibility.

4. Beyond performance and pedagogy, Shri Bishwa Bandhu made an enduring contribution to cultural institution-building and public engagement with the arts. He worked tirelessly to integrate dance with education, social awareness and cultural identity, especially in Bihar. His initiatives helped bring dance into mainstream cultural life, inspiring young artists and strengthening the cultural fabric of the region. His leadership and vision significantly elevated Bihar's presence on the national cultural map.

5. Shri Bishwa Bandhu was honoured with several prestigious awards at the state, national and international levels for his outstanding contribution to folk dance and cultural service. His honours include the Nagarjun Shikhar Samman, Bihar Kalakar Samman, Life time achievement award awarded by Government of Bihar, and the Sangeet Natak Akademi National Tagore Award for his distinguished contribution to Indian performing arts. Widely revered as a cultural icon of Bihar, his legacy continues to inspire generations of dancers and cultural practitioners.

6. Shri Bishwa Bandhu passed away on 30th March, 2025.

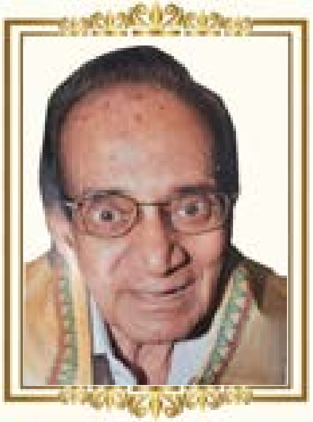

श्री विश्वबन्धु (मरणोपरांत)

श्री विश्वबन्धु लोक नृत्य के अग्रणी प्रवर्तक और बिहार के सबसे जाने–माने सांस्कृतिक व्यक्तियों में से एक थे। एक दूरदर्शी नर्तक, कोरियोग्राफर, गुरु और संस्था–निर्माता के तौर पर, उन्होंने अपनी पूरी ज़िंदगी भारतीय नृत्य परंपराओं को बचाने, उन्हें पुनर्जीवित करने और सृजनात्मक तरीके से पुनर्व्याख्या में लगा दी। नृत्य की शिक्षा और सांस्कृतिक लीडरशिप के प्रति अपने जीवन पर्यंत लगन से, उन्होंने बिहार के मॉडर्न डांस मूवमेंट को आकार देने और लोक नृत्य को कलात्मक अभिव्यक्ति और सामाजिक जागृति के शक्तिशाली माध्यम के रूप में स्थापित करने में अहम भूमिका निभाई।

2. 23 नवंबर, 1930 को जन्मे, भारतीय शास्त्रीय, लोक और रचनात्मक नृत्य परंपराओं के शानदार संगम में प्रशिक्षित श्री विश्वबन्धु ने उदय शंकर नृत्य शैली के आदर्शों से प्रेरित होकर एक खास कलात्मक भाषा तैयार की। उनके नृत्य में शस्त्रीय अनुशासन, लोक जीवन और आज के ज़माने की समझ का बहुत अच्छा मिश्रण था, जिससे नृत्य ज़्यादा लोगों तक पहुँच पाया और उसकी आध्यात्मिकता और खूबसूरती भी बनी रही। परफ़ॉर्मर और कोरियोग्राफ़र के तौर पर, उन्होंने भारतीय दर्शन, पौराणिक कथाओं और सामाजिक विषयों पर आधारित नए डांस प्रोडक्शन पेश किए, जिसने भारतीय नृत्य की अभिव्यक्ति की गुंजाइश बढ़ाई।

3. श्री विश्वबन्धु बिहार के सबसे जाने–माने सांस्कृतिक संस्थानों में से एक, सुरांगन के संस्थापक थे, जो छह दशकों से ज़्यादा समय से लगातार सक्रिय है। उनके दूरदर्शी मार्गदर्शन में, सुरांगन नृत्य प्रशिक्षण, कोरियोग्राफी, रिसर्च और परफॉर्मेंस का एक बड़ा केंद्र बनकर उभरा। इस संस्था के ज़रिए, उन्होंने नर्तकों की कई पीढ़ियों को तैयार किया, जिनमें से कई बाद में भारत और विदेश में जाने–माने परफॉर्मर, टीचर और कल्चरल लीडर बने। कला के लोकतंत्रीकरण के लिए समर्पित, उन्होंने हमेशा निःशुल्क नृत्य प्रशिक्षण दिया, यह परंपरा आज भी सुरांगन में जारी है। अपने शानदार करियर के दौरान, उन्होंने 6,000 से अधिक मंचों पर नृत्य प्रस्तुतियां दीं, और भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य पर एक अमिट छाप छोड़ी। एक गुरु के तौर पर उनकी भूमिका अनुशासन, करुणा और सांस्कृतिक ज़िम्मेदारी की अटल भावना से ओत–प्रोत थी।

4. परफॉर्मेंस और शिक्षा के अलावा, श्री विश्वबन्धु ने सांस्कृतिक संस्था निर्माण और कला के साथ जन भागीदारी में एक स्थायी योगदान दिया। उन्होंने नृत्य को शिक्षा, सामाजिक जागरूकता और सांस्कृतिक पहचान के साथ जोड़ने के लिए, खासकर बिहार में, बहुत मेहनत की। उनकी कोशिशों से नृत्य को मुख्यधारा के सांस्कृतिक जीवन में लाने, युवा कलाकारों को प्रेरित करने और क्षेत्र के सांस्कृतिक ताने–बाने को मज़बूत करने में मदद मिली। उनके नेतृत्व और दूरदृष्टि ने राष्ट्रीय सांस्कृतिक मानचित्र पर बिहार की उपस्थिति को उल्लेखनीय ढंग से मजबूत किया।

5. श्री विश्वबन्धु को लोक नृत्य और सांस्कृतिक सेवा में उनके शानदार योगदान के लिए राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उन्हें मिले सम्मानों में नागार्जुन शिखर सम्मान, बिहार कलाकार सम्मान, बिहार सरकार का लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड और भारतीय परफॉर्मिंग आर्ट्स में उनके खास योगदान के लिए संगीत नाटक अकादमी नेशनल टैगोर अवॉर्ड शामिल हैं। बिहार के सांस्कृतिक आदर्श के तौर पर व्यापक रूप से सम्मानित, उनकी विरासत नर्तकों और सांस्कृतिक कलाकारों की कई पीढ़ियों को प्रेरणा देती रहेगी।

6. श्री विश्वबन्धु का 30 मार्च, 2025 को निधन हो गया।

SHRI BHARAT SINGH BHARTI

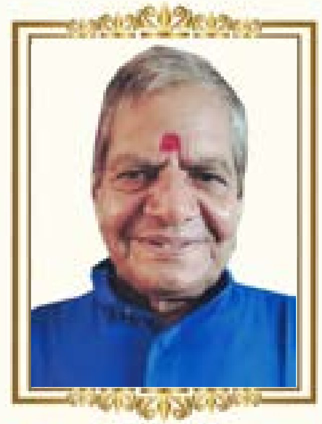

Shri Bharat Singh Bharti is a Bhojpuri folk singer, composer, lyricist, guru, and custodian of cultural heritage, whose lifelong dedication has been instrumental in the preservation, documentation and dissemination of Bihar's rich folk music traditions. For over seven decades, he has served as a revered "Guruji," artist and mentor, keeping the traditional knowledge alive and bringing folk music to contemporary society.

2. Born on 20th November, 1936, in Nonaur village of Bhojpur district, Bihar, Shri Bharti began singing in Kirtan groups in his childhood and received traditional training from Shri Shatrunjay Prasad Singh (Lalan Ji). He mastered several instruments including tabla, harmonium, flute, sitar, dholak and jhal. Associated with All India Radio, Patna since 1962, he became a top- grade artist and popularized Bhojpuri folk music to a wide audience through All India Radio and Doordarshan.

3. Shri Bharti's major contributions are in the fields of teaching and composition. He established the Nonaur Gharana and founded the Tara Institute of Learning, Kankarbagh (1995) and Bharti Sangeet Kala Mandir, Nonaur (2005), where thousands of students—especially rural girls and youth from underprivileged backgrounds—received music training. His centers in Ayodhya and Vrindavan contributed to the dissemination of devotional and folk traditions. His works, Nayka Bihan and Sapta Sarovar, provide important reference material by classifying Bhojpuri folk genres—bhajan, nirgun, kajri, Holi, and Devi geet. His songs "Manwa Basela Ganga Tohri Lahariya" and "Sanwar Sanwar Suratiya Tohar Dulha," popularized by Sharda Sinha, remain an integral part of social and cultural events today.

4. Shri Bharti has brought Bhojpuri folk music to prominence, from village stages to national and international platforms. He represented India at the Sagar Festival in Mauritius in 1987, where his album Purabiya Taan was released. He was also associated with the audition board of All India Radio, Patna and the advisory committees of the Art, Culture and Youth Department of the Government of Bihar. He guided a new generation of artists as a judge and mentor at district and state-level youth festivals.

5. Shri Bharti's contributions have been recognized with numerous awards. He was awarded the Sangeet Natak Akademi Amrit Award (2022-23) by the Sangeet Natak Akademi. In addition, he received the Vindhyavasini Devi Award (2015-16), the Purvi Purodha Mahendra Mishra Smriti Samman (2025), the Lifetime Achievement Award (September 24, 2025) from the Department of Art and Culture, Government of Bihar and the Bhikhari Thakur Lokrag Samman.

श्री भरत सिंह भारती

श्री भरत सिंह भारती एक भोजपुरी लोक गायक, संगीतकार, गीतकार, गुरु और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षक हैं, जिनका आजीवन समर्पण बिहार की समृद्ध लोक संगीत परंपराओं के संरक्षण, प्रलेखन और प्रसार में सहायक रहा है। सात दशकों से अधिक समय तक, उन्होंने एक पूजनीय "गुरुजी," कलाकार और मार्गदर्शक के रूप में सेवा की है, पारंपरिक ज्ञान को जीवित रखा है और लोक संगीत को समकालीन समाज के साथ जोड़ा है।

2. 20 नवम्बर, 1936 को बिहार के भोजपुर जिले के नोनौर गांव में जन्मे, श्री भारती ने बचपन में ही कीर्तन मंडलियों में गाना शुरू कर दिया था और श्री शत्रुंजय प्रसाद सिंह (ललन जी) से पारंपरिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने तबला, हारमोनियम, बांसुरी, सितार, ढोलक और झाल सहित कई वाद्ययंत्रों में महारत हासिल की। वर्ष 1962 से ऑल इंडिया रेडियो, पटना से जुड़े हुए हैं। वह एक शीर्ष ग्रेड कलाकार बन गए और ऑल इंडिया रेडियो और दूरदर्शन के माध्यम से बडी संख्या में दर्शकों के लिए भोजपुरी लोक संगीत को लोकप्रिय बनाया।

3. श्री भारती का प्रमुख योगदान शिक्षण और रचना के क्षेत्र में है। उन्होंने नोनौर घराने की स्थापना की और तारा इंस्टीट्यूट ऑफ लर्निंग, कंकरबाग (1995) और भारती संगीत कला मंदिर, नोनौर (2005) की स्थापना की, जहां हजारों छात्रों–विशेषकर ग्रामीण लड़कियों और वंचित पृष्ठभूमि के युवाओं ने संगीत प्रशिक्षण प्राप्त किया। अयोध्या और वृंदावन में उनके केंद्रों ने भक्ति और लोक परंपराओं के प्रसार में योगदान दिया। उनके कार्य, नायक बिहान और सप्त सरोवर, भोजपुरी लोक विधाओं– भजन, निर्गुण, कजरी, होली और देवी गीत को वर्गीकृत करके महत्वपूर्ण संदर्भ सामग्री प्रदान करते हैं। उनके गाने "मनवा बसेला गंगा तोहरी लहरिया" और "सांवर सांवर सुरतिया तोहार दुल्हा", जिन्हें शारदा सिन्हा ने लोकप्रिय बनाया, आज भी सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अभिन्न अंग बने हुए हैं।

4. श्री भारती ने भोजपुरी लोक संगीत को गांव के मंच से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच तक प्रमुखता दिलाई है। उन्होंने 1987 में मॉरीशस में सागर महोत्सव में भारत का प्रतिनिधित्व किया, जहां उनका एल्बम पुरबिया तान जारी किया गया था। वह आकाशवाणी, पटना के ऑडिशन बोर्ड और बिहार सरकार के कला, संस्कृति और युवा विभाग की सलाहकार समितियों से भी जुड़े थे। उन्होंने जिला और राज्य स्तरीय युवा महोत्सवों में निर्णायक और मार्गदर्शक के रूप में कलाकारों की एक नई पीढ़ी का मार्गदर्शन किया।

5. श्री भारती के योगदान को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उन्हें संगीत नाटक अकादमी द्वारा संगीत नाटक अकादमी अमृत पुरस्कार (2022–23) से सम्मानित किया गया था। इसके अलावा, उन्हें विंध्यवासिनी देवी पुरस्कार (2015–16), पूर्वी पुरोधा महेंद्र मिश्रा स्मृति सम्मान (2025), कला और संस्कृति विभाग, बिहार सरकार से लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड (24 सितंबर, 2025) और भिखारी ठाकुर लोकराग सम्मान प्राप्त हुआ।

SHRI TAGA RAM BHEEL

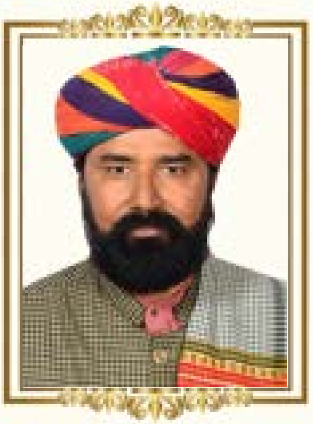

Shri Taga Ram Bheel, Director and founder of Algoza Folk Music Institute, Moolsagar in Jaisalmer, Rajasthan, is a famous traditional folk music artist. He is maestro of Algoza folk Musical Vertical flutes of Thar Desert. Algoza is made of "seesham" and "kair" dry wood and dual flute which is played by mouth and throat.

2. Born on 17th April, 1960, in village Moolsagar, Jaisalmer, Rajasthan, Shri Taga Ram started to learn Algoza at the age of 7 years from his father and himself while grazing cattles in Thar desert. After years and years of training, he got mastery in playing Algoza. One day Akbar Khan Rajdarbari Alamkhana and Late Shambhudan Ratnoo- Public Relation Officer-Jaisalmer came to his home and gave him an opportunity to play Algoza on the Independence Day of India in 1981, at Gopa chowk Jaisalmer. After this mesmerising performance, he got many opportunities to perform before Honourable President of India, Prime Minister and high level guests and tourists from the whole world.

3. Shri Taga Ram took training under Ustad Akbar Khan, Ustad Arba Music Institute, Jaisalmer. He received scholarship from Centre for Cultural and Training Resources, New Delhi in 1986. He has performed on the Rajasthan Day, Desert festival, Jaisalmer; Camel Car festival, Bikaner; Pushkar fair, Pushkar; Marwar festival & Jodhpur, Jaipur Shilpgram Mela, Udaipur, Long Rang Mahotsav Jaipur, Drums of India, New Delhi. He toured with the Musafir Group in International folklore festivals. He got invitation to perform in festival in France in 1996 organised by Rajasthan Tourism, Spain, Italy, Germany, Holland, Putugal Japan and Singapore and collaborated with Manuel Aguilar Beseacon France. He has toured with Ustad Arba Music Group in many festivals in USA such as Diwali Mela in Dallas, USA, International Festival in California USA and Catton Bowl Festival, USA in 2014 and 2017.

4. Shri Taga Ram is the recipient of numerous, awards/honours and appreciation certificates. He has received Maharawal Girdhar Award in 2013 by Maharawal Girdhar Trust, Jaisalmer; Marudhara Award in 2018 by Marudhara Sansthan, Kolkata; Aadivasi Samman, Rajasthan in 2019; Mahram Shri Sakar Khan Maganiyar award by Kamayacha Sansthan Jaisalmer, Amrit Ganga Award in 2023 by Amrit Gange, Rajasthan, Gaurav Sammen by Bhartiya Dalit Akadamy Rajasthan and Rajasthan Tourism Department Jaisalmer. He has also received appreciation certificates from Nehru Youth Centre, Jaisalmer, District Magistrate, Jaisalmer; South Zone Cultural Centre, Nagpur; West Zone Culture Centre, Udaipur Arid zone Forest Research Institute, Indian Council for Forestry Research & Education, Dehradun (2022) and Roma Cultural University, Jawahar Kala Kendra Jaipur, RANA Association, USA & Dallas Cultural Centre Texas, USA.

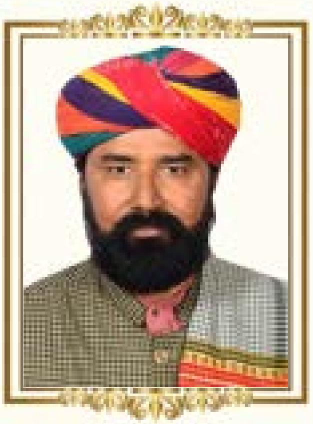

श्री तगा राम भील

श्री तगा राम भील, जैसलमेर, राजस्थान में अलगोजा लोक संगीत संस्थान, मूलसागर के निदेशक और संस्थापक और एक प्रसिद्ध पारंपरिक लोक संगीत कलाकार हैं। वह थार रेगिस्तान की लोक संगीत से जुड़ी बांसुरी, अर्थात– अलगोजा के पारंगत वादक है। अलगोजा को ''शीशम'' और ''कैर'' की सूखी लकड़ी से बनाया जाता है और इसमें दो बांसुरी जुड़ी होती है जिसे मुंह और गले से बजाया जाता है।

2. 17 अप्रैल, 1960 को राजस्थान के जैसलमेर जिले के मूलसागर गांव में जन्मे श्री तगा राम ने थार रेगिस्तान में मवेशियों को चराते समय अपने पिता और स्वयं से 7 वर्ष की आयु में अलगोजा वादन सीखना शुरू किया। वर्षों की साधना के बाद, इन्होंने अलगोजा बजाने में महारत हासिल कर ली। एक दिन अकबर खान राजदरबारी आलमखाना और जैसलमेर के जनसंपर्क अधिकारी स्वर्गीय शंभूदान रत्नु इनके घर आए और इन्हें वर्ष 1981 में भारत के स्वतंत्रता दिवस पर गोपा चौक जैसलमेर में अलगोजा वादन का अवसर प्रदान किया। इस मंत्रमुग्ध कर देने वाले प्रदर्शन के बाद इन्हें भारत के माननीय राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री और पूरी दुनिया से आए उच्च स्तरीय मेहमानों और पर्यटकों के सामने प्रदर्शन करने के कई अवसर प्राप्त हुए।

3. श्री तगा राम ने उस्ताद अकबर खान, उस्ताद अर्बा संगीत संस्थान, जैसलमेर के सान्निध्य में प्रशिक्षण प्राप्त किया। इन्हें वर्ष 1986 में सांस्कृतिक और प्रशिक्षण संसाधन केंद्र, नई दिल्ली से स्कॉलरशिप मिली। इन्होंने राजस्थान दिवस, डेजर्ट फेस्टिवल, जैसलमेर कैमल कार फेस्टिवल, बीकानेर; पुष्कर मेला, पुष्कर; मारवाड़ महोत्सव और जोधपुर, जयपुर शिल्पग्राम मेला, उदयपुर, लोंग रंग महोत्सव जयपुर, ड्रम्स ऑफ इंडिया, नई दिल्ली में कला का प्रदर्शन किया है। इन्होंने अंतर्राष्ट्रीय लोकगीत समारोहों में मुसाफिर समूह के साथ यात्राएं कीं। इन्हें वर्ष 1996 में राजस्थान पर्यटन, स्पेन, इटली, जर्मनी, हॉलैंड, पुर्तगाल, जापान और सिंगापुर द्वारा आयोजित फ्रांस में महोत्सव में प्रदर्शन करने का निमंत्रण मिला और इन्होंने मैनुअल एगुइलर बेसिकॉन फ्रांस के साथ मिलकर कला का प्रदर्शन किया। इन्होंने उस्ताद अर्बा म्यूजिक ग्रुप के साथ अमेरिका में कई उत्सवों, जैसे –डल्लास, संयुक्त राज्य अमेरिका में दिवाली मेला, कैलिफोर्निया, यूएसए में अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव तथा वर्ष 2014 और 2017 में कैटन बाउल फेस्टिवल, यूएसए में कला का प्रदर्शन किया है।

4. श्री तगा राम को अनेक पुरस्कारों/सम्मानो और प्रशंसा प्रमाण–पत्रों से सम्मानित किया गया है। इन्हें महारावल गिरधर ट्रस्ट, जैसलमेर द्वारा वर्ष 2013 में महारावल गिरधर पुरस्कार; मरूधरा संस्थान, कोलकाता द्वारा वर्ष 2018 में मरूधरा पुरस्कार; वर्ष 2019 में आदिवासी सम्मान, राजस्थान; कामयाचा संस्थान जैसलमेर द्वारा महरम श्री सकर खान मगनियार पुरस्कार, अमृत गंगे, राजस्थान द्वारा वर्ष 2023 में अमृत गंगा पुरस्कार, भारतीय दलित अकादमी राजस्थान द्वारा गौरव सम्मान और राजस्थान पर्यटन विभाग जैसलमेर द्वारा सम्मानित किया गया है। इन्हें नेहरू युवा केंद्र, जैसलमेर, जिला मजिस्ट्रेट, जैसलमेर दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, नागपुर; पश्चिम क्षेत्र संस्कृति केंद्र, उदयपुर शुष्क क्षेत्र वन अनुसंधान संस्थान, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून (2022) और रोमा सांस्कृतिक विश्वविद्यालय, जवाहर कला केंद्र जयपुर, आरएएनए एसोसिएशन, यूएसए और डलास कल्चरल सेंटर टेक्सास, यूएसए से प्रशस्ति प्रमाण–पत्र भी प्राप्त हुए हैं।

MS. HARMANPREET KAUR BHULLAR

Ms. Harmanpreet Kaur Bhullar is a distinguished sportsperson and an inspirational figure in Indian women's cricket.

2. Born on 8th March, 1989 in Punjab, Ms. Bhullar has emerged as one of the most dynamic and impactful cricketers of her generation. Through her exceptional leadership, consistent performances and fearless batting style, she has significantly contributed to elevating the stature of women's cricket both nationally and internationally.

3. Renowned for her aggressive stroke play and match-winning capabilities, Ms. Bhullar has represented India in multiple international tournaments across formats. Her remarkable innings on several global platforms have brought pride to the nation and inspired countless young girls to pursue cricket as a professional career. As a leader, she has demonstrated exemplary sportsmanship, resilience and strategic acumen, guiding her team through crucial international fixtures and tournaments.

4. Beyond her on-field achievements, Ms. Bhullar has been a strong advocate for women's empowerment in sports. Her journey from grassroots cricket in Punjab to captaining the national team reflects dedication, perseverance and unwavering commitment to excellence. She continues to serve as a role model for aspiring athletes across the country.

5. In recognition of her outstanding contribution to Indian cricket and her role in promoting women's participation in sports, Ms. Bhullar has earned widespread respect and admiration. Her achievements have not only strengthened India's presence in international cricket but have also contributed significantly to the growth and visibility of women's sports in the country.

सुश्री हरमनप्रीत कौर भुल्लर

सुश्री हरमनप्रीत कौर भुल्लर भारतीय महिला क्रिकेट में एक प्रतिष्ठित खिलाड़ी और एक प्रेरणादायक शख्सियत हैं।

2. 8 मार्च, 1989 को पंजाब में जन्मीं, सुश्री भुल्लर अपनी पीढ़ी की सबसे ऊर्जावान और प्रभावशाली क्रिकेटरों में से एक हैं। अपने असाधारण नेतृत्व, लगातार उत्कृष्ट प्रदर्शन और निडर बल्लेबाजी शैली के माध्यम से, उन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों स्तर पर महिला क्रिकेट की प्रतिष्ठा बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

3. अपने आक्रामक स्ट्रोक प्ले और मैच जीतने की क्षमताओं के लिए प्रसिद्ध, सुश्री भुल्लर ने विभिन्न फॉर्मेट में कई अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों में भारत का प्रतिनिधित्व किया है। कई वैश्विक मंचों पर उनकी उल्लेखनीय पारियों ने देश को गौरवान्वित किया है और अनगिनत युवा लड़कियों को क्रिकेट में करियर बनाने के लिए प्रेरित किया है। कप्तान के रूप में, उन्होंने अनुकरणीय खेल भावना, प्रतिरोधी क्षमता और रणनीतिक कौशल का प्रदर्शन कर, महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों और टूर्नामेंटों के माध्यम से अपनी टीम का मार्गदर्शन किया है।

4. खेल के मैदान पर प्राप्त उपलब्धियों के अतिरिक्त, सुश्री भुल्लर खेलों में महिला सशक्तिकरण की एक प्रबल समर्थक रही हैं। पंजाब में स्थानीय क्रिकेट से लेकर राष्ट्रीय टीम की कप्तानी तक की उनकी यात्रा समर्पण, दृढ़ता और उत्कृष्टता के प्रति अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाती है। वह देश भर के आकांक्षी खिलाड़ियों के लिए एक रोल मॉडल हैं।

5. भारतीय क्रिकेट में अपने उत्कृष्ट योगदान और खेलों में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने में अपनी भूमिका के माध्यम से, सुश्री भुल्लर ने अत्यधिक सम्मान और प्रशंसा अर्जित की है। उनकी उपलब्धियों ने न केवल अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में भारत की उपस्थिति को सुदृढ़ किया है, बल्कि देश में महिला खेलों के विकास और दृश्यता में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

SHRI RATILAL MOHANLAL BORISAGAR

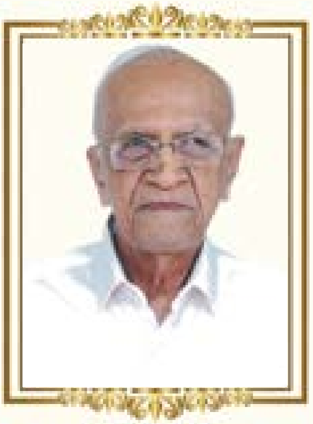

Shri Ratilal Mohanlal Borisagar is a famous Gujarati author known for comics and humour writing.

2. Born on 31st August, 1938 in a small town of Savarkundla district Amreli, Gujarat, Shri Borisagar's education qualifications are M.A., B.Ed., Ph.D. As a teacher, he taught at Primary, Secondary and College level from 1957-1974. Then he joined as Academic Secretary in Gujarat State Board of School Textbooks, Gandhinagar (1974). He retired as Deputy Director (Academic) in 1998 from the same institution.

3. Shri Borisagar began writing around 1955. He wrote short stories in the beginning, but then switched to writing essays in lighter vein. After the publication of his first book 'Marak Marak'(1977), he continued writing in lighter vein only. His books in lighter-vein are : 'Marak Marak (1977); Anand Lok (1983); Sambhavami Yuge Yuge (1994); Enjoygraphy (1997); Tilak Karata Tresath Thaya (2002); Gyn-thi-k (2004); Bhaj Anandam (2007); Amthu Amthu Kem Na Hasiye (2008); Aum Hasyam (2010); Bhadram Bhadra Amar Chee (2014); Moj-ma Rehvu Re (2017); Vinod-na Vaikuth-ma (2017); Tran Athvdiya Amerika-ma (2019); Ek nahi levayelo Interview (2022). He has also written a book of reminiscences 'kya chhe mari nadi' (2021). He has published eleven books of compilations (1998-2021). He has edited 33 old humours sotry books of Bakor Patel from the language point of view (2012-2013). Stories of Bakor Patel by Hariprasad Vyas were published seventy years ago, so needed to be revised to make them readable for Present day young readers. This work is first of its kind in Gujarati language. He has published two books for children : Mahabharat - na - Prasango (2002); Shresth Bal Rachnao (2007). He has published one book for child devlopment 'Bal Vandana' (1994). He has written a book of biography (1) Ramanbhai Nilkanth (2017) and one book of criticism 'Gujarati Pratikavyo' (2003). He worked as Joint editor of Gujarti monthly 'Akhand Anand' (1999-2005).

4. Shri Borisagar's contntribution in the field of education is also significant. He taught at Primary, Secondary and College level at Savarkundla (Amerli- Gujarat) for sixten years - 1957-1974. He left Savarkundla in 1974. After 36 years, his students of primary, Secondary and higher education established a foundation in 2011 for literary and educational activities in Savarkundla. In 2015, the foundation established a hospital 'Shri Lallubhai Sheth Arogaymandir' in Savarkundla. This is the unique hospital. It is totally free hospital. There is no charge for all tyes of treatment including operations and medicines. Nowadays Shri Borisagar teaches correct usage of mother tongue - Gujarati at the institution 'VISHAVKOSH' Ahmedabad. He also teaches the appreciation of a Short story, a poem – etc. to the students and another interested persons.

5. Shri Borisagar has received many awards and honours such as Jyotindra Dave Hasya Partisoshik - (1976-1977) for 'Mark Mark' (Gujarati Sahitya Parishad); Second Prize for 'Mark-Mark', 1977; first Prize for 'Anand Lok' 1983; first Prize for 'Enjoygraphy' 1997 by Gujarat Sahitya Akadami, Gandhinagar, Gujarat; Ghanshyamdas Saraf Sarvottam Sahitya Award for 'Enjoygraphy' (Marvadi Sammelan, Mumbai (1997); Dhanji Kanji Gandhi Gold Medal - 2002 (Gujarat Sahitya Sabha); First Prize for 'Tilak Karata Tresath Thaya' 2002 and First Prize for 'Gyn-thi-K" 2004 by Gujarat Sahitya Akadami, Gandhinagar, Gujarat; Kavi Dahyabhai Patel Sahitya Ratna Suvarn chandrak-2011; Sachchidanand Sanman-2011 (Gujarati Sahitya Parishad); 'Anantrai Raval Shikshk Award - 2015 (Gujarat Vishvkosh Trust' Ahmedabad); 'Narmad Paritoshik'-2017 (Maharashtra Rajya Gujarati Sahitya Akadami, Mumbai); Delhi Sahitya Akedemi Award 2019 for 'Mojma Rehvu Re' (2019).

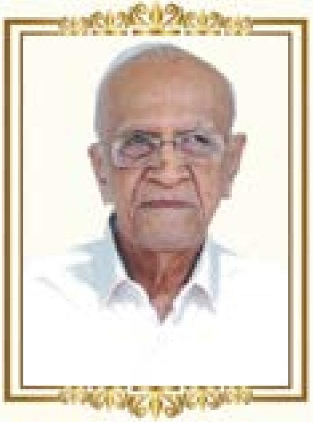

श्री रतिलाल मोहनलाल बोरीसागर

श्री रतिलाल मोहनलाल बोरीसागर एक प्रसिद्ध गुजराती लेखक हैं जो कॉमिक्स और हास्य लेखन के लिए प्रसिद्ध हैं।

2. 31 अगस्त, 1938 को गुजरात के अमरेली जिले के सावरकुंडला नामक छोटे से शहर में जन्मे, श्री बोरीसागर ने एम.ए., बी.एड, पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है। अध्यापक के रूप में इन्होंने वर्ष 1957 से 1974 तक प्राथमिक, माध्यमिक और महाविद्यालय स्तर पर अध्यापन का कार्य किया। इसके उपरांत, इन्होंने वर्ष 1974 में गुजरात राज्य विद्यालय पाठ्यपुस्तक बोर्ड, गांधीनगर में शैक्षणिक सचिव के रूप में कार्य किया। वह वर्ष 1998 में उसी संस्थान से उप निदेशक (शैक्षणिक) के पद से सेवानिवृत्त हुए।

3. श्री बोरीसागर ने लगभग वर्ष 1955 में लेखन कार्य आरंभ किया। इन्होंने शुरुआत में लघु कथाएँ लिखीं, लेकिन फिर सहज–सरल शैली में निबंध लिखना शुरू किया। अपनी पहली पुस्तक 'मरक मरक' (1977) के प्रकाशन के बाद, वह केवल सहज–सरल शैली में लेखन कार्य करते रहे। इनकी इस शैली में लिखी गई पुस्तकें हैं: 'मरक मरक (1977); आनंद लोक (1983); सम्भवामी युगे युगे (1994); एन्जॉयग्राफी (1997); तिलक करतां त्रेसठ थयां (2002); ग्यन–थी–के (2004); भज आनंदम (2007); आमथू आमथू केम ना हसीये (2008); औम हास्यम (2010); भद्रम भद्रा अमर ची (2014); मोज–मा रेवु रे (2017); विनोद–ना वैकुंठ–मा (2017); त्रान अथवदिया अमेरिका–मा (2019); एक नहीं लेवायेलो इंटरव्यू (2022)। इन्होंने एक स्मृति–ग्रंथ 'क्या छे मारी नदी' (2021) भी लिखी है। इन्होंने वर्ष 1998 से 2021 के बीच संकलन वाली ग्यारह पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इन्होंने वर्ष 2012–2013 में बाकोर पटेल की 33 पुरानी हास्य कथा पुस्तकों का भाषा के दृष्टिकोण से संपादन कार्य किया है। हरिप्रसाद व्यास द्वारा बकोर पटेल की कहानियाँ सत्तर साल पहले प्रकाशित हुई थीं, इसलिए इन्हें वर्तमान युवा पाठकों के लिए पठनीय बनाने हेतु संशोधित करने की आवश्यकता थी। गुजराती भाषा में यह अपनी तरह का पहला काम है। इन्होंने बच्चों के लिए दो पुस्तकें: वर्ष 2002 में महाभारत–ना–प्रसंगो; वर्ष 2007 में श्रेष्ठ बाल रचनाओ प्रकाशित की हैं। इन्होंने बाल विकास के लिए एक पुस्तक 'बाल वंदना' (1994) प्रकाशित की है। इन्होंने एक जीवनी रामनभाई नीलकंठ (2017) और समालोचना पर एक पुस्तक 'गुजराती प्रतीकव्यो' (2003) लिखी है। इन्होंने वर्ष 1999 से 2005 तक गुजराती मासिक 'अखंड आनंद' के संयुक्त संपादक के रूप में कार्य किया।

4. शिक्षा के क्षेत्र में श्री बोरीसागर का योगदान भी महत्वपूर्ण है। इन्होंने सावरकुंडला (अमेरली–गुजरात) में वर्ष 1957 से लेकर वर्ष 1974 तक प्राथमिक, माध्यमिक और महाविद्यालय स्तर पर सोलह वर्षों तक अध्यापन कार्य किया। इन्होंने वर्ष 1974 में सावरकुंडला छोड़ दिया। 36 वर्ष बाद, प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा के उनके छात्रों ने वर्ष 2011 में सावरकुंडला में साहित्यिक और शैक्षिक गतिविधियों के लिए प्रतिष्ठान की स्थापना की। वर्ष 2015 में, इस प्रतिष्ठान ने सावरकुंडला में एक चिकित्सालय 'श्री लल्लूभाई सेठ आरोग्यमंदिर' की स्थापना की। यह एक अनोखा चिकित्सालय है। यह पूरी तरह से निःशुल्क चिकित्सालय है। यहां ऑपरेशन और दवाओं सहित सभी प्रकार के उपचार निःशुल्क किए जाते हैं। आजकल वह 'विश्वकोश' अहमदाबाद संस्थान में मातृभाषा–गुजराती के सही प्रयोग की शिक्षा देते हैं। वह छात्रों और अन्य इच्छुक व्यक्तियों को लघु कहानी, कविता आदि को समझने, उसका रस लेने और आलोचनात्मक मूल्यांकन करने में भी सहायता करते हैं।

5. श्री बोरीसागर को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं, जैसे कि– 'मरक मरक' (गुजराती साहित्य परिषद) के लिए ज्योतिंद्र दवे हास्य पारितोषिक – (1976–1977); वर्ष 1977 में 'मरक–'मरक' के लिए दूसरा पुरस्कार; वर्ष 1983 में 'आनंद लोक' के लिए प्रथम पुरस्कार; गुजरात साहित्य अकादमी, गांधीनगर, गुजरात द्वारा वर्ष 1997 में 'एनजॉयग्राफी' के लिए प्रथम पुरस्कार; वर्ष 1997 में मारवाड़ी सम्मेलन, मुंबई में 'एनजॉयग्राफी' के लिए घनश्यामदास सराफ सर्वोत्तम साहित्य पुरस्कार; वर्ष 2002 में गुजरात साहित्य सभा से धनजी कांजी गांधी स्वर्ण पदक; वर्ष 2002 में 'तिलक करतां त्रेसठ थयां' के लिए प्रथम पुरस्कार और वर्ष 2004 में गुजरात साहित्य अकादमी, गांधीनगर, गुजरात द्वारा 'ग्यन–थी–के" के लिए प्रथम पुरस्कार; वर्ष 2011 में कवि दह्याभाई पटेल साहित्य रत्न सुवर्ण चंद्रक; वर्ष 2011 में गुजराती साहित्य परिषद से सच्चिदानंद सम्मान; वर्ष 2015 में गुजरात विश्वकोश ट्रस्ट अहमदाबाद से अनंतराय रावल शिक्षक पुरस्कार; वर्ष 2017 में महाराष्ट्र राज्य गुजराती साहित्य अकादमी, मुंबई से 'नर्मद पारितोषिक'; वर्ष 2019 में 'मोजमा रेवु रे' के लिए दिल्ली साहित्य अकादमी पुरस्कार 2019।

SHRI KUMAR BOSE

Shri Kumar Bose is one of the most revered exponents of the tabla in contemporary Indian classical music. His artistry, scholarship and lifelong dedication have profoundly enriched the rhythmic tradition of Hindustani music. A foremost torchbearer of the Banaras Gharana, he represents an unbroken lineage marked by aesthetic depth, intellectual rigor, and uncompromising discipline.

2. Born on 4th April, 1954 into a distinguished musical family, Shri Bose is the son of the legendary tabla maestro Acharya Biswanath Bose and a disciple of one of the most influential figures of the Banaras Gharana in the twentieth century, Padma Vibhushan awardee Pandit Kishan Maharaj. Trained rigorously under his father's exacting guidance and later under his Guru, he imbibed not only the technical brilliance of the gharana but also its philosophical approach, where rhythmic complexity is balanced with grace, restraint and deep emotional resonance. Over decades of dedicated riyaaz and performance, he evolved a style marked by crystalline clarity, architectural precision and an unmistakable Banaras aesthetic.

3. Shri Bose has been a highly sought-after accompanist to many of India's most eminent vocalists and instrumentalists, contributing with rare sensitivity and authority to performances across the globe. His accompaniment is distinguished by melodic imagination, tonal richness and an intuitive understanding of raga and layakari, earning him recognition as a musician's musician. His solo performances are equally celebrated for their intellectual depth, powerful compositional structures and mastery over traditional forms such as Peshkar, kayda, rela, gat and tukra.

4. Beyond the concert stage, Shri Bose's contribution as a guru is of exceptional national importance. He has shaped generations of tabla players by combining traditional guru-shishya pedagogy with academic rigor. His teaching emphasizes not only technical virtuosity but also aesthetics, discipline, humility and respect for the parampara. Many of his disciples today are respected performers, educators and ambassadors of Indian rhythm across the world. He has also played a crucial role in preserving and transmitting the compositional wealth of the Banaras Gharana, ensuring that rare bandishes, stylistic nuances, and oral traditions are passed on authentically to future generations.

5. Shri Bose's quiet dignity, ethical integrity, and unwavering commitment to classical values have earned him Top Grade status in All India Radio, the Sangeet Natak Akademi Puraskar and the Pandit Dinanath Mangeshkar Award along with immense respect within the artistic community.

श्री कुमार बोस

श्री कुमार बोस समकालीन भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक सबसे सम्मानित तबला कलाकार हैं। उनकी कलात्मकता, विद्वत्ता और आजीवन समर्पण ने हिंदुस्तानी संगीत की लयबद्ध परंपरा को अत्यंत समृद्ध बनाया है। वह बनारस घराने के एक प्रमुख प्रणेता हैं, सौंदर्य की गहराई, बौद्धिक अभ्यास और दृढ़ अनुशासन वाली एक अंखड परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

2. 4 अप्रैल, 1954 को एक प्रतिष्ठित संगीत परिवार में जन्मे, श्री बोस महान तबला वादक आचार्य विश्वनाथ बोस के पुत्र और बीसवीं शताब्दी में बनारस घराने के सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक पद्‌म विभूषण पुरस्कार से सम्मानित पंडित किशन महाराज के शिष्य हैं। अपने पिता के अनुशासित मार्गदर्शन में और बाद में अपने गुरु के द्वारा प्रशिक्षित, उन्होंने न केवल अपनी उस घराने की तकनीकी निपुणता को और दार्शनिक दृष्टिकोण को भी आत्मसात किया, जिसमें लयबद्ध जटिलता को गरिमा, संयम और गहरी भाव प्रखरता के साथ संतुलित किया जाता है। दशकों से निरंतर अभ्यास और प्रदर्शन से, उन्होंने अत्यंत स्पष्टता, कृति परिशुद्धता और बनारस के सटीक सौंदर्यशास्त्र वाली शैली विकसित की।

3. श्री बोस भारत के कई प्रतिष्ठित गायकों और वादकों के लिए अत्यधिक मांग में रहने वाले संगतकार रहे हैं, जिन्होंने दुनिया भर में अपनी प्रस्तुति में विरल संवेदनशीलता और निपुणता द्वारा योगदान दिया है। उनकी संगत संगीतमय कल्पना, स्वर समृद्धि और राग और लयकारी की सहज समझ से रची–बसी है, जिससे उन्हें संगीतज्ञों के संगीतकार के रूप में पहचान मिली। उनकी एकल प्रस्तुतियों में बौद्धिक गहराई, सशक्त रचना कौशल और पेशकार, कायदा, रेला, गत और टुकड़ा जैसे पारंपरिक रूपों में उनकी महारत झलकती हैं।

4. मंच प्रस्तुतियों से परे, एक गुरु के रूप में श्री बोस का योगदान असाधारण रूप से राष्ट्रीय महत्व का है। उन्होंने पारंपरिक गुरु–शिष्य शिक्षाशास्त्र को अकादमिक अनुभव के साथ जोड़कर कई पीढ़ियों के तबला वादकों की कला से संवारा है। उनकी शिक्षा न केवल तकनीकी कौशल बल्कि सौंदर्यशास्त्र, अनुशासन, विनम्रता और परंपरा के प्रति सम्मान पर भी जोर देती है। उनके कई शिष्य आज सम्मानित कलाकार, शिक्षक और दुनिया भर में भारतीय संस्कृति के वाहक हैं। उन्होंने बनारस घराने के रचनात्मक ज्ञान को संरक्षित करने और आगे प्रसारित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने सुनिश्चित किया है कि दुर्लभ बंदिशें, शैलीगत बारीकियां और मौखिक परंपराएं प्रामाणिक रूप से भावी पीढ़ियों तक पहुंचाई जाएं।

5. श्री बोस की पूर्ण गरिमा, नैतिक निष्ठा और शास्त्रीय मूल्यों के प्रति अटूट प्रतिबद्धता ने उन्हें ऑल इंडिया रेडियो में टॉप ग्रेड की प्रतिष्ठा, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार और पंडित दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार के साथ–साथ कलाकारों के बीच अपार सम्मान प्रदान किया है।

SHRI JANARDAN BAPURAO BOTHE

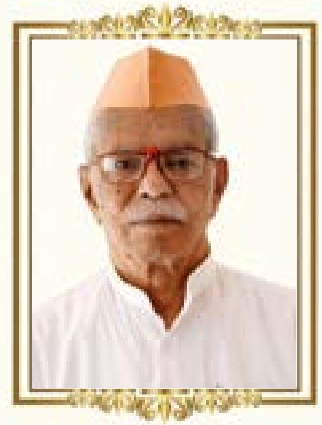

Shri Janardan Bapurao Bothe is an eminent social worker. As the General Secretary of the All-India Shri Gurudev Seva Mandal at the sacred Gurukunj Ashram, founded by Revered Rashtra Sant Shri Tukdoji Maharaj, he has served for over two decades, dedicating his life to the holistic upliftment of all sections of society across rural Maharashtra and throughout the nation.

2. Born on 25th November, 1939 in Gogari village in Washim District, Maharashtra, Shri Bothe was the follower of Revered Rashtra Sant Shri Tukdoji Maharaj. He first joined as a student and later as a dedicated sevak (service worker) in the Seva Mandal. After completing his Matriculation in 1958 and subsequently, acquiring professional certifications in Photography, Music, Stenography, and Typing. In 1960, Shri Bothe served as the full-time personal secretary to Revered Rashtra Sant Shri Tukdoji Maharaj, carrying out diverse responsibilities with deep devotion. His duties included bhajan seva, correspondence, planning tours and public programs, photography and audio recording of events, managing appointments and attending to Maharaj's diet and health. He accompanied Rashtra Sant Shri Tukdoji Maharaj to several important locations across India. In 1961, he rendered dedicated service during the 30-day Kisan Rail Yatra. In 1962, he also participated in a bhajan program at the NEFA border, aimed at boosting the morale of the Indian Armed Forces and strengthening national spirit.

3. Shri Bothe accompanied Rashtra Sant Shri Tukdoji Maharaj on significant visits across India, including Goa, Rashtrapati Bhavan, major Kumbh Melas, Sadhu Sammelans, the founding meeting of the Vishwa Hindu Parishad in Mumbai, the Ashadhi Wari to Pandharpur and the Narayana Guru Sansthan in Kerala in the mid-1960s. Entrusted by Rashtra Sant Shri Tukdoji Maharaj, he served as Hostel Superintendent of Shri Gurudev Manavseva Chhatralaya at Gurukunj Ashram. In 1972, he founded the Rashtra Sant Shri Tukdoji Maharaj Shikshan Sanstha, under which eleven schools and hostels were established in tribal and underprivileged areas. Through free education and life-skill training, thousands of Dalits, Adivasi and economically weaker students were empowered. Revered as "Dalit Mitra," he is respected for leading initiatives such as Gram Geeta-based campaigns, de-addiction programs, health camps and value-based education.

4. Since 2001, Shri Bothe, as General Secretary of the All-India Shri Gurudev Seva Manda, has led extensive service initiatives through over 10,000 rural branches, women's groups and youth organizations. His work promotes community development, spiritual awareness, Gram Geeta philosophy, environmental conservation and cultural unity, reflecting a deep commitment to holistic nation-building. Guided by the ideals of Rashtra Sant Shri Tukdoji Maharaj, he has strengthened grassroots movements focused on cleanliness, equality, character building and national integration. Under his leadership, Shri Kshetra Gurukunj Ashram has become a center of holistic development and moral renewal.

5. In 1992, Shri Bothe was honored with the Dr. Babasaheb Ambedkar Dalit Mitra Sanstha Award. In 2008, the All-India Maratha Seva Sangh - Akola Division conferred upon him the Maratha Vidarbha Bhushan Award in recognition of his role as an outstanding publisher of the All-India Shri Gurudev Seva Mandal. For his consistent efforts in promoting and propagating the literature and philosophy of Revered Rashtra Sant Shri Tukdoji Maharaj, Amravati University honoured him with a commemorative memento.

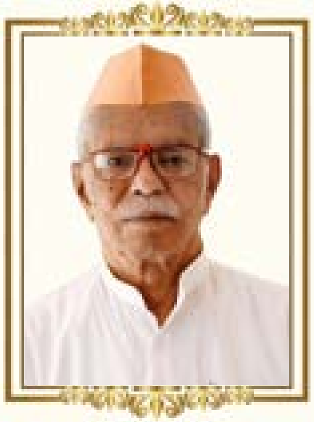

श्री जनार्दन बापूराव बोथे

श्री जनार्दन बापूराव बोथे एक प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ता है। पूज्य राष्ट्र संत श्री तुकडोजी महाराज द्वारा स्थापित पवित्र गुरुकुंज आश्रम में अखिल भारतीय श्री गुरुदेव सेवा मंडल के महासचिव के रूप में, उन्होंने दो दशकों से अधिक समय तक सेवा की है तथा अपना जीवन ग्रामीण महाराष्ट्र और पूरे देश में समाज के सभी वर्गों के समग्र उत्थान के लिए समर्पित किया है।

2. 25 नवंबर, 1939 को महाराष्ट्र के वाशिम जिले के गोगरी गांव में जन्मे, श्री बोथे, श्रृद्धेय राष्ट्र संत श्री तुकडोजी महाराज के अनुयायी थे। वह सबसे पहले एक छात्र के रूप में और बाद में सेवा मंडल में एक समर्पित सेवक के रूप में शामिल हुए। उन्होंने 1958 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की और इसके बाद 1960 में फोटोग्राफी, संगीत, आशुलिपि और टंकण में व्यावसायिक प्रमाणन प्राप्त किया। उन्होंने श्रृद्धेय राष्ट्र संत श्री तुकडोजी महाराज के पूर्णकालिक व्यक्तिगत सचिव के रूप में सेवा की और पूरी निष्ठा के साथ विविध जिम्मेदारियां निभाई। उनके कर्तव्यों में भजन सेवा, पत्राचार, पर्यटन और सार्वजनिक कार्यक्रमों की योजना बनाना, घटनाओं की फोटोग्राफी और ऑडियो रिकॉर्डिंग, नियोजित भेंटों का प्रबंधन और महाराज के आहार और स्वास्थ्य पर ध्यान देना शामिल था। उन्होंने राष्ट्र संत श्री तुकडोजी महाराज के साथ भारत भर में कई महत्वपूर्ण स्थानों की यात्रा की। वर्ष 1961 में, उन्होंने 30–दिवसीय किसान रेल यात्रा के दौरान समर्पित सेवा प्रदान की। 1962 में, उन्होंने भारतीय सशस्त्र बलों के मनोबल को बढ़ाने और राष्ट्रीय भावना को मजबूत करने के उद्देश्य से नेफा सीमा पर एक भजन कार्यक्रम में भी भाग लिया।

3. श्री बोथे ने राष्ट्र संत श्री तुकडोजी महाराज के साथ गोवा, राष्ट्रपति भवन, प्रमुख कुंभ मेलों, साधु सम्मेलनों, मुंबई में विश्व हिंदू परिषद की स्थापना बैठक, पंढरपुर की आषाढ़ी वारी और 1960 के दशक के मध्य में केरल में नारायण गुरु संस्थान सहित पूरे भारत में महत्वपूर्ण यात्राओं में साथ दिया। राष्ट्र संत श्री तुकडोजी महाराज द्वारा सौंपे गए कार्यों में, उन्होंने गुरुकुंज आश्रम में श्री गुरुदेव मानवसेवा छात्रालय के छात्रावास अधीक्षक के रूप में कार्य किया। 1972 में, उन्होंने राष्ट्र संत श्री तुकडोजी महाराज शिक्षण संस्थान की स्थापना की, जिसके तहत आदिवासी और वंचित क्षेत्रों में ग्यारह स्कूल और छात्रावास स्थापित किए गए। मुफ्त शिक्षा और जीवन–कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से, हजारों दलित, आदिवासी और आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को सशक्त बनाया गया। "दलित मित्र" के रूप में सम्मानित, उनको ग्राम गीता–आधारित अभियानों, नशा मुक्ति कार्यक्रमों, स्वास्थ्य शिविरों और मूल्य–आधारित शिक्षा जैसी पहलों के लिए सम्मानित किया गया है।

4. वर्ष 2001 से, श्री बोथे, अखिल भारतीय श्री गुरुदेव सेवा मंडा के महासचिव के रूप में, 10,000 से अधिक ग्रामीण शाखाओं, महिला समूहों और युवा संगठनों के माध्यम से व्यापक सेवा पहलों का नेतृत्व कर रहे हैं। उनका काम सामुदायिक विकास, आध्यात्मिक जागरूकता, ग्राम गीता दर्शन, पर्यावरण संरक्षण और सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देता है, जो समग्र राष्ट्र निर्माण के प्रति गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। राष्ट्र संत श्री तुकडोजी महाराज के आदर्शों से निर्देशित होकर उन्होंने स्वच्छता, समानता, चरित्र निर्माण और राष्ट्रीय एकता पर केंद्रित जमीनी आंदोलनों को मजबूत किया है। उनके नेतृत्व में श्री क्षेत्र गुरुकुंज आश्रम समग्र विकास और नैतिक नवीनीकरण का केंद्र बन गया है।

5. श्री बोथे को वर्ष 1992 में डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर दलित मित्र संस्था पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 2008 में अखिल भारतीय मराठा सेवा संघ – अकोला डिवीजन ने उन्हें अखिल भारतीय श्री गुरुदेव सेवा मंडल के एक उत्कृष्ट प्रकाशक के रूप में उनकी भूमिका की मान्यता में मराठा विदर्भ भूषण पुरस्कार प्रदान किया। श्रद्धेय राष्ट्र संत श्री तुकडोजी महाराज के साहित्य और दर्शन को बढ़ावा देने और प्रचारित करने के लिए उनके लगातार प्रयासों के लिए अमरावती विश्वविद्यालय ने उन्हें एक स्मारक स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया।

SWAMI BRAHAMDEV

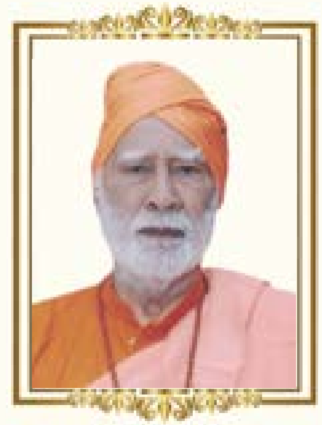

Swami Brahamdev is a revered saint, spiritual guide and visionary social reformer of Sri Ganganagar, Rajasthan. He is widely respected for his lifelong dedication to spirituality, service and the upliftment of especially-abled children. His divine inspiration and compassionate leadership continue to transform thousands of lives through education, healthcare and rehabilitation initiatives in last 45 years. He is not only known for his spiritual teachings but also for his remarkable contribution to social welfare. His mission is rooted in the belief that every human being deserves dignity, equal opportunities and a life of self-reliance.

2. Born on 4th May, 1944, Swami Brahamdev after completion of primary education at the age of 16 years, took the spiritual path under Satguru Swami Karnail Dass Ji. During spiritual practice while completing Bachelor Degree at college in Amritsar which was adjacent to a blind school, being compassionate with blind children, he decided to dedicate his life for upliftment of specially-abled children.

3. A major milestone in Swami Brahamdev's inspiring journey was establishment of Shri Jagdamba Sanstha, when foundation stone was laid down of Shri Jagdamba Andh Vidyalaya in Sri Ganganagar in 1980. This institution provides free education, hostel facilities and essential support to visually impaired students since 1980. Under his guidance, the Sanstha expanded its activities in the field of disability welfare and social service, which led to the establishment and growth of several important service institutions as Shri Jagdamba Deaf and Dumb School, to eradicate blindness due to cataract in Shri Jagdamba Charitable Eye Hospital which was inaugurated by the then Hon'ble Prime Minister Shri P.V.Narsimharao and Shri Jagdamba Viklang Rehabilitation Sansthan providing artificial limbs. These institutions provide education, medical treatment, rehabilitation services and vocational training to the needy and differently-abled. The Charitable Eye hospital covers Bikaner Division and adjoining states to provide free cataract surgery to poor & needy patients.

4. The remarkable work carried out under Swami Brahamdev's inspiration has received prestigious recognition. In 1989, the Sanstha received a State Level Award from the Social Welfare Department, Jaipur and above all in 1996, the organization was honoured with the National Award for Best Organization for Viklang Kalyanarth Sarvsresth Swayamsewi Sanstha by the Government of India which was presented by the then Hon'ble President of India Dr. Shankar Dayal Sharma.

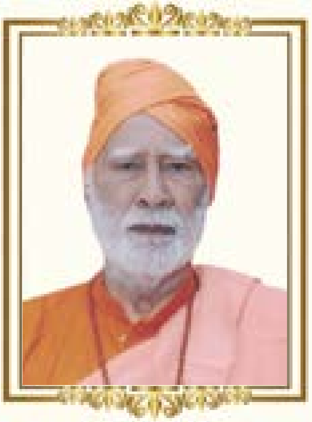

स्वामी ब्रह्मदेव

स्वामी ब्रह्मदेव राजस्थान के श्री गंगानगर के श्रद्धेय संत, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी समाज सुधारक हैं। वह आध्यात्मिकता, सेवा और विशेष रूप से सक्षम बच्चों के उत्थान के प्रति अपने आजीवन समर्पण के लिए व्यापक रूप से सम्मानीय हैं। उनकी दिव्य प्रेरणा और करुणामय नेतृत्व ने पिछले 45 वर्षों में शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और पुनर्वास पहल के माध्यम से हजारों लोगों के जीवन को बदल दिया है। वह अपनी आध्यात्मिक शिक्षाओं के साथ–साथ सामाजिक कल्याण में अपने उल्लेखनीय योगदान के लिए भी जाने जाते हैं। उनका मिशन इस विश्वास पर आधारित है कि प्रत्येक मनुष्य गरिमा, समान अवसरों और आत्मनिर्भर जीवन का हकदार है।

2. 4 मई, 1944 को जन्मे, स्वामी ब्रह्मदेव 16 वर्ष की आयु में प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद सतगुरु स्वामी करनैल दास जी के मार्गदर्शन में आध्यात्मिक मार्ग पर चल पड़े। अमृतसर के एक अंध विद्यालय से सटे कॉलेज में स्नातक की डिग्री पूरी करते समय आध्यात्मिक साधना के दौरान, नेत्रहीन बच्चों के प्रति दया भाव दिखाते हुए, उन्होंने विशेष रूप से सक्षम बच्चों के उत्थान के लिए अपना जीवन समर्पित करने का निर्णय किया।

3. स्वामी ब्रह्मदेव की प्रेरणादायक यात्रा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि श्री जगदंबा संस्था की स्थापना थी, जब 1980 में श्री गंगानगर में श्री जगदंबा अंध विद्यालय की आधारशिला रखी गई थी। यह संस्थान 1980 से दृष्टिबाधित छात्रों को मुफ्त शिक्षा, छात्रावास की सुविधा और आवश्यक सहायता प्रदान करता है। उनके मार्गदर्शन में संस्था ने विकलांग कल्याण और सामाजिक सेवा के क्षेत्र में अपनी गतिविधियों का विस्तार किया, जिसके परिणामस्वरूप कई महत्वपूर्ण सेवा संस्थानों की स्थापना और विकास हुआ, जैसे श्री जगदम्बा बधिर और मूक स्कूल, मोतियाबिंद के कारण होने वाले अंधेपन को खत्म करने के लिए, श्री जगदम्बा चौरिटेबल आई हॉस्पिटल जिसका उद्घाटन तत्कालीन माननीय प्रधान मंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हाराव ने किया और कृत्रिम अंग प्रदान करने वाला श्री जगदम्बा विकलांग पुनर्वास संस्थान। ये संस्थान जरूरतमंदों और दिव्यांगजनों को शिक्षा, चिकित्सा उपचार, पुनर्वास सेवाएं और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। धर्मार्थ नेत्र अस्पताल बीकानेर मंडल और आसपास के राज्यों को सेवाएं प्रदान करता है जिससे गरीब और जरूरतमंद रोगियों की मोतियाबिंद की मुफ्त सर्जरी की जा सके।

4. स्वामी ब्रह्मदेव की प्रेरणा से किए गए उल्लेखनीय कार्य को प्रतिष्ठित मान्यता प्राप्त हुई है। 1989 में, संस्था को सामाजिक कल्याण विभाग, जयपुर से राज्य स्तरीय पुरस्कार मिला और सबसे बढ़कर 1996 में, संगठन को भारत सरकार द्वारा विकलांग कल्याणार्थ सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेवी संस्था के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया, जिसे भारत के तत्कालीन माननीय राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा ने प्रदान किया था।

SHRI PROSENJIT CHATTERJEE

Shri Prosenjit Chatterjee, affectionately known to millions as Bumba Da, is one of the most influential figures in Indian cinema and a living chronicle of Bengali filmmaking. With a career spanning more than four decades and over 400 films, he has travelled through every phase of the industry—from the echoes of black-and-white storytelling to the golden age of mainstream commercial success.

2. Born on 30th September, 1961, during the 1990s and early 2000s, Shri Chatterjee emerged as the undisputed romantic and mass hero of Bengali cinema. He began his journey as a child artist in Chotto Jigyasa in 1968 under the guidance of Hrishikesh Mukherjee, earning the Bengal Film Journalists' Association Award for Most Outstanding Work of the Year in 1969. Films such as Protibaad, Shoshur Bari Zindabad, Amar Sangi and Bhai Amar Bhai transformed him into a household name and the most beloved leading man of his generation. His iconic on-screen partnership with Rituparna Sengupta, spanning more than fifty films, defined an era of popular Bengali cinema. Many of these films enjoyed historic theatrical runs, reflecting his deep emotional connection with audiences across regions and generations.

3. With Rituparno Ghosh's Chokher Bali (2003), a decisive artistic turning point arrived in the film journey of Shri Chatterjee which brought national recognition and international festival attention. Through subsequent performances in Khela, Shob Charitro Kalponik, and Dosar, along with Swapner Din by Buddhadeb Dasgupta and Moner Manush directed by Goutam Ghose, Shri Chatterjee revealed a refined, introspective performer of exceptional depth. His role in Dosar earned the National Film Award - Special Jury Award, affirming his stature as a serious actor of national importance. Over time, he became associated with several National Award-winning films, including Mayurakshi and Jyeshthoputro, further strengthening his place in Indian cinematic excellence. His collaborations with filmmakers such as Srijit Mukherji in Autograph and Jaatishwar, as well as with Kaushik Ganguly and Atanu Ghosh, helped reshape modern Bengali storytelling by bridging artistic sensitivity with mainstream appeal.

4. In the digital era, Shri Chatterjee successfully reinvented himself through Hindi streaming projects like Jubilee, Scoop and Khakee: The Bengal Chapter, reaching new audiences across India. Across decades, he has worked with distinguished Directors including Buddhadeb Dasgupta, Tapan Sinha, Tarun Majumdar, Anjan Choudhury, Swapan Saha, Goutam Ghose, Rituparno Ghosh, Kaushik Ganguly, Srijit Mukherjee, Atanu Ghosh, Vikramaditya Motwane, Hansal Mehta and Dibakar Banerjee and has appeared alongside leading actors such as Juhi Chawla, Rani Mukherjee, Bipasha Basu, Preity Zinta, Manisha Koirala, Aishwarya Rai, Neelam, Ayesha Jhulka, and Kalki Koechlin.

5. From matinee idol to globally respected performer, Shri Chatterjee's journey reflects constant evolution, discipline and creative courage. Today, he stands not only as a celebrated actor but as an institution in Bengali cinema—an enduring symbol of dedication, reinvention and cinematic excellence whose legacy continues to inspire generations. He portrayed memorable roles in Jubilee, Shesh Pata, Devi Chowdhurani, Gumnaami, Jyeshthoputro, Chokher Bali, Swapner Din, Saasurbari Zindabad, Autograph, Jalsaghar, Dosar, Moner Manush, Baishe Srabon, Jaatishwar, Shankhachil and Mayurakshi.

6. Shri Chatterjee received the National Film Award for Dosar and featured in National Award-winning films including Chokher Bali, Shankhachil, Mayurakshi, Jyeshthoputro and Kaberi Antardhan. He has been honoured with Mohanayak Somman, Banga Bibhushan, WBFJA, multiple BFJA, 5 Filmfare and multiple Anandalok Awards.

श्री प्रोसेनजित चटर्जी

श्री प्रोसेनजित चटर्जी, जिन्हें लाखों लोग प्यार से बुम्बा दा के नाम से जानते हैं, भारतीय सिनेमा के सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक हैं और बंगाली फिल्म निर्माण का एक जीवंत इतिहास हैं। चार दशक से अधिक की फिल्मी यात्रा में 400 से अधिक फिल्मों के साथ, उन्होंने ब्लैक एंड व्हाइट कहानियों से लेकर मुख्यधारा की व्यावसायिक सफलता के स्वर्ण युग तक, फिल्मी उद्योग के प्रत्येक दौर को देखा।

2. 30 सितंबर, 1961 को जन्मे, श्री चटर्जी 1990 के दशक और 2000 के दशक की शुरुआत में बंगाली सिनेमा के निर्विवाद रोमांटिक और जन नायक के रूप में उभरे। उन्होंने ऋषिकेश मुखर्जी की छत्रछाया में वर्ष 1968 में छोटो जिज्ञासा में एक बाल कलाकार के रूप में अपनी यात्रा शुरू की, जिसके लिए उन्हें वर्ष 1969 में सबसे उत्कृष्ट कार्य के लिए बंगाल फिल्म जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन अवार्ड से सम्मानित किया गया। प्रोतिबाद, शोशूर बाड़ी जिंदाबाद, अमर संगी और भाई अमर भाई जैसी फिल्मों ने उन्हें घर–घर में लोकप्रिय बनाया और वह अपनी पीढ़ी के सबसे चहेते अभिनेता बन गए। पचास से अधिक फिल्मों में ऋतुपर्णा सेनगुप्ता के साथ उनकी प्रसिद्ध ऑन–स्क्रीन साझेदारी ने लोकप्रिय बंगाली सिनेमा के युग को परिभाषित किया। इनमें से कई फिल्मों ने थियेटरों में इतिहास रच दिया, जो सभी क्षेत्रों और पीढ़ियों के दर्शकों के साथ उनके गहरे भावनात्मक संबंध को दर्शाता है।

3. ऋतुपर्णो घोष की चोखेर बाली (वर्ष 2003) से श्री चटर्जी की अभिनय यात्रा में एक निर्णायक कलात्मक मोड़ आया तथा उन्हें राष्ट्रीय पहचान और अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों में ख्याति मिली। बाद में खेला, शोब चरित्रो कल्पोनिक और दोसर के साथ–साथ बुद्धदेव दासगुप्ता की स्वप्नेर दिन और गौतम घोष द्वारा निर्देशित मोनेर मानुष में अभिनय ने उन्हें एक मंझे हुए और गंभीर अभिनेता के रूप में स्थापित किया। 'दोसर' में उनकी भूमिका के लिए उन्हें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार – विशेष जूरी पुरस्कार प्राप्त हुआ और वह राष्ट्रीय स्तर के एक परिपक्व अभिनेता बन गए। समय के साथ, उन्होंने मयूराक्षी और ज्येष्ठपुत्रो सहित कई राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्मों में अभिनय किया और भारतीय सिनेमा में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की। उन्होंने ऑटोग्राफ और जातीश्वर में श्रीजीत मुखर्जी के साथ–साथ कौशिक गांगुली और अतनु घोष जैसे फिल्म निर्माताओं के साथ मिलकर कलात्मक संवेदनशीलता को मुख्यधारा से जोड़कर आधुनिक बंगाली कहानी कला को नया रूप दिया ।

4. डिजिटल युग में, श्री चटर्जी ने जुबली, स्कूप और खाकीरू द बंगाल चैप्टर जैसी हिंदी स्ट्रीमिंग प्रोजेक्ट के माध्यम से नई यात्रा की शुरुआत की और दूसरे दर्शकों तक पहुंचने का सफल प्रयास किया। दशकों से, उन्होंने बुद्धदेव दासगुप्ता, तपन सिन्हा, तरुण मजूमदार, अंजन चौधरी, स्वप्न साहा, गौतम घोष, ऋतुपर्णो घोष, कौशिक गांगुली, श्रीजीत मुखर्जी, अतनु घोष, विक्रमादित्य मोटवाने, हंसल मेहता और दिबाकर बनर्जी जैसे प्रतिष्ठित निर्देशकों तथा जूही चावला, रानी मुखर्जी, बिपाशा बसु, प्रीति जिंटा, मनीषा कोइराला, ऐश्वर्या राय, नीलम, आयशा जुल्का और कल्कि कोचलिन जैसी प्रमुख अभिनेत्रियों के साथ अभिनय किया।

5. एक मैटिनी आइडल से लेकर विश्व स्तर पर सम्मानित कलाकार तक, श्री चटर्जी की फिल्मी यात्रा निरंतर विकास, अनुशासन और रचनात्मक साहस को दर्शाती है। आज, वह न केवल एक प्रसिद्ध अभिनेता हैं बल्कि बंगाली सिनेमा की एक पूरी संस्था भी हैं जो समर्पण, नित नएपन और सिनेमाई उत्कृष्टता का एक स्थायी प्रतीक हैं जिनकी विरासत पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। उन्होंने जुबली, शेष पाटा, देवी चौधरानी, गुमनामी, ज्येष्ठोपुत्रो, चोखेर बाली, स्वप्नेर दिन, सासुरबाडी जिंदाबाद, ऑटोग्राफ, जलसाघर, दोसर, मोनेर मानुष, बैशे श्रबोन, जातीश्वर, शंखचिल और मयूराक्षी जैसी फिल्मों में यादगार भूमिकाएँ निभाई।

6. श्री चटर्जी को 'दोसर' के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्रदान किया गया और उन्होंने चोखेर बाली, शंखचिल, मयूराक्षी, ज्येष्ठपुत्रो और काबेरी अंतर्धान जैसी राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्मों में अभिनय किया। उन्हें मोहननायक सम्मान, बंग विभूषण, डब्ल्यूबीएफजेए, कई बीएफजेए, 5 फिल्मफेयर और कई आनंदलोक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

SMT. DEVAKI AMMA G

Smt. Devaki Amma G, affectionately known as 'Forest Grandma', is a forest grower from Alappuzha district, Kerala, widely respected for transforming the barren coastal land of her homestead into a thriving forest ecosystem through individual effort and dedication. Over the past four decades, she has nurtured Kollakal Thapovanam, a five-acre homestead forest that now shelters more than 3,000 trees and a rich diversity of indigenous, medicinal, and rare plant species. Her work stands as a remarkable example of citizen-led biodiversity conservation and sustainable land restoration.

2. Born on 19th August 1934, Smt. Devaki Amma was actively involved in agriculture, cultivating paddy, gingelly, coconut, and vegetables. A serious car accident in 1980 caused a severe leg injury that restricted her mobility and brought farming activities to a halt. During her recovery, she began planting saplings on the sandy land, which was used for the post-harvesting activities. What began as a personal effort gradually evolved into a lifelong commitment to afforestation and ecological care.

3. Smt. Devaki Amma relied on traditional knowledge and close observation of soil and climate conditions for growing the plant saplings. Through mulching, organic manuring from home cattle, careful retention of leaf litter and thoughtful water management, she improved the quality of coastal sandy soil. Two ponds within Thapovanam have been maintained to ensure year-round water availability, contributing to groundwater recharge, preventing saltwater intrusion and supporting aquatic life. The increasing tree cover has helped moderate the local microclimate, reduce heat intensity and improve overall environmental stability in the surrounding area. Today, Kollakal Thapovanam functions as an ex-situ conservation repository for several rare and endangered plant species native to Kerala. The forest provides habitat for numerous birds, butterflies, and small fauna, creating a balanced ecosystem within a homestead setting. Students, researchers, and nature enthusiasts visit the site to understand sustainable afforestation practices and biodiversity conservation at the grassroots level. She has encouraged schools, colleges, and households to cultivate native and medicinal plants by providing seeds and seedlings, thereby strengthening community awareness about environmental responsibility. Her message has consistently emphasized planting according to one's oxygen and food needs and nurturing nature with long-term commitment.

4. Smt. Devaki Amma has received several national honours, including the Indira Priyadarshini Vrikshamitra Award (2003). She was conferred the Nari Shakti Puraskar in 2018 in recognition of her contribution to creating a coastal forest. She has also been recognized with state-level awards such as the Vanamitra Award, Bhoomitra Award, State Biodiversity Award (Green Individual), and other environmental commendations from the Government of Kerala. She was also featured by *The Better India* in 2019 as one of the "10 Heroes Saving Us All," recognizing her four decades of dedicated environmental service.

श्रीमती देवकी अम्मा जी

केरल के अलाप्पुझा जिले की वन उत्पादक श्रीमती देवकी अम्मा जी, जिन्हें स्नेह से 'वन दादी' के नाम से जाना जाता है, व्यक्तिगत प्रयास और समर्पण के माध्यम से अपने गृहक्षेत्र की बंजर तटीय भूमि को एक संपन्न वन पारिस्थितिकी तंत्र में बदलने के लिए व्यापक रूप से सम्मानित हैं। पिछले चार दशकों में, उन्होंने कोल्लाकल थपोवनम को पोषित किया है, जो पांच एकड़ का गृह वन है जिसमें अब 3,000 से अधिक पेड़ों और स्वदेशी, औषधीय और दुर्लभ पौधों की प्रजातियों की समृद्ध विविधता मौजूद है। उनका काम नागरिक–नेतृत्व वाले जैव विविधता संरक्षण और टिकाऊ भूमि पुनरुद्धार के उल्लेखनीय उदाहरण के रूप में व्याप्त है।

2. 19 अगस्त 1934 को जन्मी, श्रीमती देवकी अम्मा कृषि, धान, तिल, नारियल और सब्जियों की खेती में सक्रिय रूप से शामिल थीं। 1980 में एक गंभीर कार दुर्घटना के कारण उनके पैर में काफी चोट लगी, जिससे उनकी गतिशीलता बाधित हो गई और खेती की गतिविधियां बंद हो गईं। अपनी रिकवरी के दौरान, उन्होंने रेतीली जमीन पर पौधे लगाना शुरू कर दिया, जिसका उपयोग कटाई के बाद की गतिविधियों के लिए किया जाता था। जिसे उन्होंने व्यक्तिगत प्रयास से शुरू किया, वह धीरे–धीरे वनीकरण और पारिस्थितिक देखभाल के लिए एक आजीवन प्रतिबद्धता में विकसित हो गया।

3. श्रीमती देवकी अम्मा ने प्लांट सैप्लिंग के लिए पारंपरिक ज्ञान तथा मिट्टी और जलवायु की स्थिति के गहन अवलोकन पर भरोसा किया। मल्चिंग, घरेलू मवेशियों से जैविक खाद, पत्ते के कूड़े को सावधानीपूर्वक रखने और विचारशील जल प्रबंधन के माध्यम से, उन्होंने तटीय रेतीली मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार किया। थपोवनम के भीतर दो तालाबों को साल भर पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए बनाए रखा गया है, जो भूजल पुनर्भरण में योगदान देता है, खारे पानी के प्रवेश को रोकता है और जलीय जीवन को बढावा देता है। बढ़ते वृक्ष आवरण ने स्थानीय सूक्ष्म जलवायु को कम करने, गर्मी की तीव्रता को कम करने और आसपास के क्षेत्र में समग्र पर्यावरणीय स्थिरता में सुधार करने में मदद की है। आज, कोल्लाकल थपोवनम केरल में पाए जाने वाले कई दुर्लभ और लुप्तप्राय पौधों की प्रजातियों के लिए एक पूर्व–स्थान संरक्षण भंडार के रूप में कार्य करता है। जंगल कई पक्षियों, तितलियों और छोटे जीवों के लिए आवास प्रदान करता है, जो घर के भीतर एक संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र बनाता है। छात्र, शोधकर्ता और प्रकृति प्रेमी जमीनी स्तर पर सतत वनीकरण प्रथाओं और जैव विविधता संरक्षण को समझने के लिए इस स्थल का दौरा करते हैं। उन्होंने स्कूलों, कॉलेजों और घरों को बीज और पौधे प्रदान करके देशी और औषधीय पौधों की खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया है, जिससे पर्यावरणीय जिम्मेदारी के बारे में सामुदायिक जागरूकता बढी है। उनके संदेश में लगातार अपनी ऑक्सीजन और भोजन की जरूरतों के अनुसार पौधे लगाने और दीर्घकालिक प्रतिबद्धता के साथ प्रकृति का पोषण करने पर जोर दिया गया है।

4. श्रीमती देवकी अम्मा को कई राष्ट्रीय सम्मान मिले हैं, जिनमें इंदिरा प्रियदर्शिनी वृक्षमित्र पुरस्कार (2003) शामिल है। उन्हें तटीय वन लगाने में उनके योगदान को देखते हुए वर्ष 2018 में नारी शक्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें राज्य स्तरीय पुरस्कारों जैसे वनमित्र पुरस्कार, भूमित्र पुरस्कार, राज्य जैव विविधता पुरस्कार (हरित व्यक्ति) और केरल सरकार से अन्य पर्यावरण प्रशंसा से भी सम्मानित किया गया है। उन्हें 2019 में द बेटर इंडिया द्वारा "10 हीरोज सेविंग अस ऑल" में से एक के रूप में भी चित्रित किया गया था, जिसमें चार दशकों की उनकी समर्पित पर्यावरण सेवा को मान्यता दी गई थी।

DR. RAMCHANDRA GODBOLE

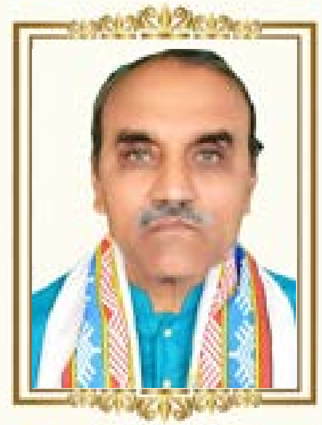

Dr. Ramchandra Godbole is an eminent social worker, who has dedicated more than 40 years to the upliftment and healthcare of tribal communities. He served for 12 years in Maharashtra and for the past 30 years in Chhattisgarh, working alongside his wife. A full-time worker of the Vanvasi Kalyan Ashram, he is currently the President of "Banphool," an organization in Bastar that focuses on malnutrition and health issues among tribal children. He has rendered invaluable service by living and working in the remote and Naxal- affected tribal region of Bastar in Chhattisgarh. By staying among the people and understanding their realities firsthand, he has ensured that essential healthcare reaches those who otherwise have little or no access to medical facilities. He has consistently carried out the noble humanitarian task of saving the lives of tribal patients, who often endure life- threatening illnesses for months without treatment.

2. Born on 18th June, 1960 in Satara district, Maharashtra, Dr. Godbole completed his schooling, college education and BAMS (Bachelor of Ayurvedic Medicine and Surgery) degree in Satara. After completing his studies, he began his medical service by starting a clinic for the tribal Bhil community in Nashik district through the Vanvasi Kalyan Ashram. He later served for eight years as the head of Maharashtra's village-level Health Worker Scheme. During this period, he supervised primary healthcare services for tribal communities across ten districts with the support of 660 health guards, making a significant impact at the grassroots level.

3. In 1990, soon after their marriage, Dr. Godbole and his wife Smt. Sunita Godbole decided to move to Bastar to serve tribal communities medically. At that time, Bastar was one of the most underdeveloped regions in India. He started a clinic at Barsur in Dantewada district, near the Abujhmad forest. Extremely poor tribal patients would walk long distances through forests to seek treatment. Many had suffered without care for months due to lack of access to medical facilities. Serious cases often required referral to the government district hospital located 75 kilometers away for specialist examination. Through persistent follow-up and dedicated care, he successfully treated approximately 3,000 critically ill tribal patients in the first 12 years of his service in Bastar.

4. In the next phase of his work, Dr. Godbole shifted from running a fixed outpatient clinic to organizing medical check-up camps in remote forest areas. Over the past 15 years, 114 health camps have been conducted in Bastar with the help of specialist doctors from various places, enabling more than 9,000 patients to receive long-pending medical examinations. Among them, 400 critically ill patients were admitted to the district hospital and when necessary, to a charitable hospital in Raipur, 400 kilometers away. Continuous follow-up ensured successful treatment and saved many lives. Most of the treatment expenses were supported by the Krutadnyata Trust in Pune.

5. In recognition of his social service, Dr. Godbole has received several honors. In 2001, he and his wife were awarded the Seva Gaurav Award by Natu Pratishthan in Pune. He was also honored with the Swami Vivekananda Award in Mumbai and the district administration of Dantewada has presented the couple with a certificate of appreciation.

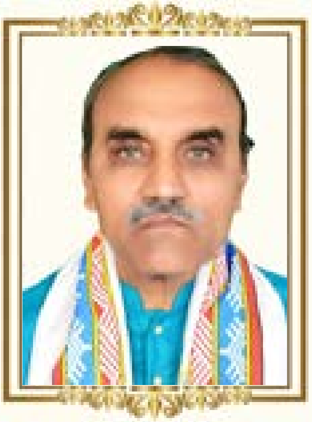

डॉ. रामचंद्र गोडबोले

डॉ. रामचंद्र गोडबोले एक प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ता हैं, जिन्होंने आदिवासी समुदायों के उत्थान और स्वास्थ्य सेवा के लिए 40 से अधिक वर्षों तक समर्पित होकर कार्य किया है। उन्होंने अपनी पत्नी के साथ काम करते हुए 12 वर्ष महाराष्ट्र में और पिछले 30 वर्ष तक छत्तीसगढ़ में सेवा की। वनवासी कल्याण आश्रम के पूर्णकालिक कार्यकर्ता, वह वर्तमान में बस्तर में "बनफूल" संगठन के अध्यक्ष हैं, जो आदिवासी बच्चों के बीच कुपोषण और स्वास्थ्य के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करता है। उन्होंने छत्तीसगढ़ के सुदूर और नक्सल प्रभावित आदिवासी क्षेत्र बस्तर में रहकर और काम करके अमूल्य सेवा प्रदान की है। लोगों के बीच रहकर और उनकी वास्तविक समस्याओं को प्रत्यक्ष रूप से समझकर, उन्होंने यह सुनिश्चित किया है कि उन लोगों तक भी आवश्यक स्वास्थ्य सेवा पहुंचे जिनके पास चिकित्सा सुविधाओं तक बहुत कम या कोई पहुंच नहीं है। उन्होंने उन आदिवासी रोगियों का जीवन बचाने का निरंतर परोपकारी पूर्ण मानवीय कार्य किया है, जो प्रायः इलाज कराए बिना महीनों तक जानलेवा बीमारियों को सहन करते हैं।

2. 18 जून, 1960 को महाराष्ट्र के सतारा जिले में जन्मे, डॉ. गोडबोले ने अपनी स्कूली शिक्षा, कॉलेज की शिक्षा और बीएएमएस (बैचलर ऑफ आयुर्वेदिक मेडिसिन एंड सर्जरी) की डिग्री सतारा में पूरी की। अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद, उन्होंने वनवासी कल्याण आश्रम के माध्यम से नासिक जिले में आदिवासी भील समुदाय के लिए एक क्लीनिक शुरू करके अपनी चिकित्सा सेवा शुरू की। बाद में उन्होंने महाराष्ट्र की ग्राम–स्तरीय स्वास्थ्य कार्यकर्ता योजना के प्रमुख के रूप में आठ वर्षों तक कार्य किया। इस अवधि के दौरान, उन्होंने 660 स्वास्थ्य रक्षकों के सहयोग से दस जिलों में जनजातीय समुदायों के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं का पर्यवेक्षण किया, जिससे जमीनी स्तर पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

3. वर्ष 1990 में, अपने विवाह के तुरंत बाद, डॉ. गोडबोले और उनकी पत्नी श्रीमती सुनीता गोडबोले ने आदिवासी समुदायों की चिकित्सीय सेवा करने के लिए बस्तर जाने का फैसला किया। उस समय, बस्तर भारत के सबसे अविकसित क्षेत्रों में से एक था। उन्होंने दंतेवाड़ा जिले के बारसूर में अबूझमाड़ जंगल के पास एक क्लीनिक शुरू किया। बेहद गरीब आदिवासी मरीज इलाज के लिए जंगलों के माध्यम से लंबी दूरी तय करते थे। चिकित्सा सुविधाओं तक पहुंच की कमी के कारण कई लोग महीनों तक बिना देखभाल के पीड़ित थे। गंभीर मामलों में विशेषज्ञ जांच के लिए प्रायः 75 किलोमीटर दूर स्थित सरकारी जिला अस्पताल में रेफर करने की आवश्यकता होती थी। लगातार अनुवर्ती और विशिष्ट देखभाल के माध्यम से, उन्होंने बस्तर में अपनी सेवा के पहले 12 वर्षों में गंभीर रूप से बीमार लगभग 3,000 आदिवासी रोगियों का सफलतापूर्वक इलाज किया।

4. अपने कार्य के अगले चरण में, डॉ. गोडबोले ने एक निश्चित आउट पेशेंट क्लीनिक चलाने की बजाय दूरदराज के वन क्षेत्रों में चिकित्सा जांच शिविर आयोजित करने की ओर रुख किया। पिछले 15 वर्षों में, बस्तर में विभिन्न स्थानों के विशेषज्ञ डॉक्टरों की मदद से 114 स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए गए हैं, जिससे 9,000 से अधिक रोगियों को लंबे समय से लंबित चिकित्सा जांच हो पाई है। इनमें से गंभीर रूप से बीमार 400 मरीजों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया और आवश्यकता पड़ने पर 400 किलोमीटर दूर रायपुर के एक धर्मार्थ अस्पताल में भर्ती कराया गया। निरंतर फॉलो–अप से सफल उपचार सुनिश्चित हुआ और कई लोगों की जान बची। इलाज के अधिकांश खर्च में पुणे के कृतज्ञता ट्रस्ट ने सहयोग किया।

5. डॉ. गोडबोले द्वारा की गई समाज सेवा की मान्यता स्वरूप उन्हें कई सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। वर्ष 2001 में, उन्हें और उनकी पत्नी को पुणे में नाटू प्रतिष्ठान द्वारा सेवा गौरव पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उन्हें मुंबई में स्वामी विवेकानंद पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था और दंतेवाड़ा के जिला प्रशासन ने इस दंपति को प्रशंसा प्रमाण पत्र प्रदान किया है।

SMT. SUNEETA GODBOLE

Smt. Suneeta Godbole is an eminent social worker, who has devoted more than 40 years to the upliftment and welfare of tribal communities, consistently working for their health and development. She served for 12 years in Maharashtra and for the past 30 years in Chhattisgarh alongside her husband, Dr. Ramchandra Godbole. By living and working in remote and Naxal-affected regions like Bastar, she has played a vital role in making healthcare accessible to marginalized tribal populations.

2. Born on 25th April, 1959 in Pune, Smt. Godbole completed her entire education there. Driven by a deep interest in social service, she earned a postgraduate degree in Master of Social Work (M.S.W.). During her student years, she actively participated in the anti-Emergency movement and was imprisoned for one and a half months. After completing her education, she began working in tribal areas of Thane and Raigad districts, focusing particularly on girls' education while living within those communities.

3. In 1990, soon after her marriage to Dr. Ramchandra Godbole, Smt. Godbole decided to move to Bastar in Chhattisgarh to serve tribal communities. At that time, the region was extremely underdeveloped. Her husband began running a clinic at Barsur in Dantewada district, near the Abujhmad forest. In the second phase of their medical work, instead of limiting services to a fixed outpatient clinic, they began organizing medical check-up camps in various remote locations to reach those living deep inside forest areas. She has been an active and energetic participant in all these initiatives. By learning the local tribal languages, Gondi and Halbi, she established direct and meaningful communication with the people. This helped build strong trust, especially among tribal women, whose participation in health programs increased significantly due to her efforts.

4. Smt. Godbole worked tirelessly for many years to ensure that tribal girls could complete their education while staying in hostels run by the Vanvasi Vikas Samiti. She organized training sessions for health workers and women on preparing nutritious meals, conducted sewing classes to promote self-reliance, and held camps for adolescent tribal girls. Repeated medical camps revealed persistent problems such as malnutrition from birth and malaria among children under ten years of age. Concerned by this, she initiated focused programs on nutrition and health awareness in schools. After providing nutritious food, she ensured six months of consistent follow-up. Over the past five years, her efforts have helped 460 children from 24 villages overcome malnutrition. Each year, around 2,000 children from 37 schools across three districts of Bastar participate in malnutrition prevention and health awareness initiatives. Awareness campaigns on sickle cell anemia are also conducted alongside these programs. In addition to her grassroots work, she served for five years as an official member of a quasi-judicial board with powers equivalent to a First Class Judicial Magistrate for the protection of children's rights. She has also chaired a government committee for preventing sexual harassment at the workplace and served as a member of district-level committees of the Police and Forest Departments.

5. In recognition of her contribution to social service, Smt. Godbole and her husband received the Seva Gaurav Award from Natu Pratishthan, Pune, in 2001. In 2017, she was honored with the Bayā Karve Award and the Dantewada district administration has also awarded the couple a certificate of appreciation.

श्रीमती सुनीता गोडबोले

श्रीमती सुनीता गोडबोले एक प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ता हैं, जिन्होंने आदिवासी समुदायों के उत्थान और कल्याण के लिए 40 से अधिक वर्षों तक समर्पित होकर कार्य किया है, तथा लगातार उनके स्वास्थ्य और विकास के लिए काम किया है। उन्होंने अपने पति डॉ. रामचंद्र गोडबोले के साथ महाराष्ट्र में 12 वर्ष और छत्तीसगढ़ में पिछले 30 वर्ष तक सेवा की। बस्तर जैसे दूरदराज और नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में रहकर और काम करके, उन्होंने पिछड़ी आदिवासी आबादी के लिए स्वास्थ्य सेवा सुलभ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

2. 25 अप्रैल, 1959 को पुणे में जन्मी, श्रीमती गोडबोले ने अपनी पूरी शिक्षा वहीं पूर्ण की। समाज सेवा में गहरी रुचि से प्रेरित होकर, उन्होंने मास्टर ऑफ सोशल वर्क (एमएसडब्ल्यू) में स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल की। अपने विद्यार्थी काल में, उन्होंने आपातकाल विरोधी आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और डेढ़ महीने जेल में रहीं। अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद, उन्होंने ठाणे और रायगढ़ जिलों के आदिवासी क्षेत्रों में काम करना शुरू कर दिया, विशेष रूप से उन समुदायों के भीतर रहकर लड़कियों की शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया।

3. वर्ष 1990 में, डॉ. रामचंद्र गोडबोले से विवाह के तुरंत बाद, श्रीमती गोडबोले ने आदिवासी समुदायों की सेवा के लिए छत्तीसगढ़ के बस्तर जाने का फैसला किया। उस समय, यह क्षेत्र अत्यंत अविकसित था। उनके पति ने दंतेवाड़ा जिले के बारसूर में अबूझमाड़ जंगल के पास एक क्लीनिक चलाना शुरू किया। अपने चिकित्सा कार्य के दूसरे चरण में, सेवाओं को एक निश्चित आउट पेशेंट क्लीनिक तक सीमित करने के बजाय, उन्होंने वन क्षेत्रों के अंदर रहने वाले लोगों तक पहुंचने के लिए विभिन्न दूरदराज के स्थानों में चिकित्सा जांच शिविर आयोजित करना शुरू कर दिया। वह इन समस्त पहल में एक सक्रिय और ऊर्जावान भागीदार रही हैं। स्थानीय आदिवासी भाषाओं, गोंडी और हल्बी को सीखकर, उन्होंने लोगों के साथ सीधा और सार्थक संवाद स्थापित किया। इससे उन्हें विशेष रूप से उन आदिवासी महिलाओं के बीच मजबूत विश्वास बनाने में मदद मिली, जिनकी उनके प्रयासों के कारण स्वास्थ्य कार्यक्रमों में भागीदारी काफी बढ़ गई थी।

4. श्रीमती गोडबोले ने यह सुनिश्चित करने के लिए कई वर्षों तक अथक प्रयास किया कि आदिवासी लड़कियां वनवासी विकास समिति द्वारा संचालित छात्रावासों में रहकर अपनी शिक्षा पूरी कर सकें। उन्होंने स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं और महिलाओं के लिए पौष्टिक भोजन तैयार करने के लिए प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए, आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए सिलाई कक्षाएं आयोजित कीं और किशोर आदिवासी लड़कियों के लिए शिविर आयोजित किए। चिकित्सा शिविरों में बार–बार जन्म से ही कुपोषण और दस वर्ष से कम उम्र के बच्चों में मलेरिया जैसी लगातार समस्याएं सामने आईं। इससे चिंतित होकर, उन्होंने स्कूलों में पोषण और स्वास्थ्य जागरूकता पर केंद्रित कार्यक्रम शुरू किए। पौष्टिक भोजन प्रदान करने के बाद, उन्होंने छह महीने तक लगातार फॉलो–अप सुनिश्चित किया। पिछले पांच वर्षों में, उनके प्रयासों से 24 गांवों के 460 बच्चों को कुपोषण से उबरने में मदद मिली है। प्रत्येक वर्ष, बस्तर के तीन जिलों के 37 स्कूलों के लगभग 2,000 बच्चे कुपोषण की रोकथाम और स्वास्थ्य जागरूकता पहल में भाग लेते हैं। इन कार्यक्रमों के साथ–साथ सिकल सेल एनीमिया पर जागरूकता अभियान भी चलाए जाते हैं। अपने जमीनी स्तर के कार्य के अलावा, उन्होंने बच्चों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए प्रथम श्रेणी न्यायिक मजिस्ट्रेट के बराबर शक्तियों के साथ एक अर्ध–न्यायिक बोर्ड के आधिकारिक सदस्य के रूप में पांच वर्ष तक सेवा की। उन्होंने कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न को रोकने के लिए एक सरकारी समिति की अध्यक्षता भी की है तथा पुलिस और वन विभागों की जिला स्तरीय समितियों के सदस्य के रूप में कार्य किया है।

5. समाज सेवा में उनके योगदान को मान्यता स्वरूप, श्रीमती गोडबोले और उनके पति को वर्ष 2001 में नाटू प्रतिष्ठान, पुणे से सेवा गौरव पुरस्कार मिला। वर्ष 2017 में, उन्हें बाया कर्वे पुरस्कार से सम्मानित किया गया था, और दंतेवाड़ा जिला प्रशासन ने इस दंपति को प्रशंसा प्रमाण पत्र से भी सम्मानित किया है।

SHRI TECHI GUBIN

Shri Techi Gubin is a retired Chief Architect and social worker from Arunachal Pradesh. Having served as the Chief Architect in the Arunachal Pradesh Public Works Department (APPWD) and the Director of Housing (Additional Charge), he has combined professional public service with a commitment to the preservation of indigenous heritage.

2. Born on 1st November, 1964, Shri Gubin received his Bachelor of Architecture degree from the Chandigarh College of Architecture in 1988. He began his career as an Assistant Teacher before joining the APPWD in 1990. Over a career spanning four decades, he served in various capacities within the state government, eventually retiring as Chief Architect. During his tenure, he was also deputed to the Housing and Urban Development Corporation (HUDCO) as a Development Officer from 2000 to 2005.

3. In addition to his professional career, Shri Gubin has held leadership roles in several organizations in Northeast India. From 2000, he has worked in Arunachal Vikas Parishad (AVP) as Assistant General Secretary, General Secretary, Vice President and President till 8 February, 2026 and is currently the Vice President of the Akhil Bharatiya Vanvasi Kalyan Ashram, a leading voluntary organization working for the integrated development of Janjatis across the country. His works in the Nyishi Indigenous Faith and Cultural Society (MFCS) as President has focused on the protection of the Donyi-Polo faith and the promotion of indigenous traditions within the state.

4. Shri Gubin organized and led the Seemant Darshan Yatra in 2010 and 2021, visiting remote villages bordering China, Myanmar, and Bhutan. Following these visits, he also led a team of delegations to meet the Vice President of India and the Union Defence Minister, New Delhi to report on the security needs of these areas, which led to the deployment of additional manpower at border posts. Furthermore, as the State Level Chairman for the Shri Ram Janmabhoomi Teerth Kshetra donation drive, he coordinated efforts that resulted in Arunachal Pradesh becoming the highest donor state among the seven North-Eastern states.

5. Shri Gubin's work has been recognized with honours such as the O.N.E India Award from My Home India (2022) and the India Leader Award from the Yadam Institute of Research (2023). His engagement with cultural preservation is also reflected in his participation in regional cinema, including the film *"Oyaa"* which was adjudged as the best regional film of the year in 2009. He continues his involvement in the preservation of indigenous cultural identity.

श्री तेची गुबिन

श्री तेची गुबिन अरुणाचल प्रदेश के सेवानिवृत्त मुख्य वास्तुकार और सामाजिक कार्यकर्ता हैं। उन्होंने अरुणाचल प्रदेश लोक निर्माण विभाग (एपीपीडब्ल्यूडी) में मुख्य वास्तुकार और आवास निदेशक (अतिरिक्त प्रभार) के रूप में कार्य किया है, वह पेशेवर सार्वजनिक सेवा करने के साथ–साथ स्वदेशी विरासत के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध रहे।

2. 1 नवंबर, 1964 को जन्मे, श्री गुबिन ने बैचलर ऑफ आर्किटेक्चर की उपाधि वर्ष 1988 में चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ डिग्री से प्राप्त की। उन्होंने वर्ष 1990 में एपीपीडब्ल्यूडी में शामिल होने से पहले एक सहायक शिक्षक के रूप में अपना करियर शुरू किया। चार दशकों के करियर में, उन्होंने राज्य सरकार में विभिन्न क्षेत्रों में काम किया, अंततः मुख्य वास्तुकार के रूप में सेवानिवृत्त हुए। अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने वर्ष 2000 से वर्ष 2005 तक आवास और शहरी विकास निगम (हुडको) में विकास अधिकारी के रूप में भी कार्य किया ।

3. अपने पेशेवर करियर के अलावा, श्री गुबिन ने पूर्वोत्तर भारत में कई संगठनों में नेतृत्व की भूमिका निभाई है। वर्ष 2000 से, उन्होंने अरुणाचल विकास परिषद (एवीपी) में सहायक महासचिव, महासचिव, उपाध्यक्ष और 8 फरवरी, 2026 तक अध्यक्ष के रूप में काम किया है और वर्तमान में अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के उपाध्यक्ष हैं, जो देश भर में जनजातियों के एकीकृत विकास के लिए काम करने वाला एक प्रमुख स्वैच्छिक संगठन है। अध्यक्ष के रूप में निशी इंडिजिनस फेथ एंड कल्चरल सोसाइटी (एमएफसीएस) में उनके कार्यों ने डोनी–पोलो आस्था के संरक्षण और राज्य के भीतर स्वदेशी परंपराओं को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया है।

4. श्री गुबिन ने वर्ष 2010 और वर्ष 2021 में सीमांत दर्शन यात्रा का आयोजन और नेतृत्व किया, जिसमें उन्होंने चीन, म्यांमार और भूटान की सीमा से लगे दूरदराज के गांवों का दौरा किया। इन दौरों के बाद, उन्होंने इन क्षेत्रों की सुरक्षा संबंधी आवश्यकताओं पर रिपोर्ट देने के लिए भारत के उपराष्ट्रपति और केंद्रीय रक्षा मंत्री, नई दिल्ली से मिलने के लिए प्रतिनिधिमंडलों की एक टीम का नेतृत्व भी किया, जिसके फलस्वरूप सीमा चौकियों पर अतिरिक्त कार्मिकों की तैनाती की गई। इसके अलावा, श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र दान अभियान के लिए राज्य स्तरीय अध्यक्ष के रूप में, उनके समनवित प्रयासों के फलस्वरूप अरुणाचल प्रदेश सात पूर्वोत्तर राज्यों में सबसे अधिक दान देने वाला राज्य बन गया।

5. श्री गुबिन के काम को माय होम इंडिया (2022) से ओ.एन.ई. इंडिया अवार्ड और यादम इंस्टीट्यूट ऑफ रिसर्च (2023) से इंडिया लीडर अवार्ड जैसे सम्मानों से मान्यता मिली है। सांस्कृतिक संरक्षण के साथ उनका जुड़ाव क्षेत्रीय सिनेमा में उनकी भागीदारी में भी परिलक्षित होता है, जिसमें फिल्म ''ओया'' शामिल है जिसे वर्ष 2009 में सर्वश्रेष्ठ क्षेत्रीय फिल्म के रूप में चुना गया था। वह भारत की सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण के लिए सक्रिय रूप से कार्य कर रहे है।

DR. H. V. HANDE

Dr. H. V. Hande is an Indian medical practitioner and a politician. He started his medical practice in June 1950, in Shenoy Nagar, Chennai. Ever since then, he has been regularly practicing, helping the poor and down trodden. He never stopped his medical practice even when he was M.L.C., M.L.A., and Health Minister. At his 99th year, even to-day his medical practice continues. Dr. Hande who is in his 99th year is still continuing medical practice – mainly attending to the poor section of society.

2. Born on 28th November, 1927, in Coimbatore, Tamil Nadu Shri Hande completed his medical education in Integrated medicine (Modern Medicine & Ayurved) in the Kilpuka College of Integrated Medicine – now converted into Kilpuka Medical College – in 1950. During his study in Intermediate (before graduation) in the Government College Mangaluru, he participated in the 1942 Quit India Movement and tasted the British lathi charge as a 13 year old student.

3. As Tamil Nadu Health Minister for nearly 7 years, between 1980–86, in late MGR's Cabinet, Dr. Hande played a crucial part, in tandem with the Rotary Clubs, in practically wiping out Poliomyelitis and Measles from Tamil Nadu. He also initiated a massive campaign – Pulse Polio (Polio drops to all children on a Sunday once every year). This is continuing even to-day.

4. While Dr. Hande was the Health Minister of Tamil Nadu (between 1980–1986), he brought the state into the 1st slot, consecutively for 3yrs, in reducing the Infant Mortality Rate (I.M.R) and Maternal Mortality Rate (M.M.R), in drastically reducing the incidence of leprosy and other communicable diseases. Consequently, he received the prestigious Dr. B.C. Roy award, a rare honour for a Minister.

5. Dr. Hande translated the entire Kamba Ramayanam (Tamil) into English Prose. This book was published by the prestigious Bharatiya Vidya Bhavan. 2 copies are placed in the library attached to the newly constructed Shri Rama Temple in Ayodhya. He wrote biography of the 1st Indian Governor General Shri Rajaji in Tamil. He has authored several literary works: Distortions Done to Our Constitution by Smt. Indira Gandhi during Emergency – released by the then Prime Minister Shri Atal Bihari Vajpayee; Ambedkar & The Making of the Indian Constitution published by the prestigious MacMillan Co – released in 2000 by Shri L.K. Advani, the then Hon'ble Leader of the Opposition. Translations of his book in Hindi, Tamil & Kannada were released with a 'Sandesh' from Hon'ble Shri Narendra Modi, when he was Gujarat Chief Minister in 2013; Critical Years of an Immortal Legend MGR in English & Tamil – published in 2010; Rise & Fall of Article 370 – with encomiums from Prime Minister Shri Narendra Modi in May 27, 2021.

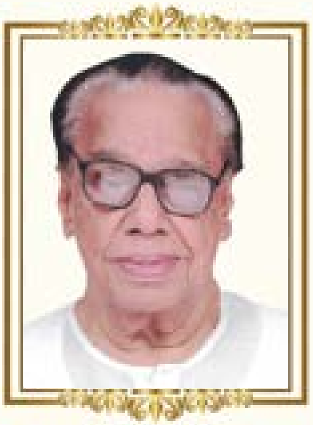

डॉ. एच. वी. हण्डे

डॉ. एच. वी. हण्डे एक भारतीय चिकित्सक और राजनीतिज्ञ हैं। उन्होंने जून 1950 में चेन्नई के शेनॉय नगर में चिकित्सा कार्य की शुरुआत की। तब से वह नियमित रूप से चिकित्सा सेवा में लगे हुए हैं और गरीबों एवं वंचितों की सहायता करते रहे हैं। एम.एल.सी., एम.एल.ए. और स्वास्थ्य मंत्री रहते हुए भी उन्होंने अपना चिकित्सा काम कभी नहीं छोड़ा। 99 वर्ष की आयु में भी डॉ. हण्डे चिकित्सकीय कार्य में सक्रिय हैं और मुख्य रूप से समाज के गरीब वर्ग की सेवा कर रहे हैं।

2. 28 नवम्बर, 1927 को कोयम्बटूर, तमिलनाडु में जन्मे, डॉ. हण्डे ने वर्ष 1950 में किल्पुका कॉलेज ऑफ इंटीग्रेटेड मेडिसिन – अब किल्पुका मेडिकल कॉलेज– से एकीकृत चिकित्सा (आधुनिक चिकित्सा एवं आयुर्वेद) में अपनी चिकित्सा शिक्षा पूरी की। सरकारी कॉलेज मंगलुरु में इंटरमीडिएट (स्नातक से पहले) की पढ़ाई के दौरान, उन्होंने वर्ष 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया और 13 वर्ष की आयु में ब्रिटिश पुलिस के लाठी चार्ज का सामना किया।

3. वर्ष 1980–86 के दौरान, दिवंगत एम.जी.आर. की मंत्रिपरिषद में, लगभग सात वर्षों तक तमिलनाडु के स्वास्थ्य मंत्री के रूप में, डॉ. हण्डे ने रोटरी क्लबों के सहयोग से तमिलनाडु से पोलियो और खसरे जैसी बीमारियों को लगभग समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने एक विशाल अभियान – 'पल्स पोलियो' (वर्ष में एक रविवार को सभी बच्चों को पोलियो की बूंदें) – की भी शुरुआत की। यह अभियान आज भी जारी है।

4. जब डॉ. हण्डे तमिलनाडु के स्वास्थ्य मंत्री (1980–1986) थे, उन्होंने राज्य को लगातार तीन वर्षों तक शिशु मृत्यु दर (आई.एम.आर) और मातृ मृत्यु दर (एम.एम.आर) कम करने में, और कुष्ठ रोग और अन्य संक्रामक बीमारियों के प्रसार को उल्लेखनीय रूप से कम करने में शीर्ष स्थान दिलाया। परिणामस्वरूप, उनको प्रतिष्ठित 'डॉ. बी. सी. रॉय पुरस्कार' से सम्मानित किया गया, जो किसी मंत्री के लिए अत्यंत दुर्लभ सम्मान है।

5. डॉ. हण्डे ने संपूर्ण कंब रामायणम् (तमिल) का अंग्रेजी गद्य में अनुवाद किया। इस पुस्तक को प्रतिष्ठित भारतीय विद्या भवन द्वारा प्रकाशित किया गया। इस पुस्तक की दो प्रतियाँ श्री राम मंदिर अयोध्या के नवनिर्मित मंदिर परिसर के पुस्तकालय में सुरक्षित रखी गई हैं। उन्होंने भारत के प्रथम गवर्नर–जनरल श्री राजाजी की जीवनी भी तमिल में लिखी। उन्होंने अनेक साहित्यिक कृतियों की रचना की, जिनमें प्रमुख रूप से "डिस्टोर्शन्स डन टू ऑवर कॉन्स्टिट्यूशन बाई श्रीमती इंदिरा गांधी ड्यूरिंग इमरजेंसी", जिसका विमोचन तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा किया गया तथा प्रतिष्ठित मैकमिलन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित "अम्बेडकर एंड द मेकिंग ऑफ इंडियन कॉन्स्टिट्यूशन" जिसका विमोचन वर्ष 2000 में विपक्ष के तत्कालीन माननीय नेता श्री एल. के. आडवानी द्वारा किया गया। उनकी पुस्तक के हिंदी, तमिल और कन्नड़ अनुवाद वर्ष 2013 में उस समय के गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'संदेश' के साथ प्रकाशित हुए। इसके अतिरिक्त उनकी अन्य कृतियों में अंग्रेजी एवं तमिल में "क्रिटिकल ईयर्स ऑफ एन इमोर्टल लेजेंड एमजीआर" – वर्ष 2010 में प्रकाशित तथा "राइज एंड फॉल ऑफ आर्टिकल 370" शामिल हैं, जिस पर 27 मई, 2021 को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सराहना प्राप्त हुई।

SHRI GAFARUDDIN MEWATI JOGI

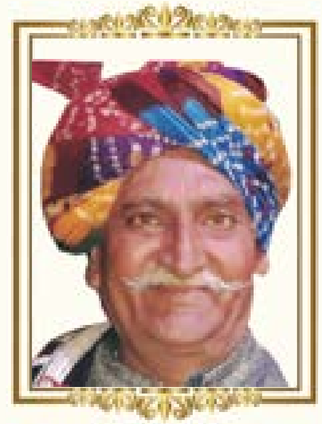

Shri Gafaruddin Mewati Jogi is a distinguished folk artist of India and a revered exponent of the Mewat-Braj region's oral and musical traditions. He is internationally recognized for his lifelong dedication to Bhapang playing and the preservation of rare oral narrative traditions such as Mahabharata (Pandun ke Kade - nearly 2500 couplets), Lok Ramayana, Bhagwan Shiva ka Byawale and Bhagwan Shri Krishna Leela (Ali Baksh parampara). Through his unwavering commitment to traditional performance practices, he has played a vital role in safeguarding India's intangible cultural heritage.

2. Born on 26th September, 1962, in village Kaithwara, Tehsil Pahadi, District Deeg, Rajasthan, Shri Gafaruddin belongs to the traditional Mewati Jogi community. He received formal education up to the ninth standard. From early childhood, he was trained under the oral guru-shishya tradition of his family lineage, mastering Bhapang, Jogiya Sarangi, Dholak and Mewati-Braj devotional music. He devoted several decades to village-to-village performances, sustaining oral traditions through alms-based performances and continuous cultural practice.

3. Shri Gafaruddin has performed extensively on prestigious platforms organized by the Ministry of Culture, Government of India and leading cultural institutions across the country. He is the founder of Brajrang Mewat Sahitya Lok Kala Sansthan, Bharatpur, established in 2007 and functioning continuously since then. His performances and collaborations include the Sangeet Natak Akademi, New Delhi; Rajasthan Sangeet Natak Akademi; Jawahar Kala Kendra, Jaipur; Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), New Delhi; National School of Drama, New Delhi; West Zone Cultural Centre, Udaipur; Rajasthan Tourism Department; and Sanskar Bharati, Delhi.

4. Through his sustained artistic practice, Shri Gafaruddin has contributed significantly to the preservation of nearly twenty endangered folk musical instruments and oral narrative traditions. His work has supported academic research, including Ph.D. level studies in folk and oral traditions. He has actively nurtured the next generation of practitioners, including his son Shaharukh Khan Mewati Jogi, grandson Danish Jogi and numerous disciples, thereby ensuring the continuity and authenticity of these traditions on national and international stages.

5. Shri Gafaruddin has been the recipient of numerous prestigious awards and honours in recognition of his outstanding contribution to folk arts. These include the Sangeet Natak Akademi Award, New Delhi (2022) conferred by the Government of India; Rajasthan State Honour, Jaipur (2016); Prabuddha Lok Kalakar Samman (2013); Castrol India Award, Mumbai (2013); Braj-Mewat Anchal Visheshank Vimochan Samman, Bharatpur (2011); Sur Samman, Jaipur (2009); Lok Kala Samman (2008); Lok Parampara Utkrisht Samman (1997); Flower Award (1996); Saksharta Jagrukta Samman (1996) and Yuva Puraskar (1993).

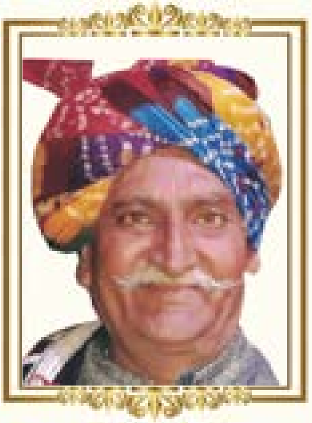

श्री गफरूद्दीन मेवाती जोगी

श्री गफरूद्दीन मेवाती जोगी भारत के एक प्रतिष्ठित लोक कलाकार हैं और वे मेवात–बृज क्षेत्र की मौखिक और संगीत परंपराओं के सम्मानित प्रतिपादक हैं। इन्हें भपंग वादन और महाभारत (पांडुन के कड़े–लगभग 2500 दोहे), लोक रामायण, भगवान शिव का ब्यावले और भगवान श्री कृष्ण लीला (अली बख्श परंपरा) जैसी दुर्लभ मौखिक कथा परंपराओं के संरक्षण के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त है। पारंपरिक प्रदर्शन कलाओं के प्रति अपनी अटूट निष्ठा के माध्यम से, उन्होंने भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

2. 26 सितंबर, 1962 को राजस्थान के पहाड़ी तहसील, जिला डीग के कैथवाड़ा गाँव में जन्मे श्री गफरूद्दीन पारंपरिक मेवाती जोगी समुदाय से आते हैं। इन्होंने नौवीं कक्षा तक औपचारिक शिक्षा प्राप्त की। बाल्यकाल से ही उन्हें अपने वंश परंपरा के अनुसार पारंपरिक मौखिक गुरु–शिष्य परंपरा के अनुरूप प्रशिक्षण मिला और भपंग, जोगिया सारंगी, ढोलक और मेवाती–बृज भक्ति संगीत में महारत प्राप्त की। इन्होंने कई दशकों तक गाँव–गाँव में जाकर प्रदर्शन किया, दान–दक्षिणा लेकर प्रदर्शन और निरंतर सांस्कृतिक अभ्यास के माध्यम से मौखिक परंपराओं को जीवित रखा।

3. श्री गफरूद्दीन ने भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय और देश भर के प्रमुख सांस्कृतिक संस्थानों द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित मंचों पर व्यापक स्तर पर प्रदर्शन किया है। वह बृजरंग मेवात साहित्य लोक कला संस्थान, भरतपुर के संस्थापक हैं, जिसकी स्थापना वर्ष 2007 में हुई थी और तब से यह संस्थान निरंतर कार्यरत है। इन्होंने संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली; राजस्थान संगीत नाटक अकादमी; जवाहर कला केंद्र, जयपुर; इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए), नई दिल्ली; राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली; पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर; राजस्थान पर्यटन विभाग; और संस्कार भारती, दिल्ली में कला–प्रदर्शन और साझा कला–प्रदर्शन किए हैं।

4. श्री गफरूद्दीन ने अपनी निरंतर कला–साधना के माध्यम से लगभग बीस लुप्तप्राय लोक संगीत वाद्ययंत्रों और मौखिक कथा परंपराओं के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनकी साधना ने अकादमिक अनुसंधान के क्षेत्र में भी सहयोग प्रदान किया है, जिसमें लोक और मौखिक परंपराओं में पीएचडी स्तर के अध्ययन भी शामिल हैं। इन्होंने अपने बेटे शाहरुख खान मेवाती जोगी, पोते दानिश जोगी और कई शिष्यों सहित अगली पीढ़ी के कलासाधकों को सक्रिय रूप से तैयार किया है, जिससे कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर ये परंपराएं जीवित रहें और उनकी प्रामाणिकता बनी रहे।

5. श्री गफरूद्दीन को लोक कलाओं में उनके उत्कृष्ट योगदान को देखते हुए कई प्रतिष्ठित पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। इनमें भारत सरकार द्वारा प्रदत्त संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, नई दिल्ली (2022); राजस्थान राज्य सम्मान, जयपुर (2016); प्रबुद्ध लोक कलाकार सम्मान (2013); कैस्ट्रॉल इंडिया अवार्ड, मुंबई (2013); बृज–मेवात आंचल विशेषांक विमोचन सम्मान, भरतपुर (2011); सूर सम्मान, जयपुर (2009); लोक कला सम्मान (2008); लोक परंपरा उत्कृष्ट सम्मान (1997); फ्लॉवर पुरस्कार (1996); साक्षरता जागरूकता सम्मान (1996) और युवा पुरस्कार (1993) शामिल हैं।

SHRI MIR HAJI KASAM

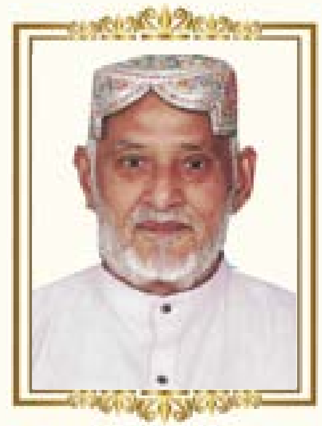

Shri Mir Haji Kasam, popularly known as Haji Ramakdu, is a legendary folk musician from Junagadh, Gujarat, celebrated for his lifelong devotion to Gujarati traditional music and mastery of the dholak. With an artistic journey spanning more than six decades, he has emerged as one of the most respected custodians of India's folk heritage. His performances—both in India and abroad—have played a defining role in keeping regional musical traditions vibrant, relevant and accessible to new generations.

2. Born on 27th January 1951, Shri Kasam began his musical pursuit at the tender age of ten. Despite having no formal education, his innate talent and dedication transformed him into an internationally recognised folk artist. Over the years, he collaborated with multiple generations of performers, Gujarati film personalities, and radio platforms, ensuring that folk rhythms continued to resonate among the masses. His distinctive style—where he becomes one with his instrument—earned him the affectionate name "Ramakdu."

3. Shri Kasam has been instrumental in carrying Gujarati folk music to global audiences, performing across countries such as the USA, UK, South Africa, Canada, UAE, Oman and several others. Through thousands of stage performances and cultural programmes, he has projected India's intangible cultural heritage on international platforms. Equally notable is his mentorship of young musicians—many of whom now perform professionally—thereby institutionalising the oral traditions of folk learning and transmission. He is revered for his humanitarian commitment. He has conducted more than 35,000 charity programmes for cow shelters and organised musical events for social causes, including supporting the marriages of underprivileged families in Junagadh. Even in his seventies, he continues to teach folk music to children and aspiring artists free of cost, embodying the spirit of selfless service through art.

4. Shri Kasam has received numerous prestigious state-level honours, including the Gujarat Gaurav Puraskar, Gujarat Rajya Sangeet Natak Akademi Award, Gujarat Lok Kala Rashtriya Puraskar, Mukhyamantri Sanman Patra and several cultural awards conferred by leading institutions and the Government of Gujarat. These accolades, spanning more than two decades, reflect sustained excellence rather than episodic achievement.

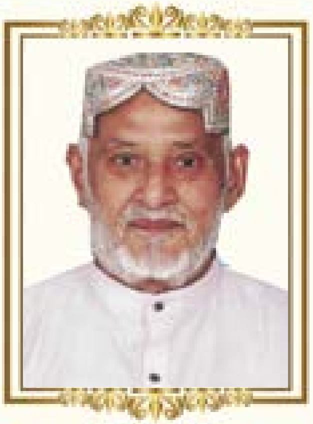

श्री मीर हाजी कासम

श्री मीर हाजी कासम, जो हाजी रामक्डू के नाम से प्रसिद्ध हैं, गुजरात के जूनागढ़ के एक महान लोक संगीतकार हैं। वह गुजराती पारंपरिक संगीत के प्रति अपने आजीवन समर्पण और उत्कृष्ट ढोलक वादन के लिए जाने जाते हैं। छह दशक से अधिक की अपनी कलात्मक संगीत यात्रा के साथ, वह भारत की लोक विरासत के सबसे सम्मानित संरक्षकों में से एक के रूप में उभरे हैं। भारत और विदेशों में उनके प्रदर्शनों ने क्षेत्रीय संगीत परंपराओं को जीवंत, प्रासंगिक और नई पीढ़ियों के लिए सुलभ बनाए रखने में एक निर्णायक भूमिका निभाई है।

2. 27 जनवरी,1951 को जन्मे, श्री कासम ने दस वर्ष की छोटी सी आयु में संगीत साधना शुरू कर दी थी। कोई औपचारिक शिक्षा न होने के बावजूद, वह अपनी जन्मजात प्रतिभा और समर्पण से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक मान्यता प्राप्त लोक कलाकार बन गए। इन वर्षों में, यह सुनिश्चित करते हुए कि लोक संगीत की लय जनता के बीच गूंजती रहे, उन्होंने कई पीढ़ियों के कलाकारों, गुजराती फिल्म हस्तियों और रेडियो मंचों के साथ सहयोग किया। उनकी विशिष्ट शैली, जिसमें वह अपने वाद्य यंत्र के साथ एकाकार हो जाते हैं, से उन्होंने "रामक्डू" जैसा प्रिय नाम अर्जित किया।

3. श्री कासम ने संयुक्त राज्य अमेरिका, यूके, दक्षिण अफ्रीका, कनाडा, यूएई, ओमान और कई अन्य देशों में प्रदर्शन करते हुए गुजराती लोक संगीत को वैश्विक दर्शकों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हजारों मंच प्रदर्शनों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से, उन्होंने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को प्रस्तुत किया है। उन्होंने युवा संगीतकारों का मार्गदर्शन भी किया जिनमें से कई अब उल्लेखनीय रूप से पेशेवर कलाकार के तौर पर प्रदर्शन करते हैं। इससे लोक संगीत सीखने और उसे आगे सौंपने की मौखिक परंपराओं को संस्थागत रूप मिला है। उन्हें उनके मानवीय कार्य के लिए सम्मानित किया गया है। उन्होंने गौ आश्रयों के लिए 35,000 से अधिक धर्मार्थ कार्यक्रमों का संचालन किया है और सामाजिक हित के लिए संगीत कार्यक्रमों का आयोजन किया है, जिनमें जूनागढ़ में गरीब परिवारों के विवाह में सहयोग करना भी शामिल है। सत्तर वर्ष की आयु में भी, वह कला के माध्यम से निस्वार्थ सेवा भावना को साकार रूप देते हुए, बच्चों और उदीयमान कलाकारों को मुफ्त लोक संगीत सिखा रहे हैं।

4. श्री कासम को गुजरात गौरव पुरस्कार, गुजरात राज्य संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, गुजरात लोक कला राष्ट्रीय पुरस्कार, मुख्यमंत्री सम्मान पत्र और प्रमुख संस्थानों एवं गुजरात सरकार द्वारा प्रदान किए गए कई सांस्कृतिक पुरस्कारों सहित अनेक प्रतिष्ठित राज्य स्तरीय सम्मान प्राप्त हुए हैं। दो दशक से अधिक समय में प्राप्त हुए ये सम्मान, सामयिक उपलब्धि के बजाय उनकी निरंतर उत्कृष्टता को दर्शाते हैं।

SHRI RAGHUVIR KHEDKAR

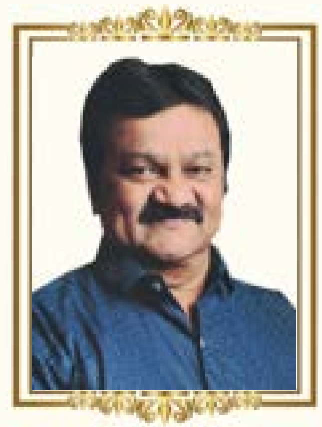

Shri Raghuvir Khedkar is an acclaimed and veteran Tamasha artist and troupe owner, widely recognized as a gifted songadya (the witty jester-narrator) with a deep commitment to preserving and promoting this folk art form.

2. Born on 04th August, 1961, Shri Khedkar, with over four decades of experience has been instrumental in carrying forward the Tamasha legacy initiated by his mother, Kantabai Satarkar, managing her troupe and excelling as a performer himself. He also served as the President of the Maharashtra State Dholki Phad Tamasha Organization.

3. During the COVID-19 pandemic, when public performances halted and many artists faced hunger and unemployment, Shri Khedkar stood up as a staunch advocate. He led appeals for financial support and leveraged solace and solidarity for folk artists. In 2021, he spearheaded the formation of the All-India Tamasha Parishad, a unified body of 130 troupe-owners and artists and was elected its president. This marked the first collective mobilization of Tamasha artists since 1949.

4. Shri Khedkar courageously shared the harsh realities faced by Tamasha artists many of whom are elderly, illiterate and financially marginalized during the lockdown, drawing statewide attention in media forums. Despite Tamasha being a culturally crucial art form, many artists face neglect and financial instability. His leadership during crises, efforts to unify artists, and public articulation of their struggles represent profound sacrifices he prioritized the collective welfare of the Tamasha community over personal gain.

5. Shri Khedkar's innovations and performances earned him honours across India from the Commonwealth Games in Delhi to stages at Chandigarh, Mumbai University, and the Sangeet Natak Akademi. His unwavering devotion has been honoured with several awards such as Jeevan Sadhana Award by Savitribai Phule Pune University in recognition of his lifetime service and State-level Patthe Bapurao Award, one of Tamasha's prestigious honours, acknowledging his significant artistic contributions.

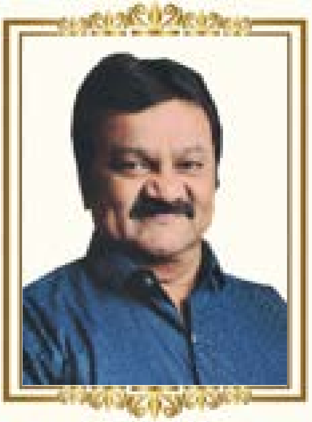

श्री रघुवीर खेडकर

श्री रघुवीर खेडकर एक प्रतिष्ठित और अनुभवी तमाशा कलाकार और मंडली के मालिक हैं। इन्हें एक प्रतिभाशाली सोंगाद्या (हास्य–कथावाचक) के रूप में व्यापक ख्याति प्राप्त है। वह इस लोक कला को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए पूरी तरह से समर्पित हैं।

2. 04 अगस्त, 1961 को जन्मे, श्री खेडकर के पास चार दशकों से अधिक का अनुभव है। इन्होंने अपनी मां कांताबाई सातारकर द्वारा शुरू की गई तमाशा विरासत को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, अपनी मंडली का प्रबंधन करते हुए और खुद एक कलाकार के रूप में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। इन्होंने महाराष्ट्र राज्य ढोलकी फाड़ तमाशा संगठन के अध्यक्ष के रूप में भी अपनी सेवाएं दी हैं।

3. कोविड–19 महामारी के दौरान, जब सार्वजनिक प्रदर्शन बंद हो गए और कई कलाकारों को भूख और बेरोजगारी का सामना करना पडा, श्री खेडकर उनके एक मजबूत पैरोकार के रूप में खड़े हुए। इन्होंने वित्तीय सहायता के लिए अपील की तथा लोक कलाकारों के प्रति नम्रता का भाव जगाया और उन्हें एकजुट किया। वर्ष 2021 में, इन्होंने 130 मंडली–मालिकों और कलाकारों के एक एकीकृत निकाय, अखिल भारतीय तमाशा परिषद के गठन का नेतृत्व किया और इन्हें इसका अध्यक्ष चुना गया। यह वर्ष 1949 के बाद तमाशा कलाकारों का पहला सामूहिक संगठन था।

4. श्री खेडकर ने लॉकडाउन के दौरान कई बुजुर्ग, निरक्षर और आर्थिक रूप से हाशिए पर जीवन जी रहे तमाशा कलाकारों के सामने आने वाली कठोर वास्तविकताओं को निडरता से साझा किया और मीडिया के माध्यम से इन्होंने पूरे राज्य का ध्यान इस ओर खींचा। तमाशा, सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण कला का एक रूप होने के बावजूद, कई कलाकारों को उपेक्षा और वित्तीय अस्थिरता का सामना करना पड़ता है। संकट के दौरान उनके नेतृत्व, कलाकारों को एकजुट करने के प्रयास और उनके संघर्षों की सार्वजनिक अभिव्यक्ति से जुड़े बलिदान यह दर्शाते हैं कि इन्होंने व्यक्तिगत लाभ से ऊपर तमाशा समुदाय के सामूहिक कल्याण को प्राथमिकता दी।

5. श्री खेडकर के नवाचारों और प्रदर्शनों ने उन्हें दिल्ली में राष्ट्रमंडल खेलों से लेकर चंडीगढ़, मुंबई विश्वविद्यालय और संगीत नाटक अकादमी के मंचों तक पूरे भारत में सम्मान दिलाया है। इनकी इस अटूट निष्ठा के लिए उनको कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय द्वारा इन्हें आजीवन सेवा के लिए जीवन साधना पुरस्कार दिया गया और इन्हें तमाशा क्षेत्र के प्रतिष्ठित सम्मानों में से एक, राज्य स्तरीय पट्ठे बापुराव पुरस्कार दिया गया है, जो इस कला के क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण कलात्मक योगदान का परिचायक है।

SHRI R. KRISHNAN KITNA (POSTHUMOUS)

Shri R. Krishnan Kitna was a distinguished Ajile Bottu artist from the Alu Kurumba community of Vellaricombei village in the Nilgiris, Tamil Nadu.

2. Born on 05th January, 1973, Shri R. Krishnan began painting in early childhood, inspired by elders who traditionally created this art on walls. His deep interest in the meanings behind motifs, stories and songs shaped a lifelong engagement with Alu Kurumba cultural knowledge, forest traditions and storytelling. Although his formal schooling ended in the eighth standard, his learning continued through practice, observation and close work with community elders, including honey gathering and traditional agriculture.

3. Shri R. Krishnan played a significant role in revitalising and promoting Ajile Bottu painting. From the late 1990s, he participated in surveys and community initiatives with the Keystone Foundation. In 1999, he joined artist trainings led by C.P Ramaswamy Foundation and was identified as the senior master artist who trained other younger community members. Subsequently, he formed the Ajile Bottu artist group in 2004, along with a few other senior Alu Kurumba artists and knowledge holders. He has contributed to several publications on Alu Kurumba community knowledge, such as *Deva Shole* (2008), Folk Tales from the Nilgiri Hills (2015) and others. He conducted workshops, exhibitions and training programmes across India, sharing both techniques and the cultural narratives embedded in the paintings.

4. Known for his use of natural pigments in his art form and his skills as a storyteller, Shri R. Krishnan also mentored younger artists through intergenerational training. His work received recognition from institutions including the Ministry of Tribal Affairs, Lalit Kala Akademi Regional Centre (Chennai), Tribal Research Centre (Ooty) , Dakshina Chitra Heritage Museum, KIRTADS (Kerala Institute for Research, Training and Development Studies of Scheduled Castes and Scheduled Tribes), Kerala Lalithkala Akademi, Research Centre for Asiatic Culture, and the Adivasi Academy, among others. He remained dedicated to teaching and sharing Alu Kurumba art forms until his passing in 2025, while in the midst of a training programme in one of the Alu Kurumba villages. His life's work stands as a testament to the resilience of Indigenous knowledge systems and the vitality of Kurumba artistic traditions.

5. Shri R. Krishnan passed away on 20 March, 2025.

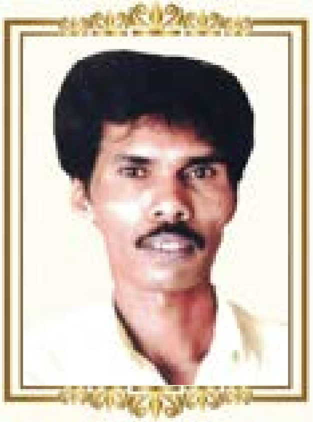

श्री आर. कृष्णन किटना (मरणोपरांत)

श्री आर. कृष्णन किटना तमिलनाडु के नीलगिरि जिले के वेल्लारिकोम्बेई गांव के अलु कुरुम्बा समुदाय के एक प्रतिष्ठित अजिले बोट्टू कलाकार थे।

2. 05 जनवरी, 1973 को जन्मे, श्री आर. कृष्णन ने बचपन में ही अपने बुजुर्गों से प्रेरित होकर चित्रकारी शुरू कर दी थी, जो पारंपरिक रूप से दीवारों पर इस कला का निर्माण करते थे। रूपांकनों, कहानियों और गीतों के पीछे के अर्थों में उनकी गहरी रुचि ने अलु कुरुम्बा सांस्कृतिक ज्ञान, वन परंपराओं और कथा वाचन के साथ आजीवन जुड़ाव को आकार दिया। हालाँकि उनकी औपचारिक स्कूली शिक्षा आठवीं कक्षा में समाप्त हो गई थी, लेकिन उनका सीखना अभ्यास, अवलोकन और समुदाय के बुजुर्गों के साथ घनिष्ठता से काम करते हुए जारी रहा, जिसमें शहद इकट्ठा करना और पारंपरिक कृषि शामिल है।

3. श्री आर. कृष्णन ने अजिले बोट्टू पेंटिंग को पुनर्जीवित करने और बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्ष 1990 के दशक के अंत से, उन्होंने कीस्टोन फाउंडेशन के साथ सर्वेक्षणों और सामुदायिक पहलों में भाग लिया। वर्ष 1999 में, वह सी.पी. रामास्वामी फाउंडेशन के नेतृत्व में कलाकार प्रशिक्षणों में शामिल हुए और उन्हें वरिष्ठ मास्टर कलाकार के रूप में पहचान मिली। उन्होंने अन्य युवा समुदाय के सदस्यों को प्रशिक्षित किया। इसके बाद, उन्होंने 2004 में कुछ अन्य वरिष्ठ अलु कुरुम्बा कलाकारों और ज्ञानी जनों के साथ अजिले बोट्टू कलाकार समूह का गठन किया। उन्होंने अलु कुरुम्बा समुदाय के ज्ञान, जैसे देवा शोले (2008), फोक टेल्स फ्रॉम द नीलगिरी हिल्स (2015) और अन्य पर कई प्रकाशनों में योगदान दिया है। उन्होंने पूरे भारत में कार्यशालाएँ, प्रदर्शनियाँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए, तकनीकों और चित्रों में अंतर्निहित सांस्कृतिक आख्यानों को साझा किया।

4. अपनी कला में प्राकृतिक रंगों के उपयोग और एक कहानीकार के रूप में अपने कौशल के लिए प्रसिद्व श्री आर. कृष्णन ने अंतर–पीढ़ीगत प्रशिक्षण के माध्यम से युवा कलाकारों को भी मार्गदर्शन दिया। उनके कार्य को जनजातीय कार्य मंत्रालय, ललित कला अकादमी क्षेत्रीय केंद्र (चेन्नई), जनजातीय अनुसंधान केंद्र (ऊटी), दक्षिण चित्र विरासत संग्रहालय, केआईआरटीएडीएस (केरल इंस्टीट्यूट फॉर रिसर्च, ट्रेनिंग एंड डेवलपमेंट स्टडीज ऑफ शेड्यूल्ड कास्ट्स एंड शेड्यूल्ड ट्राइब्स), केरल ललित कला अकादमी, रिसर्च सेंटर फॉर एशियाटिक कल्चर और आदिवासी अकादमी सहित अन्य संस्थानों से पहचान मिली। वर्ष 2025 में अलु कुरुम्बा गांवों में से एक गाँव में प्रशिक्षण कार्यक्रम करते समय मृत्यु तक, वह अलु कुरुम्बा कला रूपों को सिखाने और साझा करने के लिए समर्पित रहे। उनके जीवन का कार्य स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों की मजबूती और कुरुम्बा कलात्मक परंपराओं की जीवंतता का प्रमाण है।

5. श्री आर. कृष्णन का 20 मार्च, 2025 को निधन हो गया।

PROF. DR. LARS-CHRISTIAN KOCH

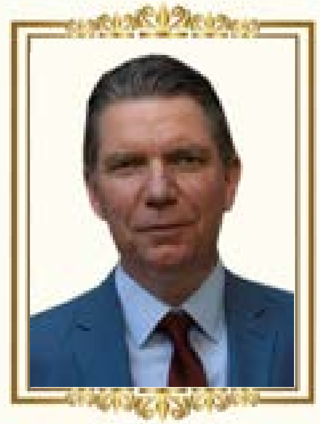

Prof. Dr. Lars-Christian Koch is an internationally renowned ethnomusicologist, whose work has significantly strengthened cultural and academic exchange between India and Germany. His engagement with India, and particularly with Rabindranath Tagore, spans several decades. He was associated with the Tagore Institute in Bonn, founded by musicologist Dr.Trina Purohit-Roy, who took him as a disciple in Sitar, Surbahar and Rabindra Sangit and later pursued studies in Santiniketan, West Bengal- Tagore's place of residence, with a special interest in the songs of the Indian poet. There he studied Sitar with Pandit Indranil Bhattachrya.

2. Born on 21st June, 1959, Prof. Koch is Director of the State Ethnographic Collections in the State Art Collections Saxonia in Dresden Germany since October 2025. From 2018 to 2025, he was Director of the Ethnological Museum Berlin and the Museum of Asian Art, State Museums Berlin, Prussian Cultural Heritage Foundation and Collection Director at the Humboldt Forum for the Humboldt Forum Foundation and the State Museums Berlin. He is an adjunct professor of ethnomusicology at the University of Cologne, an honorary professor at the Berlin University of the Arts and honorary professor at the Humboldt University Berlin. He holds guest professorships at the University of Chicago and the University Vienna.

3. Prof. Koch conducted anthropological research in India and South Korea over a period of more than 30 years. His research focuses on the theory and practice of North Indian music, organology with a special emphasis on musical instrument making, audiovisual media in cultural contexts, popular music and urban culture, musical interpretations in historical contexts and music archaeology. He studied cultural anthropology (Master of Arts degree), received his doctorate in musicology and habilitated in ethnomusicology. Since 2003, he has headed the Department of Media- Ethnomusicology, Berlin Phonogram Archive and Visual Anthropology at the Ethnological Museum Berlin. He is a member of several advisory boards and professional associations and was co-editor of the Zeitschrift für Ethnologie from 2013 to 2020.

4. Prof. Koch has led numerous research projects, including in the museum-related field of ethnomusicology, such as: Indexing and digitizing the sound recordings of the Prussian Phonographic Commission 1915-1918 / Digitization of historical and contemporary musical instruments of South Asia in expanded object perspectives / ILKAR - Integrated solutions for the conservation, archiving, and restoration of endangered magnetic tapes and reel to reel tapes and the collaborative project Three Metropolises Project - Music as a medium of urban transformation in the metropolises of Berlin, Chicago, and Kolkata. After moving, setting up, and opening the museums at the Humboldt Forum in 2022, he initiated the format The Collaborative Museum, which involved cooperation with cultures and countries of origin in and around the collections of both museums with 40 sub-projects, 20 fellowships and 4 international exhibitions over a period of three years. The aim was to make the museum collections accessible and usable through joint efforts.

5. In 2014, Prof. Koch received the Bruno Nettl Prize from the Society for Ethnomusicology for his outstanding publications. He was honoured with the 6th Merck-Tagore Award 2025 in February 2026 for his outstanding contributions to fostering cultural exchange between India and Germany. His publications include: Musikethnologie. WBG Darmstadt 2020 / Sitar – Manufacturing: The Tradition of Kanailal & Bros., Calcutta / Berlin (SMB) 2011 / My Heart Sings – Die Lieder Rabindranath Tagoreszwischen Tradition und Moderne / Berlin (LIT) 2011.

प्रो. डॉ. लार्स–क्रिस्चियन कोच

प्रो. डॉ. लार्स–क्रिस्चियन कोच अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक प्रसिद्ध एथनोम्यूजिकोलॉजिस्ट हैं, जिन्होनें अपने काम से भारत और जर्मनी के बीच सांस्कृतिक और शैक्षणिक संबंध को सुदृढ़ किया। भारत और विशेषकर रवीन्द्रनाथ टैगोर के साथ उनका संबंध कई दशकों तक रहा। उन्होनें बॉन में टैगोर इंस्टीट्यूट से पढ़ाई की, जिसकी स्थापना संगीतज्ञ डॉ. ट्रिना पुरोहित–रॉय ने की थी। डॉ. ट्रिना पुरोहित–रॉय ने प्रो. कोच को सितार, सुरबहार और रवीन्द्र संगीत में शिक्षा प्रदान की। भारतीय कवि के गीतों में विशेष रुचि के कारण, बाद में उन्होनें टैगोर के निवास स्थान – शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल में पढ़ाई की। वहां उन्होंने पंडित इंद्रनील भट्टाचार्य से सितार की शिक्षा प्राप्त की।

2. 21 जून, 1959 को जन्मे, प्रो. कोच अक्टूबर 2025 से ड्रेसडेन जर्मनी में स्टेट आर्ट कलेक्शंस सैक्सोनिया के स्टेट एथनोग्राफिक कलेक्शंस के निदेशक हैं। वर्ष 2018 से 2025 तक, वे एथनोलॉजिकल म्यूज़ियम बर्लिन और म्यूज़ियम ऑफ स्टेट आर्ट, स्टेट म्यूज़ियम बर्लिन, प्रशियन कल्चरल हेरिटेज फाउंडेशन के निदेशक तथा हम्बोल्ट फोरम फाउंडेशन और स्टेट म्यूज़ियम बर्लिन के हम्बोल्ट फोरम में संग्रह निदेशक थे। वे कोलोन विश्वविद्यालय में एथनोम्यूजिकोलॉजी के सहायक प्रोफेसर, बर्लिन कला विश्वविद्यालय और हम्बोल्ट विश्वविद्यालय बर्लिन के मानद प्रोफेसर हैं। वे शिकागो विश्वविद्यालय और वियना विश्वविद्यालय में अतिथि प्रोफेसर के पद पर कार्य कर रहें हैं।

3. प्रो. कोच ने भारत और दक्षिण कोरिया में 30 वर्षों से अधिक समय तक मानवशास्त्रीय अनुसंधान किया। उनका शोध उत्तर भारतीय संगीत के सिद्धांत और व्यवहार, संगीत वाद्ययंत्र निर्माण पर विशेष जोर देने वाली ऑर्गेनोलॉजी, सांस्कृतिक संदर्भों में दृश्य–श्रव्य मीडिया, लोकप्रिय संगीत और शहरी संस्कृति, ऐतिहासिक संदर्भों में संगीत की व्याख्या और संगीत पुरातत्व पर केंद्रित है। उन्होंने सांस्कृतिक मानवविज्ञान (कला निष्णात उपाधि) का अध्ययन किया, संगीतशास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की, और एथनोम्यूजिकोलॉजी में महारत हासिल की। वर्ष 2003 से, उन्होंने एथनोम्यूजिकोलॉजी म्यूज़ियम बर्लिन में डिपार्टमेन्ट ऑफ मीडिया–एथनोम्यूजिकोलॉजी, बर्लिन फोनोग्राम आर्काइव और विजुअल एंथरोपोलॉजी का नेतृत्व किया। वे कई सलाहकार बोर्डों और पेशेवर संघों के सदस्य हैं और वर्ष 2013 से 2020 तक Zeitschrift fur Ethnologie के सह–संपादक थे।

4. प्रो. कोच ने कई शोध परियोजनाओं का नेतृत्व किया है, जिसमें एथनोम्यूजिकोलॉजी के संग्रहालय से संबंधित क्षेत्र शामिल हैं, जैसेः प्रशिया फ़ोनोग्राफ़िक आयोग वर्ष 1915–1918 की ध्वनि रिकॉर्डिंग का अनुक्रमण और डिजिटलीकरण / विस्तारित वस्तु परिप्रेक्ष्य में दक्षिण एशिया के ऐतिहासिक और समकालीन संगीत वाद्ययंत्रों का डिजिटलीकरण / ILKAR – लुप्तप्राय मैग्नेटिक टेप और रील टू रील टेप के संरक्षण, संग्रह और बहाली के लिए एकीकृत समाधान और थ्री मेट्रोपोलिस प्रोजेक्ट – बर्लिन, शिकागो और कोलकाता के महानगरों में शहरी परिवर्तन के एक माध्यम के रूप में संगीत की सहयोगी परियोजना। वर्ष 2022 में हम्बोल्ट फोरम में संग्रहालयों को स्थानांतरित करने, स्थापित करने और उद्घाटन के बाद, उन्होंने द कॉलेबोरेटिव म्यूज़ियम की शुरुआत की, जिसमें तीन वर्षों की अवधि में 40 उप–परियोजनाओं, 20 फैलोशिप और 4 अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों के साथ दोनों संग्रहालयों के संग्रह में और उसके आसपास की संस्कृतियों और मूल देशों के साथ सहयोग शामिल था। इसका उद्देश्य संयुक्त प्रयासों के माध्यम से संग्रहालय संग्रह को सुलभ और उपयोगी बनाना था।

5. वर्ष 2014 में, प्रो. कोच को उनके उत्कृष्ट प्रकाशनों के लिए सोसाइटी फॉर एथनोम्यूजिकोलॉजी से ब्रूनो नेट्टल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भारत और जर्मनी के बीच सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें फरवरी 2026 में छठे मर्क–टैगोर पुरस्कार 2025 से सम्मानित किया गया। उनके प्रकाशनों में म्यूसिकेथनोलॉजी, डब्ल्यूबीजी डार्मस्टेड 2020 / सितार – निर्माणः कनाईलाल एंड ब्रदर्स की परंपरा, कलकत्ता / बर्लिन (एसएमबी) 2011 / माई हार्ट सिंग्स – डाई लीडर रबींद्रनाथ टैगोरस्ज़्विसचेन ट्रेडिशन अंड मॉडर्न / बर्लिन (एलआईटी) 2011 शामिल हैं।

PROF. MAMIDALA JAGADESH KUMAR

Prof. Mamidala Jagadesh Kumar, Chairman, Review Committee for the National Education Policy 2020, Ministry of Education, Government of India, is a famous academic leader known for his contributions to the realisation of outcome-oriented reforms in higher education.

2. Born on 8th April 1960, Prof. Kumar is a native of Mamidala village in Nalgonda district, Telangana. He earned his M.S. (Electrical Engineering) and Ph.D (Electrical Engineering) from the Department of Electrical Engineering at the Indian Institute of Technology, Madras. He pursued postdoctoral research at the Department of Electrical and Computer Engineering at the University of Waterloo, Canada. A Professor at IIT Delhi until April 2025, he earlier held the NXP (Philips) Chair Professorship established at IIT Delhi by Philips Semiconductors, Netherlands. His research spans nanoelectronic devices, nanoscale device modelling and simulation, innovative device design and power semiconductor devices, with over 250 refereed publications, three books, five book chapters and several patents arising from his work.

3. Prof. Kumar served as the 12th Vice-Chancellor of Jawaharlal Nehru University, New Delhi (January, 2016–February, 2022), where he implemented wide-ranging reforms, including the introduction of engineering and management programmes. It was followed by his appointment as UGC Chairman (February, 2022–April, 2025). As Chairman of the University Grants Commission (UGC), he transformed the UGC from a rule-based regulator into a facilitator of educational reforms. He advanced student-centric, flexible learning and nationwide institutional enablement. His public engagement and policy clarity helped translate NEP 2020 into concrete university actions. These implementations ranged from admissions to credits and internationalisation. He consistently emphasised equity, quality and pragmatic execution across India's diverse higher-education landscape. In these roles, he prioritised transparent processes, academic standards and systemic upgrades. Among the most visible system-level milestones during his UGC tenure were the roll-out and rapid scale-up of the Common University Entrance Test (CUET), biannual admissions windows, the provision to pursue two degrees simultaneously and revised PhD pathways that opened research opportunities to meritorious four-year undergraduates across disciplines.

4. Prof. Kumar framed and operationalised models under NEP 2020: the Four-Year Undergraduate Programme with flexible structures; the Academic Bank of Credits and a national credit framework for modular, cumulative learning; the Apprenticeship Embedded Degree Programme to embed workplace training; the Professors of Practice route to attract professionals; large-scale teacher development through the Malaviya Mission; and digital infrastructure, including an integrated portal for faculty recruitment. He strengthened internationalisation via twinning, joint and dual degrees, recognition of foreign degrees, and enabling foreign universities to set up campuses in India, alongside governance roles on national bodies in science, telecom, culture, and space.

5. Prof. Kumar's is a Fellow of the Indian National Academy of Engineering, the National Academy of Sciences, India and the Institution of Electronics and Telecommunication Engineers. He received IIT Delhi's 2013 Award for Excellence in Teaching, the IETE Ram Lal Wadhwa Gold Medal and the IETE Lifetime Achievement Award. Internationally, he received the IBM Faculty Award in 2008 and the ISA-VSI TechnoMentor Award. He has held editorial roles on IEEE Transactions on Electron Devices and IEEE Journal of the Electron Devices Society, and is Editor-in-Chief of IETE Technical Review. He is a fitness enthusiast and learnt Karate.

प्रो. मामिडाला जगदीश कुमार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति वर्ष 2020 शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, की समीक्षा समिति के अध्यक्ष और प्रसिद्ध शिक्षाविद प्रो. मामिडाला जगदीश कुमार, उच्च शिक्षा में परिणामोन्मुखी सुधारों को साकार करने में अपने योगदान के लिए जाने जाते हैं।

2. 8 अप्रैल, 1960 को जन्मे, प्रो. कुमार तेलंगाना के नलगोंडा जिले के मामिडाला गांव के मूल निवासी है। उन्होंने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास के विद्युत अभियांत्रिकी विभाग से (एम.एस. (विद्युत अभियांत्रिकी) और पीएच.डी. (विद्युत अभियांत्रिकी) की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने कनाडा के वाटरलू विश्वविद्यालय में इलैक्ट्रीकल एवं कम्प्यूटर इंजीनीयरिंग डिपार्टमेंट में पोस्टडॉक्टरल अनुसंधान किया। अप्रैल, 2025 तक वह आईआईटी दिल्ली में प्रोफेसर रहे। उन्होंने इससे पहले नीदरलैंड्स के फिलिप्स सेमीकंडक्टर्स द्वारा आईआईटी दिल्ली में स्थापित एनएक्सपी (फिलिप्स) चेयर प्रोफेसरशिप का पद संभाला था। उनके शोध में नैनोइलेक्ट्रॉनिक उपकरण, नैनोस्केल डिवाइस मॉडलिंग और सिमुलेशन, इनोवेटिव डिवाइस डिजाइन और पावर सेमीकंडक्टर डिवाइस शामिल हैं, जिसमें 250 से अधिक संदर्भित प्रकाशन, तीन पुस्तकें, पांच पुस्तक अध्याय और उनके कार्य से उत्पन्न कई पेटेंट हैं।

3. प्रो. कुमार ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के 12वें कुलपति के रूप में कार्य किया (जनवरी, 2016–फरवरी, 2022), जहां उन्होंने इंजीनियरिंग और प्रबंधन कार्यक्रमों की शुरुआत सहित व्यापक सुधारों को लागू किया। इसके बाद उन्हें यूजीसी अध्यक्ष (फरवरी, 2022–अप्रैल, 2025) के रूप में नियुक्त किया गया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के अध्यक्ष के रूप में, उन्होंने यूजीसी को नियम–आधारित नियामक से शैक्षिक सुधारों के सूत्रधार में बदल दिया। उन्होंने छात्र–केंद्रित, अनुकूलित शिक्षा और राष्ट्रव्यापी संस्थागत सक्षमता को आगे बढ़ाया। उनकी सार्वजनिक भागीदारी और नीतिगत स्पष्टता ने एनईपी, 2020 में ठोस विश्वविद्यालयी कदम उठाने में मदद की। इन कार्यान्वयनों में प्रवेश से लेकर क्रेडिट और अंतर्राष्ट्रीयकरण तक शामिल थे। उन्होंने भारत के विविध उच्च शिक्षा परिदृश्य में लगातार समानता, गुणवत्ता और व्यावहारिक निष्पादन पर जोर दिया। इन भूमिकाओं में, उन्होंने पारदर्शी प्रक्रियाओं, शैक्षणिक मानकों और प्रणालीगत उन्नयन को प्राथमिकता दी। उनके यूजीसी कार्यकाल के दौरान, सबसे अधिक दृश्यमान प्रणाली–स्तरीय मील के पत्थर में कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट (सीयूईटी) का रोल–आउट और तेजी से विस्तार, द्विवार्षिक प्रवेश विडों, एक साथ दो डिग्री हासिल करने का प्रावधान और संशोधित पीएचडी मार्ग शामिल थे, जिन्होंने सभी विद्याओं में मेधावी छात्रो के लिए चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम में अनुसंधान के अवसर खोले।

4. प्रो. कुमार ने एनईपी 2020 के तहत मॉडलों को तैयार और संचालित किया: अनुकूलित संरचनाओं के साथ चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम; क्रेडिट का अकादमिक बैंक और मॉड्यूलर, क्यूमेलिटिव लर्निंग के लिए एक राष्ट्रीय क्रेडिट ढांचा; कार्यस्थल प्रशिक्षण को शामिल करने के लिए अप्रेंटिसशिप एम्बेडेड डिग्री प्रोग्राम; पेशेवरों को आकर्षित करने के लिए प्रैक्टिस रूट के प्रोफेसर; मालवीय मिशन के माध्यम से बड़े पैमाने पर शिक्षक विकास; और डिजिटल अवसंरचनात्मक ढांचा, जिसमें संकाय भर्ती के लिए एक एकीकृत पोर्टल शामिल है। उन्होंने ट्विनिंग, संयुक्त और दोहरी डिग्री, विदेशी डिग्री की मान्यता और विदेशी विश्वविद्यालयों को भारत में परिसर स्थापित करने में सक्षम बनाने के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीयकरण को सुदृढ़ बनाया है, साथ ही विज्ञान, दूरसंचार, संस्कृति और अंतरिक्ष के क्षेत्र में राष्ट्रीय निकायों में शासकीय भूमिकाएं निभाई।

5. प्रो. कुमार भारतीय राष्ट्रीय इंजीनियरिंग अकादमी, भारत की राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं दूरसंचार इंजीनियर्स संस्थान के सदस्य हैं। उन्हें आईआईटी दिल्ली का वर्ष 2013 का शिक्षण में उत्कृष्टता पुरस्कार, आईईटीई राम लाल वाधवा स्वर्ण पदक और आईईटीई लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड मिला। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उन्हें वर्ष 2008 में आईबीएम फैकल्टी अवार्ड और आईएसए–वीएसआई टेक्नोमेंटर अवार्ड से सम्मानित किया गया। उन्होंने इलेक्ट्रॉन डिवाइस पर आईईईई संबंधी लेनदेन और इलेक्ट्रॉन डिवाइस सोसाइटी के आईईईई जर्नल में संपादकीय भूमिकाएँ निभाई हैं, और वह आईईटीई तकनीकी समीक्षा के प्रधान संपादक हैं। वह फिटनेस के प्रति उत्साही हैं और उन्होंने कराटे सीखा है।

SHRI PRAVEEN KUMAR

Shri Praveen Kumar is a distinguished Indian para-high jumper.

2. Born on May 15th, 2003 into a humble family, Shri Praveen Kumar, with one leg shorter than the other, faced physical challenges from the very beginning. Volleyball was his first love. Despite his physical condition, Shri Praveen discovered that he could jump and smash with exceptional power — often outperforming his peers. This experience ignited his confidence and led him to attempt high jump at an inter-school competition against able-bodied athletes. That moment marked the beginning of his historic journey in para-athletics. A pivotal phase in his life began when he met his coach, Dr. Satyapal Singh, at Jawaharlal Nehru Stadium. Under structured guidance and scientific training, Praveen was transformed from a promising youngster into an elite international athlete.

3. Shri Praveen is currently ranked World No. 1 in Men's T44 High Jump. He is the youngest Indian para-athlete to win a Paralympic medal and the first to secure gold in an able-bodied national championship, breaking long-standing barriers between para and mainstream sport. Representing India at two Paralympic Games, World Championships, the Asian Para Games, and other major global events, he has consistently delivered medal-winning performances while setting multiple Asian records. His inspiring story is widely shared by schools and institutions across India, motivating children with disabilities to pursue sport and strengthening recognition from policymakers and the media. Training at the Jawaharlal Nehru Stadium, he not only strives for continued excellence but also mentors emerging para-athletes and regularly visits institutions for special children, promoting sport as a transformative force physically, emotionally and socially.

4. Shri Praveen has achieved remarkable success on the international stage, beginning with a silver medal in the Men's High Jump T44 at the World Para Athletics Junior Championships. In the same year, he secured 4th place at the World Para Athletics Championships, earning qualification for the Tokyo 2020 Paralympic Games. He went on to claim gold at the World Para Athletics Grand Prix with a leap of 2.05m, setting an Asian Record. At the Tokyo Paralympics, he won a silver medal with a 2.07m jump — another Asian Record — becoming the youngest Indian para-athlete to win a Paralympic medal. His success continued with a historic gold medal at the Paris 2024 Paralympic Games, where he set a new Asian Record, and a gold medal at the Asian Para Games with a record-breaking performance. Over the years, he has also been a medalist at the World Championships, Asian Youth Para Games, IWAS World Games, and multiple Grand Prix events. In 2022, he further redefined sporting boundaries by becoming the first Indian para-athlete to win gold in an able-bodied national athletics championship at the Federation Cup Junior Championships, marking a historic moment in bridging para and mainstream sport.

5. Shri Praveen's extraordinary contributions to Indian sport have earned him the nation's highest sporting honours — the Arjuna Award in 2021 and the Major Dhyan Chand Khel Ratna Award in 2024.

श्री प्रवीण कुमार

श्री प्रवीण कुमार एक प्रतिष्ठित भारतीय पैरा—हाई जम्पर हैं।

2. 15 मई, 2003 में एक साधारण परिवार में जन्मे, श्री प्रवीण, जिनका एक पैर दूसरे से छोटा था, ने अपने शुरुआती जीवन में ही शारीरिक चुनौतियों का सामना किया। वॉलीबॉल उनका पहला प्यार था। अपनी शारीरिक स्थिति के बावजूद, श्री प्रवीण ने पाया कि वह असाधारण शक्ति के साथ कूद सकते है और स्मैश कर सकते हैं और अक्सर अपने साथियों से बेहतर प्रदर्शन करते हैं। इस अनुभव ने उनमें आत्मविश्वास जगाया और उन्हें सक्षम एथलीटों के खिलाफ एक अंतर—विद्यालय प्रतियोगिता में ऊंची कूद का प्रयास करने के लिए प्रेरित किया। उस अवसर ने पैरा एथलेटिक्स में उनकी ऐतिहासिक यात्रा की शुरुआत की। उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण चरण तब शुरू हुआ जब वे जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में अपने कोच डॉ. सत्यपाल सिंह से मिले। बेहतर मार्गदर्शन और वैज्ञानिक प्रशिक्षण के तहत, वह एक होनहार युवा से एक उत्कृष्ट अंतरराष्ट्रीय एथलीट में बदल गए।

3. श्री प्रवीण वर्तमान में पुरुषों की टी44 ऊंची कूद में विश्व में नंबर 1 पर हैं। वह पैरालंपिक पदक जीतने वाले सबसे कम उम्र के भारतीय पैरा एथलीट हैं और एक सक्षम राष्ट्रीय चौम्पियनशिप में स्वर्ण पदक हासिल करने वाले पहले व्यक्ति हैं, जो पैरा और मुख्यधारा के खेल के बीच लंबे समय से चली आ रही बाधाओं को तोड़ते हैं। दो पैरालंपिक खेलों, विश्व चौंपियनशिप, एशियाई पैरा खेलों और अन्य प्रमुख वैश्विक आयोजनों में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए, उन्होंने लगातार पदक जीतने वाले प्रदर्शन दिए हैं और कई एशियाई रिकॉर्ड बनाए हैं। उनकी प्रेरणादायक कहानी पूरे भारत के स्कूलों और संस्थानों में व्यापक रूप से साझा की जाती है, जो विकलांग बच्चों को खेल में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है और नीति निर्माताओं और मीडिया से उन्हें व्यापक सराहना मिलती है। जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में प्रशिक्षण के दौरान, वह न केवल निरंतर उत्कृष्टता के लिए प्रयास करते हैं बल्कि उभरते पैरा—एथलीटों का मार्गदर्शन भी करते हैं और नियमित रूप से विशेष बच्चों के संस्थानों का दौरा करते हैं, खेल को शारीरिक, भावनात्मक और सामाजिक रूप से परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में बढ़ावा देते हैं।

4. श्री प्रवीण ने विश्व पैरा एथलेटिक्स जूनियर चौंपियनशिप में पुरुषों की ऊंची कूद टी44 में रजत पदक के साथ अंतरराष्ट्रीय मंच पर उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। उसी वर्ष, उन्होंने टोक्यो 2020 पैरालंपिक खेलों के लिए अर्हता प्राप्त करते हुए विश्व पैरा एथलेटिक्स चौंपियनशिप में चौथा स्थान हासिल किया। इसके बाद उन्होंने 2.05 मीटर की छलांग लगाकर एशियाई रिकॉर्ड बनाते हुए विश्व पैरा एथलेटिक्स ग्रां प्री में स्वर्ण पदक जीता। टोक्यो पैरालंपिक में, उन्होंने 2.07 मीटर की छलांग के साथ रजत पदक जीता और एक और एशियाई रिकॉर्ड बनाया। वह पैरालंपिक पदक जीतने वाले सबसे कम उम्र के भारतीय पैरा—एथलीट बने। उनकी सफलता पेरिस 2024 पैरालंपिक खेलों में एक ऐतिहासिक स्वर्ण पदक के साथ जारी रही, जहां उन्होंने एक नया एशियाई रिकॉर्ड बनाया, और एशियाई पैरा खेलों में रिकॉर्ड तोड़ प्रदर्शन के साथ स्वर्ण पदक जीता। पिछले कुछ वर्षों में वह विश्व चौंपियनशिप, एशियाई युवा पैरा खेलों, आईडब्ल्यूएएस विश्व खेलों और कई ग्रां प्री प्रतियोगिताओं में पदक विजेता भी रहे हैं। वर्ष 2022 में, उन्होंने फेडरेशन कप जूनियर चौंपियनशिप में एक सक्षम शारीरिक राष्ट्रीय एथलेटिक्स चौम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीतने वाले पहले भारतीय पैरा—एथलीट बनकर खेल की सीमाओं को फिर से परिभाषित किया, जो पैरा और मुख्यधारा के खेल को जोड़ने में एक ऐतिहासिक क्षण था।

5. भारतीय खेल में श्री प्रवीण के असाधारण योगदान से उन्हें वर्ष 2021 में अर्जुन पुरस्कार और वर्ष 2024 में मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार जैसे देश के सर्वोच्च खेल सम्मान प्राप्त हुए हैं।

SHRI K. VIJAY KUMAR

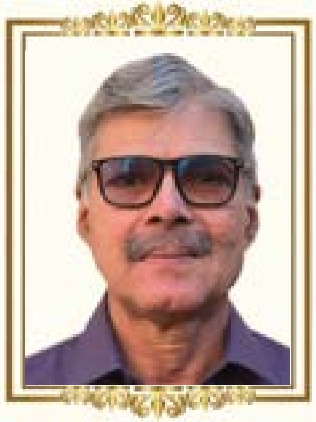

Shri K. Vijay Kumar, former Director General, Central Reserve Police Force, is a specialist in team-building for hazardous missions and small-team tactics, who introduced double-handed fast shooting practices in India and trained IPS officers in firearms and tactics for a decade.

2. Born on 15th September, 1952, Shri K. Vijay Kumar was educated at St. Joseph's College and Madras Christian College before joining the Indian Police Service (IPS) in 1975. He holds MA, MBA, ML, LLM, MBL, and MPhil degrees. A second-generation police officer—his father was an Inspector—he was also selected for the IAS in 1976 but chose to remain in the IPS. As SP of Dharmapuri (1981–83), he participated in decisive operations that eliminated violent Naxalism from Tamil Nadu. As SP of Salem (1983–85), he transformed the district's reputation, cracking down on organized crime and the flesh trade. From 1985 to 1990, he was among the first officers selected for the Special Protection Group (SPG) formed to protect then Prime Minister Shri Rajiv Gandhi. A passionate trainer, he underwent specialized courses in the United States, the former USSR, and Europe, clearing programs completed by only two IPS officers. In 1990, he served as Deputy Leader of the Indian Security delegation that trained the Mauritian Prime Minister's protection team.

3. Between 1991 and 1996, Shri K. Vijay Kumar raised and led the Special Security Group (SSG) to protect Chief Minister Smt. J. Jayalalithaa during a period of heightened threat. The SSG model was later replicated in several states, including Jammu & Kashmir. Its training wing logged over 300,000 man-hours and established Counter-Terrorist units in 25 Tamil Nadu districts, training nearly 5,000 Inspectors and Sub-Inspectors in advanced tactics and firearms.

4. As IG, Madurai (1997–98), Shri K. Vijay Kumar restored normalcy across nine southern districts during severe caste clashes that claimed 75 lives, using calibrated and field-led policing. As IG, BSF in Kashmir (1998–2001), he commanded nearly 50,000 personnel during the Kargil War and the peak of fidayeen attacks, leaving behind one of the Force's strongest operational records.

5. As Commissioner of Chennai (2001–03), Shri K. Vijay Kumar reformed crime control practices, cracked down on organized gangs, enhanced public safety and reduced road fatalities by 40%. From 2003 to 2004, he headed the Special Task Force that ended the two-decade manhunt for brigand Veerappan through intelligence-driven operations and innovative training methods.

6. As Additional DG (Law & Order), Tamil Nadu (2006–08), Shri K. Vijay Kumar strengthened public safety strategies. As Director of the National Police Academy (2008–10), he created the Tactics Wing after the 26/11 Mumbai attacks and institutionalized the Mid-Career Training Programme (MCTP) in collaboration with global universities including Cambridge and South Wales.

7. Shri K. Vijay Kumar was appointed as DG, CRPF (2010–12) after the Dantewada Maoist attack. He revitalized morale, modernized training and operations, emphasized welfare, and secured long-pending cadre reforms. From 2013 to 2018, he served as Senior Security Adviser (MHA) on Left Wing Extremism, a period that saw a 30% decline in Maoist violence. As Adviser to the Governor of Jammu & Kashmir (2018–20), he played a key role during the pre- and post-Article 370 phases, ensuring firm security management without fatal police firings. He continued as SSA (2020–22) on LWE and J&K affairs, and from 2023 to 2025 chaired a national committee to modernize police training curricula. He authored the bestseller “Veerappan: Chasing the Brigand” (2017) and is currently working on two books.

8. Shri K. Vijay Kumar is recipient of the President's Police Medals for Gallantry and Distinguished Service.

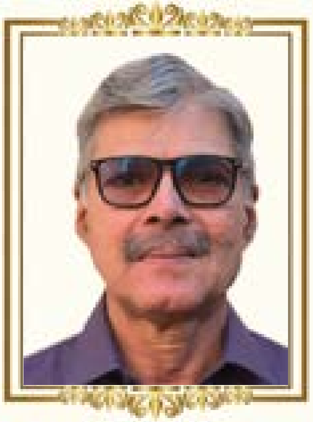

श्री के. विजय कुमार

श्री के. विजय कुमार, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के पूर्व महानिदेशक, संकटपूर्ण मिशनों के लिए टीम निर्माण और लघु–टीम रणनीति में विशेषज्ञ हैं, जिन्होंने भारत में दोनों हाथ से तेज शूटिंग अभ्यास का आरंभ किया और एक दशक तक आईपीएस अधिकारियों को आग्नेयास्त्रों और रणनीति में प्रशिक्षित किया।

2. 15 सितंबर, 1952 को जन्मे, श्री के. विजय कुमार ने वर्ष 1975 में भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) में शामिल होने से पहले सेंट जोसेफ कॉलेज और मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज में शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने एमए, एमबीए, एमएल, एलएलएम, एमबीएल और एमफिल की डिग्री हासिल की। पिता के निरीक्षक होने के बाद, अपने परिवार में वे दूसरी पीढ़ी के पुलिस अधिकारी थे। उन्हें वर्ष 1976 में आईएएस के लिए भी चुना गया, लेकिन उन्होंने आईपीएस में बने रहने का विकल्प चुना। धर्मपुरी के एसपी (1981–83) के रूप में, उन्होंने निर्णायक अभियानों में भाग लेकर तमिलनाडु से हिंसक नक्सलवाद को खत्म किया। सलेम के एसपी (1983–85) के रूप में, उन्होंने संगठित अपराध और देह व्यापार पर नकेल कसते हुए जिले की प्रतिष्ठा में सुधार किया। वर्ष 1985 से 1990 तक, वे तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की सुरक्षा के लिए गठित विशेष सुरक्षा समूह (एसपीजी) में चुने गए पहले अधिकारियों में से एक थे। एक उत्साही प्रशिक्षक होने के नाते उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका, पूर्व सोवियत संघ और यूरोप में विशेष पाठ्यक्रम पूरे किए तथा केवल दो आईपीएस अधिकारियों द्वारा पूरा किया गया कार्यक्रम पास किया। वर्ष 1990 में उन्होंने भारतीय सुरक्षा प्रतिनिधिमंडल के उप प्रमुख के रूप में कार्य किया जिसने मॉरीशस के प्रधानमंत्री की सुरक्षा टीम को प्रशिक्षित किया।

3. वर्ष 1991 और 1996 के बीच, श्री के. विजय कुमार ने मुख्यमंत्री श्रीमती जे. जयललिता पर बढ़ते खतरे को देखते हुए उनकी सुरक्षा के लिए विशेष सुरक्षा समूह (एसएसजी) का गठन कर उसका नेतृत्व किया। एसएसजी मॉडल को बाद में, जम्मू–कश्मीर सहित कई राज्यों में दोहराया गया। इसके प्रशिक्षण विंग ने 300,000 से अधिक श्रम घंटे लॉग किए तथा तमिलनाडु के 25 जिलों में आतंकवाद–रोधी इकाइयां स्थापित कर उन्नत रणनीति और आग्नेयास्त्रों में लगभग 5,000 निरीक्षकों और उप–निरीक्षकों को प्रशिक्षित किया।

4. मदुरई के महानिरीक्षक (वर्ष 1997–98) के रूप में, श्री के. विजय कुमार ने गंभीर जातिगत संघर्षों के दौरान, जिसमें 75 लोगों की मृत्यु हुई, कैलिब्रेटेड और फील्ड–नेतृत्व वाली पुलिसिंग का उपयोग कर नौ दक्षिणी जिलों में सामान्य स्थिति बहाल की। कश्मीर में बीएसएफ में महानिरीक्षक (1998–2001) के रूप में, उन्होंने कारगिल युद्ध और फिदायीन हमलों के चरम समय के दौरान लगभग 50,000 कर्मियों की कमान संभाली और बीएसएफ में सबसे उत्कृष्ट और सुदृढ़ प्रचालन रिकॉर्ड स्थापित किया।

5. चेन्नई के आयुक्त (वर्ष 2001–03) के रूप में, श्री के. विजय कुमार ने अपराध नियंत्रण प्रक्रिओं में सुधार किया, संगठित गिरोहों पर नकेल कसी, सार्वजनिक सुरक्षा बढ़ाई और सड़क दुर्घटनाओं में हुई मृत्यु में 40% की कमी लाई। वर्ष 2003 से 2004 तक, उन्होंने विशेष कार्य बल का नेतृत्व किया जिसने आसूचना–संचालित अभियानों और नवाचारी प्रशिक्षण विधियों के माध्यम से दो दशक तक चल रही वीरप्पन की खोज समाप्त कर दिया।

6. अपर महानिदेशक (कानून और व्यवस्था), तमिलनाडु (वर्ष 2006–08) के रूप में, श्री के. विजय कुमार ने सार्वजनिक सुरक्षा कार्य नीतियों को सुदृढ़ किया। राष्ट्रीय पुलिस अकादमी के निदेशक (वर्ष 2008–10) के रूप में, उन्होंने 26/11 मुंबई हमलों के बाद रणनीति विंग बनाया और कैम्ब्रिज और साउथ वेल्स सहित वैश्विक विश्वविद्यालयों के सहयोग से मिड–कैरियर ट्रेनिंग प्रोग्राम (एमसीटीपी) को संस्थागत किया।

7. दंतेवाड़ा माओवादी हमले के बाद श्री के. विजय कुमार को महानिदेशक, सीआरपीएफ (वर्ष 2010–12) नियुक्त किया गया। उन्होंने सुरक्षाकर्मियों के मनोबल को पुनर्जीवित किया, प्रशिक्षण और संचालन का आधुनिकीकरण किया, कल्याण पर जोर दिया और लंबे समय से विचाराधीन संवर्ग संबंधी सुधार किए। वर्ष 2013 से 2018 तक, उन्होंने वामपंथी उग्रवाद पर वरिष्ठ सुरक्षा सलाहकार (गृह मंत्रालय) के रूप में कार्य किया। इस अवधि में माओवादी हिंसा में 30% की कमी देखी गई। जम्मू और कश्मीर के राज्यपाल के सलाहकार (वर्ष 2018–20) के रूप में, उन्होंने घातक पुलिस गोलीबारी के बिना दृढ़ सुरक्षा प्रबंधन सुनिश्चित करते हुए अनुच्छेद 370 से पहले और बाद के चरणों के दौरान एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे वामपंथी उग्रवाद और जम्मू–कश्मीर मामलों पर वरिष्ठ सुरक्षा सलाहकार (वर्ष 2020–22) के रूप में कार्य करते रहे, और उन्होनें वर्ष 2023 से 2025 तक पुलिस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को आधुनिक बनाने के लिए एक राष्ट्रीय समिति की अध्यक्षता की। उन्होंने बेस्टसेलर 'वीरप्पनः चेजिंग द ब्रिगेंड' (2017) नामक पुस्तक लिखी और वर्तमान में दो पुस्तकें लिख रहे हैं।

8. श्री के. विजय कुमार को वीरता और विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति द्वारा पुलिस पदक से सम्मानित किया गया।

SHRI SHRIRANG DEVBA LAD

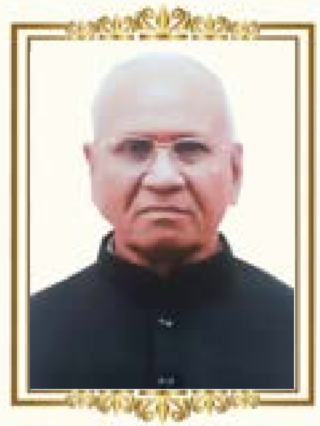

Shri Shrirang Devba Lad is a famous agriculturist, who is known for his exceptional contribution to rural development, sustainable agriculture and social work as the father of cotton technology, a motivator of farmer-centric agricultural innovation.

2. Born on 1st January, 1947, in Malsonna village, District, Parbhani, Shri Lad completed his college education at Shitaji College, Parbhani. After completing his inter-arts education, he worked as a Rashtriya Swayamsevak Sangh pracharak from 1969 of Sillod, Bhokardan, Kannada, Jalna talukas. He started working in the Sambhajinagar district from 1975. During the Emergency, he worked underground to create social awareness. He is the Rashtriya Swayamsevak Sangh Pracharak. He is Kshetra Sanghatana Mantri and All India Executive Member of Bharatiya Kisan Sangh.

3. Shri Lad is also known for his research and invention in agriculture. He invented new technology in cotton cultivation which was used by farmers in all cotton producing states of India. He had done research work in Jawar and Tur (Cajanus cajan) to optimise the yield in the field of Good Agriculture Practices. Due to his continuous research in the field of agriculture, there has been increase in production, especially in the production of cotton. In normal practice, farmers were getting a yield of 5-6 quintal of cotton per acre. His cotton technology resulted in a significant increase in the production of 25 to 30 quintals per acre. In the jowar crop, farmers were getting yield of 5 to 6 quintals of jowar. His techniques have enhanced the production of jowar to about 25 to 30 quintals per acre. His techniques are evaluated by CICR Central Cotton Research Institute, Nagpur. He is the first farmer in the country to become a member of the committee of the CICR Institute and also a committee member of Doordarshan.

4. Shri Lad was honoured with the degree of Doctor of Science (Honorary) from Vasantrao Naik Agricultural University in December, 2025. He was hounoured by socially significant Shri Guruji Puraskar from Jankalyan Samiti at Maharashtra in the year 2026.

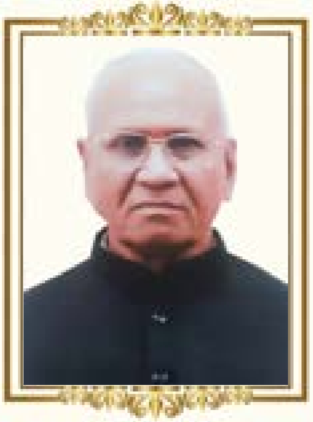

श्री श्रीरंग देवबा लाड

श्री श्रीरंग देवबा लाड एक प्रसिद्ध कृषक है, जो ग्रामीण विकास, स्थाई कृषि और सामाजिक कार्यों मे अपने असाधारण योगदान के लिए जाने जाते है, वे कपास प्रौधोगिकी के जनक और किसान केंद्रित कृषि नवाचार के प्रेरक है।

2. 1 जनवरी, 1947 को परभणी जिले के मालसोन्ना गांव में जन्मे, श्री लाड ने शीताजी कॉलेज, परभणी से अपनी कॉलेज की शिक्षा पूरी की। अपनी अंतर–कला की शिक्षा पूरी करने के बाद, उन्होंने 1969 से सिलोड, भोकरदन, कन्नड़, जालना तालुकों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में काम किया। उन्होंने वर्ष 1975 से संभाजीनगर जिले में काम करना शुरू किया। आपातकाल के दौरान, उन्होंने सामाजिक जागरूकता पैदा करने के लिए भूमिगत रूप से काम किया। वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक हैं। वह क्षेत्र संगठन मंत्री और भारतीय किसान संघ के अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य हैं।

3. श्री लाड कृषि मे अनुसंधान और आविष्कार के लिए भी जाने जाते है। उन्होंने कपास की खेती में नई तकनीक का आविष्कार किया जिसका उपयोग भारत के सभी कपास उत्पादक राज्यों में किसानों द्वारा किया गया। उन्होंने अच्छी कृषि पद्धतियों के क्षेत्र में उपज को बढाने के लिए ज्वार और तूर (कैजनस कैजन) में शोध कार्य किया। कृषि के क्षेत्र में उनके निरंतर शोध के कारण उत्पादन में वृद्धि हुई विशेषकर कपास का उत्पादन बढ़ाने में। सामान्य तौर पर किसानों को प्रति एकड़ 5–6 क्विंटल कपास की उपज मिल रही थी। उनकी कपास प्रौद्योगिकी के परिणामस्वरूप यह उत्पाद उल्लेखनीय रूप से बढ़कर प्रति एकड़ 25 से 30 क्विंटल हो गया। ज्वार की फसल में किसानों को 5 से 6 क्विंटल ज्वार की उपज मिल रही थी, उनकी तकनीकों के फलस्वरूप ज्वार में लगभग 25 से 30 क्विंटल प्रति एकड़ की वृद्धि हुई है। उनकी तकनीकों का मूल्यांकन सीआईसीआर केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा किया जाता है। वह सीआईसीआर संस्थान की समिति के सदस्य बनने वाले देश के पहले किसान हैं और दूरदर्शन की समिति के सदस्य भी हैं।

4. श्री लाड को दिसंबर, 2025 में वसंतराव नाइक कृषि विश्वविद्यालय से डॉक्टर ऑफ साइंस (मानद) की उपाधि से सम्मानित किया गया। उन्हें वर्ष 2026 में महाराष्ट्र में जनकल्याण समिति द्वारा सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण श्री गुरुजी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

SHRI ANKEGOWDA M

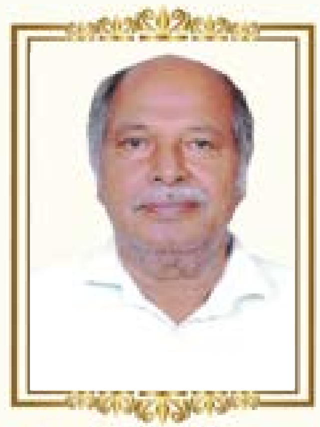

Shri Ankegowda M is a renowned bibliophile and knowledge conservator from Pandavapura Taluk, Mandya District, Karnataka, who has devoted his entire life to the preservation, collection, and free public dissemination of books.

2. Born on 8th January, 1949 in Chinakuruli village, Pandavapura Taluk, Karnataka, Shri Ankegowda holds a Master's degree in Kannada Literature. He served as a Time Officer at Pandavapura Sahakara Sakkare Karkane Ltd. (PSSK Ltd.) for 32 years and opted for voluntary retirement in 2005. From his college days, he nurtured a deep passion for reading and collecting books, which gradually transformed into a lifelong mission of national importance. Over a period of nearly five decades, he has created one of the largest private personal book collections in the world, making a significant and unique contribution to the promotion of education, literature, and cultural heritage in India.

3. Shri Ankegowda has personally collected more than 20 lakh books over the last 50 years, using his entire personal earnings for this purpose. His collection includes books in Kannada, English, Hindi, Tamil, Telugu, and several other Indian languages, covering diverse subjects such as literature, history, art, culture, philosophy, spiritualism, music, geography, science, and social sciences. The collection is preserved at his residence, popularly known as “Pustakada Mane” (House of Books), which functions as a free public library. The library is open free of cost to students, researchers, competitive examination aspirants, and the general public, thereby promoting inclusive access to knowledge irrespective of socio-economic background.

4. Shri Ankegowda manages this vast collection without any paid staff, with support only from his family. He continues to expand the collection even today and resides within the same premises, dedicating his entire life to the upkeep and safeguarding of books. His contribution is unparalleled in the field of knowledge preservation and public education. His life exemplifies selfless service, simplicity, and unwavering commitment to the dissemination of knowledge.

5. Recognizing the exceptional scale and public value of his work, Shri Ankegowda has received several honours, including the Karnataka Rajyotsava Award (2014) and recognition by the Limca Book of Records (2017) for his extraordinary personal book collection. The Government of Karnataka has also extended infrastructural support to accommodate the growing collection, acknowledging the societal importance of his lifelong service.

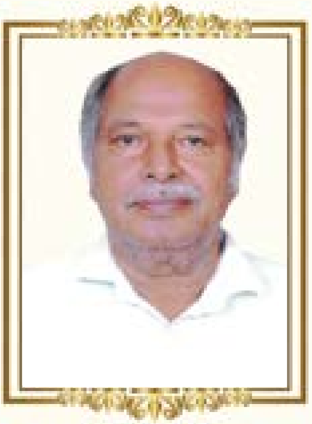

श्री अंकेगौड़ा एम

श्री अंकेगौड़ा एम कर्नाटक के मांड्या जिले के पांडवपुरा तालुक के एक प्रसिद्ध ग्रंथ सूची प्रेमी और ज्ञान संरक्षक हैं, जिन्होंने अपना पूरा जीवन पुस्तकों के संरक्षण, संग्रह और मुफ्त सार्वजनिक प्रसार के लिए समर्पित कर दिया है।

2. 8 जनवरी, 1949 को कर्नाटक के पांडवपुरा तालुक के चिनकुरुली गांव में जन्मे, श्री अंकेगौड़ा ने कन्नड़ साहित्य में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की है। उन्होंने 32 वर्षों तक पांडवपुरा सहकार सक्करे करकने लिमिटेड (पीएसएसके लिमिटेड) में टाइम अधिकारी के रूप में कार्य किया और वर्ष 2005 में स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति का विकल्प चुना। अपने कॉलेज के दिनों से, उन्हें किताबें पढ़ने और इकट्ठा करने का बहुत जुनून था, जो धीरे–धीरे राष्ट्रीय महत्व के आजीवन मिशन में बदल गया। लगभग पांच दशकों की अवधि में, उन्होंने विश्व के सबसे बड़े निजी व्यक्तिगत पुस्तक संग्रह का सृजन किया है, जिसने भारत में शिक्षा, साहित्य और सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण और अद्वितीय योगदान दिया है।

3. श्री अंकेगौड़ा ने पिछले 50 वर्षों में व्यक्तिगत रूप से 20 लाख से अधिक पुस्तकों का संग्रह किया है, इस उद्देश्य के लिए उन्होंने पूर्ण रूप से अपनी व्यक्तिगत कमाई का उपयोग किया है। उनके संग्रह में कन्नड़, अंग्रेजी, हिंदी, तमिल, तेलुगु और कई अन्य भारतीय भाषाओं की पुस्तकें शामिल हैं, जिनमें साहित्य, इतिहास, कला, संस्कृति, दर्शन, अध्यात्म, संगीत, भूगोल, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान जैसे विविध विषयों को शामिल किया गया है। यह संग्रह उनके निवास पर संरक्षित है, जिसे लोकप्रिय रूप से "पुस्तकदा माने" (हाउस ऑफ बुक्स) के रूप में जाना जाता है, जो एक मुफ्त सार्वजनिक पुस्तकालय के रूप में कार्य करता है। पुस्तकालय छात्रों, शोधकर्ताओं, प्रतियोगी परीक्षा के अभ्यर्थियों और आम जनता के लिए निःशुल्क खुला है, जिससे सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना ज्ञान तक समावेशी पहुंच को बढ़ावा मिलता है।

4. श्री अंकेगौड़ा केवल अपने परिवार के सहयोग से, किसी भी वैतनिक कर्मचारी के बिना इस विशाल संग्रह का प्रबंधन करते हैं। वह आज भी अपना पूरा जीवन पुस्तकों के रखरखाव और सुरक्षा के लिए समर्पित करते हुए, इस संग्रह का विस्तार करना जारी रखे हुए हैं तथा उसी परिसर में रहते हैं। ज्ञान संरक्षण और सार्वजनिक शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान अद्वितीय है। उनका जीवन निस्वार्थ सेवा, सादगी और ज्ञान के प्रसार के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का उदाहरण है।

5. उनके कार्य के अनूठे स्तर और सार्वजनिक महत्व को स्वीकार करते हुए, श्री अंकेगौड़ा को कई सम्मान मिले हैं, जिनमें कर्नाटक राज्योत्सव पुरस्कार (2014) और उनके असाधारण व्यक्तिगत पुस्तक संग्रह के लिए लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स (2017) द्वारा मान्यता शामिल है। कर्नाटक सरकार ने उनकी आजीवन सेवा के सामाजिक महत्व को स्वीकार करते हुए बढ़ते संग्रह को समायोजित करने के लिए अवसंरचनात्मक सहायता भी प्रदान की है।

PROFESSOR (DR.) SAROJ MANDAL

Professor (Dr.) Saroj Mandal, MBBS, MD (Med), DM (Cardio), FRCP (Edinburgh), FRCP (Glasgow), FACC (USA), FSCAI (USA), is an eminent Interventional Cardiologist, educator, and healthcare leader from Kolkata.

2. Born on 15th September, 1967, Professor (Dr.) Mandal received his MBBS degree from the University of Calcutta in 1993, followed by post-graduation in Paediatrics in 1998 and Medicine in 2001. He pursued DM (Cardiology) from IPGMER and SSKM Hospital. His professional career began as Registrar in Medicine at CMC Vellore and later Ramkrishna Seva Mission Pratishthan & VIMS, Kolkata. He joined IPGMER & SSKM Hospital as Clinical Tutor in 2002. He holds the position of senior Interventional Cardiologist at Woodland Multispecialty Hospital. As Professor & Unit Head of Cardiology at IPGMER & SSKM Hospital with an illustrious career spanning 35 years, he has excelled in Intervention Cardiology for over 25 years, illuminating the medical landscape of Eastern India.

3. Professor (Dr.) Mandal is a visionary healthcare leader, he founded Krishnaya Institute Cardiac & Fetal Sciences (KICFS) in Kolkata in 2022, offering subsidised cardiac care accessible and affordable to thousands. He donates his remuneration to the hospital's welfare trust, ensuring every penny serves the underserved. His philanthropy extends to Nepalgunj Pailan Kolkata, where he's establishing a community-based cardiovascular unit, this initiative, built on his decade-long service through hundreds of free medical camps, is a model for public health innovation. He spearheaded the Tele Cardiology STEMI Programme in West Bengal, delivering timely cardiac interventions to thousands of rural hearts. He contributed to drafting Hypertension and Type II Diabetes Protocols for the Government of West Bengal and Emergency Cardiology Management Guidelines.

4. Professor (Dr.) Mandal has served over 600,000 patients in OPD over 35 years, and independently performed and supervised 50,000 coronary angiograms, 15,000 angioplasties, 15,000 pacemaker device implantations and 5000 valve micro-surgery procedures. He holds the distinction of having performed a significant number of pacemaker device implantations globally and a record of 22 pacemaker device implantations in a single day. Most part this service was dedicated to undeserved unprivileged people of the country. He has over 100 publications, 15 chapters contribution in books and editorial contributions in 6 books. As a professor-teacher, he has been mentoring and educating generations of MBBS, MD, and DM students, serving as an examiner and thesis guide for MD (Medicine), DM/DNB Cardiology courses and this has played a pivotal role in shaping the careers of future leaders in Medicine & Cardiology over the decades.

5. Professor (Dr.) Mandal has been conferred numerous awards, honorary diplomas and fellowships by esteemed medical societies in India and abroad, including: Fellowship of Indian College of Physicians-FICP in 2013, European Society of Cardiology-FESC in 2013, Society for Coronary Angiography & Intervention-FSCAI, USA in 2014, Asian Pacific Society of Interventional Cardiology-FAPSIC in 2015, American College of Cardiology-FACC in 2015, Cardiology Society of India-FCSI in 2017, Royal College of Physicians of Glasgow-FRCP in 2018, Royal College of Physicians of Edinburg-FRCP in 2022. His notable awards include Decade's Best Doctor from Krishnanagar West Bengal, Mother Teresa International Award from Dubai-UAE (2025), and Leading Interventional Cardiologist & Philanthropist by Time Group (twice).

प्रोफेसर (डॉ.) सरोज मंडल

प्रोफेसर (डॉ.) सरोज मंडल, एमबीबीएस, एमडी (मेडिकल), डीएम (कार्डियो), एफआरसीपी (एडिनबर्ग), एफआरसीपी (ग्लासगो), एफएसीसी (यूएसए), एफएससीएआई (यूएसए), कोलकाता के एक प्रख्यात इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजिस्ट, शिक्षक और स्वास्थ्य क्षेत्र में अग्रणी व्यक्तित्व हैं।

2. 15 सितंबर, 1967 को जन्मे, प्रोफेसर (डॉ.) मंडल ने वर्ष 1993 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से एमबीबीएस की डिग्री प्राप्त की, इसके बाद वर्ष 1998 में बाल चिकित्सा में स्नातकोत्तर और वर्ष 2001 में चिकित्सा में स्नातकोत्तर किया। उन्होंने आईपीजीएमईआर और एसएसकेएम अस्पताल से डीएम (कार्डियोलॉजी) की पढ़ाई की। उनका व्यावसायिक करियर सीएमसी वेल्लोर में मेडिसिन में रजिस्ट्रार के रूप में शुरू हुआ और बाद उन्होंने रामकृष्ण सेवा मिशन प्रतिष्ठान और वीआईएमएस, कोलकाता में कार्य किया। वह वर्ष 2002 में आईपीजीएमईआर और एसएसकेएम अस्पताल में क्लिनिकल ट्यूटर के रूप में शामिल हुए। वर्तमान में वह वुडलैंड मल्टीस्पेशलिटी अस्पताल में वरिष्ठ इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजिस्ट के पद पर कार्यरत हैं। 35 वर्षों के शानदार करियर के साथ, आईपीजीएमईआर और एसएसकेएम अस्पताल में कार्डियोलॉजी के प्रोफेसर और यूनिट हेड के रूप में, उन्होंने पूर्वी भारत के चिकित्सा जगत को प्रकाशमान करते हुए 25 वर्षों से अधिक समय तक इंटरवेंशन कार्डियोलॉजी में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।

3. प्रोफेसर (डॉ.) मंडल स्वास्थ्य क्षेत्र में दूरदर्शिता रखने वाले व्यक्तित्व हैं, उन्होंने वर्ष 2022 में कोलकाता में कृष्ण्य इंस्टीट्यूट कार्डियक एंड फेटल साइंसेज (केआईसीएफएस) की स्थापना की, जो हजारों लोगों के लिए सुलभ और सस्ती सब्सिडी वाली हृदयरोग संबंधी देखभाल प्रदान करता है। वह अपना पारिश्रमिक अस्पताल के कल्याण ट्रस्ट को दान करते हैं, और यह सुनिश्चित करते हैं कि हर पैसे से वंचितों की सेवा हो। उनकी परोपकारी सेवा नेपालगंज पैलन कोलकाता तक पहुंची है, जहां वह एक समुदाय–आधारित कार्डियोवैस्कुलर यूनिट की स्थापना कर रहे हैं, इस पहल का आधार सैकड़ों मुफ्त चिकित्सा शिविरों के माध्यम से उनकी एक दशक लंबी सेवा है, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य नवाचार के लिए एक मॉडल है। उन्होंने पश्चिम बंगाल में टेली कार्डियोलॉजी एसटीईएमआई कार्यक्रम का नेतृत्व किया, जिसके माध्यम से हजारों ग्रामीण मरीजों को समय पर हृदय संबंधी उपचार उपलब्ध कराया गया। उन्होंने पश्चिम बंगाल सरकार के लिए उच्च रक्तचाप और टाइप पप मधुमेह प्रोटोकॉल तथा आपातकालीन कार्डियोलॉजी प्रबंधन दिशानिर्देशों का मसौदा तैयार करने में योगदान दिया।

4. प्रोफेसर (डॉ.) मंडल ने 35 वर्षों में ओपीडी में 600,000 से अधिक रोगियों की सेवा की है, और स्वतंत्र रूप से 50,000 कोरोनरी एंजियोग्राम, 15,000 एंजियोप्लास्टी, 15,000 पेसमेकर डिवाइस इम्प्लांटेशन और 5000 वाल्व माइक्रो–सर्जरी प्रक्रियाओं का निष्पादन और पर्यवेक्षण किया है। उन्हें विश्व स्तर पर पेसमेकर डिवाइस प्रत्यारोपण करने और एक ही दिन में 22 पेसमेकर डिवाइस प्रत्यारोपण का रिकॉर्ड रखने का गौरव प्राप्त है। इस सेवा का अधिकांश हिस्सा देश के सुविधा विहीन वंचित लोगों को समर्पित था। उन्होंने 100 से अधिक प्रकाशनों, पुस्तकों में 15 अध्यायों और 6 पुस्तकों में संपादकीय योगदान दिया है। एक प्रोफेसर–शिक्षक के रूप में, वह एमबीबीएस, एमडी और डीएम छात्रों की पीढ़ियों को मार्गदर्शन दे रहे हैं और शिक्षित कर रहे हैं, एमडी (मेडिसिन), डीएम/डीएनबी कार्डियोलॉजी पाठ्यक्रमों के लिए एक परीक्षक और थीसिस गाइड के रूप में सेवा कर रहे हैं और इसने दशकों से चिकित्सा और कार्डियोलॉजी में भविष्य के नायकों के करियर को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

5. प्रोफेसर (डॉ.) मंडल को भारत और विदेशों में प्रतिष्ठित चिकित्सा सोसायटीज द्वारा कई पुरस्कार, मानद डिप्लोमा और फेलोशिप से सम्मानित किया गया है, जिनमें : वर्ष 2013 में इंडियन कॉलेज ऑफ फिजिशियन–एफआईसीपी की फैलोशिप, वर्ष 2013 में यूरोपियन सोसाइटी ऑफ कार्डियोलॉजी–एफईएससी, वर्ष 2014 में सोसाइटी फॉर कोरोनरी एंजियोग्राफी एंड इंटरवेंशन–एफएससीएआई, यूएसए, वर्ष 2015 में एशियन पैसिफिक सोसाइटी ऑफ इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजी–एफएपीएसआईसी, वर्ष 2015 में अमेरिकन कॉलेज ऑफ कार्डियोलॉजी–एफएसीसी, वर्ष 2017 में कार्डियोलॉजी सोसाइटी ऑफ इंडिया–एफसीएसआई, वर्ष 2018 में ग्लासगो–एफआरसीपी के रॉयल कॉलेज ऑफ फिजिशियन, वर्ष 2022 में एडिनबर्ग–एफआरसीपी के रॉयल कॉलेज ऑफ फिजिशियन पुरस्कार शामिल हैं। उनके उल्लेखनीय पुरस्कारों में कृष्णानगर, पश्चिम बंगाल के दशक का सर्वश्रेष्ठ डॉक्टर, दुबई–यूएई से मदर टेरेसा इंटरनेशनल अवार्ड (2025) और टाइम ग्रुप द्वारा लीडिंग इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजिस्ट एवं फिलेन्थ्रोपिस्ट (दो बार) शामिल हैं।

PROF. BUDDHA RASHMI MANI

Prof. Buddha Rashmi Mani is the former Director General of the National Museum, New Delhi, and Vice Chancellor of the Indian Institute of Heritage, Government of India. He is widely recognized across the world as one of the finest excavators, art critic, epigraphist, and numismatist, whose multi-faceted expertise in the field of Archaeology has brought about a paradigm shift in understanding India's past.

2. Born on 17th April, 1955, Prof. Mani received his Bachelor of Arts in 1974 and Master of Arts in 1976, standing first class first at Banaras Hindu University, and was awarded the B.H.U. Gold Medal and Altekar Gold Medal. In 1980, he received his Ph.D. degree from B.H.U. on the topic Life in the Kushan Age. From 1978 to 1984, he taught at Banaras Hindu University and the Central Institute of Higher Tibetan Studies, Sarnath, after which he was selected by the UPSC to join as Deputy Superintending Archaeologist in the Archaeological Survey of India.

3. Prof. Mani served in the Archaeological Survey of India from 1984 to 2015 in various capacities, including Dy. SA, SA, Director, Jt. DG and ADG. In 2016, the Government of India appointed him as Director General of the National Museum and Vice Chancellor of the National Museum Institute, which was renamed in 2023 as the Indian Institute of Heritage. He retired in April, 2025.

4. While working in the Archaeological Survey of India, Prof. Mani conserved about 150 centrally protected monuments in Maharashtra, Goa, Delhi and Jammu & Kashmir and discovered around 200 archaeological sites. He directed 20 excavations, including Ayodhya (Shri Ram Janmabhoomi), Kapilavastu, Rajghat, Sarnath. Siswania, Sankisa, Lal Kot, Kanishkapur and Ambaran. His excavations at Ayodhya provided evidence to settle the long-pending court case on the site. As DG of the National Museum, he also excavated two sites, Kunal and Kurdi.

5. Prof. Mani has authored six books, about 200 research papers and 15 edited volumes, besides editing the Puratattva and Purapravaha journals of the Indian Archaeological Society for more than a decade. He has led archaeological missions abroad and represented Indian delegations in many Asian, American and European countries, including participation in National and International conferences. Eight Ph.D. scholars have received their degrees under his guidance and two are currently pursuing Ph.D. under his supervision. Presently, he serves as Vice-Chairman of the Indian Archaeological Society and as Professor of Practice, he is the Head of the Department of Archaeology at the Indian Institute of Heritage.

प्रो. बुद्ध रश्मि मणि

प्रो. बुद्ध रश्मि मणि राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली के पूर्व महानिदेशक और भारतीय विरासत संस्थान, भारत सरकार के कुलपति हैं। इन्हें विश्वभर में बेहतरीन उत्खनक, कला समीक्षक, पुरालेखशास्त्री और मुद्राशास्त्री के रूप में व्यापक ख्याति प्राप्त है, जिनकी पुरातत्व के क्षेत्र में बहुमुखी विशेषज्ञता से भारत के इतिहास को समझने की दिशा में युगांतरकारी परिवर्तन आया है।

2. 17 अप्रैल, 1955 को जन्मे प्रो. मणि ने वर्ष 1974 में कला स्नातक उपाधि प्राप्त की और वर्ष 1976 में कला निष्णात की उपाधि प्राप्त करते हुए बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया, इन्हें बीएचयू में स्वर्ण पदक और अल्तेकर स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। वर्ष 1980 में इन्होंने बीएचयू से कुषाण युग में जनजीवन विषय पर अपनी पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त की। वर्ष 1978 से 1984 तक इन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और सारनाथ के केंद्रीय उच्चतर तिब्बती अध्ययन संस्थान में अध्यापन कार्य किया, जिसके बाद संघ लोक सेवा आयोग द्वारा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण में उप अधीक्षक पुरातत्वविद के रूप में कार्यभार ग्रहण करने के लिए इनका चयन किया गया।

3. प्रो. मणि ने वर्ष 1984 से 2015 तक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण में उप अधीक्षक पुरातत्वविद (एसए), अधीक्षक पुरातत्वविद, निदेशक, संयुक्त महानिदेशक और अपर महानिदेशक सहित विभिन्न पदों पर कार्य किया। वर्ष 2016 में, भारत सरकार ने उन्हें राष्ट्रीय संग्रहालय के महानिदेशक और राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान के कुलपति के रूप में नियुक्त किया, जिसका नाम बदलकर वर्ष 2023 में भारतीय विरासत संस्थान कर दिया गया। वह अप्रैल, 2025 में सेवानिवृत्त हुए।

4. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण में काम करते हुए, प्रो. मणि ने महाराष्ट्र, गोवा, दिल्ली तथा जम्मू और कश्मीर में लगभग 150 केंद्रीय संरक्षित स्मारकों का परिरक्षण किया, और लगभग 200 पुरातात्विक स्थलों की खोज की। इन्होंने अयोध्या (श्री राम जन्मभूमि), कपिलवस्तु, राजघाट, सारनाथ, सिसवानिया, संकिसा, लाल कोट, कनिष्कपुर और अम्बारन सहित 20 उत्खनन कार्यों का निर्देशन किया। अयोध्या में उनके उत्खनन कार्य से निर्माण–स्थल पर दीर्घकालिक लंबित न्यायालयी मामले को निपटाने वाले साक्ष्य प्राप्त हुए। राष्ट्रीय संग्रहालय के महानिदेशक के रूप में इन्होंने कुणाल और कुर्दी नामक दो स्थलों की खुदाई भी की।

5. प्रो. मणि ने एक दशक से अधिक समय तक भारतीय पुरातत्व सोसायटी की पुरातत्त्व और पुराप्रवाह पत्रिकाओं का संपादन करने के अलावा छह पुस्तकें, लगभग 200 शोध पत्र और 15 संपादित ग्रंथ लिखे हैं। इन्होंने विदेशों में पुरातात्विक मिशनों का नेतृत्व किया है तथा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भागीदारी सहित कई एशियाई, अमेरिकी और यूरोपीय देशों में भारतीय प्रतिनिधिमंडलों का प्रतिनिधित्व किया है। इनके मार्गदर्शन में आठ पीएच.डी छात्रों ने अपनी डिग्री प्राप्त की है और वर्तमान में उनके मार्गदर्शन में दो अध्येता पीएचडी कर रहे हैं। वर्तमान में, वह भारतीय पुरातत्व सोसायटी के उपाध्यक्ष और प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस के रूप में सेवाएं प्रदान कर रहे हैं, वह भारतीय विरासत संस्थान में पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष हैं।

SHRI NILESH VINODCHANDRA MANDLEWALA

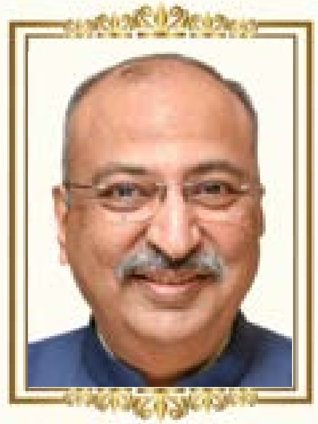

Shri Nilesh Vinodchandra Mandlewala, popularly known as the Organ Man of India, is widely respected as one of the most committed and influential advocates of organ donation in the country. As the Founder of Donate Life, he has played a vital role in strengthening awareness and acceptance of cadaveric organ donation in Gujarat and across India.

2. Born on 19th April, 1965, Shri Mandlewala's association with this humanitarian mission began with a deeply personal experience that shaped his life's direction. His father suffered kidney failure and required dialysis twice every week. Witnessing his father's physical discomfort and emotional struggle, he realized that thousands of families across India endure similar suffering each year because of the severe shortage of organs for transplantation. Instead of allowing personal grief to remain a private burden, he transformed it into a lifelong commitment dedicated to saving lives and supporting families facing similar crises.

3. In 2005, at a time when awareness about organ donation in India was extremely limited and surrounded by misconceptions, ignorance and fear, Shri Mandlewala initiated an organ donation awareness movement. His work began with promoting cadaveric kidney donation in 2006 and gradually expanded to include awareness regarding donation of liver, heart, lungs, pancreas, intestines, hands, bones and other tissues. His dedication and credibility earned him recognition as an important contributor to public health awareness, leading to his appointment as a Member of the State Advisory Committee for Organ and Tissue Transplantation from 2019 to 2021.

4. Shri Mandlewala's long-term vision is that by 2047, no citizen should lose life because of the non-availability of organs. To achieve this goal, he has travelled extensively across India for more than two decades to promote awareness. He has used creative and emotionally engaging methods to connect with people from diverse backgrounds. He composed the song "Angdaan Karle Re Maanav Tu Ishvar Ban Jayega" and produced the short film "KAAYA - The Mission of Life," both of which have significantly contributed to public awareness and inspired individuals to pledge their organs.

5. Shri Mandlewala has played an important role in educating society about brain death and helping families understand the significance of organ donation during emotionally challenging moments. He has personally counselled numerous grieving families and worked closely with doctors, hospitals, NGOs, and volunteers to facilitate organ donation. His efforts have helped Surat earn recognition as the "Organ Donor City," establishing it as an inspiring model for other regions in India. Despite facing social resistance, misconceptions, logistical challenges and infrastructural limitations, he has continued his mission with patience, compassion, and remarkable determination.

6. During the COVID-19 pandemic, Shri Mandlewala continued counselling families of brain-dead patients in hospitals, contributing to the donation of more than 200 organs and tissues. Overall, his initiatives have helped facilitate 1371 successful organs and tissue donations, giving new life to 1263 recipients and hope to their families. Guided by the philosophy of "Vasudhaiva Kutumbakam," his work has benefited patients from countries including UAE, Ukraine, Russia, Sudan, Yemen, and Bangladesh.

7. Shri Mandlewala's has been honoured with over 70 awards including "Gujarat Garima Award"- highest civilian award of Government of Gujarat.

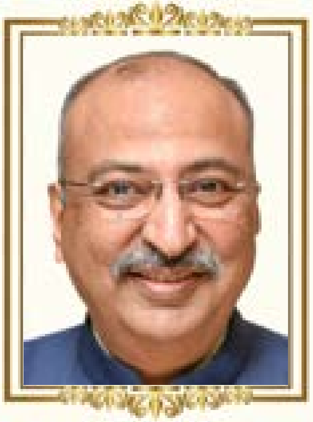

श्री निलेश विनोदचंद्र मांडलेवाला

भारत के ऑर्गन मैन के रूप में लोकप्रिय श्री निलेश विनोदचंद्र मांडलेवाला को देश में अंगदान के सबसे प्रतिबद्ध और प्रभावशाली समर्थकों में से एक अत्यधिक सम्मानित व्यक्ति के रूप में जाना जाता है। डोनेट लाइफ के संस्थापक के रूप में, उन्होंने गुजरात और पूरे भारत में शव अंगदान के बारे में जागरूकता और उसके प्रति स्वीकृति को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

2. 19 अप्रैल, 1965 को जन्मे श्री मांडलेवाला का इस मानवीय मिशन के साथ जुड़ाव एक गहरे व्यक्तिगत अनुभव से शुरू हुआ जिसने उनके जीवन की दिशा को आकार दिया। उनके पिता को गुर्दे की विफलता का सामना करना पड़ा और उन्हें हर सप्ताह दो बार डायलिसिस की आवश्यकता पड़ती थी। अपने पिता की शारीरिक तकलीफ और भावनात्मक संघर्ष को देखते हुए, उन्हें एहसास हुआ कि भारत भर में हजारों परिवार प्रत्यारोपण के लिए अंगों की अत्यधिक कमी के कारण हर वर्ष इसी तरह के कष्ट सहते हैं। व्यक्तिगत दुःख को एक निजी बोझ बने रहने देने के बजाय, उन्होंने इसे जीवन बचाने और समान संकटों का सामना करने वाले परिवारों का सहयोग करने के लिए एक समर्पित आजीवन प्रतिबद्धता में बदल दिया।

3. वर्ष 2005 में, जब भारत में अंगदान के बारे में जागरूकता अत्यंत सीमित थी और गलत धारणाओं, अज्ञानता और भय से घिरी हुई थी, श्री मांडलेवाला ने अंगदान के प्रति जागरूकता आंदोलन शुरू किया। उनका अभियान वर्ष 2006 में शव किडनी दान को बढ़ावा देने के साथ शुरू हुआ और धीरे–धीरे लिवर, हृदय, फेफड़े, अग्न्याशय, आंतों, हाथों, हड्डियों और अन्य ऊतकों के दान के बारे में जागरूकता फैलाने तक विस्तारित हुआ। उनकी निष्ठा और विश्वसनीयता ने उन्हें सार्वजनिक स्वास्थ्य जागरूकता में एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता के रूप में मान्यता दिलाई, जिससे उन्हें वर्ष 2019 से वर्ष 2021 तक अंग और ऊतक प्रत्यारोपण के लिए राज्य सलाहकार समिति के सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया।

4. श्री मांडलेवाला का दीर्घकालिक विजन यह है कि वर्ष 2047 तक किसी भी नागरिक को अंगों की अनुपलब्धता के कारण अपनी जान न गंवानी पड़े । इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, उन्होंने जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए दो दशकों से अधिक समय तक पूरे भारत में व्यापक रूप से यात्रा की है। उन्होंने विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोगों से जुड़ने के लिए रचनात्मक और भावनात्मक रूप से आकर्षक पद्धतियों का उपयोग किया है। उन्होंने ''अंगदान करले रे मानव तू ईश्वर बन जाएगा'' गीत की रचना की और लघु फिल्म ''काया – द मिशन ऑफ लाइफ'' का निर्माण किया, दोनों ने सार्वजनिक जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया और लोगों को अपने अंगों को दान करने के लिए प्रेरित किया।

5. श्री मांडलेवाला ने मस्तिष्क मृत्यु के बारे में समाज को शिक्षित करने और भावनात्मक रूप से चुनौतीपूर्ण क्षणों के दौरान परिवारों को अंगदान के महत्व को समझने में मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से कई शोक संतप्त परिवारों को परामर्श दिया है और अंगदान को सुकर बनाने के लिए डॉक्टरों, अस्पतालों, गैर सरकारी संगठनों और स्वयंसेवकों के साथ मिलकर काम किया है। उनके प्रयासों ने सूरत को ''ऑर्गन डोनर सिटी'' के रूप में मान्यता प्राप्त करने में मदद की है, जिससे यह भारत के अन्य क्षेत्रों के लिए एक प्रेरणादायक मॉडल बन गया है। सामाजिक प्रतिरोध, गलत धारणाओं, संभारिकीय चुनौतियों और अवसंरचनात्मक कमियों का सामना करने के बावजूद, उन्होंने धैर्य, करुणा और उल्लेखनीय दृढ़ संकल्प के साथ अपना मिशन जारी रखा है।

6. कोविड–19 महामारी के दौरान, श्री मांडलेवाला ने अस्पतालों में मस्तिष्क मृत रोगियों के परिवारों को परामर्श देना जारी रखा, जिससे 200 से अधिक अंगों और ऊतकों के दान में योगदान हुआ। कुल मिलाकर, उनकी पहलों ने 1371 सफल अंग और ऊतक दान की सुविधा प्रदान करने में मदद की है, जिससे 1263 प्राप्तकर्ताओं को नया जीवन मिला है और उनके परिवारों को खुशी मिली है। ''वसुधैव कुटुम्बकम'' सिद्धान्त से प्रेरित होकर, उनके काम ने यूएई, यूक्रेन, रूस, सूडान, यमन और बांग्लादेश सहित देशों के रोगियों को लाभान्वित किया है।

7. श्री मांडलेवाला को गुजरात सरकार के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार ''गुजरात गरिमा पुरस्कार'' सहित 70 से अधिक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है ।

DR. MAHENDRA KUMAR MISHRA

Dr. Mahendra Kumar Mishra is a linguist, folklorist and educationist who has dedicated more than four decades to preserving endangered tribal voices while embedding them in modem pedagogy, earning global acclaim for voicing the Indian knowledge system embedded in tribal and rural population of India. He has promoted many tribal organisations and youths for promotion of tribal language, culture and education for tribal development.

2. Born on 1st April,1952, in a tribal district Kalahandi, Dr. Mishra pursued his studies in Sambalpur University and received the degree of PhD in 1987. He joined as Assistant Director in Directorate of Elementary Education in Government of Odisha and served as the State Coordinator for Education of Scheduled Tribes and Scheduled Castes in which he focussed on Tribal Multilingual Education.

3. Dr. Mishra's cornerstone contribution lies in multilingual education (MLE), where he has invigorated tribal language and culture as tools for learning. Leading initiatives at the state government of Odisha, he spearheaded MLE programs in 21 tribal languages (1996-2012), further expanding to Chhattisgarh, Madhya Pradesh, Jharkhand, Rajasthan, and Assam through Language and Learning Foundation, New Delhi. His transformative teacher training program 'Rupantar' equips educators to deliver primary education in mother tongues, fostering school-community linkages that integrate local knowledge. These efforts, aligned with, UNESCO, NCERT and NEP 2020, bridge cultural gaps, boosting literacy and retention in tribal schools— as detailed in his book Erai Erai: Multilingual Education in Tribal Schools of India (2023).

4. As an enthusiastic scholar of tribal oral traditions, Dr. Mishra has preserved rich folklore through seminal works like Oral Epics of Kalahandi (2007), Saora Tales and Songs (2005), Paharia Oral Tradition (2021), and Ramkatha in Oral Tradition of Odisha (2025). He has translated global epics like Finland's *Kalevala* into Odia. His efforts safeguard cosmology, myths, oral epics, and songs from Odisha's tribes—Gond, Santali, Kondh, Paharia, Saora, Banjara and others—infusing them into curricula of primary education to higher education to make education culturally resonant. He is the member of Language Development Board, Centre of Tribal Oral Literature, and Committee for translation of Constitution of India in scheduled languages, in Sahitya Akademi, New Delhi.

5. Internationally, Dr. Mishra has advised Nepal's MLE policy, lectured at China's CASS; Hanyang University, South Korea; Thailand's Mahidol University, and Russia's Academy of Sciences, and collaborated with UNESCO in Bangladesh representing the culture of India. Through Sahitya Akademi affiliations, he ensures safeguarding of non-scheduled languages and oral tradition.

6. Dr. Mishra has been honoured with several awards which includes the UNESCO's International Mother Language Award in 2023 (first Indian to get this award); Veer Shankar Shah Raghunath Shah Award (2009) from Madhya Pradesh; the Kalevala Award (2002) from Finland and the Odisha Sahitya Akademi Award (1999).

डॉ. महेन्द्र कुमार मिश्र

डॉ. महेन्द्र कुमार मिश्र एक भाषाविद्, लोककथाविद् और शिक्षाविद् हैं, जिन्होंने लुप्तप्राय जनजातीय आवाजों को आधुनिक शिक्षाशास्त्र में शामिल करते हुए उनकी आवाजों को संरक्षित करने के लिए चार दशकों से अधिक समय समर्पित किया है, और भारत की जनजातीय तथा ग्रामीण आबादी में अंतर्निहित भारतीय ज्ञान प्रणाली को आवाज देने के लिए वैश्विक प्रशंसा अर्जित की है। उन्होंने आदिवासी विकास के लिए आदिवासी भाषा, संस्कृति और शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु कई आदिवासी संगठनों और युवाओं को बढ़ावा दिया है।

2. 1 अप्रैल, 1952 को कालाहांडी के एक आदिवासी जिले में जन्मे, डॉ. मिश्र ने संबलपुर विश्वविद्यालय से अपनी पढ़ाई की और वर्ष 1987 में पीएचडी की डिग्री प्राप्त की। वह ओडिशा सरकार में प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय में सहायक निदेशक के रूप में शामिल हुए और अनुसूचित जनजातियों और अनुसूचित जातियों की शिक्षा के लिए राज्य समन्वयक के रूप में कार्य किया, जिसमें उन्होंने जनजातीय बहुभाषी शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया।

3. डॉ. मिश्र का महत्वपूर्ण योगदान बहुभाषी शिक्षा (एमएलई) में निहित है, जहां उन्होंने आदिवासी भाषा और संस्कृति को सीखने के उपकरण के रूप में पुनर्जीवित किया है। ओडिशा राज्य सरकार में अग्रणी पहलों के कारण, उन्होंने 21 आदिवासी भाषाओं (1996–2012) में एमएलई कार्यक्रमों का नेतृत्व किया, तथा बाद में लंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली के माध्यम से छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, झारखंड, राजस्थान और असम राज्य में उसका विस्तार किया। उनका परिवर्तनकारी शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम 'रूपांतर' स्थानीय ज्ञान को एकीकृत करने वाले स्कूल–सामुदायिक संबंधों को बढ़ावा देते हुए, शिक्षकों को मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने के लिए तैयार करता है। यूनेस्को, एनसीईआरटी और एनईपी 2020 के साथ जुड़े ये प्रयास, सांस्कृतिक अंतराल को पाटते हैं, साक्षरता को बढ़ावा देते हैं और आदिवासी स्कूलों में प्रतिधारण को बढ़ावा देते हैं – जैसा कि उनकी पुस्तक ईरई इरईः भारत के जनजातीय स्कूलों में बहुभाषी शिक्षा (2023) में विस्तार से वर्णित है।

4. आदिवासी मौखिक परंपराओं के एक उत्साही विद्वान के रूप में, डॉ. मिश्र ने कालाहांडी के मौखिक महाकाव्य (2007), साओरा टेल्स एंड सॉन्ग्स (2005), पहाड़िया ओरल ट्रेडिशन (2021), और ओडिशा की ओरल ट्रेडिशन में रामकथा (2025) जैसे मौलिक कार्यों के माध्यम से समृद्ध लोककथाओं को संरक्षित किया है। उन्होंने फिनलैंड के कालेवाला जैसे वैश्विक महाकाव्यों का ओडिया में अनुवाद किया है। उनके प्रयासों द्वारा ओडिशा की जनजातियों – गोंड, संताली, कोंध, पहाड़िया, सोरा, बंजारा और अन्य – की ब्रह्मांड–संबंधी अवधारणाओं, पौराणिक आख्यानों, मौखिक महाकाव्यों, एवं गीतों का संरक्षण किया जा रहा है, तथा शिक्षा को सांस्कृतिक रूप से सार्थक बनाने हेतु उन्हें प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक के पाठ्यक्रम में एकीकृत किया जा रहा है। वह साहित्य अकादमी, नई दिल्ली में भाषा विकास बोर्ड, जनजातीय मौखिक साहित्य केंद्र और अनुसूचित भाषाओं में भारत के संविधान के अनुवाद के लिए समिति के सदस्य हैं।

5. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, डॉ. मिश्र ने नेपाल की एमएलई नीति के लिए सलाह दी है, चीन के सीएएसएस; हनयांग विश्वविद्यालय, दक्षिण कोरिया; थाईलैंड की महिडोल यूनिवर्सिटी और रूस की एकेडमी ऑफ साइंसेज में व्याख्यान दिया है, और बांग्लादेश में भारत की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हुए यूनेस्को के साथ सहयोग किया। साहित्य अकादमी संबद्धता के माध्यम से, वह गैर–अनुसूचित भाषाओं और मौखिक परंपरा की सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं।

6. डॉ. मिश्र को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जिसमें यूनेस्को का 2023 में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा पुरस्कार (पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रथम भारतीय); मध्य प्रदेश से वीर शंकर शाह रघुनाथ शाह पुरस्कार (2009); फिनलैंड से कालेवाला पुरस्कार (2002), और ओडिशा साहित्य अकादमी पुरस्कार (1999) शामिल हैं।

SMT. TRIPTI MUKHERJEE

Smt. Tripti Mukherjee is a famous artist of Kantha Stich embroidery.

2. Born on 28th April, 1966, Smt. Mukherjee exhibited creativity par excellence since her childhood. As expected, she started to show her creative bent for Kantha stitch. Drawing inspiration from her mother's works, she started to try her hands on with fabric and thread and in no time, it turned into her only passion. Every piece that she has created to date speaks of her cultural past. Her knowledge of 37 years' experience and gives a preview of her future. She has created income opportunities for rural women with the help of her knowledge. She has taught many batches of women helping them start their own sewing work.

3. Smt. Mukherjee has set up a training center in Suri where she teaches the local marginalized women the art of kantha stitch saree embroidery and making various types of wall hangings bed sheets stoles and dupattas. By showcasing their handicrafts in various government sponsored exhibitions and melas they can even make money as and when their products are sold.

4. Smt. Mukherjee teaches the local marginalized women the art of kantha stitch saree embroidery and making various types of wall hangings, bed sheets, stoles and dupattas. Showcasing their handicrafts in various government sponsored exhibitions and melas provides regular income to the women who were previously unemployed or in jobs with harder work and lower pay.

5. In February 2017, Smt. Mukherjee visited Birmingham, U.K to represent West Bengal. This project was sponsored by the Government of India. Along with showcasing her own work she also demonstrated how the art is done for the participants. This initiative was highly applauded in Birmingham. This added one more feather to her cap. She visited Tokyo, Japan to represent India for live demonstration and promotion of Indian handicrafts. This project was organized by Export Promotion Council for Handicrafts, Ministry of Textiles, Government of India at 14th India Trend fair from 23 July to 25 July, 2025. There she achieved the certificate from Embassy of India, Tokyo Japan. Last year, she presented as a resource person for Interaction with Hon'ble Prime Minister of India Shri Narendra Modi at the event of Craft Demonstration Cum Awareness Programme Bharat TEX 2025, at Bharat Mandapam, Pragati Maidan, New Delhi.

6. Smt. Mukherjee is the recipient of numerous awards and honours such as National Award Certificate in 2010 and Shilp Guru Award in 2016 by the Ministry of Textiles, Government of India. Her work has also been acknowledged by the Government of West Bengal by conferring on her Bangashree Award in 2017.

श्रीमती तृप्ति मुखर्जी

श्रीमती तृप्ति मुखर्जी कंथा कढ़ाई की एक प्रसिद्ध कलाकार हैं।

2. 28 अप्रैल, 1966 को जन्मी, श्रीमती मुखर्जी की रचनात्मकता बचपन से ही बेमिसाल थी। स्वाभाविक रूप से, उन्होंने कंथा स्टिच में अपनी प्रतिभा का परिचय देना शुरू कर दिया। अपनी मां की कलाकृतियों से प्रेरणा लेकर उन्होंने कपड़े और धागे से बुनाई शुरू की और देखते ही देखते यह उनका एकमात्र जुनून बन गया। आज तक उनके द्वारा बनाई हर कृति उनकी सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती है। 37 वर्षों का उनका ज्ञान उनके भविष्य की झलक दिखाता है। उन्होंने अपने ज्ञान के बल पर ग्रामीण महिलाओं के लिए आय के अवसर सृजित किए हैं। उन्होंने कई महिलाओं को सिलाई का काम सिखाकर उन्हें अपना खुद का काम शुरू करने में मदद की है।

3. श्रीमती मुखर्जी ने सूरी में एक प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किया है, जहाँ वे स्थानीय वंचित महिलाओं को कंथा स्टिच साड़ी कढ़ाई और विभिन्न प्रकार के वॉल हैंगिंग, बेडशीट, स्टोल और दुपट्टे बनाने की कला सिखाती हैं। सरकारी प्रायोजित विभिन्न प्रदर्शनियों और मेलों में अपने हस्तशिल्प का प्रदर्शन करके वे अपने उत्पादों की बिक्री होने पर आय भी अर्जित कर सकती हैं।

4. श्रीमती मुखर्जी स्थानीय वंचित महिलाओं को कंथा कढ़ाई और विभिन्न प्रकार के वॉल हैंगिंग, बेडशीट, स्टोल और दुपट्टे बनाने की कला सिखा रही हैं। सरकारी प्रायोजित विभिन्न प्रदर्शनियों और मेलों में उनके हस्तशिल्प का प्रदर्शन करके, वे उन महिलाओं को नियमित आय के अवसर प्रदान करती हैं जो पहले बेरोजगार थीं या कठिन परिश्रम और कम वेतन वाली नौकरियों में कार्यरत थीं।

5. फरवरी 2017 में, श्रीमती मुखर्जी ने पश्चिम बंगाल का प्रतिनिधित्व करने के लिये बर्मिंघम, यूके का दौरा किया। यह प्रौजेक्ट भारत सरकार द्वारा प्रायोजित था। अपने स्वयं के कार्यों का प्रदर्शन करने के साथ–साथ उन्होंने प्रतिभागियों को यह भी दर्शाया कि कला के क्षेत्र में किस प्रकार कार्य किया जाता है। बर्मिंघम में इस पहल की बहुत सराहना हुई। इससे उनकी उपलब्धियों में एक और उपलब्धि जुड़ गई। उन्होंने भारतीय हस्तशिल्प के प्रत्यक्ष प्रदर्शन और प्रचार के लिए भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए टोक्यो, जापान का दौरा किया। यह प्रोजेक्ट भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय की हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद द्वारा 23 से 25 जुलाई, 2025 तक आयोजित 14वें इंडिया ट्रेंड मेले में आयोजित किया गया था। वहां उन्हें टोक्यो, जापान स्थित भारतीय दूतावास से प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ। पिछले वर्ष, उन्होंने भारत मंडपम, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित शिल्प प्रदर्शन सह जागरूकता कार्यक्रम भारत टेक्स वर्ष 2025 के दौरान भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के साथ संवाद करते हुए एक विशेषज्ञ के रूप में प्रस्तुति दी।

6. श्रीमती मुखर्जी को अनेक पुरस्कारों और सम्मानों से नवाजा गया है, जिनमें वर्ष 2010 में राष्ट्रीय पुरस्कार प्रमाणपत्र और वर्ष 2016 में भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय द्वारा शिल्प गुरु पुरस्कार शामिल हैं। पश्चिम बंगाल सरकार ने भी वर्ष 2017 में उन्हें बंगश्री पुरस्कार से सम्मानित करके उनके कार्यों की सराहना की।

SHRI HARIMADHAB MUKHOPADHYAY (POSTHUMOUS)

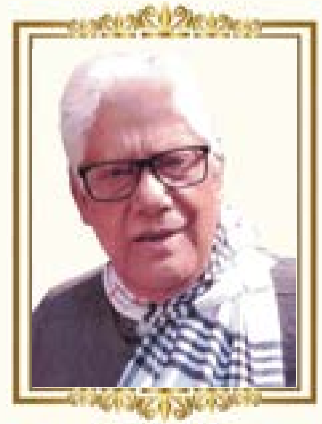

Shri Harimadhab Mukhopadhyay was a legendary Indian theatre director, playwright, and actor.

2. Born on 3rd April, 1941 in Balurghat, the district head quarter of South Dinajpur district of West Bengal, Shri Mukhopadhyay's journey as a theatre practitioner of significant repute, had been a fascinating one. His life had been a true testimony of what herculean persistence, unwavering dedication and fierce commitment to one's passion can accomplish despite the toughest of odds and infrastructural constraints. Though attracted to the magic of performative aits since his childhood, tryst with serious theatre eventually blossomed during his student and professional life in Kolkata from 1958 to 1967. During those eventful years, he experienced the pioneering works of the doyens of Bengali Theatre like Shri Sambhu Mitra, Shri Bijan Bhattacharya, Shri Utpal Dutt, Shri Ajitesh Bandyopadhyay among many others. His sense of understanding and appreciation of theatrical nuances were immensely influenced by the varied methods of productions, adopted by these stalwarts. Shortly after his return to Balurghat, Shri Mukhopadhyay joined as a lecturer in Commerce in Balurghat College and established the theatre group- Triteertha in 1969 along with the active support and cooperation of some spirited like-minded individuals. He was unanimously chosen as the director of the newly formed group.

3. Over the course of the next five long decades, Shri Mukhopadhyay directed and acted in over sixty productions for Triteertha. Notable among them were Natyakarer Sandhane Chhati Charitra, Teen Biggani, Manjari Aamer Manjari, Bhangapat, Debi Garjan, Galileo, Jwal, Debangshi, Bichhan (Hindi), Mantrasakti, Patrasuddhi, Matritantrik, Pimama, Raktakarabi and many more. These productions of diverse genres, staged multiple times across West Bengal and beyond in cities like New Delhi, Lucknow, Varanasi, Patna gathered widespread critical acclaim and firmly cemented Shri Mukhopadhyay's stature as a theatre director/actor to reckon with.

4. Shri Mukhopadhyay's writings on theatre had been equally prolific. He had written over fifty plays. An anthology of his plays has been published in three volumes by a leading publishing house of Kolkata, Punashcha. He had penned large number of essays on various aspects of theatre and these have been published on leading theatre journals like Syas, Basumati, Rangapat Natya Patrika. He used to write a weekly column on his life in Theatre in Anand Bazar Patrika, a leading Bengali news daily.

5. Shri Mukhopadhyay had been the recipient of numerous awards and accolades. He was awarded the Dishari award thrice in 1976, 1979 and 2003(Lifetime Achievement) by West Bengal Journalists' Association, Best Actor award in 1986 from the Ministry of Information and Culture, Government of West Bengal for his portrayal in the play, Bichhan; Kanchenjangha award in 1997, Sangeet Natak Academy Samman in Direction from the Ministry of Culture, Government of India in 2007; State Drishya and Charukala Academy Award by Rabindra Bharati University, West Bengal in 2008; Dinabandhu Purashkar from The Government of West Bengal in 2009, Banga Bhushan Samman by West Bengal Government in 2012. In 2019, Raiganj University of West Bengal awarded him with Honorary D.Litt.

6. Shri Mukhopadhyay passed away on 17th March 2025.

श्री हरिमाधब मुखोपाध्याय (मरणोपरांत)

श्री हरिमाधब मुखोपाध्याय एक महान भारतीय थिएटर निर्देशक, नाटककार और अभिनेता थे।

2. 3 अप्रैल, 1941 को पश्चिम बंगाल के दक्षिण दिनाजपुर जिले के जिला मुख्यालय बालुरघाट में जन्में, श्री मुखोपाध्याय की प्रतिष्ठित रंगमंच कलाकार के रूप में यात्रा काफी आकर्षक रही। इनका जीवन इस बात का साक्षात प्रमाण है कि कठिन बाधाओं और संसाधनों की कमी के बावजूद, कड़ी मेहनत, अटूट समर्पण और लगन के बल पर क्या कुछ हासिल किया जा सकता है। हालाँकि वह बचपन से ही प्रदर्शनकारी कला के जादू से आकर्षित थे, लेकिन गंभीर रंगमंच की दुनिया से इनका रिश्ता वर्ष 1958 से 1967 के दौरान कोलकाता में अपने छात्र जीवन और पेशेवर जीवन के दौरान शुरू हुआ। उन यादगार वर्षों में, उन्होंने श्री शंभु मित्रा, श्री बिजन भट्टाचार्य, श्री उत्पल दत्त, श्री अजितेश बंद्योपाध्याय जैसे कई अन्य लोगों के साथ बंगाली रंगमंच के दिग्गजों के बेहतरीन कार्यों को करीब से देखा। नाटकीय बारीकियों की उनकी समझ और सराहना इन दिग्गजों द्वारा अपनाए गई विभिन्न निर्माण विधियों से अत्यधिक प्रभावित थी। बालुरघाट लौटने के कुछ समय बाद वह बालुरघाट महाविद्यालय में वाणिज्य के व्याख्याता बन गए और वर्ष 1969 में समान विचारधारा वाले कुछ उत्साही साथियों के सक्रिय समर्थन और सहयोग से त्रितीर्थ रंगमंच समूह की स्थापना की। उनको सर्वसम्मति से नए गठित समूह का निदेशक चुना गया।

3. अगले लंबे पाँच दशकों के दौरान, श्री मुखोपाध्याय ने त्रितीर्थ के लिए साठ से अधिक प्रस्तुतियों का निर्देशन और उनमें अभिनय भी किया। इनमें नाट्यकरेर संधाने छटी चरित्र, तीन बिग्गानी, मंजरी आमेर मंजरी, भंगपात, देबी गर्जन, गैलीलियो, ज्वाल, देबांग्शी, बिच्छन (हिंदी), मंत्रशक्ति, पत्रसुद्धि, मातृतान्त्रिक, पिमामा, रक्तकारबी और कई अन्य उल्लेखनीय हैं। अलग–अलग शैलियों के इन नाटकों का मंचन पूरे पश्चिम बंगाल के साथ–साथ नई दिल्ली, लखनऊ, वाराणसी, पटना जैसे शहरों में कई बार हुआ। इन प्रस्तुतियों को आलोचकों की खूब प्रशंसा मिली और उनकी पहचान एक ऐसे निर्देशक/अभिनेता के रूप में मजबूती से स्थापित हो गई, जिनका लोहा पूरा रंगमंच जगत मानता था।

4. रंगमंच पर श्री मुखोपाध्याय के लेखन कार्य भी समान रूप से विपुल थे। इन्होंने पचास से अधिक नाटक लिखे थे। इनके नाटकों का एक संकलन कोलकाता के एक प्रमुख प्रकाशन गृह, पुनश्च द्वारा तीन खंडों में प्रकाशित किया गया है। इन्होंने रंगमंच के अलग–अलग पहलुओं पर बड़ी संख्या में निबंध लिखे हैं और ये प्रमुख थिएटर पत्रिकाओं, जैसे– स्यास, बसुमती, रंगपत नाट्य पत्रिका में प्रकाशित हुए हैं। वह एक प्रमुख बंगाली समाचार दैनिक आनंद बाजार पत्रिका में थिएटर में अपने जीवन पर एक साप्ताहिक कॉलम लिखते थे।

5. श्री मुखोपाध्याय को अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए। इन्हें पश्चिम बंगाल पत्रकार संघ की ओर से वर्ष 1976, 1979 और 2003 में तीन बार दिशारी पुरस्कार (लाइफटाइम अचीवमेंट) मिला। वर्ष 1986 में बिच्छन नाटक में उनके अभिनय के लिए सूचना एवं संस्कृति मंत्रालय, पश्चिम बंगाल सरकार से सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके अलावा, इन्हें वर्ष 1997 में कंचनजंगा पुरस्कार, वर्ष 2007 में भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय से निर्देशन में संगीत नाटक अकादमी सम्मान, वर्ष 2008 में रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल द्वारा राज्य दृश्य और चारुकला अकादमी पुरस्कार, वर्ष 2009 में पश्चिम बंगाल सरकार से दीनबंधु पुरस्कार, वर्ष 2012 में पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा बंग भूषण सम्मान से सम्मानित किया गया। वर्ष 2019 में, रायगंज विश्वविद्यालय ने उन्हें मानद डी.लिट. से सम्मानित किया।

6. श्री मुखोपाध्याय का 17 मार्च, 2025 को निधन हो गया।

DR. A. E. MUTHUNAYAGAM

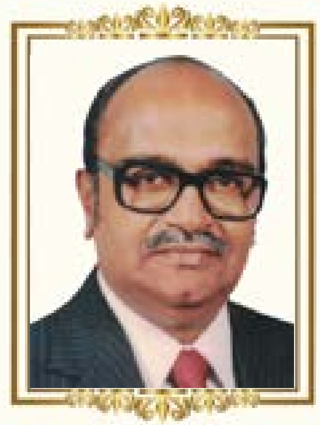

Dr. A. E. Muthunayagam is a renowned Space Scientist and is known as the father of Liquid Propulsion Technology in India because of his outstanding contributions.

2. Born on 11th January 1939, Dr. Muthunayagam received his Bachelor of Engineering degree in Mechanical Engineering in first class with Honours from the University of Madras in 1960,-Master of Engineering in Power Engineering (Mechanical) from the Indian Institute of Science, Bengaluru in 1962.— Ph.D from the School of Mechanical Engineering of Purdue University, USA in 1965. —LL.B from Kerala University in 1975. He also received Honorary Doctorates; from Andhra University in 1997—from Anna University in 1998 and — from Karunya University in 2008.

3. Dr. Muthunayagam joined ISRO in 1966 under Dr. Vikram Sarabhai after completing a NASA sponsored project in an aerospace company in USA. He contributed significantly to the development of Propulsion Technologies in ISRO. As the founder - Director of the Liquid Propulsion Centre of ISRO, he developed it as the lead centre for all types of liquid propulsion systems required for ISRO's launch vehicles and spacecrafts. He also established the Test facilities with accessories to test and qualify all liquid propulsion systems and sub system at Mahendragiri which later became an independent ISRO Propulsion Complex. The high thrust liquid stage with Viking Engine technology transfer from SEP, France and indigenously developed terminal stage with cut off and restart capability which are used in all PSLV and GSLV launch vehicles are significant achievements. He initiated the development of Cryogenic Engine & Stage indigenously and actively negotiated with Russian space agency for acquisition of Cryogenic technology. During his tenure ISRO progressed from launching small, imported rockets, known as Sounding Rockets which were used to study the upper atmosphere of the earth, to building bigger and more powerful ones that could put satellites into orbit. These Satellites paved the way for the country to produce its own images of the earth, keep watch on the weather, and provide communication and broadcasting assistance.

4. After serving in the Indian Space Program for 29 years, Government of India posted Dr. Muthunayagam in April 1995 as Secretary, Department of Ocean Development (DOD), Government of India where he addressed the programs on Antarctic research, the United Nations Convention on the Law of the Sea (UNCLOS), Marine living and non-living resources, Intergovernmental Oceanographic Commission (IOC) of United Nations Educational Scientific and Cultural Organization (UNESCO),Integrated Coastal and Marine Area Management (ICMAM), Ocean Observation and information services,etc

5. During his tenure at Department of Ocean Development (April 1995 to January 2001) Dr. Muthnayagam had the opportunity to work under four Prime Ministers. Shri PV Narasimha Rao, Shri I K Gujaral, Shri H D Deve Gowda and Shri Atal Bihari Vajpayee. All of them supported his initiatives. Lack of own institutional infrastructure during 1990's was a serious limitation that the Ocean Department faced in the implementation of the priority program. He addressed this issue and extended the activities of the department to include a number of technology development programs with the participation of National laboratories of CSIR, ICAR and IITs, there by more than doubling the financial out lay.

6. Dr. Muthunayagam established three autonomous institutes under the management of the DOD; National Institute of Ocean Technology (NIOT) at Chennai, National Centre for Antarctic and Ocean Research (NCAOR) at Goa and Indian National Centre for Ocean Information Service (INCOIS) at Hyderabad. This is in addition to the two Attached Offices of the department; - Integrated Coastal and Marine Area Management (ICMAM) Project Directorate in Chennai and Sagar Sampada Vessel Management and Marine Living Resource Coordination Cell in Kochi.

7. Dr. Muthunayagam also has obtained an Indian patent No 196396 dated 21.2.2003 titled “A Process, System and configuration for Desalination of Sea Water”. He has proposed an 'Integrated Desalination System' with Ocean Thermal Energy Conversion (OTEC) System for power generation and Low Pressure Distillation (LPD) System for desalination which will be sustainable, environment friendly and requiring no external power supply for operation. He served as Chairman of the Intergovernmental Oceanographic Commission for the Central Indian Ocean (1996-2001). He was also Chairman, Commission for the Conservation of Antarctic Marine living Resources (1998-2000) and Vice chairman of Intergovernmental Oceanographic Commission (IOC) for two years (1996-1998). He is a Fellow of Astronautical Society of India,— Fellow of Aeronautical Society of India, —Fellow of Indian National Academy of Engineering,—Fellow of The Institution of Engineers.

8. Dr. Muthunayagam is a recipient of Dr. V. M Ghatage Award for the year 1989 from Aeronautical Society of Indian-Mechanical Engineering Design Award 1995 from the Institution of Engineers (India),National Design and Research forum,—National award for Life Time Achievement in Ocean Science and Technology 2007 from Ministry of Earth Sciences, Government of India, — ISRO Outstanding Achievement Award 2008 from Department of Space, Government of India,—Aryabhatta Award 2010 from Aeronautical Society of India for outstanding contribution in Propulsion Technology, —Dr KCG Verghese Excellence Award 2023 for Life Time Achievement from Hindustan Group of Institutions, Chennai.

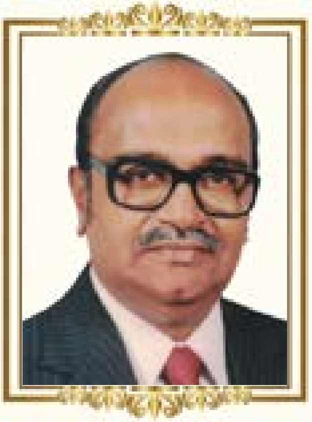

डॉ. ए. ई. मुथुनायगम

डॉ. ए. ई. मुथुनायगम एक प्रसिद्ध अंतरिक्ष वैज्ञानिक हैं और अपने उत्कृष्ट योगदान के कारण उन्हें भारत में तरल प्रणोदन प्रौद्योगिकी का जनक माना जाता है।

2. 11 जनवरी, 1939 को जन्मे डॉ. मुथुनायगम ने वर्ष 1960 में मद्रास विश्वविद्यालय से यांत्रिक अभियांत्रिकी में प्रथम श्रेणी ऑनर्स के साथ बी.ई., – वर्ष 1962 में भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु से पावर इंजीनियरिंग (मैकेनिकल) में एम.ई., – वर्ष 1965 में अमेरिका के पर्ड्यू विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ मैकेनिकल इंजीनियरिंग से पीएच.डी. – तथा वर्ष 1975 में केरल विश्वविद्यालय से एल.एल.बी. की डिग्री प्राप्त की। उन्हें वर्ष 1997 में आंध्र विश्वविद्यालय से, वर्ष 1998 में अन्ना विश्वविद्यालय से तथा वर्ष 2008 में करुण्या विश्वविद्यालय से मानद डॉक्टरेट की उपाधियाँ भी प्रदान की गईं।

3. डॉ. मुथुनायगम ने संयुक्त राज्य अमेरिका की एक एयरोस्पेस कंपनी में नासा प्रायोजित परियोजना पूर्ण करने के पश्चात वर्ष 1966 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) में विक्रम साराभाई के मार्गदर्शन में कार्यारंभ किया। उन्होंने इसरो में प्रणोदन प्रौद्योगिकियों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसरो के तरल प्रणोदन केन्द्र के संस्थापक–निदेशक के रूप में उन्होंने इसे इसरो के प्रक्षेपण यानों और अंतरिक्ष यानों के लिए आवश्यक विभिन्न प्रकार की तरल प्रणोदन प्रणालियों के विकास का प्रमुख केंद्र बनाया। उन्होंने महेन्द्रगिरि में तरल प्रणोदन प्रणालियों तथा उप–प्रणालियों के परीक्षण एवं प्रमाणीकरण हेतु अत्याधुनिक परीक्षण सुविधाएँ भी स्थापित कीं, जो आगे चलकर स्वतंत्र इसरो प्रणोदक परिसर के रूप में विकसित हुआ। एसईपी, फ्रांस से प्रौद्योगिकी अंतरण के माध्यम से विकसित उच्च–प्रणोदन द्रव चरण विकिंग इंजन प्रौद्योगिकी तथा कट–ऑफ और पुनःप्रारंभ क्षमता वाली स्वदेशी रूप से विकसित टर्मिनल चरण, जो सभी पीएसएलवी और जीएसएलवी प्रक्षेपण यानों में व्यापक रूप से उपयोग की जाती हैं, डॉ. मुथुनायगम की विशेष उपलब्धि है। उन्होंने स्वदेशी क्रायोजेनिक इंजन एवं चरण के विकास की पहल की तथा क्रायोजेनिक प्रौद्योगिकी के अधिग्रहण के लिए रूसी अंतरिक्ष एजेंसी के साथ सक्रिय वार्ताएँ भी कीं। उनके कार्यकाल में, इसरो ने पृथ्वी के ऊपरी वायुमंडल के अध्ययन के लिए प्रयुक्त छोटे आयातित साउंडिंग रॉकेट्स के प्रक्षेपण से आगे बढ़कर ऐसे अधिक शक्तिशाली प्रक्षेपण यान विकसित किए जो उपग्रहों को पृथ्वी की कक्षा में स्थापित करने में सक्षम थे। इन उपग्रहों ने देश को पृथ्वी के स्वदेशी चित्र प्राप्त करने, मौसम की निगरानी करने तथा संचार और प्रसारण सेवाओं को सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण आधार प्रदान किया।

4. भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम में 29 वर्षों तक सेवा देने के पश्चात, भारत सरकार ने अप्रैल 1995 में डॉ. मुथुनायगम को महासागर विकास विभाग (डीओडी) भारत सरकार का सचिव नियुक्त किया जहाँ उन्होंने अंटार्कटिक अनुसंधान, समुद्र के कानून पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यूएनसीएलओएस), समुद्री सजीव एवं निर्जीव संसाधनों के अध्ययन, अंतर–सरकारी समुद्र विज्ञान आयोग (आईओसी), संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को), एकीकृत तटीय एवं समुद्री क्षेत्र प्रबंधन (आईसीएमएएम), महासागर अवलोकन तथा सूचना सेवाओं जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का मार्गदर्शन एवं कार्यान्वयन किया।

5. महासागर विकास विभाग में अपने कार्यकाल (अप्रैल 1995 से जनवरी 2001) के दौरान, डॉ. मुथुनायगम को चार प्रधानमंत्रियों – श्री पी. वी. नरसिंह राव, श्री आई. के. गुजराल, श्री एच. डी. देवगौड़ा तथा श्री अटल बिहारी वाजपेयी – के नेतृत्व में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। इन सभी ने उनकी पहलों को पूर्ण समर्थन प्रदान किया। वर्ष 1990 के दशक में विभाग के पास स्वयं की संस्थागत आधारभूत संरचना का अभाव था, जो प्राथमिक कार्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वयन में एक गंभीर बाधा बन गया था। उन्होंने इस समस्या का समाधान करते हुए विभाग की गतिविधियों का विस्तार किया तथा सीएसआईआर, आईसीएआर और आईआईटी की राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं की सहभागिता से अनेक प्रौद्योगिकी विकास कार्यक्रम प्रारंभ किए जिससे विभाग का वित्तीय परिव्यय दोगुने से भी अधिक हो गया।

6. डॉ. मुथुनायगम ने डीओडी के प्रबंधन के अंतर्गत तीन स्वायत्त संस्थानों – चेन्नई में राष्ट्रीय महासागर प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईओटी), गोवा में अंटार्कटिक एवं महासागर अनुसंधान के लिए राष्ट्रीय केंद्र (एनसीएओआर) और हैदराबाद में भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (आईएनसीओआईएस) – की स्थापना की। यह विभाग के दो संबद्ध कार्यालयों – चेन्नई में एकीकृत तटीय एवं समुद्री क्षेत्र प्रबंधन (आईसीएमएएम) परियोजना निदेशालय और कोच्चि में सागर संपदा पोत प्रबंधन एवं समुद्री जीवित संसाधन समन्वय कक्ष – के अतिरिक्त है।

7. डॉ. मुथुनायगम ने "समुद्री जल के लवण–मुक्तिकरण के लिए एक प्रक्रिया, प्रणाली और विन्यास" शीर्षक से दिनांक 21 फरवरी 2003 को भारतीय पेटेंट संख्या 196396 भी प्राप्त की है। उन्होंने ऊर्जा उत्पादन के लिए ओशन थर्मल एनर्जी कन्वर्जन (ओटीईसी) प्रणाली तथा लवण–मुक्तिकरण के लिए लो प्रेशर डिस्टिलेशन (एलपीडी) प्रणाली को मिलाकर एक "समेकित लवण–मुक्तिकरण प्रणाली" प्रस्तावित की है, जो सतत, पर्यावरण–अनुकूल है और इसके संचालन के लिए किसी बाहरी विद्युत आपूर्ति की आवश्यकता नहीं होती। उन्होंने वर्ष 1996 से 2001 तक केंद्रीय हिंद महासागर के लिए अंतरसरकारी महासागरीय आयोग के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। उन्होंने वर्ष 1998 से 2000 तक अंटार्कटिक समुद्री सजीव संसाधन संरक्षण आयोग के अध्यक्ष तथा वर्ष 1996 से 1998 तक दो वर्षों के लिए इंटरगवर्नमेंटल ओशनोग्राफिक कमीशन (आईओसी) के उपाध्यक्ष के रूप में भी सेवाएं दीं। वह एस्ट्रोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया, एरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया, इंडियन नेशनल एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग तथा द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) के फेलो हैं।

8. डॉ. मुथुनायगम को एरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया द्वारा वर्ष 1989 के डॉ. वी. एम. घाटगे पुरस्कार, द इंस्टिट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), राष्ट्रीय डिजाइन एवं अनुसंधान फोरम द्वारा वर्ष 1995 के मैकेनिकल इंजीनियरिंग डिजाइन अवार्ड, समुद्र विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उनके विशिष्ट योगदान के लिए पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वर्ष 2007 में राष्ट्रीय आजीवन उपलब्धि पुरस्कारय अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार द्वारा वर्ष 2008 में इसरो उत्कृष्ट उपलब्धि पुरस्कार, प्रणोदन प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए एरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया द्वारा आर्यभट्ट पुरस्कार 2010, हिंदुस्तान ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स, चेन्नई द्वारा वर्ष 2023 में लाइफ टाइम अचीवमेंट के लिए डॉ. के.सी.जी. वर्गीज उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

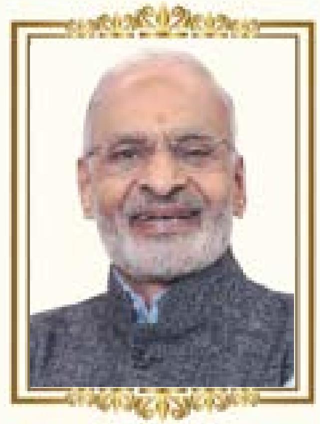

SHRI SATYANARAYAN NANDLAL NUWAL

Shri Satyanarayan Nandlal Nuwal is the Founder and Chairman of the Solar Group of Industries, a globally recognised Indian enterprise engaged in the manufacture and export of industrial explosives and high-energy materials.

2. Born on 25th July, 1952 in Bhilwara, Shri Nuwal after completing his matriculation in 1967, he spent a year at the Vedamata Gayatri Ashram, Mathura. He suffered setback in his initial business venture and had to face severe financial hardships. In search of livelihood, he moved to Ballarshah in Maharashtra, where he stumbled upon an opportunity in explosive supply activity. He entered the explosives supply trade in 1979, laying the foundation for what would later become the Solar Group. In 1984, ICI (world's largest explosive manufacturer) appointed him as a consignment agent. Shortly, thereafter, he became the largest explosives dealer in the country.

3. In 1995, Shri Nuwal established the Solar Group's first explosives manufacturing unit under the SSI framework. Over the next two and a half decades, the Group grew to become India's largest manufacturer and exporter of industrial explosives, with manufacturing facilities across multiple locations in India and abroad. Today, the Group operates across four continents, employs over 10,000 people, and exports its products to more than 82 countries, holding the largest share of exports from India in the explosives segment. In 2010, recognising the country's critical requirements in defence preparedness, he spearheaded the Group's entry into defence manufacturing through the establishment of what is now Solar Defence & Aerospace Limited (SDAL). One of the world's largest facilities for the manufacture of HMX and its compositions was set up in Nagpur. Up till then, the country had been totally dependent on imports. Presently, Solar regularly exports HMX and its compositions world over to countries like USA, France, Ukraine, Israel and other European countries. Over the years, the Group has developed world-class capabilities in high-energy materials, rockets, missiles, aerial bombs, modern grenades, counter-measure systems, loitering munitions, weaponised unmanned aerial systems, and advanced testing and research facilities.

4. Under Shri Nuwal's leadership, Solar became the first Indian company to design, develop and manufacture fully weaponised variants of the NAGASTRA Loiter Munition, which have been supplied to the Indian Army. Deeply committed to social, educational and spiritual causes, Shri Nuwal serves as Chairman of Ramdeobaba University, Managing Trustee of Gayatri Parivar Trust, Nagpur, and Chairman of Madhav Netralaya, Nagpur. He has consistently promoted inclusive growth, with women comprising nearly 25 percent of the Solar Group's workforce, contributing significantly to social and economic empowerment.

5. Shri Nuwal has received wide recognition for his contributions to industry and entrepreneurship. He was adjudged one of India's 100 Best CEOs by Business Today in 2014, and the Solar Group was featured in Forbes Asia's list of "200 Best Under A Billion" companies in 2019. In December, 2022, he was ranked 72nd among Indian corporates in a survey published by *Forbes*. His achievements have been featured in leading publications such as Forbes India, Business India and India Today. He was conferred the degree of Doctor of Medical in May, 2023 and was honoured with the "Maheshwari Samaj Ratna" in January, 2026.

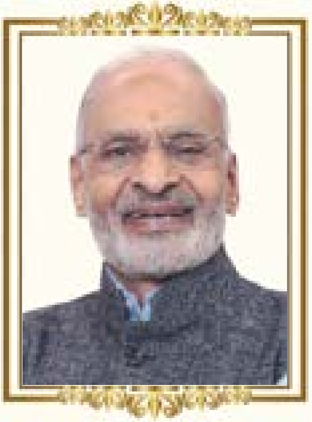

श्री सत्यनारायण नंदलाल नुवाल

श्री सत्यनारायण नंदलाल नुवाल सोलर ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज के संस्थापक और अध्यक्ष हैं, जो औद्योगिक विस्फोटकों और हाई–एनर्जी सामग्री के विनिर्माण और निर्यात में कार्य कर रही एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त भारतीय कंपनी है।

2. 25 जुलाई, 1952 को भीलवाड़ा में जन्मे, श्री नुवाल ने वर्ष 1967 में मैट्रिक की पढ़ाई पूरी करने के बाद, मथुरा के वेदमाता गायत्री आश्रम में एक वर्ष बिताया। अपने शुरुआती व्यवसाय में उन्हें असफलता मिली और उन्हें गंभीर आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। आजीविका की तलाश में वे महाराष्ट्र के बल्लारशाह चले गए, जहाँ उन्हें विस्फोटक आपूर्ति के व्यवसाय में एक अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने वर्ष 1979 में विस्फोटक आपूर्ति के व्यापार में प्रवेश किया, जिससे सोलर ग्रुप की नींव पड़ी। वर्ष 1984 में, आईसीआई (विश्व की सबसे बड़ी विस्फोटक विनिर्माता कंपनी) ने उन्हें कंसाइनमेंट एजेंट नियुक्त किया। इसके कुछ ही समय बाद, वे देश के सबसे बड़े विस्फोटक डीलर बन गए।

3. वर्ष 1995 में, श्री नुवाल ने एसएसआई ढांचे के तहत सोलर ग्रुप की पहली विस्फोटक निर्माण इकाई की स्थापना की। अगले ढाई दशकों में, यह समूह भारत में औद्योगिक विस्फोटकों का सबसे बड़ा विनिर्माता और निर्यातक बन गया, जिसके विनिर्माण संयंत्र भारत और विदेशों में कई स्थानों पर स्थित हैं। आज, यह समूह चार महाद्वीपों में कार्यरत है, 10,000 से अधिक लोगों को रोजगार देता है और 82 से अधिक देशों को अपने उत्पाद निर्यात करता है, विस्फोटक क्षेत्र में भारत से निर्यात का सबसे बड़ा हिस्सा इसी समूह का है। वर्ष 2010 में, सुरक्षा संबंधी तैयारियों में देश की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को देखते हुए, उन्होंने सोलर डिफेंस एंड एयरोस्पेस लिमिटेड (एसडीएएल) की स्थापना के माध्यम से इस समूह ने रक्षा विनिर्माण क्षेत्र में कदम रखा। नागपुर में एचएमएक्स और इसकी संरचनाओ के निर्माण के लिए दुनिया की सबसे बड़ी सुविधाओं में से एक के रूप स्थापित की गई। तब तक, देश पूरी तरह से आयात पर निर्भर था। वर्तमान में, सोलर नियमित रूप से एचएमएक्स और इसकी संरचना मिश्रणों का निर्यात अमेरिका, फ्रांस, यूक्रेन, इज़राइल और अन्य यूरोपीय देशों सहित दुनिया भर के देशों को करता है। पिछले कुछ वर्षों में, समूह ने हाई–एनर्जी सामग्री, रॉकेट, मिसाइल, हवाई बम, आधुनिक ग्रेनेड, जवाबी कार्रवाई प्रणाली, लोइटरिंग मुनिशन्स, हथियारबंद मानवरहित हवाई प्रणाली और उन्नत परीक्षण और अनुसंधान सुविधाओं में विश्व स्तरीय क्षमताएं विकसित की हैं।

4. श्री नुवाल के नेतृत्व में, सोलर पहली भारतीय कंपनी बनी जिसने नागास्त्रा लोइटर मुनिशन के पूर्ण रूप से शस्त्रीकृत संस्करणों का डिजाइन, विकास और विनिर्माण किया, जिनकी आपूर्ति भारतीय सेना को की गई है। सामाजिक, शैक्षिक और आध्यात्मिक कार्यों के प्रति गहरी प्रतिबद्धता रखने वाले श्री नुवाल रामदेवबाबा विश्वविद्यालय के अध्यक्ष, गायत्री परिवार ट्रस्ट, नागपुर के प्रबंध न्यासी और माधव नेत्रालय, नागपुर के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने समावेशी विकास को निरंतर बढ़ावा दिया है, जिसके परिणामस्वरूप सोलर समूह के कार्यबल में लगभग 25 प्रतिशत महिलाएं हैं, जो सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

5. श्री नुवाल को उद्योग और उद्यमिता में उनके योगदान के लिए व्यापक मान्यता प्राप्त है। उन्हें वर्ष 2014 में बिजनेस टुडे द्वारा भारत के 100 सर्वश्रेष्ठ सीईओ में से एक चुना गया और सोलर ग्रुप को वर्ष 2019 में फोर्ब्स एशिया की "200 सर्वश्रेष्ठ अंडर ए बिलियन" कंपनियों की सूची में शामिल किया गया। दिसंबर 2022 में, फोर्ब्स द्वारा प्रकाशित एक सर्वेक्षण में उन्हें भारतीय कॉरपोरेट जगत में 72वां स्थान प्राप्त हुआ। उनकी उपलब्धियों को फोर्ब्स इंडिया, बिजनेस इंडिया और इंडिया टुडे जैसे प्रमुख प्रकाशनों में प्रकाशित किया गया है। उन्हें मई, 2023 में डॉक्टर ऑफ मेडिकल की उपाधि से सम्मानित किया गया और जनवरी, 2026 में "महेश्वरी समाज रत्न" से नवाजा गया।

SHRI K. PAJANIVEL

Shri K. Pajanivel is a Silambam Master. Silambam is a weapon-based 5000 years old warfare method of Indian martial art originating in Tamilnadu. Nowadays it has become popular and considered as a competitive sport in India as well as in other countries like France, Srilanka, Malaysia and Canada.

2. Born on 30th January 1973 in Pooranankuppam, Puducherry in a farmer family, Shri Pajanivel was interested in Martial Art Silambam and folk art activities from his childhood and dedicated his life to it. He learnt the Martial Art Silambam properly and participated in many competitions. He won the first prize Cin the International level Silambam competition under 56-60 kg category which was held in Trichirapalli, Tamilnadu in 2002. He also won the first prize in national level Silambam competition under 55-60 kg category which was held in Nagercoil, Tamil Nadu in 2004. He is also an expert in the field of martial arts like kuthu varisai, surul vilaiyattu, kalari payittu, sword fight, de horn fight, fire fight and folk arts like kaaliyattam, puliyattam, karakatta thappattam and other arts like yoga, acro yoga and gymnastics.

3. In the year 2002, Shri Pajanivel founded "Mamallan Silambam and Folk Art Development Club" in Pooranankuppam, Pondicherry. In his own land, he trained youths who were interested in Silambam. In the same year, he started to conduct free summer camp for school students for training them in Silambam and he continues this free camp till date. His students won prize at state level and national level comptetions. He also taught Silambam to foreigners from France, Germany, Italy and Brazil. He has trained more than 5000 students in the past 35 years. He participated in state and national level government functions, parades, heritage programs, youth camps to wide spread Silambam. He also acted as a referee in Silambam competitions.

4. For his service towards martial arts, Shri Pajanivel was conferred "Akademi Puraskar Award" of Sangeet Natak Akademi presented by the Honourable President of India in 2023. Central government autonomous organization Nehru Yuva Kendhra has given him ""Best Youth Award in district wise in 2004. Also, Puducherry State Government conferred "Puthuvai Kalaimamani" award on him in 2012. He has been awarded "Natupura Kalai Seminal"; "Silamba Kalai Kalanjiam"; "Silamba Kalai Sudar"; "Silamba Kalai Kalaimani"; "Life Time Achiever" by many other clubs.

श्री के. पजानिवेल

श्री के. पजानिवेल एक सिलंबम मास्टर हैं। सिलंबम 5000 वर्ष पुरानी भारतीय मार्शल आर्ट की एक शस्त्र आधारित युद्ध पद्धति है जिसकी उत्पत्ति तमिलनाडु में हुई थी। आजकल यह भारत के साथ–साथ फ्रांस, श्रीलंका, मलेशिया और कनाडा जैसे अन्य देशों में भी लोकप्रिय हो गया है और इसे एक प्रतिस्पर्धी खेल माना जाता है।

2. 30 जनवरी, 1973 को पुदुचेरी के पूरनांकुप्पम में एक किसान परिवार में जन्मे, श्री पजानिवेल बचपन से ही मार्शल आर्ट सिलंबम और लोक कला गतिविधियों में रुचि रखते थे और उन्होंने अपना जीवन इसके प्रति समर्पित कर दिया। उन्होंने मार्शल आर्ट सिलंबम को पूरी तरह सीखा और कई प्रतियोगिताओं में भाग लिया। उन्होंने वर्ष 2002 में तमिलनाडु के त्रिचिरापल्ली में आयोजित 56–60 किलोग्राम वर्ग में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सिलंबम प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार जीता। उन्होंने वर्ष 2004 में तमिलनाडु के नागरकोइल में आयोजित 55–60 किलोग्राम वर्ग में राष्ट्रीय स्तर की सिलंबम प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार भी जीता था। वह कुथु वारिसई, सुरुल विलायट्ट, कलारी पेयित्तू, तलवारबाजी, डी हॉर्न फाइट, फायर फाइट जैसे मार्शल आर्ट के क्षेत्र और कालियाट्टम, पुलियाट्टम, कराकट्टा थप्पट्टम जैसी लोक कलाएं और योग, एक्रो योग और जिम्नास्टिक जैसी अन्य कलाओं के भी विशेषज्ञ हैं।

3. वर्ष 2002 में श्री पजानिवेल ने पांडिचेरी के पूरनांकुप्पम में "मामल्लन सिलंबम एंड फोक आर्ट डेवलपमेंट क्लब" की स्थापना की। अपनी ही भूमि में उन्होंने उन युवाओं को प्रशिक्षित किया जो सिलंबम में रुचि रखते थे। उसी वर्ष उन्होंने स्कूली छात्रों को सिलंबम में प्रशिक्षण देने के लिए मुफ्त ग्रीष्मकालीन शिविर आयोजित करना शुरू किया और वह आज भी इस मुफ्त शिविर का संचालन कर रहे हैं। उनके विद्यार्थियों ने राज्य स्तर और राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीते। उन्होंने फ्रांस, जर्मनी, इटली और ब्राजील जैसे देशों के लोगों को सिलंबम भी सिखाया। उन्होंने पिछले 35 वर्षों में 5000 से अधिक छात्रों को प्रशिक्षित किया है। उन्होंने राज्य और राष्ट्रीय स्तर के सरकारी कार्यक्रमों, परेडों, विरासत कार्यक्रमों, युवा शिविरों में भाग लिया और सिलंबम का व्यापक प्रचार–प्रसार किया। उन्होंने सिलंबम प्रतियोगिताओं में रेफरी के रूप में भी काम किया।

4. मार्शल आर्ट के प्रति उनकी सेवा के लिए, श्री पजानिवेल को वर्ष 2023 में भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा संगीत नाटक अकादमी का "अकादमी पुरस्कार" प्रदान किया गया था। केंद्र सरकार के स्वायत्त संगठन नेहरू युवा केंद्र ने उन्हें वर्ष 2004 में जिलावार "सर्वश्रेष्ठ युवा पुरस्कार" दिया है। साथ ही, पुदुचेरी राज्य सरकार ने उन्हें वर्ष 2012 में "पुथुवाई कलामामणि" पुरस्कार से सम्मानित किया। उन्हें कई अन्य क्लबों द्वारा "नातुपुरा कलाई सेमिनल"; "सिलम्बा कलाई कलंजियम"; "सिलम्बा कलाई सुदार"; "सिलम्बा कलाई कलामणि"; "लाइफ टाइम अचीवर" से सम्मानित किया गया है।

SHRI DHARMIKLAL CHUNILAL PANDYA

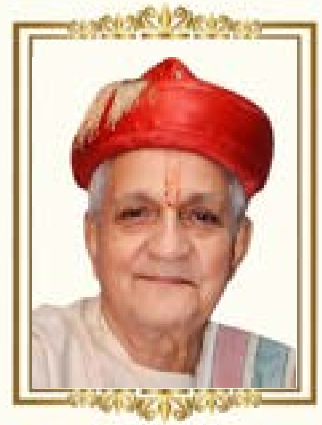

Shri Dharmiklal Chunilal Pandya is widely recognised as the foremost master of Gujarat's ancient Maanbhatt "Maan Aakhyan" tradition, a distinctive oral storytelling art rooted in medieval Aakhyan literature. Characterised by rhythmic narration of epics with classical music, poetic expression, and the unique use of the *Maan* (a copper vessel played with ringed fingers), this tradition has served for centuries as a medium for conveying the *Ramayana, Mahabharata, Bhagwat* and Puranic narratives, along with moral and cultural values.

2. Born on 11th August 1932 in Vadodara, Shri Pandya inherited this art from his father, Chunilal Pandya, and began performing in the early 1950s. For more than seven decades, he has devoted himself to reviving and sustaining this endangered tradition at a time when it was nearing extinction. Through extensive performances across Gujarat and India, including at prestigious venues such as Rashtrapati Bhavan, and through long-form Aakhyan series, he brought this heritage to diverse audiences.

3. Shri Pandya has also represented the Maanbhatt tradition internationally through cultural tours and spiritual discourses in the United Kingdom, Zimbabwe, Zambia, the United States, Canada, Nepal and Thailand, thereby introducing global audiences and the Indian diaspora to this rare art form. His extensive recordings with All India Radio and Doordarshan include complete renditions of the *Harivansh Puran (From Uttar Mahabharat), Shiv Mahapuraan,* and all forty Aakhyans of the medieval Gujarati poet Premanand. In recent years, curated digital outreach by his family has further expanded the tradition's reach.

4. In addition to preserving classical repertoire, Shri Pandya has composed new Aakhyans on contemporary social themes such as water conservation and environmental awareness. He institutionalised training through the Shree Maan Aakhyankala Shikshan Kendra, mentoring students, including his sons Pradyumn and Mayank Pandya who still carryout performances of this art thus ensuring generational continuity.

5. Shri Pandya's contributions have been recognised with numerous honours and awards. He is the recipient of the Sangeet Natak Akademi Award (1983) and is the only Maanbhatt artist to hold this distinction. His other honours include the Kirtan Kesari Award and Maankala Kaushal Certificate from Jagadguru Shankaracharyaji (1980); the Gaurav Puraskar and multiple appreciation awards from the Gujarat State Sangeet Natak Academi (1980s); recognition by the Vadodara Municipal Corporation (1984); awards from the Swaminarayan Vichar Trust, Amruta Institute (Mumbai), Gujarat Lokkala Kendra, and the Pandit Omkarnath Thakur Award (Government of Gujarat, 1994-95); International honours from the Gujarati Literary Academy (USA, 1996) and Sanyas Sewashram (Kathmandu, 2008); and later recognitions and felicitations from Sanskar Bharti (Vadodara , 2009), Triveni Institute (2012), 8th Delhi International Arts Festival - Sangeet Natak Akademi (Delhi, 2014), 19th Bharat Rang Mahotsav - National School of Drama (Delhi, 2017) the Gujarat State Government (2017), and Shadj'a Kala Kendra Trust (Bengaluru, 2017).

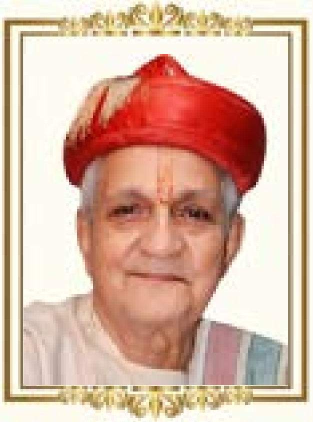

श्री धार्मिकलाल चुनीलाल पंडया

श्री धार्मिकलाल चुनीलाल पंडया को गुजरात की प्राचीन मानभट्ट ''मान आख्यान'' परंपरा के सर्वश्रेष्ठ उस्ताद माना जाता है, यह मौखिक रूप से कहानी कहने की अनोखी कला है जो मध्यकालीन आख्यान साहित्य से जुड़ी हुई है। इसमें शास्त्रीय संगीत, काव्य अभिव्यक्ति के माध्यम से और मान (अंगूठी पहनी हुई उंगलियों से बजाया जाने वाला एक तांबे का बर्तन) का अद्भुत वादन करते हुए महाकाव्यों का लयबद्ध वाचन किया जाता है। यह कला सदियों से रामायण, महाभारत, भागवत और पौराणिक कथाओं के साथ–साथ नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को व्यक्त करने का माध्यम रही है।

2. 11 अगस्त, 1932 को वडोदरा में जन्में, श्री पंडया को यह कला अपने पिता श्री चुनीलाल पांड्या से विरासत में मिली और इन्होंने 1950 के दशक की शुरुआत में इसका प्रदर्शन करना शुरू किया। सात दशकों से अधिक समय से इन्होंने ऐसे समय में स्वयं को इस लुप्त होती कला को जीवित रखने और उसे बचाकर रखने के लिए समर्पित कर दिया है, जब यह कला विलुप्त होने के कगार पर थी। इन्होंने राष्ट्रपति भवन जैसे प्रतिष्ठित मंचों सहित गुजरात और भारत भर में इस कला का व्यापक प्रदर्शन किया है, और दीर्घकालिक आख्यान श्रृंखला सहित इस विरासत को दर्शकों तक पहुंचाया।

3. श्री पंडया ने यूनाइटेड किंगडम, जिम्बाब्वे, जाम्बिया, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, नेपाल और थाईलैंड में सांस्कृतिक दौरों और आध्यात्मिक प्रवचनों के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी मानभट्ट कला का प्रदर्शन किया है। इससे दुनिया भर के दर्शक और भारतीय प्रवासी इस दुर्लभ कला रूप से परिचित हुए हैं। आकाशवाणी और दूरदर्शन के साथ उनकी बहुत सारी रिकॉर्डिंग में हरिवंश पुराण (उत्तर महाभारत से), शिव महापुराण और मध्यकालीन गुजराती कवि प्रेमानंद के सभी चालीस आख्यानों का पूर्ण प्रस्तुतीकरण शामिल है। हाल के वर्षों में, उनके परिवार द्वारा विशेष डिजिटल माध्यम से भी इस कला का प्रचार–प्रसार हुआ है।

4. पारंपरिक कला–संग्रह को संरक्षित करने के अलावा, श्री पंडया ने जल संरक्षण और पर्यावरण जागरूकता जैसे समकालीन सामाजिक विषयों पर नए आख्यान भी रचे हैं। इन्होंने श्री मान आख्यानकला शिक्षण केंद्र के माध्यम से प्रशिक्षण को संस्थागत रूप दिया, अपने बेटों प्रद्युम्न और मयंक पांड्या सहित छात्रों का मार्गदर्शन किया, जो अभी भी इस कला का प्रदर्शन करते हैं, जिससे यह कला पीढ़ी–दर–पीढ़ी आगे बढ़ रही है।

5. श्री पंडया को उनके इस योगदान के लिए कई सम्मान और पुरस्कार प्रदान किए गए हैं। इन्हें वर्ष 1983 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ और यह गौरव प्राप्त करने वाले वह एकमात्र मानभट्ट कलाकार हैं। इनको प्राप्त हुए अन्य सम्मानों में जगद्गुरु शंकराचार्यजी से वर्ष 1980 में प्राप्त कीर्तन केसरी पुरस्कार और मानकला कौशल प्रमाणपत्र; 1980 के दशक में गुजरात राज्य संगीत नाटक अकादमी से गौरव पुरस्कार और कई प्रशंसा पुरस्कार; वर्ष 1984 में वडोदरा नगर निगम द्वारा मान्यताय स्वामीनारायण विचार ट्रस्ट, अमृता इंस्टीट्यूट (मुंबई), गुजरात लोक कला केंद्र द्वारा पुरस्कार और पंडित ओंकारनाथ ठाकुर पुरस्कार (गुजरात सरकार, 1994–95); गुजराती साहित्य अकादमी (यूएसए, 1996) और सन्यास सेवाश्रम (काठमांडू, 2008) से अंतर्राष्ट्रीय सम्मानय और बाद में वर्ष 2009 में संस्कार भारती (वडोदरा), वर्ष 2012 में त्रिवेणी संस्थान, 8वां दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय कला महोत्सव – संगीत नाटक अकादमी (दिल्ली, 2014), 19वां भारत रंग महोत्सव – राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (दिल्ली, 2017) गुजरात राज्य सरकार (2017), और शाजदा कला केंद्र ट्रस्ट (बेंगलुरु, 2017) से सम्मान और अभिनंदन शामिल हैं।

SHRI KAILASH CHANDRA PANT

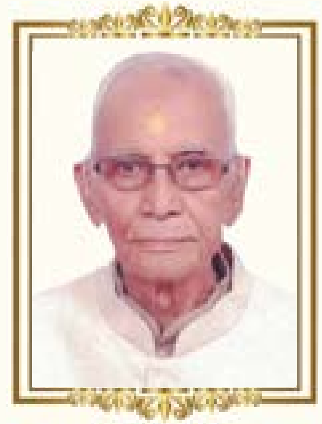

Shri Kailash Chandra Pant is a famous journalist and author from Madhya Pradesh.

2. Born on 26th April, 1936 in Mhow, Madhya Pradesh, Shri Pant developed an early passion for learning and service. He completed matriculation locally and higher studies at Indore Christian College (Agra University), excelling in scouting, debating and social work. His young oratory won him the All India Elocution Contest organised by Rotary Club of Indore. He also edited the college magazine and led the Hindi Samiti.

3. Shri Pant is credited with so many pathbreaking books like Kaun Kiska Aadami, Dhundh ke Aar Paar, Shabd ka Vichar Paksha, Sanskar, Sanskriti aur Samaj, Sankalp ki Prateeksha mein, Sanskritik Vikhandan-Chunauti and Chetna etc. His literary journey started with an article in Veena magazine and reporting on Acharya Vinoba Bhave's Bhoodan Yatra for regional papers. In 1960, he joined SEOTC, Vidya Bhawan, Udaipur, launching quarterly Naye Kshiti. He contributed to Socialist Congressmen (Delhi), Nav Prabhat, and Nav Bharat in Bhopal (from 1962). He founded monthly Shiksha Pradeep (1964), and served as Instructor/Principal of Panchayat Raj Training Centre, Bhopal, and Secretary of Madhya Pradesh Krishak Samaj.

4. In 1977, Shri Pant launched weekly Jan Dharam. From November 1988, as Secretary (later General Secretary) of Madhya Pradesh Rashtra Bhasha Prachar Samiti, he revitalized Hindi Bhawan and upgraded a quarterly literary Magazine Akshara to monthly. He was its chief editor for a long period of 18 years. He started literary lecture series (Pavas, Basant, Sharad, Vyakhyan Malas) and initiated statewide Pratibha Protsahan Pratiyogita for schoolchildren. He built Sahityakar Niwas (13 rooms and two halls) and began giving regular Hindi Diwas honors, thus strengthening Hindi as a national language and promoting comparative literary and linguistic studies. He retired as General Secretary on 2 February, 2026, leaving a legacy of sincerity, excellence, and dedication to Hindi and India.

5. Shri Pant's work earned him Vishva Hindi Samman (9th World Hindi Conference, Johannesburg); Nehru Literacy Award Sahitya Bhushan by Uttar Pradesh Hindi Sansthan; Subramania Bharatiya Samman by Kendriya Hindi Sansthan; Sharad Joshi Samman and Ganesh Shankar Vidyarthi Patrakarita Samman by the Government of Madhya Pradesh amongst many others.

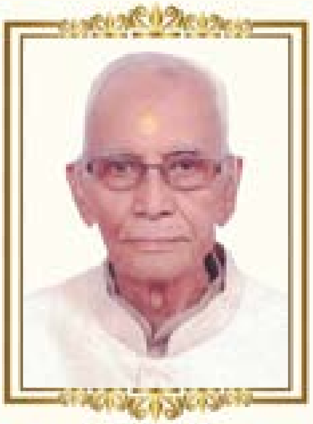

श्री कैलाश चन्द्र पन्त

श्री कैलाश चन्द्र पन्त मध्य प्रदेश के एक प्रसिद्ध पत्रकार और लेखक हैं।

2. 26 अप्रैल, 1936 को मध्य प्रदेश के महू में जन्मे, श्री पन्त में शुरुआत से ही सीखने और सेवा के प्रति जुनून था। उन्होंने इंदौर क्रिश्चियन कॉलेज (आगरा विश्वविद्यालय) से स्थानीय स्तर पर मैट्रिक और उच्च शिक्षा पूरी की, स्काउटिंग, वाद–विवाद और सामाजिक कार्यों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। अपने युवा वक्तृत्व से उन्होंने रोटरी क्लब ऑफ इंदौर द्वारा आयोजित अखिल भारतीय भाषण प्रतियोगिता जीती। उन्होंने कॉलेज पत्रिका का संपादन और हिंदी समिति का नेतृत्व भी किया।

3. श्री पन्त को कौन किसका आदमी, धुंध के आर पार, शब्द का विचार पक्ष, संस्कार, संस्कृति और समाज, संकल्प की प्रतीक्षा में, सांस्कृतिक विखंडन–चुनौती और चेतना आदि जैसी कई पथप्रदर्शक पुस्तकों का श्रेय दिया जाता है। उनकी साहित्यिक यात्रा की शुरुआत वीणा पत्रिका में एक लेख और क्षेत्रीय समाचार पत्रों के लिए आचार्य विनोबा भावे की भूदान यात्रा पर रिपोर्टिंग के साथ हुई। वर्ष 1960 में, वह एसईओटीसी, विद्या भवन, उदयपुर में शामिल हो गए तथा त्रैमासिक नए क्षितिज का शुभारंभ किया। उन्होंने भोपाल में समाजवादी कांग्रेसियों (दिल्ली), नव प्रभात और नवभारत (वर्ष 1962 से) में योगदान दिया। उन्होंने मासिक शिक्षा प्रदीप (वर्ष 1964) की स्थापना की, और पंचायती राज प्रशिक्षण केंद्र, भोपाल के प्रशिक्षक/प्राचार्य और मध्य प्रदेश कृषक समाज के सचिव के रूप में कार्य किया।

4. वर्ष 1977 में, श्री पन्त ने साप्ताहिक जन धर्म की शुरुआत की। नवंबर 1988 से, मध्य प्रदेश राष्ट्र भाषा प्रचार समिति के सचिव (बाद में महासचिव) के रूप में, उन्होंने हिंदी भवन को पुनर्जीवित किया और एक त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका अक्षरा को मासिक पत्रिका के रूप में अपग्रेड किया। वह 18 वर्षों की लंबी अवधि तक इसके मुख्य संपादक रहे। उन्होंने साहित्यिक व्याख्यान श्रृंखला (पावस, बसंत, शरद, व्याख्यान माला) शुरू की और स्कूली बच्चों के लिए राज्यव्यापी प्रतिभा प्रोत्साहन प्रतियोगिता की शुरुआत की। उन्होंने साहित्य निवास (13 कमरे और दो हॉल) का निर्माण किया और नियमित हिंदी दिवस सम्मान देना शुरू किया, इस प्रकार हिंदी को एक राष्ट्रीय भाषा के रूप में मजबूत किया और तुलनात्मक साहित्यिक और भाषाई अध्ययन को बढ़ावा दिया। वह 2 फरवरी, 2026 को महासचिव के रूप में सेवानिवृत्त हुए, तथा हिंदी और भारत के प्रति ईमानदारी, उत्कृष्टता और समर्पण की विरासत छोड़ गए।

5. श्री पन्त को अपने कार्यों के लिए अन्य पुरस्कारों के साथ–साथ विश्व हिंदी सम्मान (9वां विश्व हिंदी सम्मेलन, जोहान्सबर्ग); उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा नेहरू साक्षरता पुरस्कार साहित्य भूषण; केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा सुब्रमण्यम भारतीय सम्मान; मध्य प्रदेश सरकार द्वारा शरद जोशी सम्मान और गणेश शंकर विद्यार्थी पत्रकार सम्मान से नवाजा गया है।

SHRI GARIMELLA BALAKRISHNA PRASAD (POSTHUMOUS)

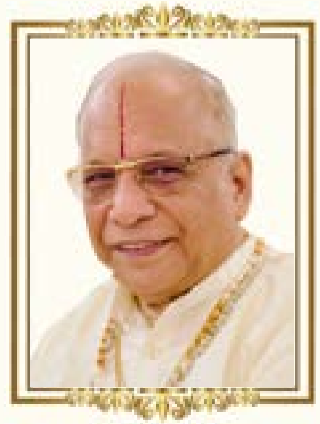

Shri Garimella Balakrishna Prasad was a distinguished Indian classical and devotional vocalist, composer and Vaggeyakara, renowned for his seminal role in reviving and popularizing the compositions of the 15th-century saint-poet Shri Tallapaka Annamacharya, bringing them vividly to life. He is widely regarded as the most prolific tunesmith of Annamacharya Sankeerthanams in modern times and a transformative spiritual figure in India's devotional music tradition.

2. Born on 9th November, 1948 in Andhra Pradesh, Shri Prasad received his foundational music training from his parents and further honed his craft under eminent maestros, notably Dr. Nedunuri Krishnamurthy. In 1978, he joined the Tirumala Tirupati Devasthanams (TTD) Annamacharya Project, where he served for nearly three decades. He continued his association with TTD in various capacities until the end of his life, including as Asthana Vidwan. Undeterred by challenges, he traveled extensively across India, performing tirelessly to propagate and popularize Annamacharya Sankeerthanams.

3. Over a career spanning six decades, Shri Prasad presented more than 6,000 concerts across India and internationally. Among his 2,500 musical works spanning more than 200 ragas, he composed music for over 1,000 Annamacharya Sankeerthanams, thereby transforming a largely manuscript-based tradition into a living devotional practice. A 21st-century Vaggeyakara, he created 22 new Indian classical ragas, and composed over 400 classical works, including kritis, varnams, and thillanas in Sanskrit and Telugu. He pioneered the concept of Sankeerthana Yagnam, week-long musical marathons featuring hundreds of devotional compositions. In 2009, he led over 1,60,000 singers at Hyderabad's Parade Grounds during Lakshagalarchana, a Guinness World Record event.

4. Shri Prasad authored over 10 books containing musical notations of Annamacharya compositions and released more than 100 music albums, encompassing nearly 800 songs. He anchored several widely watched devotional television series that enabled systematic learning of classical and devotional music. He trained more than 50 students through the TTD Annamacharya Project, while lakhs of musicians worldwide regard him as their guru through self-study of his recordings and publications. Two doctoral dissertations were completed on his musical works. His interpretations also shaped the musical ethos of the acclaimed Telugu film *Annamayya,* influencing public engagement with Annamacharya's legacy.

5. Shri Prasad received numerous awards and honours, including the Sangeet Natak Akademi Award (2020), the highest national recognition for performing artists. He was conferred Asthana Vidwan titles by Tirumala Tirupati Devasthanams, Shri Kanchi Kamakoti Peetham, and Shri Ahobhila Mutt, among many other prestigious cultural institutions.

6. Shri Prasad passed away on 9th March, 2025.

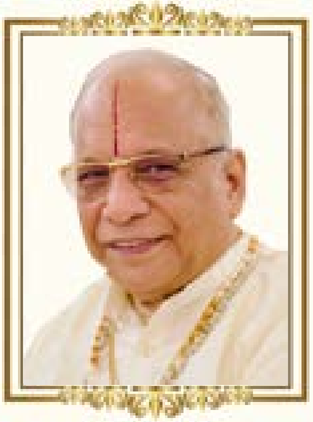

श्री गरिमेल्ला बालकृष्ण प्रसाद (मरणोपरांत)

श्री गरिमेल्ला बालकृष्ण प्रसाद एक प्रतिष्ठित भारतीय शास्त्रीय और भक्ति संगीत गायक, संगीतकार और वाग्गेयाकारा थे। वह 15 वीं शताब्दी के संत–कवि श्री तल्लापाका अन्नामाचार्य की रचनाओं को पुनर्जीवित करने और लोकप्रिय बनाने में अपनी महती भूमिका के लिए प्रसिद्ध हैं। इनकी प्रसिद्धि आधुनिक समय में अन्नामाचार्य संकीर्तनम को धुन देने वाले सबसे सफल कलाकार और भारत की भक्ति संगीत परंपरा में एक परिवर्तनकारी आध्यात्मिक व्यक्ति के रूप में है।

2. 9 नवंबर, 1948 को आंध्र प्रदेश में जन्में, श्री प्रसाद ने माता–पिता से मौलिक संगीत प्रशिक्षण प्राप्त किया और डॉ. नेदुनुरी कृष्णमूर्ति जैसे प्रख्यात दिग्गजों के सान्निध्य में अपनी कला को और निखारा। वर्ष 1978 में, वह तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) अन्नामाचार्य परियोजना से जुड़े, जहां उन्होंने लगभग तीन दशकों तक सेवा की। वह आजीवन अलग–अलग हैसियत में टीटीडी से जुड़े रहे, जिसमें अस्थाना विद्वान के रूप में सेवाएं भी शामिल है। चुनौतियों से विचलित हुए बिना, इन्होंने अथक रूप से पूरे भारत की यात्रा की ताकि अन्नामाचार्य के संकीर्तनों का प्रचार–प्रसार कर सकें, उसे लोगों के बीच लोकप्रिय बना सकें।

3. छह दशकों के करियर में, श्री प्रसाद ने भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 6,000 से अधिक संगीत कार्यक्रम किए। इन्होंने 200 से अधिक रागों में अपने 2,500 से अधिक संगीतमयी रचनाएं तैयार कीं, 1,000 से अधिक अन्नामाचार्य के संकीर्तनों के लिए संगीत तैयार किया और वृहद रूप से पांडुलिपि–आधारित परंपरा को जीवित भक्ति साधना का स्वरूप प्रदान किया। 21वीं सदी के वाग्गेयाकारा ने 22 नए भारतीय शास्त्रीय रागों की रचना की तथा संस्कृत और तेलुगु में कृतियों, वर्णम और थिल्लानाओं सहित 400 से अधिक शास्त्रीय रचनाएँ रचीं। इन्होंने संकीर्तन यज्ञम की अवधारणा का बीड़ा उठाया। जिसमें सैकड़ों भक्ति रचनाओं के साथ सप्ताह भर चलने वाली संगीत मैराथन का ओयाजन होता है। वर्ष 2009 में, इन्होंने हैदराबाद के परेड ग्राउंड में लक्षगालार्चना कार्यक्रम के दौरान 1,60,000 से अधिक गायकों का नेतृत्व किया जो कि गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड कार्यक्रम है।

4. श्री प्रसाद ने अन्नामाचार्य रचनाओं के संगीतमय संकेतन वाली 10 से अधिक पुस्तकों की रचना की और लगभग 800 गीतों को शामिल करते हुए 100 से अधिक संगीत एल्बम निकाले। इन्होंने बहुत अधिक देखे जाने वाले कई भक्ति टेलीविजन श्रृंखलाओं में संचालन का कार्य किया, जिससे शास्त्रीय और भक्ति संगीत का व्यवस्थित अध्ययन सक्षम हो सका। इन्होंने टीटीडी अन्नामाचार्य परियोजना के माध्यम से 50 से अधिक छात्रों को प्रशिक्षित किया, जबकि दुनिया भर के लाखों संगीतकार उन्हें अपना गुरु मानते हैं और उनकी रिकॉर्डिंग और प्रकाशनों का स्व–अध्ययन करते हैं। इनकी संगीत साधना पर दो डॉक्टरेट शोध प्रबंध पूरे किए गए थे। इनके कार्यों से प्रसिद्ध तेलुगु फिल्म अन्नामय्या के संगीत लोकाचार को भी आकार मिला, जिससे लोग प्रभावित हुए और अन्नामाचार्य परंपरा से जुड़े।

5. श्री प्रसाद को कई पुरस्कार और सम्मान मिले, जिनमें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (2020) भी शामिल है, जो कलाकारों के लिये देश का सर्वोच्च सम्मान है। इन्हें तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम, श्री कांची कामकोटि पीठम और श्री अहोभिला मठ सहित कई अन्य प्रतिष्ठित सांस्कृतिक संस्थानों द्वारा अस्थाना विद्वान उपाधियों से सम्मानित किया गया।

6. श्री प्रसाद का 9 मार्च, 2025 को निधन हो गया।

PROF. (DR.) RAJENDRA PRASAD

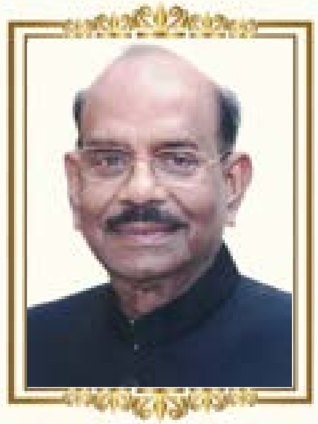

Prof. (Dr.) Rajendra Prasad is a nationally acclaimed Chest physician possessing 50 years of illustrious teaching, research and administrative experience with proven excellence in quality patient care.

2. Born on 17th February, 1950 in a remote village of Basti district, Uttar Pradesh. Prof. (Dr.) Prasad received medical education from K. G. Medical College, Lucknow. He is Emeritus Professor, National Academy of Medical Sciences (India), former Director of Vallabhbhai Patel Chest Institute, University of Delhi, former Head of the Department of Pulmonary Medicine, King George's Medical University, Lucknow, and former Director of U.P. Rural Institute of Medical Sciences and Research, Saifai, is currently working as Director of Medical Education & Professor of Respiratory Medicine at Era's Lucknow Medical College & Hospital, Era University, Lucknow. He has worked to create awareness against pulmonary diseases, particularly tuberculosis, since 1976. He is a global authority in the field of tuberculosis. He took a keen interest in the National Tuberculosis Elimination Programme (NTEP) from its inception and was instrumental in establishing the first DOTS Center to run in a medical college campus in India, at K.G.'s Medical College, Lucknow. This model was later scaled across nearly 700 medical colleges nationwide. He is rated very high among the advocates of the National Tuberculosis Elimination Programme of India.

3. Apart from being a clinician par excellence, Prof. (Dr.) Prasad is also a very popular medical teacher in Pulmonary Medicine. Within 14 years of heading the department at KG Medical University, he successfully transformed the Department of Tuberculosis into a well-recognized Department of Pulmonary Medicine by introducing and developing more than half a dozen specialist services, including Video Bronchoscopy, Medical Thoracoscopy, Thoracic Oncology Unit, Air Pollution-related disease diagnostic center, and Sleep Lab, the first of its kind in the state of Uttar Pradesh. He is popularly known as the "Father of Pulmonary Medicine" in India.

4. Prof. (Dr.) Prasad was the first in India to establish the association of bidi smoking and the use of biomass fuel smoke with chronic obstructive pulmonary disease, tuberculosis, and lung cancer, advocating for public health reforms based on these findings. He has worked on 35 research projects and supervised 185 MD, MS, DM, Mch, and PhD theses. His research contributions regarding tuberculosis, multidrug-resistant tuberculosis, smoking, especially bidi smoking, and biomass fuel are well known. He has published 325 papers in international and national medical journals and authored 12 books, including 4 books on tuberculosis, an Atlas on Fiberoptic Bronchoscopy, and a Manual of Chest X-Ray, based exclusively on Indian patients.

5. Prof. (Dr.) Prasad has the unique distinction of being President of all major scientific bodies in the field of Pulmonary' Medicine, including the Tuberculosis Association of India. He has been International Governor of the American College of Chest Physicians, USA, and was elected Fellow of the National Academy of Medical Sciences, India, the American College of Chest Physicians, USA, and the Royal College of Physicians, Glasgow and London. He participated in more than 350 public awareness lectures, camps and rallies to apprise people about various aspects of tuberculosis and common respiratory' diseases in the state of Uttar Pradesh that has ultimately contributed to achieving the goals of “TB Mukt Bharat.”

6. Prof. (Dr.) Prasad has been a recipient of more than 80 awards, including the Lifetime Achievement Award of the National College of Chest Physicians, India, the Indian Chest Society, the Tuberculosis Association of India, the Thoracic Endoscopy Society of India, the Indian Association of Bronchology, and the Indian College of Allergy, Asthma and Applied Immunology, the Vigyan Gaurav Award of the Council of Science and Technology, Government of Uttar Pradesh, the Dr. RV Rajam Academic Oration Award of the National Academy of Medical Sciences (India), and the Dr. B.C. Roy National Award for developing and popularizing Pulmonary Medicine in India.

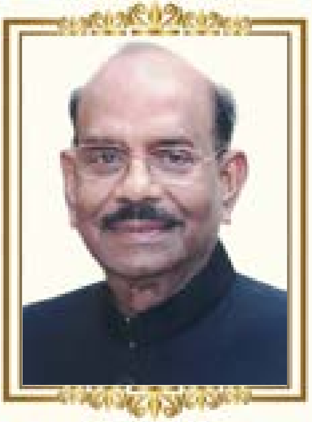

प्रो. (डॉ.) राजेंद्र प्रसाद

प्रो. (डॉ.) राजेंद्र प्रसाद एक राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित चेस्ट फिजिशियन हैं। जिनकों रोगी देखभाल की प्रामाणिक उत्कृष्टता के साथ 50 वर्षों का शानदार शिक्षण, अनुसंधान और प्रशासनिक अनुभव है।

2. 17 फरवरी, 1950 को उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के एक सुदूर गांव में जन्मे, प्रो. (डॉ.) प्रसाद ने के. जी. मेडिकल कॉलेज, लखनऊ से चिकित्सा शिक्षा प्राप्त की। वह राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत) के अवकाशप्राप्त प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय के वल्लभभाई पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट के पूर्व निदेशक, किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी, लखनऊ के पल्मोनरी मेडिसिन विभाग के पूर्व प्रमुख और उत्तर प्रदेश ग्रामीण आयुर्विज्ञान और अनुसंधान संस्थान, सैफई के पूर्व निदेशक हैं, और वर्तमान में एराज़ लखनऊ मेडिकल कॉलेज और अस्पताल, एरा विश्वविद्यालय, लखनऊ में चिकित्सा शिक्षा के निदेशक और श्वसन चिकित्सा के प्रोफेसर के रूप में काम कर रहे हैं। उन्होंने वर्ष 1976 से श्वसन संबंधी रोगों, विशेष रूप से तपेदिक के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए काम किया है। वह तपेदिक के क्षेत्र में एक वैश्विक विशेषज्ञ हैं। उन्होंने राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम (एनटीईपी) की स्थापना के समय से ही इसमें गहरी रुचि ली और केजी मेडिकल कॉलेज, लखनऊ में भारत में एक मेडिकल कॉलेज परिसर में चलने वाले पहले डॉट्स (डीओटीएस) केंद्र की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस मॉडल को बाद में देश भर के लगभग 700 मेडिकल कॉलेजों में बढ़ाया गया। उन्हें भारत के राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम का एक दृढ़ समर्थकों में बहुत उच्च श्रेणी में रखा जाता है ।

3. एक उत्कृष्ट चिकित्सक होने के अलावा, प्रो. (डॉ.) प्रसाद पल्मोनरी मेडिसिन में एक बहुत लोकप्रिय चिकित्सा शिक्षक भी हैं। केजी चिकित्सा विश्वविद्यालय में विभाग का नेतृत्व करने के 14 वर्षों के भीतर, उन्होंने वीडियो ब्रोंकोस्कोपी, मेडिकल थोरैकोस्कोपी, थोरैसिक ऑन्कोलॉजी यूनिट, वायु प्रदूषण से संबंधित रोग निदान केंद्र और स्लीप लैब सहित आधा दर्जन से अधिक विशेषज्ञ सेवाएं शुरू और विकसित करके तपेदिक विभाग को पल्मोनरी मेडिसिन के एक प्रसिद्ध विभाग में सफलतापूर्वक बदल दिया, जो उत्तर प्रदेश राज्य में अपनी तरह का पहला विभाग है। उन्हें भारत में "पल्मोनरी मेडिसिन के जनक" के रूप में जाना जाता है।

4. प्रो. (डॉ.) प्रसाद भारत में पहले व्यक्ति थे जिन्होंने बीड़ी धूम्रपान और बायोमास ईंधन के धुएं के उपयोग को क्रोनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी रोग, तपेदिक और फेफड़ों के कैंसर के साथ जोड़ा, और इन निष्कर्षों के आधार पर सार्वजनिक स्वास्थ्य सुधारों की वकालत की। उन्होंने 35 शोध परियोजनाओं पर काम किया है और 185 एमडी, एमएस, डीएम, एमसीएच और पीएचडी थीसिस की देखरेख की है। तपेदिक, मल्टीड्रग–प्रतिरोधी तपेदिक, धूम्रपान, विशेष रूप से बीड़ी धूम्रपान और बायोमास ईंधन के बारे में उनके शोध योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय चिकित्सा पत्रिकाओं में 325 पत्र प्रकाशित किए हैं और 12 पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें तपेदिक पर 4 पुस्तकें, फाइबरऑप्टिक ब्रोंकोस्कोपी पर एक एटलस और चेस्ट एक्स–रे का एक मैनुअल शामिल है, जो विशेष रूप से भारतीय रोगियों पर आधारित है।

5. प्रो. (डॉ.) प्रसाद को भारतीय क्षय रोग संघ सहित पल्मोनरी मेडिसिन के क्षेत्र में सभी प्रमुख वैज्ञानिक निकायों का अध्यक्ष होने का अनूठा गौरव प्राप्त है। वह अमेरिकन कॉलेज ऑफ चेस्ट फिजिशियन, यूएसए के अंतरराष्ट्रीय गवर्नर रहे हैं, और राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी, भारत, अमेरिकन कॉलेज ऑफ चेस्ट फिजिशियन, यूएसए और रॉयल कॉलेज ऑफ फिजिशियन, ग्लासगो और लंदन के फेलो चुने गए थे। उन्होंने उत्तर प्रदेश राज्य में तपेदिक और सामान्य श्वसन रोगों के विभिन्न पहलुओं के बारे में लोगों को अवगत कराने के लिए 350 से अधिक जन जागरूकता व्याख्यानों, शिविरों और रैलियों में भाग लिया, जिससे अंततः "टीबी मुक्त भारत" के लक्ष्यों को प्राप्त किया गया है।

6. प्रो. (डॉ.) प्रसाद 80 से अधिक पुरस्कारों के प्राप्तकर्ता रहे हैं, जिसमें नेशनल कॉलेज ऑफ चेस्ट फिजिशियन, इंडिया, इंडियन चेस्ट सोसाइटी, ट्यूबरकुलोसिस एसोसिएशन ऑफ इंडिया, थोरैसिक एंडोस्कोपी सोसाइटी ऑफ इंडिया, इंडियन एसोसिएशन ऑफ ब्रोंकोलॉजी, और इंडियन कॉलेज ऑफ एलर्जी, अस्थमा एंड एप्लाइड इम्यूनोलॉजी का लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद का विज्ञान गौरव पुरस्कार, राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत) का डॉ. आरवी राजम एकेडमिक ओरेशन पुरस्कार तथा भारत में पल्मोनरी मेडिसिन को विकसित करने और लोकप्रिय बनाने के लिए डॉ. बी.सी. रॉय राष्ट्रीय पुरस्कार शामिल हैं।

DR. GUDURU VENKAT RAO

Dr. Guduru Venkat Rao is one of India's foremost Surgical Gastroenterologists and the Director of AIG Hospitals, Hyderabad, a globally recognized institute dedicated to excellence in Gastroenterology, advanced surgery, research and academics. He is widely recognized for pioneering advancements in minimally invasive gastrointestinal surgery and therapeutic endoscopy, significantly contributing to strengthening India's global leadership in surgical sciences.

2. Born on 15th June, 1960, Dr. Rao received his medical and surgical training in India and specialized in Surgical Gastroenterology during the formative years of the discipline in the country. Over the course of his distinguished career, he has developed extensive expertise in complex gastrointestinal, hepatobiliary, pancreatic and minimally invasive surgical procedures. He currently leads the Departments of Surgical Gastroenterology, Minimally Invasive Surgery and Transplantation Services at AIG Hospitals and heads an advanced surgical training program through which more than 150 surgeons have been mentored in modern gastrointestinal surgery. He has organized several national and international conferences, live operative workshops and master classes and has delivered numerous named orations while serving as faculty at major global scientific forums.

3. Dr. Rao is among the few surgeons worldwide with vast experience in both advanced endoscopy and laparoscopic gastrointestinal surgery. He has performed more than 12,000 complex gastrointestinal surgeries and nearly 16,000 advanced endoscopic procedures. He co-pioneered the Natural Orifice Transluminal Endoscopic Surgery (NOTES), commonly known as "No Scar Surgery," and is credited with performing the world's first Transoral Endoscopic Appendectomy. As a co-founder of AIG Hospitals, he played a key role in developing an integrated healthcare ecosystem combining patient care, academics, and research, while spearheading innovations including India's Islet Cell Transplantation program and several pioneering hybrid endoscopic surgical procedures now widely adopted in clinical practice.

4. Dr. Rao has held several important leadership positions in national and international professional bodies. He served as President of the Indian Association of Surgical Gastroenterology, where he introduced structured non-technical skills training for surgical postgraduates aimed at strengthening leadership and clinical decision-making abilities. He is also the Past President of the International Hepato-Pancreato-Biliary Association and the Society of Gastrointestinal Endoscopy of India. He has actively promoted indigenous healthcare innovation through collaborations with institutions such as the Indian Institute of Science, Bengaluru, for development of a surgical simulator and IIT Hyderabad for a robotic nurse system designed to strengthen healthcare delivery in rural and underserved regions.

5. Dr. Rao has authored over 224 scientific publications and several textbook chapters and serves on the editorial boards of leading peer-reviewed journals. Through the Asian Healthcare Foundation, he has led large-scale rural outreach programs across Telangana and Andhra Pradesh focusing on early detection, treatment, and awareness of gastrointestinal diseases, benefiting over one lakh people through screening camps and telemedicine initiatives.

6. Dr. Rao is the recipient of several national and international honours including the Dr. B. C. Roy National Award, the Parliament Gold Medal awarded by the Government of India, and The Economic Times Inspiring Doctors of India Award. He has also received honorary fellowships from several international surgical societies including the Royal College of Surgeons of Glasgow in recognition of his outstanding contribution to surgical gastroenterology and healthcare innovation.

डॉ. गुडुरु वेंकट राव

डॉ. गुडुरु वेंकट राव भारत के प्रमुख सर्जिकल गैस्ट्रोएंटेरोलॉजिस्ट में से एक हैं और गैस्ट्रोएंटरोलॉजी, उन्नत सर्जरी, अनुसंधान और शिक्षा में उत्कृष्टता के लिए समर्पित विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त संस्थान एआईजी अस्पताल, हैदराबाद के निदेशक हैं। वे न्यूनतम इनवेसिव गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल सर्जरी और चिकित्सीय एंडोस्कोपी को उन्नत करने में अपनी अग्रणी भूमिका के लिए जाने जाते हैं। उनके इन प्रयासों ने सर्जिकल विज्ञान में भारत के वैश्विक नेतृत्व को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

2. 15 जून, 1960 को जन्मे, डॉ. राव ने भारत में चिकित्सा और सर्जरी प्रशिक्षण प्राप्त किया और देश में सर्जिकल गैस्ट्रोएंटरोलॉजी के प्रारंभिक वर्षों के दौरान इस विषय में विशेषज्ञता हासिल की। अपने विशिष्ट करियर के दौरान, उन्होंने जटिल गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल, हेपेटोबिलियरी, पेनकिएटिक और न्यूनतम इनवेसिव सर्जिकल प्रक्रियाओं में व्यापक विशेषज्ञता अर्जित की । वे वर्तमान में एआईजी अस्पतालों में सर्जिकल गैस्ट्रोएंटरोलॉजी, मिनिमली इनवेसिव सर्जरी और ट्रांसप्लांटेशन सर्विसेज विभागों का नेतृत्व कर रहे हैं और एक उन्नत सर्जिकल प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रमुख हैं जिसके माध्यम से आधुनिक गेस्ट्रोइंटेस्टाइनल सर्जरी में 150 से अधिक सर्जनों को मार्गदर्शन दिया गया। उन्होंने कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, लाइव ऑपरेटिव कार्यशालाओं और मास्टर कक्षाओं का आयोजन किया तथा प्रमुख वैश्विक वैज्ञानिक मंचों पर संकाय के रूप में कार्य करते हुए कई विशिष्ट भाषण दिए ।

3. डॉ. राव दुनिया भर के उन कुछ सर्जनों में से हैं जिनके पास उन्नत एंडोस्कोपी और लैप्रोस्कोपिक गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल सर्जरी दोनों में व्यापक अनुभव है। उन्होंने 12,000 से अधिक जटिल गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल सर्जरी और लगभग 16,000 उन्नत एंडोस्कोपिक जांच प्रक्रियाएं की हैं। उन्होंने नेचुरल ओरिफिस ट्रांसलुमिनल एंडोस्कोपिक सर्जरी (एनओईटी) का सह–अन्वेषण किया, जिसे आमतौर पर ''नो स्कार सर्जरी'' के रूप में जाना जाता है, और उन्हें दुनिया की पहली ट्रांसोरल एंडोस्कोपिक अपेंडिक्टोमी करने का श्रेय दिया गया है। एआईजी हॉस्पिटल्स के सह–संस्थापक के रूप में, उन्होंने रोगी देखभाल, शिक्षाविदों और अनुसंधान को मिलाकर एक एकीकृत स्वास्थ्य सेवा पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके साथ उन्होंने भारत के इस्लेट सेल ट्रांसप्लांटेशन कार्यक्रम और कई अग्रणी हाइब्रिड एंडोस्कोपिक सर्जिकल प्रक्रियाओं सहित नवाचारों का नेतृत्व किया, जिन्हें अब व्यापक रूप से नैदानिक अभ्यास में अपनाया जाता है।

4. डॉ. राव ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पेशेवर निकायों में कई महत्वपूर्ण नेतृत्व पदों पर कार्य किया । उन्होंने इंडियन एसोसिएशन ऑफ सर्जिकल गैस्ट्रोएंटरोलॉजी के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया, जहां उन्होंने नेतृत्व और नैदानिक निर्णयन क्षमताओं को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से सर्जरी के स्नातकोत्तरों के लिए संरचित गैर–तकनीकी कौशल प्रशिक्षण शुरू किया। वे इंटरनेशनल हेपेटो–पैन्क्रियोटो–बिलियरी एसोसिएशन और सोसाइटी ऑफ गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल एंडोस्कोपी ऑफ इंडिया के पूर्व अध्यक्ष भी हैं। उन्होंने सर्जिकल सिम्यूलेटर के विकास के लिए भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु तथा ग्रामीण और असुरक्षित क्षेत्रों में स्वास्थ्य देखभाल सेवा को सुदृढ़ करने के लिए डिजाइन की गई रोबोटिक नर्स प्रणाली के लिए आईआईटी हैदराबाद जैसे संस्थानों के साथ सहयोग के माध्यम से स्वदेशी स्वास्थ्य देखभाल नवाचार को सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया।

5. डॉ. राव ने 224 से अधिक वैज्ञानिक प्रकाशन और कई पाठ्यपुस्तक अध्याय लिखे हैं तथा वे प्रमुख सहकर्मी–समीक्षित पत्रिकाओं के संपादकीय बोर्डों में सेवारत हैं। एशियाई स्वास्थ्य सेवा फाउंडेशन के माध्यम से, उन्होंने तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में बड़े पैमाने पर ग्रामीण आउटरीच कार्यक्रमों का नेतृत्व किया। इन कार्यक्रमों में गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल रोगों का शीघ्र पता लगाने, उपचार और जागरूकता पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिससे स्क्रीनिंग शिविरों और टेलीमेडिसिन पहलों के माध्यम से एक लाख से अधिक लोग लाभान्वित हुए।

6. डॉ. राव को डॉ. बी. सी रॉय राष्ट्रीय पुरस्कार, भारत सरकार द्वारा प्रदत्त संसद स्वर्ण पदक और द इकोनॉमिक टाइम्स इंस्पायरिंग डॉक्टर्स ऑफ इंडिया अवार्ड सहित कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मान हासिल हुए। उन्हें सर्जिकल गैस्ट्रोएंटेरोलॉजी और स्वास्थ्य देखभाल नवाचार में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए ग्लासगो के रॉयल कॉलेज ऑफ सर्जन सहित कई अंतरराष्ट्रीय सर्जिकल सोसाइटियों से मानद फेलोशिप हासिल हुई।

SMT. DEEPIKA REDDY

Smt. Deepika Reddy is an accomplished performer, an ingenious choreographer, a dedicated Guru and a cultural ambassador.

2. Born on 15th September, 1965, Smt. Reddy belongs to three generations of classical dancers and had her debut dance performance in 1976. Groomed by Padma Bhushan awardee Guru Dr. Vempati Chinna Satyam, she is recognized as a leading exponent of the Kuchipudi art form. Her journey in classical dance spans over five decades with performances at prestigious dance festivals across the globe.

3. Through her unwavering dedication, Smt. Reddy has made a profound and enduring contribution to the propagation and advancement of Kuchipudi, preserving its rich legacy for future generations. As the Founder of the Deepanjali Institute of Kuchipudi, she has mentored thousands of disciples, creating a nurturing and disciplined environment that fosters artistic excellence. She has ensured that no deserving student is denied training due to social or economic constraints. Her influence extends beyond the stage as she has actively championed Kuchipudi through lecture-demonstrations, school outreach programs and workshops in India and abroad, introducing classical dance to new and diverse audiences, particularly young learners.

4. Some of the significant international performances of Smt. Reddy are: Festival of India in Berlin; 'Year of India' at Bolshoi Theatre Russia; at Sri Lankan Parliament; 70th Indian Independence celebrations in Turkey; International Bangkok Festival and Jeonju Sori International Festival South Korea; performances at France, Serbia, Singapore, Indonesia, Japan, Dubai and United States. She has also performed at Rashtrapathi Bhavan.

5. Smt. Reddy's choreographic vision has made Kuchipudi more accessible and relevant today by preserving its core grammar while innovating its content and presentation. Her productions convey powerful messages addressing contemporary, social and environmental issues like the concept of Vasudhaiva Kutumbakam - one world, one family, Prakriti Rakshati Rakshitaha - encouraging people to adopt a sustainable lifestyle, showcasing India's beautiful weaves, handicrafts, tourist destinations and temples and a tribute to the frontline healthcare workers fighting the Covid-19 pandemic.

6. Smt. Reddy was the first woman Chairperson of Telangana Sangeet Natak Akademi, Governing Council member, Sangeet Natak Akademi, Delhi; Selection Committee Member Telangana State and erstwhile Andhra Pradesh State Awards, member of the Regional Film Censor Board and Jury Member of Nandi State film awards, selection panel member of Khajuraho Dance Festival. She is a Member of the Board of Studies in the S.N. School of Arts and Communication, University of Hyderabad. She is an A-Top Grade artiste of Doordarshan.

7. Smt. Reddy has received several prestigious awards like Sangeet Natak Akademi award; Telangana Government State Award, Kala Ratna - Andhra Pradesh Government State Award, Nritya Choodamani - Krishna Gana Sabha, Natya Kalasarathy - Sri Parthasarathy Swami Sabha, Vani Kala Sudhakara - Thyaga Brahma Gana Sabha, Akkineni Nageswara Rao Swarna Kankanam, Vempati Chinna Satyam Lifetime Achievement Award, Devdasi National Award and Guru Deba Prasad Award. She was also conferred Honorary Citizenship by Miyoshi, Japan.

श्रीमती दीपिका रेड्डी

श्रीमती दीपिका रेड्डी एक कुशल कलाकार, एक अभिनव कोरियोग्राफर, एक समर्पित गुरु और एक सांस्कृतिक राजदूत हैं।

2. 15 सितंबर, 1965 को जन्मी, श्रीमती रेड्डी शास्त्रीय नर्तकियों की तीन पीढ़ियों से ताल्लुक रखती हैं और उन्होंने वर्ष 1976 में अपना पहला नृत्य प्रदर्शन किया था। पद्म भूषण पुरस्कार से सम्मानित गुरु डॉ. वेम्पति चिन्ना सत्यम द्वारा प्रशिक्षित श्रीमती रेड्डी को, कुचिपुड़ी कला के एक प्रमुख कलाकार के रूप में पहचाना जाता है। शास्त्रीय नृत्य में उनकी यात्रा दुनिया भर के प्रतिष्ठित नृत्य समारोहों में प्रदर्शन के साथ पांच दशकों से अधिक की है।

3. अपने अटूट समर्पण के माध्यम से, श्रीमती रेड्डी ने कुचिपुड़ी के प्रचार और उन्नति में गहरा और स्थायी योगदान दिया है, और आने वाली पीढ़ियों के लिए इसकी समृद्ध विरासत को संरक्षित किया है। कुचिपुड़ी के दीपांजलि संस्थान की संस्थापक के रूप में, उन्होंने हजारों शिष्यों का मार्गदर्शन किया है, एक पोषणकारी और अनुशासित वातावरण बनाया है जो कलात्मक उत्कृष्टता को बढ़ावा देता है। उन्होंने यह सुनिश्चित किया है कि सामाजिक या आर्थिक बाधाओं के कारण कोई भी योग्य छात्र प्रशिक्षण से वंचित न रह जाए। उनका प्रभाव मंच से परे तक फैला हुआ है क्योंकि उन्होंने भारत और विदेशों में व्याख्यान–प्रदर्शनों, स्कूल आउटरीच कार्यक्रमों और कार्यशालाओं के माध्यम से कुचिपुड़ी को सक्रिय रूप से चौंपियन बनाया है, जिससे नए और विविध दर्शकों, विशेष रूप से युवा शिक्षार्थियों को, शास्त्रीय नृत्य से परिचित कराया गया है।

4. श्रीमती रेड्डी के कुछ महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शन हैंः बर्लिन में भारत महोत्सव; रूस के बोल्शोई थिएटर में 'ईयर ऑफ इंडिया'; श्रीलंका की संसद में; तुर्की में 70वां भारतीय स्वतंत्रता समारोह; अंतर्राष्ट्रीय बैंकॉक महोत्सव और जोंजू सोरी अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव दक्षिण कोरिया; फ्रांस, सर्बिया, सिंगापुर, इंडोनेशिया, जापान, दुबई और संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रदर्शन। उन्होंने राष्ट्रपति भवन में भी प्रस्तुति दी है।

5. श्रीमती रेड्डी के कोरियोग्राफिक विजन ने कुचिपुड़ी की विषयवस्तु और प्रस्तुति में नवाचार करते हुए इसके मूल व्याकरण को संरक्षित करके आज इसे और अधिक सुलभ और प्रासंगिक बना दिया है। उनकी प्रस्तुतियों में समकालीन, सामाजिक और पर्यावरणीय मुद्दों को संबोधित करते हुए शक्तिशाली संदेश दिए गए हैं जैसे वसुधैव कुटुम्बकम – एक विश्व, एक परिवार, प्रकृति रक्षा रक्षिता की अवधारणा – लोगों को एक स्थायी जीवन शैली अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना, भारत की खूबसूरत बुनाई, हस्तशिल्प, पर्यटन स्थलों और मंदिरों का प्रदर्शन करना और कोविड–19 महामारी से लड़ने वाले अग्रिम पंक्ति के स्वास्थ्य कर्मियों को श्रद्धांजलि देना।

6. श्रीमती रेड्डी तेलंगाना संगीत नाटक अकादमी की पहली महिला अध्यक्ष, संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली की गवर्निंग काउंसिल की सदस्य , तेलंगाना राज्य और पूर्व आंध्र प्रदेश राज्य पुरस्कार की चयन समिति की सदस्य, क्षेत्रीय फिल्म सेंसर बोर्ड की सदस्य और नंदी राज्य फिल्म पुरस्कारों की जूरी सदस्य, खजुराहो नृत्य महोत्सव के चयन पैनल की सदस्य हैं। वह एसएन स्कूल ऑफ आर्ट्स एंड कम्युनिकेशन, हैदराबाद विश्वविद्यालय में बोर्ड ऑफ स्टडीज की सदस्य हैं। वह दूरदर्शन की ए–टॉप ग्रेड कलाकार हैं।

7. श्रीमती रेड्डी को संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार; तेलंगाना सरकार राज्य पुरस्कार, कला रत्न – आंध्र प्रदेश सरकार राज्य पुरस्कार, नृत्य चूड़ामणि – कृष्ण गण सभा, नाट्य कलासारथी – श्री पार्थसारथी स्वामी सभा, वाणी कला सुधाकर – त्याग ब्रह्म गण सभा, अक्किनेनी नागेश्वर राव स्वर्ण कंकणम, वेम्पति चिन्ना सत्यम लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड, देवदासी राष्ट्रीय पुरस्कार और गुरु देब प्रसाद पुरस्कार जैसे कई प्रतिष्ठित पुरस्कार मिले हैं। उन्हें जापान के मियोशी द्वारा मानद नागरिकता से भी सम्मानित किया गया है।

DR. PALKONDA VIJAY ANAND REDDY

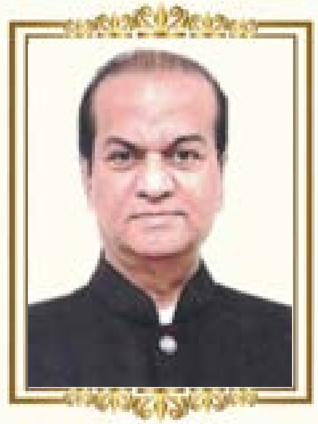

Dr. Palkonda Vijay Anand Reddy is a distinguished oncologist whose journey goes far beyond clinical excellence. As the Director and Senior Consultant Oncologist at Apollo Cancer Centres, Hyderabad, he has combined medical expertise with a profound human touch, transforming lives with compassion, courage and unwavering hope.

2. Born on 20th October, 1959, Dr. Reddy with over 33 years of experience and more than 15,000 plus cancer cases treated since 1992, he stands tall as a pioneer in Indian oncology. His specialization in head and neck cancers, along with ocular oncology, has placed him at the forefront of cancer care, with a success rate that speaks volumes of his clinical prowess. His academic journey includes prestigious fellowships from renowned global institutes such as the Meyerstein Institute of Clinical Oncology (London), New York Hospital, Peter McCallum Cancer Institute (Melbourne), and Wills Eye & Children's Hospitals (Philadelphia). He is also a full member of several leading international oncology organizations including ASCO, ASTRO, ESMO, UICC and AROI.

3. Beyond his clinical work, Dr. Reddy is a passionate educator and academician. As Chairman of the Indian College of Radiation Therapy, he has played a key role in elevating oncology training in India. He has delivered over 921 CME lectures, authored 112 plus publications, and organized numerous international conferences to bring cutting-edge technology to Indian practitioners.

4. Dr. Reddy's career is distinguished not just by academic and clinical excellence, but also by deep empathetic pragmatism. He believes that healing goes beyond cure - it involves care and compassion. This vision led to the establishment of the CURE Foundation in 2003, dedicated to making quality cancer treatment accessible to underprivileged patients. The foundation actively runs awareness drives, cancer screening programs, anti-tobacco campaigns, and supports focused research and academic activities.

5. In addition to his professional work, Dr. Reddy authored the landmark book "I Am a Survivor" (English, Hindi & Telugu), featuring true stories of 108 cancer survivors, the first of its kind globally offering hope and practical guidance to patients, and recently presented to Hon'ble President of India. He is also a key contributor and associated with Sparsh Hospice, extending palliative care to terminally ill patients, helping them live their final days with dignity and comfort.

6. Dr. Reddy's advocacy efforts have had significant public health impact—most notably his campaign against tobacco, which catalyzed major policy action in Andhra Pradesh. His life is a testimony to a seamless blend of profession and purpose, medicine and mission. From a humble rural background to a national icon in cancer care, he stands as a beacon of inspiration - a healer, a teacher, and a true crusader. His life's prescription remains: Care, Cure and Crusade - a trinity of values in the battle against cancer.

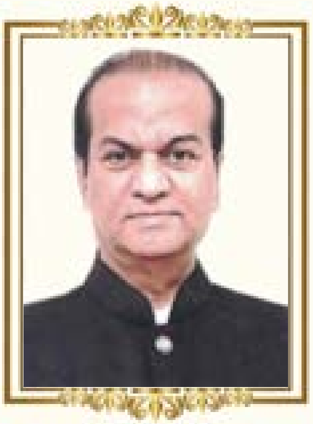

डॉ. पलकोंडा विजय आनंद रेड्डी

डॉ. पलकोंडा विजय आनंद रेड्डी एक प्रतिष्ठित ऑन्कोलॉजिस्ट हैं जिनकी यात्रा क्लिनिकल उत्कृष्टता से कहीं आगे जानी जाती है। हैदराबाद के अपोलो कैंसर सेंटर्स में निदेशक और वरिष्ठ सलाहकार ऑन्कोलॉजिस्ट के रूप में, उन्होंने चिकित्सा विशेषज्ञता को एक गहन मानवीय स्पर्श के साथ जोड़ा है, उन्होंने करुणा, साहस और अटूट आशा के साथ लोगों का जीवन बदल दिया है।

2. 20 अक्टूबर, 1959 को जन्मे डॉ. रेड्डी, 33 वर्षों से अधिक के अनुभव के साथ, उन्होंने वर्ष 1992 से अब तक 15,000 से अधिक कैंसर रोगियों का इलाज किया है; वे भारतीय ऑन्कोलॉजी के क्षेत्र में एक अग्रणी हस्ती के रूप जाने जाते है। सिर और गर्दन के कैंसर में उनको विशेषज्ञता हासिल है, साथ ही नेत्र कैंसर विज्ञान ने उन्हें कैंसर देखभाल में इस क्षेत्र में सबसे आगे रखा है, जिसकी सफलता दर उनकी क्लिनिकल क्षमता को दर्शाती है। उनकी शैक्षणिक यात्रा में मियरस्टीन इंस्टीट्यूट ऑफ क्लिनिकल ऑन्कोलॉजी (लंदन), न्यूयॉर्क अस्पताल, पीटर मैक्कलम कैंसर संस्थान (मेलबर्न), और विल्स आई एंड चिल्ड्रन्स हॉस्पिटल्स (फिलाडेल्फिया) जैसे प्रतिष्ठित वैश्विक संस्थानों से प्रतिष्ठित फेलोशिप शामिल हैं। वह कई प्रमुख अंतरराष्ट्रीय ऑन्कोलॉजी संगठनों के पूर्ण सदस्य भी हैं जिनमें एएससीओ, एस्ट्रो, ईएसएमओ, यूआईसीसी और एआरओआई शामिल हैं।

3. अपने क्लिनिकल कार्य से परे, डॉ. रेड्डी एक उत्साही शिक्षक और शिक्षाविद हैं। इंडियन कॉलेज ऑफ रेडिएशन थेरेपी के अध्यक्ष के रूप में, उन्होंने भारत में ऑन्कोलॉजी प्रशिक्षण को उन्नत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने 921 से अधिक सीएमई व्याख्यान दिए हैं, 112 से अधिक प्रकाशन किए हैं, और भारतीय चिकित्सकों को अत्याधुनिक तकनीक से रूबरू कराने के लिए कई अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन किया है।

4. डॉ. रेड्डी का करियर न केवल शैक्षणिक और क्लिनिकल उत्कृष्टता से प्रतिष्ठित है, बल्कि गहरी सहानुभूतिपूर्ण व्यावहारिकता से भी प्रतिष्ठित है। उनका मानना है कि स्वास्थ्य लाभ के लिए इलाज ही काफी नहीं है बल्कि इसमें देखभाल और करुणा का भी महत्व है। इस दृष्टिकोण के फलस्वरूप वर्ष 2003 में क्यूर फाउंडेशन की स्थापना की गई, जो वंचित रोगियों के लिए गुणवत्तापूर्ण कैंसर उपचार सुलभ बनाने के लिए समर्पित है। फाउंडेशन सक्रिय रूप से जागरूकता अभियान, कैंसर स्क्रीनिंग कार्यक्रम, तंबाकू रोधी अभियान चलाता है, और केंद्रित अनुसंधान और शैक्षणिक गतिविधियों का समर्थन करता है।

5. अपने पेशेवर कार्य के अलावा, डॉ. रेड्डी ने कैंसर को मात देने वाले 108 लोगों की सच्ची कहानियों को दर्शाते हुए एक ऐतिहासिक पुस्तक ''आई एम ए सर्वाइवर'' (अंग्रेजी, हिंदी और तेलुगु) लिखी, जो विश्व स्तर पर अपनी तरह की पहली पुस्तक है जो रोगियों को आशा और व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करती है, और हाल ही में यह पुस्तक भारत के माननीय राष्ट्रपति को प्रस्तुत की गई। वह स्पर्श हॉस्पिस के प्रमुख योगदानकर्ता भी हैं और इससे जुड़े हुए हैं, जो असाध्य रोग पीड़ितों को उपशामक देखभाल प्रदान करते हैं, जिससे उन्हें गरिमा और आराम के साथ अपने अंतिम दिन जीने में मदद मिलती है।

6. डॉ. रेड्डी के सहयोगी प्रयासों का सार्वजनिक स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है—विशेष रूप से तंबाकू के खिलाफ उनका अभियान, जिसने आंध्र प्रदेश में प्रमुख नीतिगत कार्रवाई को उत्प्रेरित किया। उनका जीवन पेशे और उद्देश्य, चिकित्सा और मिशन के एक सहज मिश्रण का प्रमाण है। एक विनम्र ग्रामीण पृष्ठभूमि से कैंसर देखभाल के क्षेत्र में में एक राष्ट्रीय आइकन बनने तक, वह प्रेरणा के प्रतीक – एक हीलर, एक शिक्षक और एक सच्चे धर्मयोद्धा के रूप में खड़े हैं। उनके जीवन का सिद्धान्त हैः देखभाल, इलाज और कैंसर के क्षेत्र में युद्वस्तर पर कार्य करना जो कैंसर के खिलाफ लड़ाई में इन तीन मूल्यों का समुच्चय है।

SHRI HARICHARAN SAIKIA

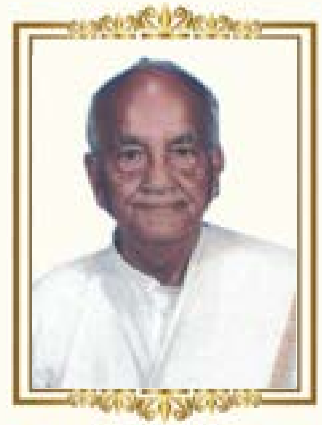

Shri Haricharan Saikia is an eminent cultural figure from Assam, who is widely recognized for his exceptional contributions to Sattriya dance and music, one of the classical art form of India. He is a master of Sattriya dance and music, excelling in both performance and teaching. He dedicated his life to preserving and promoting this classical art form and made it accessible to modern audiences while keeping its traditional essence intact. His work played a significant role in bringing the Sattriya dance and music to national and international audiences, showcasing India's rich cultural heritage.

2. Born on 3rd February, 1930, in Gosaipukhuri village, Lakhimpur district, Assam, Shri Saikia was sent to "old Kamalabari Sattra", Majuli, a historic centre of Vaishnavite culture and classical arts at the age of eight, where he began learning Sattriya dance, music and other aspects of Sattriya culture from esteemed Gurus.

3. Shri Saikia performed Sattriya Dance before India's Independence, notably in welcome ceremonies for British officers visiting Majuli's Sattras. He performed Sattriya dance before India's first Prime Minister, Shri Jawaharalal Nehru and Second President, Dr. Sarvepalli Radhakrishnan. He performed "Bargeet" with Maniram Gayan Moktar at All India Radio in 1948. From 1938-1962, he was at Kamalabari Sattra. During this period, he extensively travelled across Assam and other Indian States, performing Sattriya dance at various occasions and festivals under the banner of Kamalabari Sattra.

4. After leaving Kamalabari Sattra, Shri Saikia trained numerous students in Sattriya dance and music, passing on his knowledge and passion to the next generation. He founded multiple Sattriya Sangeet Vidyalayas across Assam and encouraged women participation in Sattriya dance. He was instrumental in organizing cultural events, workshops and performances to showcase Sattriya dance, music and drama. Even at the age of 97, he's still going strong, spreading awareness about Assam's rich cultural heritage. He serves as the principal of "Bihpuria Sattriya Sangeet Vidyalaya", where he continues to mentor younger generations.

5. In recognition of his artistic mastery and service to Indian classical dance, Shri Saikia was honoured as “State Artist” by Government of Assam in 1991. He was awarded "Bayan" title by Kamalabari Sattra's Sattradhikar Chandrahash Goswami. He was awarded a gold medal for Sattriya dance, in a dance festival organized by "Assam Sangeet Natak Academy" in Nagaon (1954). The then Governor of Assam, in 1957, issued a highly commendable Performance certificate to him. He was conferred “Sangeet Natak Akademi Tagore Puruskar” in 2011. He is the recipient of “Rasheswar Saikia Borbayan Award” in 2018 from Sangeet Sattra, Guwahati and “Gunanidhi Award” in 2025.

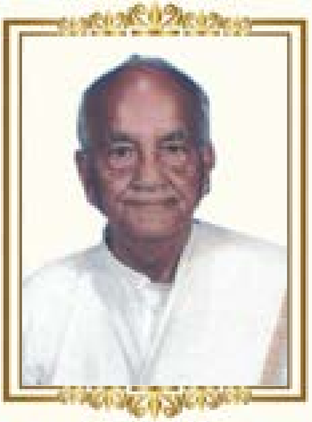

श्री हरिचरण शइकीया

श्री हरिचरण शइकीया संस्कृति के क्षेत्र में असम के एक प्रख्यात व्यक्ति हैं। वह भारत के प्राचीन कला रूप सत्रिया नृत्य और संगीत में अपने विशेष योगदान के लिए सुप्रसिद्ध हैं। वे सत्रिया नृत्य और संगीत में प्रवीण हैं तथा प्रदर्शन कला और उसके शिक्षण दोनों में कुशल हैं। उन्होंने अपना जीवन इस प्राचीन कला रूप के संरक्षण और प्रोत्साहन में लगा दिया और इसकी पारंपरिक पहचान बनाए रखते हुए इसे वर्तमान दर्शकों तक पहुँचाया। उनके कार्य ने भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की जानकारी देते हुए सत्रिया नृत्य और संगीत को राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय दर्शकों तक पहुँचाने में अहम भूमिका निभाई।

2. 3 फरवरी, 1930 को असम के लखीमपुर जिले के गोसाईपुखुरी गाँव में जन्मे, श्री शइकीया को आठ वर्ष की आयु में, वैष्णव संस्कृति और शास्त्रीय कलाओं के ऐतिहासिक केंद्र ''पुराने कमलाबाड़ी सत्र'', माजुली में भेजा गया था। यहां उन्होंने प्रतिष्ठित गुरुजनों से सत्रिया नृत्य, संगीत और सत्रिया संस्कृति के दूसरे आयाम सीखने शुरू किए।

3. श्री शइकीया ने भारत की स्वतंत्रता से पहले, खासकर माजुली सत्र आने वाले ब्रिटिश अधिकारियों के स्वागत समारोहों में सत्रिया नृत्य किया था । उन्होंने भारत के पहले प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू और दूसरे राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के समक्ष सत्रिया नृत्य प्रदर्शन किया। उन्होंने 1948 में आकाशवाणी में मणिराम गायन मोक्तार के साथ मिलकर ''बरगीत'' गाया। 1938–1962 तक वे कमलाबाड़ी सत्र में थे। इस दौरान, उन्होंने असम और दूसरे भारतीय राज्यों की अनेक यात्राएं की और कमलाबाड़ी सत्र के बैनर तले अलग–अलग अवसरों और त्योहारों पर सत्रिया नृत्य किया।

4. कमलाबाड़ी सत्र छोड़ने के बाद में, श्री शइकीया ने कई छात्रों को सत्रिया नृत्य और संगीत में प्रशिक्षित किया तथा अपना ज्ञान और शौक अगली पीढ़ी को दिया। उन्होंने कई सत्रिया संस्थाएँ स्थापित की। उन्होंने असम में अनेक सत्रिया संगीत विद्यालयों की स्थापना की और सत्रिया नृत्य में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा दिया। सत्रिया नृत्य, संगीत और नाटक प्रस्तुति के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम, कार्यशाला और प्रदर्शन आयोजित करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान था। 97 वर्ष की आयु में, वह अभी भी पूरी ऊर्जा के साथ कार्य कर रहे हैं और असम की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के बारे में जागरूकता फैला रहे हैं। वह ''बिहपुरिया सत्रिया नृत्य संगीत विद्यालय'' के प्रधानाचार्य हैं। यहाँ वह युवा पीढ़ी का मार्गदर्शन करते रहते हैं।

5. भारतीय शास्त्रीय नृत्य में उनकी कलागत महारत और सेवा के सम्मान स्वरूप, श्री शइकीया को 1991 में असम सरकार द्वारा "राज कलाकार" के रूप में सम्मानित किया गया था । उन्हें कमलाबाड़ी सत्र के सत्राधिकार चंद्रहास गोस्वामी द्वारा "बयन" उपाधि से सम्मानित किया गया। उन्हें नागांव में ''असम संगीत नाटक अकादमी'' (1954) द्वारा आयोजित एक नृत्य समारोह में सत्रिया डांस के लिए स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। 1957 में असम के तत्कालीन राज्यपाल ने उन्हें अति प्रतिष्ठित प्रदर्शन प्रमाण पत्र प्रदान किया। उन्हें 2011 में "संगीत नाटक अकादमी टैगोर पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया। उन्हें 2018 में संगीत सत्र, गुवाहाटी की ओर से "राशेश्वर सैकिया बोरबयन पुरस्कार" और 2025 में ''गुणनिधि पुरस्कार'' प्रदान किया गया।

PROF. VEMPATY KUTUMBA SASTRY

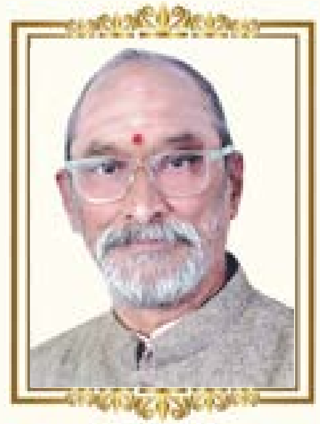

Prof. Vempaty Kutumba Sastry is one of India's foremost Sanskrit scholars, a distinguished academic administrator, and an internationally respected authority in Advaita Vedanta, Darsanas, and Sanskrit poetics. He currently serves as Chancellor of Sri Chandrasekharendra Saraswathi Viswa Mahavidyalaya (SCSVMV), Kanchipuram, and holds the prestigious National Fellowship at the Indian Council of Philosophical Research (ICPR), New Delhi.

2. Born 12th August, 1950 in Gudlavalleru, Andhra Pradesh, Prof. Sastry from an early age displayed exceptional promise in traditional learning. He underwent rigorous training in Rigveda at S.V. Vedapathasala, Tirumala, which laid a strong foundation in Vedic studies. He later pursued higher education in Sanskrit and Darshanas, earning the oriental titles Vidyapravina from Andhra University and Siromani from the University of Madras. He completed his Vidyavaridhi (Ph.D.) at Rashtriya Sanskrit Sansthan, New Delhi, and further enriched his academic profile with an M.A. in Philosophy and a Postgraduate Diploma in Yoga from Sri Venkateswara University. He has also been conferred honorary doctorates (D.Litt) by S-VYASA University, Bangalore, and Kavikulaguru Kalidasa University, Ramtek.

3. Prof. Sastry has held several transformative leadership positions. He served as Vice-Chancellor of Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi and Sree Somnath Sanskrit University, Gujarat, and was the founding Vice-Chancellor of Rashtriya Sanskrit Sansthan (now Central Sanskrit University). His tenure was marked by institution-building, curriculum innovation, and strengthening Sanskrit education at the national level. Internationally, he served two consecutive terms as President of the International Association of Sanskrit Studies, presiding over multiple World Sanskrit Conferences across Europe, Asia, and North America, thereby enhancing India's intellectual presence on the global stage.

4. A prolific scholar, Prof. Sastry has authored and edited fifteen books and more than fifty research papers. His recent monograph, Tatparya: An Inter-Sastraic Study, published by the Bhandarkar Oriental Research Institute, is widely regarded as a significant contribution to classical Indian philosophy and hermeneutics. He has guided numerous doctoral scholars, delivered hundreds of lectures, and organized major national and international academic forums dedicated to Sanskrit studies. Equally noteworthy is his pioneering initiative in Sanskrit pedagogy. The Samskrita-Svadhyayah selflearning material, developed under his leadership, has brought nearly two million people into the fold of Sanskrit learning and speaking. This innovative program has been adopted by universities and organizations across India and has inspired several adaptations, making Sanskrit accessible to diverse sections of society.

5. Prof. Sastry's contributions have been recognized through numerous honours, including the President of India's Certificate of Honour (2014), Mahakavi Kalidasa Sanskrit Sadhana Puraskar, Sanskrit Sahitya Seva Samman, Vedavyas Puraskar, Lokamanya Tilak Sanskrit Puraskar, and several other awards from academic, cultural, and religious institutions. His unique ability to combine deep roots in traditional Vedic learning with modern critical scholarship has won him recognition from Shankaracharyas, Peethadhipatis, Mahamandaleshwaras, and the global Sanskrit fraternity alike. Through his scholarship, leadership, and outreach, he has advanced Sanskrit studies, inspired generations of scholars, and brought India's timeless knowledge systems closer to the world.

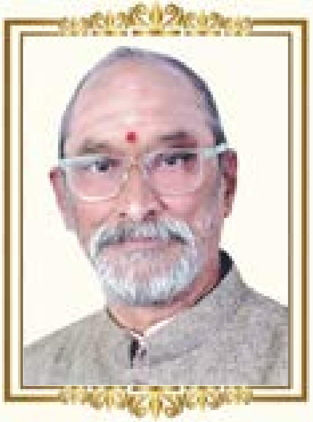

प्रो. वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री

प्रो. वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री भारत के प्रमुख संस्कृत विद्वानों में से एक हैं, एक प्रतिष्ठित शैक्षणिक प्रशासक और अद्वैत वेदांत, दर्शन और संस्कृत काव्यशास्त्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित प्राधिकारी हैं। वह वर्तमान में श्री चंद्रशेखरेन्द्र सरस्वती विश्व महाविद्यालय (एससीएसवीएमवी), कांचीपुरम के चांसलर हैं, और उनके पास भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद (आईसीपीआर), नई दिल्ली की प्रतिष्ठित राष्ट्रीय फैलोशिप हैं।

2. 12 अगस्त, 1950 को आंध्र प्रदेश के गुडलावलेरु में जन्मे, प्रो. शास्त्री ने बचपन से ही पारंपरिक शिक्षा में असाधारण प्रतिभा का प्रदर्शन किया। उन्होंने तिरुमाला के एसवी वेदपाठशाला में ऋग्वेद में कठिन प्रशिक्षण लिया, जिसने वैदिक अध्ययन में एक मजबूत नींव रखी। बाद में उन्होंने संस्कृत और दर्शनशास्त्र में उच्च शिक्षा प्राप्त की, आंध्र विश्वविद्यालय से विद्याप्रवीण और मद्रास विश्वविद्यालय से शिरोमणि की प्राच्य उपाधियां अर्जित कीं। उन्होंने राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली से विद्यावरिधि (पीएचडी) पूरी की और श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में एमए और योग में स्नातकोत्तर डिप्लोमा के साथ अपनी शैक्षणिक प्रोफाइल को और समृद्ध बनाया। उन्हें एस–व्यासा विश्वविद्यालय, बैंगलुरु और कविकुलगुरु कालिदास विश्वविद्यालय, रामटेक द्वारा मानद डॉक्टरेट (डी.लिट) उपाधि भी प्रदान की गई है।

3. प्रो. शास्त्री ने कई परिवर्तनकारी नेतृत्व वाली पदों पर कार्य किया है। उन्होंने संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी और श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, गुजरात के कुलपति के रूप में कार्य किया, और राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (अब केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय) के संस्थापक कुलपति के रूप में कार्य किया। उनका कार्यकाल संस्थागत –निर्माण, पाठ्यक्रम नवाचार और राष्ट्रीय स्तर पर संस्कृत शिक्षा को सुदृढ़ बनाने के लिए जाना जाता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, उन्होंने इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ संस्कृत स्टडीज के अध्यक्ष के रूप में लगातार दो कार्यकाल पूरे किए तथा यूरोप, एशिया और उत्तरी अमेरिका में कई विश्व संस्कृत सम्मेलनों की अध्यक्षता की, जिसने वैश्विक मंच पर भारत की बौद्धिक उपस्थिति को बढ़ाया।

4. एक विपुल विद्वान, प्रो. शास्त्री ने पंद्रह पुस्तकों और पचास से अधिक शोध पत्रों का लेखन और संपादन किया है। भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट द्वारा प्रकाशित उनका हालिया मोनोग्राफ, तात्पर्यः एन इंटर–सास्त्रिक स्टडी, शास्त्रीय भारतीय दर्शन और व्याख्यानशास्त्र में व्यापक रूप से एक महत्वपूर्ण योगदान के रूप में माना जाता है। उन्होंने कई डॉक्टरेट विद्वानों का मार्गदर्शन किया है, सैकड़ों व्याख्यान दिए हैं, और संस्कृत अध्ययन को समर्पित प्रमुख राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक मंचों का आयोजन किया है। समान रूप से उल्लेखनीय संस्कृत शिक्षाशास्त्र में यह उनकी अग्रणी पहल है। उनके नेतृत्व में विकसित संस्कृत–स्वाध्याय स्व–शिक्षण सामग्री ने लगभग बीस लाख लोगों को संस्कृत सीखने और बोलने के लिए प्रेरित किया है। इस अभिनव कार्यक्रम को पूरे भारत में विश्वविद्यालयों और संगठनों द्वारा अपनाया गया है और इसने कई अनुकूलनों को प्रेरित किया है, जिससे संस्कृत समाज के विविध वर्गों के लिए सुलभ हो गई है।

5. प्रो. शास्त्री के योगदान को भारत के राष्ट्रपति के सम्मान पत्र (2014), महाकवि कालिदास संस्कृत साधना पुरस्कार, संस्कृत साहित्य सेवा सम्मान, वेदव्यास पुरस्कार, लोकमान्य तिलक संस्कृत पुरस्कार और शैक्षणिक, सांस्कृतिक और धार्मिक संस्थानों से कई अन्य पुरस्कारों सहित कई सम्मानों के माध्यम से मान्यता दी गई है। पारंपरिक वैदिक शिक्षा में गहन ज्ञान को आधुनिक समालोचनात्मक ज्ञान के साथ संयोजित करने की उनकी अनूठी क्षमता ने उन्हें शंकराचार्यों, पीठधिपति, महामंडलेश्वर और वैश्विक संस्कृत बिरादरी से समान रूप से मान्यता दिलाई है। अपनी विद्वता, नेतृत्व और पहुंच के माध्यम से, उन्होंने संस्कृत अध्ययन को आगे बढ़ाया है, विद्वानों की पीढ़ियों को प्रेरित किया है, और वह भारत की कालातीत ज्ञान प्रणालियों को दुनिया के करीब लेकर लाए हैं।

PROF. SHAFI SHAUQ

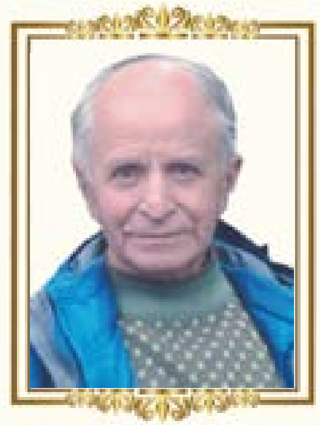

Prof. Shafi Shauq is an Indian creative writer who has authored/edited and translated more than 106 books in Kashmiri, English, Hindi and Urdu.

2. Born on 18th March, 1950, in village Kaprin of district Shopian of Kashmir Valley, Prof. Shauq received his Bachelor in Science from the University of Kashmir in 1970. He later got admission to the Department of English, University of Kashmir, where he did his M.A, M. Phil, and Ph.D. in English. He taught in the University for 33 years and retired as HOD, Dean Faculty of Arts, and Dean Faculty of Oriental Learning. While teaching, he remained actively participating as a member in various national projects like Medieval Indian Literature, Encyclopedia of Indian Literature and Oxford Companion to Indian Theatre. Besides writing poetry and fiction, he has translated numerous works of Indian Literature, and numerous Kashmiri works into English and Hindi. As member of various representative committees of Indian writers, he visited China, Germany (twice), London, and Brazil.

3. Some of the most important works of Prof. Shauq are: Kaeshur lughat, (monolingual dictionary of Kashmiri), Yaad aasmaanan hinz (Remembering the Skies), Zabaan ti adab (language and literature), Kaeshri adabuk tawaariekh (a history of Kashmiri language and literature) and Kaeshur Grammar. His translations include his series of books under the title 'The Best of Kashmiri Literature'. He has also written scripts for numerous TV serials and film.

4. Prof. Shauq is recipient of several State level and National awards and honours that include Best Book Award from Jammu and Kashmir Academy of Art, Culture and Languages (1995), Sahitya Akademy Award for poetry (2006), Sahitya Akademy Award for translation (2007) and Bhasha Samman Award from CIIL Mysore.

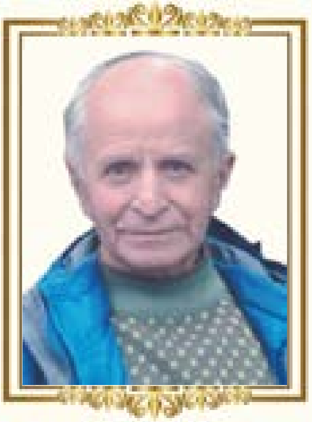

प्रो. शफी शौक़

प्रो. शफी शौक़ एक भारतीय रचनात्मक लेखक हैं, जिन्होंने कश्मीरी, अंग्रेजी, हिंदी और उर्दू में 106 से अधिक पुस्तकों का लेखन/संपादन और अनुवाद किया है।

2. 18 मार्च, 1950 को कश्मीर घाटी के शोपियां जिले के कापरिन गांव में जन्मे, प्रो. शौक़ ने 1970 में कश्मीर विश्वविद्यालय से विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। बाद में उन्हें कश्मीर विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में प्रवेश मिला, जहां से उन्होंने अंग्रेजी में एमए, एमफिल और पीएचडी की। उन्होंने 33 वर्षों तक विश्वविद्यालय में पढ़ाया और विभागाध्यक्ष, डीन फैकल्टी ऑफ आर्ट्स और डीन फैकल्टी ऑफ ओरिएंटल लर्निंग के रूप में सेवानिवृत्त हुए। शिक्षण के दौरान, वह मध्यकालीन भारतीय साहित्य, भारतीय साहित्य के विश्वकोश और भारतीय रंगमंच के लिए ऑक्सफोर्ड कंपेनियन जैसी विभिन्न राष्ट्रीय परियोजनाओं में सदस्य के रूप में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे। कविताएं और कहानियां लिखने के अलावा, उन्होंने भारतीय साहित्य की कई कृतियों और कई कश्मीरी कृतियों का अंग्रेजी और हिंदी में अनुवाद किया है। भारतीय लेखकों की विभिन्न प्रतिनिधि समितियों के सदस्य के रूप में, उन्होंने चीन, जर्मनी (दो बार), लंदन और ब्राजील का दौरा किया।

3. प्रो. शौक़ के कुछ सबसे महत्वपूर्ण कार्य हैं: केशुर लुघाट (कश्मीरी का एकभाषी शब्दकोश), याद आसमानन हिंज (आसमान को याद करना), ज़बान ति अदब (भाषा और साहित्य), कैश्री अदाबुक तवारिख (कश्मीरी भाषा और साहित्य का इतिहास) और केशुर व्याकरण। उनके अनुवादों में 'द बेस्ट ऑफ कश्मीरी लिटरेचर' शीर्षक के तहत उनकी पुस्तकों की श्रृंखला शामिल है। उन्होंने कई टीवी धारावाहिकों और फिल्मों के लिए पटकथा भी लिखी है।

4. प्रो. शौक़ को कई राज्य स्तरीय और राष्ट्रीय पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हैं, जिनमें जम्मू और कश्मीर कला, संस्कृति और भाषा अकादमी (1995) से सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पुरस्कार, कविता के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार (2006), अनुवाद के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार (2007) और सीआईआईएल मैसूर से भाषा सम्मान पुरस्कार शामिल हैं।

SHRI BALDEV SINGH

Shri Baldev Singh is a veteran hockey coach who has rendered distinguished service to Indian hockey for over four decades. He is known for his technical competence, disciplined coaching methodology, and sustained commitment to grassroots development. He has made a significant contribution to the growth of hockey in India, particularly through his long association with Shahbad Markanda, Haryana, which emerged as a prominent centre for hockey training under his guidance.

2. Born on 15th November 1950, Shri Baldev Singh completed his Master of Arts in History from Punjabi University in 1977 and obtained a Diploma in Hockey Coaching from the National Institute of Sports (NIS), Bengaluru, during 1979-80. He began his professional career in hockey with the Namdhari Hockey Team, Bhaini Sahib. In July, 1981, he joined the Haryana Sports Department and was appointed Coach at Shahbad Markanda on 1 January, 1982. He served there until 1986, during which period he established a structured coaching system that laid the foundation for the development of Shahbad as a recognized hockey nursery.

3. In 1986, Shri Baldev Singh served as Coach of the Namdhari Hockey Team at Jiwan Nagar, Sirsa. He returned to Shahbad Markanda in 1993, marking the beginning of a sustained phase of excellence. At the national level, he served as Chief Coach and Selector of the Indian Junior Men's Hockey Team in 1993 and as Assistant Coach of the Indian team that won the Champions Trophy at Madras in 1996. In 2000, he was appointed Chief Coach of the Senior Indian Men's Hockey Team for the Sultan Azlan Shah Cup, Malaysia. From 2001 to 2004, he served as Coach of the Indian Men's Hockey Team, including at the Champions Trophy held at Amstelveen, Netherlands, and guided the team to a Gold Medal at the Asia Cup in 2004.

4. Shri Baldev Singh is widely recognised for developing the Shahbad Markanda hockey nursery into one of India's most productive centres for hockey talent. Under his mentorship, the academy consistently supplied players to national teams. Over the course of his career, he mentored more than 80 international players and 8 Indian team captains. During his service with the Haryana Government, he rose to the position of Deputy Director while continuing active coaching. Although he formally retired in 2008, his services were extended multiple times, and he continued his work with Haryana Sports Department till 2015.

5. After returning to Punjab, Shri Baldev Singh continued to contribute to hockey coaching at Sri Guru Granth Sahib World University, Fatehgarh Sahib (Sirhind), and later served as Coach at Khalsa College, Amritsar, from 2019 to 2023. In 2017, he was appointed as a core member of the Olympic Task Force constituted by the Government of India to prepare a roadmap for the 2020 (Tokyo), 2024 (Paris), and 2028 (Los Angeles) Olympic Games. As one of eight core members, alongside eminent sportspersons, he contributed to the formulation of recommendations aimed at strengthening India's sports performance framework through an athlete-centric, coach-led, and system- driven approach. In recognition of his outstanding contribution to sports coaching, he was conferred the Dronacharya Award in 2009.

श्री बलदेव सिंह

श्री बलदेव सिंह एक अनुभवी हॉकी कोच हैं जिन्होंने चार दशक से अधिक समय तक भारतीय हॉकी को विशिष्ट सेवा प्रदान की है। वह अपनी तकनीकी क्षमता, अनुशासित कोचिंग पद्धति और जमीनी स्तर के विकास के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता के लिए जाने जाते है। उन्होंने भारत में विशेषरूप से शाहबाद मारकंडा, हरियाणा के साथ अपने लंबे जुड़ाव के माध्यम से हॉकी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जो उनके मार्गदर्शन में हॉकी प्रशिक्षण के लिए एक प्रमुख केंद्र के रूप में उभरा।

2. 15 नवंबर, 1950 को जन्मे, श्री बलदेव सिंह ने 1977 में पंजाबी विश्वविद्यालय से इतिहास में मास्टर ऑफ आर्ट्स की पढ़ाई पूरी की और 1979–80 के दौरान नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्पोर्ट्स (एनआईएस), बेंगलुरु से हॉकी कोचिंग में डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्होंने हॉकी में अपने पेशेवर करियर की शुरुआत नामधारी हॉकी टीम, भैनी साहिब के साथ की। जुलाई, 1981 में, वह हरियाणा खेल विभाग में शामिल हो गए और 1 जनवरी, 1982 को शाहबाद मारकंडा में कोच नियुक्त किए गए। उन्होंने 1986 तक वहां सेवा की, इस अवधि के दौरान उन्होंने एक संरचित कोचिंग प्रणाली की स्थापना की, जिसने एक मान्यता प्राप्त हॉकी नर्सरी के रूप में शाहबाद के विकास की नींव रखी।

3. वर्ष 1986 में, श्री बलदेव सिंह ने जीवन नगर, सिरसा में नामधारी हॉकी टीम के कोच के रूप में कार्य किया। वह 1993 में शाहबाद मारकंडा लौट आए, जो उत्कृष्टता के एक निरंतर चरण की शुरुआत का प्रतीक था। राष्ट्रीय स्तर पर, उन्होंने 1993 में भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम के मुख्य कोच और चयनकर्ता के रूप में और 1996 में मद्रास में चैंपियंस ट्रॉफी जीतने वाली भारतीय टीम के सहायक कोच के रूप में कार्य किया। वर्ष 2000 में, उन्हें सुल्तान अजलान शाह कप, मलेशिया के लिए सीनियर भारतीय पुरुष हॉकी टीम का मुख्य कोच नियुक्त किया गया था। वर्ष 2001 से 2004 तक, उन्होंने भारतीय पुरुष हॉकी टीम के कोच के रूप में कार्य किया, जिसमें नीदरलैंड के एम्सटेलवीन में आयोजित चैंपियंस ट्रॉफी भी शामिल थी, और 2004 में एशिया कप में टीम को स्वर्ण पदक दिलाया।

4. श्री बलदेव सिंह को शाहबाद मारकंडा हॉकी नर्सरी को हॉकी प्रतिभाओं के लिए भारत के सबसे अधिक उत्पादक केंद्रों में से एक के रूप में विकसित करने के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है। उनके मार्गदर्शन में, अकादमी ने लगातार राष्ट्रीय टीमों को खिलाड़ियों की आपूर्ति की। अपने करियर के दौरान उन्होंने 80 से अधिक अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों और 8 भारतीय टीम के कप्तानों का मार्गदर्शन किया। हरियाणा सरकार के साथ अपनी सेवा के दौरान, वह सक्रिय कोचिंग जारी रखते हुए उप निदेशक के पद तक पहुंचे। हालाँकि वह औपचारिक रूप से वर्ष 2008 में सेवानिवृत्त हो गए थे, लेकिन उनकी सेवाओं को कई बार बढ़ाया गया और उन्होंने 2015 तक हरियाणा खेल विभाग के साथ अपना काम जारी रखा।

5. पंजाब लौटने के बाद, श्री बलदेव सिंह ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब विश्व विश्वविद्यालय, फतेहगढ़ साहिब (सरहिंद) में हॉकी कोचिंग में योगदान देना जारी रखा, और बाद में वर्ष 2019 से 2023 तक खालसा कॉलेज, अमृतसर में कोच के रूप में कार्य किया। वर्ष 2017 में, उन्हें भारत सरकार द्वारा गठित ओलंपिक टास्क फोर्स के मुख्य सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया था, जो 2020 (टोक्यो), 2024 (पेरिस), और 2028 (लॉस एंजिल्स) ओलंपिक खेलों के लिए एक रोडमैप तैयार करेगा। प्रतिष्ठित खिलाड़ियों के साथ आठ मुख्य सदस्यों में से एक के रूप में, उन्होंने एथलीट–केंद्रित, कोच–नेतृत्व वाले और प्रणाली–संचालित दृष्टिकोण के माध्यम से भारत के खेल प्रदर्शन ढांचे को मजबूत करने के उद्देश्य से सिफारिशें तैयार करने में योगदान दिया। खेल प्रशिक्षण में उनके उत्कृष्ट योगदान के सम्मान स्वरूप में उन्हें वर्ष 2009 में द्रोणाचार्य पुरस्कार प्रदान किया गया था।

SHRI YUMNAM JATRA SINGH (POSTHUMOUS)

Shri Yumnam Jatra Singh was a legendary Manipuri cultural icon and a distinguished exponent of Nata Sankirtana, the traditional Vaishnavite dance and music form of Manipur. He served as a visiting guru at the prestigious Jawaharlal Nehru Manipur Dance Academy (JNMDA).

2 Born on 12th September, 1923, at Tendongyan Awang Leikai, Imphal West, Manipur, Shri Yumnam started learning music at a very early age. Over a career that began as early as 1949, he performed all across India. His life's work, spanning over seven decades, was dedicated to preserving and promoting spiritual heritage, including training generations of younger artists. He held a Diploma in Nat Eshei (1976) and Diploma in Nat Cholom (1980) from JNMDA, demonstrating a deep academic and practical command over both the singing and rhythmic aspects of Manipuri traditions.

3. Shri Yumnam performed extensively in Manipur and beyond. He participated in several festivals organized by Manipur Sahitya Parishad, Manipur State Kala Academy, and Guru Gulapi Nat Sankirtan Academy. He also performed at Kirtan Festival in Tripura, Niti Leela and Nimai Sanyas Festival in West Bengal, and Manipuri Nata Sankirtana show in Delhi in 1960. Internationally, he performed at the Barak Festival in Bangladesh in 1949.

4. Shri Yumnam's contributions to Nata Sankirtana are timeless. His efforts played a significant role in UNESCO's recognition of Sankirtan as an Intangible Cultural Heritage in 2013, and the establishment of Manipur University of Culture's Department of Sankirtan.

5. Shri Yumnam received numerous state and national awards and honours in recognition of his outstanding service and contribution to Nata Sankirtana. He received Sangeet Natak Akademi Amrit Award presented by Sangeet Natak Akademi, Delhi in 2023. He received the honourable Khamen Chatpa (royal dhoti), Sana Khuji (Gold Bangle), and cymbals presented by Maharaj Bodhachandra's wife. He was awarded the title "Nata Bhushan" at the 73rd annual session of Manipuri Sahitya Parishad in 2008. He was honoured with the Manipur State Kala Akademi Award in Nata Sankirtana by Manipur State Kala Akademi in 2013. A special honour was also presented to him in the Diamond Jubilee of Jawaharlal Nehru Manipur Dance Academy in 2015. In recognition of his lifelong contributions, the Cultural Forum Manipur presented him the Lifetime Achievement Award in Nata Eshei in 2016. In 2017, he was bestowed with the title "Nata Ratna" in Sankirtana by Manipur Sahitya Parishad in 2017. He also received the Harinam Maha Mantra Award by International Sankirtana Day Celebration Committee in 2019. He held the title of 'Eshei Hanba' (chief performer) of the Shree Govindajee Naha Pala. He was an approved artist of All India Radio, which helped extend the reach of Nat Eshei beyond state borders.

6. Shri Yumnam passed away on 11th October, 2025.

श्री युमनाम जात्रा सिंह (मरणोपरांत)

श्री युमनाम जात्रा सिंह एक महान मणिपुरी सांस्कृतिक आइकॉन और नट संकीर्तन, जो मणिपुर का पारंपरिक वैष्णव नृत्य और संगीत रूप है, के एक प्रतिष्ठित प्रतिपादक थे। उन्होंने प्रतिष्ठित जवाहरलाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादमी (जेएनएमडीए) में अतिथि गुरु के रूप में कार्य किया।

2. 12 सितंबर, 1923 को, तेंडोंग्यान अवांग लीकाई, इम्फाल पश्चिम, मणिपुर में जन्मे, श्री युमनाम ने बहुत कम उम्र में संगीत सीखना शुरू कर दिया था। वर्ष 1949 में शुरू हुए अपने करियर में, उन्होंने पूरे भारत में प्रदर्शन किया। सात दशकों से अधिक के उनके जीवन के कार्य, युवा कलाकारों की पीढ़ियों को प्रशिक्षित करने सहित, आध्यात्मिक विरासत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए समर्पित थे। उन्होंने जेएनएमडीए से नट एशेई (1976) और नट चोलोम (1980) में डिप्लोमा प्राप्त किया, जो मणिपुरी परंपराओं के गायन और लयबद्ध दोनों पहलुओं पर गहरी शैक्षणिक और व्यावहारिक पकड़ दर्शाता है।

3. श्री युमनाम ने मणिपुर और उसके बाहर भी व्यापक रूप से प्रदर्शन किया। उन्होंने मणिपुर साहित्य परिषद, मणिपुर राज्य कला अकादमी और गुरु गुलापी नट संकीर्तन अकादमी द्वारा आयोजित कई उत्सवों में भाग लिया। उन्होंने त्रिपुरा में कीर्तन महोत्सव, पश्चिम बंगाल में नीति लीला और निमाई संन्यास महोत्सव और 1960 में दिल्ली में मणिपुरी नट संकीर्तन शो में भी प्रदर्शन किया। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उन्होंने 1949 में बांग्लादेश में बराक फेस्टिवल में प्रदर्शन किया।

4. श्री युमनाम का नट संकीर्तन में योगदान कालातीत है। उनके प्रयासों ने 2013 में यूनेस्को द्वारा संकीर्तन को एक अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता देने और मणिपुर विश्वविद्यालय संस्कृति के संकीर्तन विभाग की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

5. श्री युमनाम को नट संकीर्तन में अपनी उत्कृष्ट सेवा और योगदान के लिए कई राज्य और राष्ट्रीय पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए। उन्हें वर्ष 2023 में संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली से संगीत नाटक अकादमी अमृत पुरस्कार मिला। महाराज बोधाचंद्र की पत्नी द्वारा उन्हें माननीय खमेन चटपा (शाही धोती), सना खुजी (सोने की चूड़ी) और झांझ से सम्मानित किया गया। उन्हें वर्ष 2008 में मणिपुरी साहित्य परिषद के 73वें वार्षिक सत्र में "नट भूषण" की उपाधि से सम्मानित किया गया था। उन्हें वर्ष 2013 में मणिपुर राज्य कला अकादमी द्वारा नट संकीर्तन में मणिपुर राज्य कला अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। वर्ष 2015 में जवाहरलाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादमी के हीरक जयंती समारोह में उन्हें एक विशेष सम्मान भी प्रदान किया गया था। उनके आजीवन योगदान को देखते हुए, सांस्कृतिक मंच मणिपुर ने उन्हें 2016 में नट एशेई में लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड प्रदान किया। वर्ष 2017 में, उन्हें मणिपुर साहित्य परिषद द्वारा संकीर्तन में "नट रत्न" की उपाधि से सम्मानित किया गया था। उन्हें 2019 में अंतर्राष्ट्रीय संकीर्तन दिवस समारोह समिति द्वारा हरिनाम महा मंत्र पुरस्कार भी मिला। उन्होंने श्री गोविंदजी नाह पाला के 'एशेई हानबा' (मुख्य कलाकार) की उपाधि धारण की। वह ऑल इंडिया रेडियो के एक अनुमोदित कलाकार थे, जिसने राज्य की सीमाओं से परे नट एशेई की पहुंच का विस्तार करने में मदद की।

6. श्री युमनाम का 11 अक्टूबर, 2025 को निधन हो गया।

DR. ASHOK KUMAR SINGH

Dr. Ashok Kumar Singh is an eminent researcher, educator, and visionary research leader whose pioneering contributions have transformed Basmati rice cultivation in India.

2. Born on 1st July, 1962, Dr. Singh earned his Bachelor's degree in Agriculture and Master's degree in Genetics and Plant Breeding from Banaras Hindu University, followed by a Ph.D. in Genetics from ICAR-Indian Agricultural Research Institute (IARI), New Delhi. He joined the Agricultural Research Service in 1994 as a Scientist in the Division of Genetics at ICAR-IARI and has led the Basmati breeding programme since 2008.

3. Dr. Singh has been associated with the development of 27 rice varieties including 11 Basmati rice varieties as the lead breeder. These climate-resilient, short-duration, high- yielding varieties, possessing resistance to major diseases such as bacterial blight and blast, have gained widespread acceptance among farmers, industry stakeholders, and consumers alike. Currently, the varieties developed under his leadership occupy nearly 2 million hectares more than 90% of the total Basmati area in India—and contribute to 50,312 crores of foreign exchange annually (2024-25). Short-duration Basmati rice varieties (Pusa Basmati 1509, Pusa Basmati 1692, and Pusa Basmati 1847) developed by He enabled farmers to increase cropping intensity and diversify cropping system for enhanced income. The development of eight disease- resistant Basmati varieties by him lowered cost of cultivation and minimized pesticide residues, thereby reinforcing India's competitiveness in international Basmati trade. He also spearheaded the development of herbicide-tolerant Basmati varieties, including Pusa Basmati 1985 and Pusa Basmati 1979, suitable for direct- seeded rice cultivation. These innovations save up to 30% irrigation water, lowered production costs by Rs. 5000/acre and reduced greenhouse gas emissions by 30 % while promoting a sustainable, low-carbon Basmati production system.

4. Dr. Singh has guided 34 Ph.D. and five M.Sc. Students making substantial contributions to human resource development and mentoring numerous young professionals who now serve as scientists, educators, administrators, and entrepreneurs in India and abroad. As Director of IARI, he strengthened the institute's stature as a premier global institution. During his tenure, IARI received the Sardar Patel Outstanding Award and secured the top rank in the Agriculture and Allied Sector under the National Institutional Ranking Framework (NIRF-2024). An accomplished scholar, he has authored over 200 research papers in reputed journals, with an h-index of 41 and more than 6,300 citations. He is a fellow of leading scientific academies of India including INSA, NASI and NAAS.

5. Dr. Singh has been bestowed with several prestigious national awards like, Rafi Ahmad Kidwai Award, C. Subramaniam Award, Nanaji Deshmukh Team Award, B.P. Pal Award, Borlaug Award, Om Prakash Bhasin Award and VASVIK Award etc., recognizing his outstanding contributions to agricultural research and education.

डॉ. अशोक कुमार सिंह

डॉ. अशोक कुमार सिंह एक प्रतिष्ठित शोधकर्ता, शिक्षक और दूरदर्शी अनुसंधान अग्रणी हैं जिनके विशिष्ट योगदान ने भारत में बासमती चावल की खेती का कायाकल्प कर दिया है।

2. 1 जुलाई, 1962 को जन्मे, डॉ. सिंह ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से कृषि में स्नातक और आनुवंशिकी और पादप प्रजनन में स्नातकोत्तर डिग्री हासिल की, इसके बाद उन्होंने आईसीएआर–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई), नई दिल्ली से आनुवंशिकी में पीएचडी की। वह 1994 में आईसीएआर–आईएआरआई के आनुवंशिकी प्रभाग में वैज्ञानिक के रूप में कृषि अनुसंधान सेवा में शामिल हुए और 2008 से बासमती प्रजनन कार्यक्रम का नेतृत्व कर रहे हैं।

3. डॉ. सिंह प्रमुख प्रजनक के रूप में बासमती चावल की 11 किस्मों सहित 27 चावल किस्मों के विकास से जुड़े रहे हैं। ये जलवायु–अनुकूल, कम अवधि की, उच्च उपज वाली किस्में, जो बैक्टीरियल ब्लाइट और ब्लास्ट जैसे प्रमुख रोगों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता रखती हैं, ने किसानों, उद्योग हितधारकों और उपभोक्ताओं के बीच व्यापक स्वीकार्यता हासिल की है। वर्तमान में, उनके नेतृत्व में विकसित किस्मों का हिस्सा भारत में कुल बासमती क्षेत्र के 90% से अधिक लगभग 2 मिलियन हेक्टेयर पर है – और सालाना (2024–25) 50,312 करोड़ विदेशी मुद्रा का योगदान करती हैं। उनके द्वारा विकसित अल्पकालिक बासमती चावल की किस्मों (पूसा बासमती 1509, पूसा बासमती 1692 और पूसा बासमती 1847) ने किसानों को फसल सघनता बढ़ाने और बढ़ी हुई आय के लिए फसल प्रणाली में विविधता लाने में सक्षम बनाया। उनके द्वारा आठ रोग प्रतिरोधी बासमती किस्मों के विकास ने खेती की लागत को कम किया और कीटनाशक अवशेषों को कम किया, जिससे अंतरराष्ट्रीय बासमती व्यापार में भारत की स्पर्धात्मकता को बल मिला। उन्होंने सीधे बीज वाली चावल की खेती के लिए उपयुक्त, शाकनाशी–रोधी बासमती किस्मों, जिनमें पूसा बासमती 1985 और पूसा बासमती 1979 शामिल हैं, के विकास का भी नेतृत्व किया। इन नवाचारों से सिंचाई के पानी की बचत 30% तक हो जाती है, उत्पादन लागत में 5000 प्रति एकड़ की कमी आती है और ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन में 30% की कमी आती है, साथ ही टिकाऊ, कम कार्बन बासमती उत्पादन प्रणाली को बढ़ावा मिलता है।

4. डॉ. सिंह ने 34 पीएच.डी और पांच एम.एससी. छात्रों का मार्गदर्शन किया है, जिन्होंने मानव संसाधन विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और कई युवा पेशेवरों को मार्गदर्शन दिया है जो अब भारत और विदेशों में वैज्ञानिक, शिक्षक, प्रशासक और उद्यमी के रूप में काम कर रहे हैं। आईएआरआई के निदेशक के रूप में उन्होंने संस्थान की प्रतिष्ठा को एक प्रमुख वैश्विक संस्थान के रूप में मजबूत किया। उनके कार्यकाल के दौरान, आईएआरआई को सरदार पटेल उत्कृष्ट पुरस्कार मिला और राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (एनआईआरएफ–2024) के तहत कृषि और संबद्ध क्षेत्र में शीर्ष रैंक हासिल की। एक कुशल विद्वान, के रूप में उन्होंने प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में 200 से अधिक शोध पत्र लिखे हैं, जिनका एच–इंडेक्स 41 है और उनके पास 6,300 से अधिक साइटेशन हैं। वह इन्सा, एन ए एस आई और एन ए ए एस सहित भारत की प्रमुख वैज्ञानिक अकादमियों के फेलो हैं।

5. डॉ. सिंह को कृषि अनुसंधान और शिक्षा में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए रफी अहमद किदवई पुरस्कार, सी. सुब्रमण्यम पुरस्कार, नानाजी देशमुख टीम पुरस्कार, बी.पी. पाल पुरस्कार, बोरलॉग पुरस्कार, ओम प्रकाश भसीन पुरस्कार और वासविक पुरस्कार आदि जैसे कई प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

SMT. SIVASANKARI

Smt. Sivasankari is a distinguished Indian writer renowned for her profound awareness of social issues, exceptional sensitivity to human suffering, and unwavering commitment to stimulating thoughtful reflection among readers. Over five decades of sustained literary contribution, she has emerged as a powerful voice of social conscience and occupies a prominent place among the most respected and influential writers of her generation.

2. Born on 14th October 1942, Smt. Sivasankari received her school and collegiate education in Chennai. She completed her Bachelor of Science degree as a University rank holder, reflecting her early academic excellence.

3. A truly multifaceted personality, Smt. Sivasankari has made an enduring contribution to contemporary literature through an extensive and varied body of work. She is the author of more than 30 novels, approximately 40 collections of short novels, over 100 short stories, 16 travelogues, three biographies, and a two-volume memoir chronicling her own life. Her writings are noted for their depth of research, social relevance, and humanistic perspective. Her magnum opus, "Knit India Through Literature,' stands as a landmark achievement in Indian literary history. The project involved extensive sourcing, research, and translation of literary works from 18 Indian languages recognised under the Eighth Schedule of the Constitution of India. Completed single-handedly over a period of 16 years, this pioneering endeavour is widely acclaimed as the first of its kind. Conceived as a form of literary tapas (penance), the project aims to introduce Indians to one another through literature and culture, thereby fostering national integration and mutual understanding.

4. Smt. Sivasankari was selected as "Woman of the Year 2000" by the International Women's Association in recognition of her outstanding literary and cultural contributions. In 1997, the Golden Jubilee year of Indian Independence, she was honoured by Femina magazine as one of the "50 Women Who Have Influenced the Evolution of Independent India." She was also one of the four writers whose works were recorded in her own voice for the Archives of the U.S. Library of Congress during its bicentennial celebrations in August, 2000. Her numerous awards include the Bharathiya Basha Parishad Award, Premchand Rashtriya Sahitya Sanman, Vision of Indian Literature.

श्रीमती शिवशंकरी

श्रीमती शिवशंकरी एक प्रतिष्ठित भारतीय लेखिका हैं, जो सामाजिक मुद्दों की गहरी समझ, मानवीय पीड़ा के प्रति असाधारण संवेदनशीलता और पाठकों में गहन चिंतन को प्रेरित करने की अटूट प्रतिबद्धता के लिए जानी जाती हैं। पांच दशकों से अधिक के निरंतर साहित्यिक योगदान के माध्यम से, वे सामाजिक चेतना की एक सशक्त आवाज बनकर उभरी हैं और अपनी पीढ़ी के सबसे सम्मानित और प्रभावशाली लेखकों में एक प्रमुख स्थान रखती हैं।

2. 14 अक्टूबर, 1942 को जन्मी, श्रीमती शिवशंकरी ने चेन्नई में अपनी स्कूली और कॉलेज की शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने विश्वविद्यालय में उच्च रैंक प्राप्त करते हुए विज्ञान में स्नातक की उपाधि पूरी की, जो उनकी प्रारंभिक शैक्षणिक उत्कृष्टता को दर्शाती है।

3. श्रीमती शिवशंकरी बहुमुखी प्रतिभा की धनी हैं, जिन्होंने अपने व्यापक और विविध कार्यों के माध्यम से समकालीन साहित्य में अमिट योगदान दिया है। वह 30 से अधिक उपन्यासों, लगभग 40 लघु उपन्यासों के संग्रह, 100 से अधिक लघु कथाओं, 16 यात्रा वृत्तांतों, तीन जीवनियों और अपने जीवन का वर्णन करने वाले दो खंडों के संस्मरण की लेखिका हैं। उनके लेखन को गहन शोध, सामाजिक प्रासंगिकता और मानवतावादी दृष्टिकोण के लिए जाना जाता है। उनकी सर्वोत्कृष्ट कृति, "साहित्य के माध्यम से भारत को जोड़ना", भारतीय साहित्यिक इतिहास में एक मील का पत्थर है। इस कार्य में भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची के अंतर्गत मान्यता प्राप्त 18 भारतीय भाषाओं की साहित्यिक कृतियों का व्यापक शोध, संग्रह और अनुवाद शामिल है। 16 वर्षों की अवधि में अकेले ही उनके द्वारा पूर्ण की गई यह अग्रणी प्रयास अपनी तरह के पहले प्रोजेक्ट के रूप में व्यापक रूप से प्रशंसित है। साहित्यिक तपस्या के रूप में परिकल्पित इस प्रोजेक्ट का उद्देश्य साहित्य और संस्कृति के माध्यम से भारतीयों को एक–दूसरे से परिचित कराना है, जिससे राष्ट्रीय एकता और आपसी समझ को बढ़ावा मिलता है।

4. श्रीमती शिवशंकरी को उनके उत्कृष्ट साहित्यिक और सांस्कृतिक योगदान के सम्मान में अंतर्राष्ट्रीय महिला संघ द्वारा "वूमेन आफ द् इयर 2000" के रूप में चुना गया। वर्ष 1997 में, भारतीय स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती के अवसर पर, फेमिना पत्रिका ने उन्हें "स्वतंत्र भारत के विकास में प्रभावित करने वाली 50 महिलाओं" में से एक के रूप में सम्मानित किया। वह उन चार लेखकों में से एक हैं जिनके अगस्त, 2000 में अमेरिकी कांग्रेस पुस्तकालय के द्विशताब्दी समारोह के दौरान, कार्यों को उनकी अपनी आवाज़ में अमेरिकी कांग्रेस पुस्तकालय के अभिलेखागार के लिए रिकॉर्ड किया गया। उन्हें कई पुरस्कार मिले हैं, जिनमें भारतीय भाषा परिषद पुरस्कार, प्रेमचंद राष्ट्रीय साहित्य सम्मान और विजन ऑफ इंडियन लिटरेचर शामिल हैं।

DR. R. SREEDHER

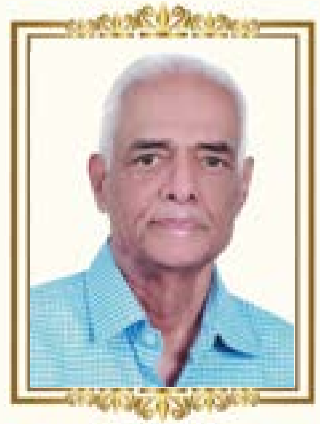

Dr. R. Sreedher, a veteran radio broadcaster with experience of more than five decades, is a person committed to visualising and adopting futuristic technologies in radio and audio podcasts. He is now an Emeritus Professor at Apeejay Stya University and also the President of Media4Community Foundation.

2. Born on 6th June, 1947, Dr. Sreedher received his Bachelor's, Master's degrees and Doctor of Philosophy (Ph.D.) in Chemistry from University of Madras. He joined Aakashvani in 1976 and joined Doordarshan (Television) later, working his way up from a freelancer to Director in both Akashvani and Doordarshan. He was Director of Electronic Media Production Centre (EMPC) of Indira Gandhi National Open University, New Delhi and media research centers at Anna University and IIT, Roorkee. He retired as the Director of the Commonwealth Educational Media Centre for Asia (CEMCA). He has also worked as a consultant to UNESCO, UNICEF, Commonwealth of Learning and other international organizations.

3. Dr. Sreedher is a passionate advocate of educational, interactive and participatory radio to blend edutainment and infotainment to engage audience proven by a program called Telecommunication with people on the move (1983), a live real-time audio programme, in which listeners' questions on science were answered by experts over radio, when mobile phones were not in operation for grass root communication. His early use of satellite technology enabled path-breaking interactive radio programmes like tele-meet (1984) and linked remote regions such as Leh, Lakshadweep and also Antarctica via INSAT-1B. For the scientists working in Antarctica, children thousands of kilometers away sang national poet Subrahmanyam Bharti's song 'odi vilayadu papa" in one voice highlighting National Integration.

4. Dr. Sreedher in association with the National Council for Science and Technology Communication, Department of Science and Technology developed the longest radio science serial for children titled "The Human Evolution" (Manav Ka Vikaas) broadcast in 18 Indian languages simultaneously through 200 radio stations with 1,40,000 school children as registered listeners during the pre-internet era. He also established more than 500 "Rural Radio Science Clubs" to promote science communication at the grass root level and launched "Radio Schools" aimed at providing continuing science education through air waves.

5. Dr. Sreedher has played a central role in launching Gyaan Darshan group of channels, the first 24-hour educational Television Channel and Gyaan Vaani, an educational FM Radio network which revolutionised the Open and Distance Learning (ODL) system in the country. He designed and launched India's first Community Radio station at Anna University in 2004 and instrumental in establishing more than 300 Community Radio stations in India and is now aptly and fondly known as the "Father of Community Radio" in India.

6. Dr. Sreedher launched a radio podcast service called "Anubhav" to showcase the skills and record lifetime experiences of senior citizens to help both young and old and energise their lifestyle, thereby improving their mental and physical health. His other radio podcast service, "Sainik Vaani", is aimed at celebrating Kargil Vijay Diwas, in which talents and real-time experiences of Ex-servicemen are featured. He is also into giving voice to transgender individuals in the name of Ashirwad Radio, and trying to motivate children of 21st century to have a dialogue with their grandparents to understand traditional methods followed by our elders in preserving the nature. He created Radio Vision using World Space Radio in 2002 and is now dreaming of visual radio using 5G or 6G or DRM or DAB technologies to replace news television.

7. Dr. Sreedher has received four Aakashvaani National Award for innovative Radio Programmes and a National Award for Science Popularisation. He was a finalist for World Technology Network Award 2002 in Education. He has received an International Lifetime Achievement Award from Asia Pacific Institute of Broadcasting Development (AIBD) in 2025.

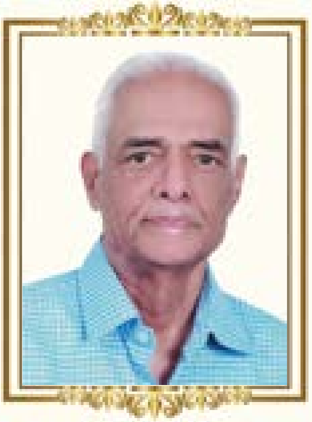

डॉ. आर. श्रीधर

डॉ. आर. श्रीधर एक अनुभवी रेडियो प्रसारक हैं जिन्हें रेडियो प्रसारण के क्षेत्र में पांच दशकों से अधिक का अनुभव है। वह एक ऐसे व्यक्ति हैं जो आकाशवाणी और ऑडियो पॉडकास्ट में भावी प्रौद्योगिकियों को विकसित करने और उन्हें अपनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। वह वर्तमान में एपीजे सत्य विश्वविद्यालय में एमेरिटस प्रोफेसर हैं और मीडिया4कम्युनिटी फाउंडेशन के अध्यक्ष भी हैं।

2. 6 जून, 1947 को जन्मे, डॉ. श्रीधर ने मद्रास विश्वविद्यालय से रसायन विज्ञान में स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएचडी) की उपाधि प्राप्त की। इन्होंने वर्ष 1976 में आकाशवाणी से करियर की शुरुआत की और बाद में वे दूरदर्शन (टेलीविजन) से जुड़े। उन्होंने आकाशवाणी और दूरदर्शन दोनों में फ्रीलांसर से निदेशक के रूप में कार्य किया। वह इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के इलेक्ट्रॉनिक मीडिया प्रोडक्शन सेंटर (ईएमपीसी) तथा अन्ना विश्वविद्यालय एवं आईआईटी, रुड़की में मीडिया अनुसंधान केंद्रों के निदेशक रहे। वह एशिया राष्ट्रमंडल शैक्षिक मीडिया केंद्र (सीईएमसीए) से निदेशक के रूप में सेवानिवृत्त हुए। इन्होंने यूनेस्को, यूनिसेफ, कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों के सलाहकार के रूप में भी कार्य किया है।

3. डॉ. श्रीधर शैक्षिक, संवादात्मक और सहभागी आकाशवाणी के प्रबल समर्थक हैं। इन्होंने शिक्षा और मनोरंजन (एडुटेनमेंट) और सूचना एवं मनोरंजन (इंफोटेनमेंट) के समन्वय से श्रोताओं को जोड़ने का प्रयास किया है। इसका उदाहरण वर्ष 1983 में शुरू किया गया टेलीकम्युनिकेशन विद पीपल ऑन द मूव नामक कार्यक्रम है, जो कि रियल टाइम सीधा प्रसारण वाला ऑडियो कार्यक्रम था। यह वह समय था जब आम लोगों के हाथों में मोबाइल फोन नहीं होता था, ऐसे समय में श्रोताओं द्वारा विज्ञान से जुड़े प्रश्न पूछे जाते थे और विशेषज्ञों द्वारा रेडियो के माध्यम से उनके उत्तर दिए जाते थे। इनके उपग्रह प्रौद्योगिकी के प्रारंभिक उपयोग ने वर्ष 1984 में टेली–मीट जैसे अभूतपूर्व संवाद आधारित कार्यक्रम का मार्ग प्रशस्त किया, जिससे लेह, लक्षद्वीप और अंटार्कटिका जैसे दूरदराज के क्षेत्रों को इनसैट–1बी के जरिए जोड़ा गया। अंटार्कटिका में कार्य कर रहे भारतीय वैज्ञानिकों के लिए, हजारों किलोमीटर दूर बच्चों ने राष्ट्र कवि सुब्रह्मण्यम भारती के गीत 'ओडी विलायाडु पापा' को एक स्वर में गाकर राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया।

4. डॉ. श्रीधर ने राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी संचार परिषद, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के सहयोग से बच्चों के लिए सबसे लम्बे आकाशवाणी विज्ञान धारावाहिक 'मानव का विकास' (द ह्यूमन इवोल्यूशन) का निर्माण किया। इस कार्यक्रम का प्रसारण 18 भारतीय भाषाओं में 200 रेडियो स्टेशनों के माध्यम से किया गया और इंटरनेट युग से पहले 1,40,000 विद्यालयी छात्र इसके पंजीकृत श्रोता थे। इन्होंने जमीनी स्तर पर विज्ञान संचार को बढ़ावा देने के लिए 500 से अधिक ''ग्रामीण रेडियो विज्ञान क्लब'' की स्थापना की और ''रेडियो विद्यालयों'' की शुरुआत की, जिनका लक्ष्य रेडियो तरंगों के माध्यम से निरंतर विज्ञान की शिक्षा प्रदान करना था।

5. डॉ. श्रीधर ने 24 घंटे प्रसारण वाले प्रथम शैक्षिक टेलीविजन चैनल – ज्ञान दर्शन चैनल समूह और शैक्षिक एफएम रेडियो नेटवर्क – ज्ञान वाणी के शुभारंभ में केंद्रीय भूमिका निभाई है, जिसने देश में मुक्त और दूरस्थ शिक्षा (ओडीएल) प्रणाली में क्रांति ला दी है। इन्होंने वर्ष 2004 में अन्ना विश्वविद्यालय में भारत के पहले सामुदायिक रेडियो स्टेशन का डिजाइन तैयार किया और इसका लोकार्पण किया तथा भारत में 300 से अधिक सामुदायिक रेडियो स्टेशनों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अब वह भारत में ''सामुदायिक रेडियो के जनक''के रूप में प्रसिद्ध हैं।

6. डॉ. श्रीधर ने ''अनुभव'' नामक एक रेडियो पॉडकास्ट सेवा शुरू की। इसका उद्देश्य वरिष्ठ नागरिकों के कौशल को दर्शाना तथा जीवन भर के अर्जित अनुभवों को रिकॉर्ड करना है जिससे कि यह युवाओं और बुजुर्गों दोनों के लिए सहायक सिद्ध हो और उनकी जीवनशैली में ऊर्जा का संचार हो, उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार हो। इनकी दूसरी रेडियो पॉडकास्ट सेवा, ''सैनिक वाणी'', का उद्देश्य कारगिल विजय दिवस का जश्न मनाना है, जिसमें पूर्व सैनिकों की प्रतिभा और उनके जीवंत अनुभवों को प्रदर्शित किया जाता है। वह ट्रांसजेंडर लोगों की आवाज बनकर आशीर्वाद रेडियो के नाम से भी कार्यक्रम कर रहे हैं, और वह 21वीं सदी के बच्चों को प्रेरित कर रहे हैं कि वे अपने दादा–दादी से संवाद स्थापित करें ताकि वे प्रकृति के संरक्षण से जुडी उन पारंपरिक विधियों को समझ सकें जिसे हमारे बड़े–बुजुर्गों ने अपनाया था। इन्होंने वर्ष 2002 में वर्ल्ड स्पेस रेडियो का उपयोग करके रेडियो विजन तैयार किया और अब समाचार टेलीविजन की जगह 5G या 6G या DRM या DAB प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके विजुअल रेडियो का सपना देख रहे हैं।

7. डॉ. श्रीधर को अभिनव आकाशवाणी कार्यक्रमों के लिए चार आकाशवाणी राष्ट्रीय पुरस्कार और विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए एक राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है। वह शिक्षा में वर्ल्ड टेक्नोलॉजी नेटवर्क पुरस्कार 2002 के लिए फाइनलिस्ट थे। इन्हें वर्ष 2025 में एशिया पैसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ ब्रॉडकास्टिंग डेवलपमेंट (एआईबीडी) से अंतर्राष्ट्रीय लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड मिला है।

PROF. SHYAM SUNDAR

Prof. Shyam Sundar is a distinguished Professor (Hon) of Medicine at the Institute of Medical Sciences, Banaras Hindu University (BHU), Varanasi. He is an internationally acclaimed clinician-scientist in infectious diseases, particularly visceral leishmaniasis (kala-azar). Over four decades, he has seamlessly combined patient care, teaching, translational research and has established BHU as a globally recognized centre for research on kala-azar, a neglected tropical disease.

2. Born on 30th November 1953, Prof. Sundar obtained MBBS and MD (Medicine) degrees from BHU and subsequently joined the faculty at the Department of Medicine, and remains a BHU faculty. He was born and brought up in Muzaffarpur, Bihar, the heartland of kala-azar, and witnessed the plight of kala-azar patients. He set up a charity field unit - the Kala-azar Medical Research Centre (KAMRC) - in Muzaffarpur in 1993. This charity provides free diagnosis, treatment, food, and travel expenses to this underserved population. KAMRC has now become a model for clinical research, with high impact on the national policies in the diagnosis and treatment of kala-azar globally. He has mentored generations of physicians and researchers who now serve in leading academic institutions in India and abroad.

3. Prof. Sundar played a key role in the clinical evaluation and global adoption of the rK39 rapid (10-minute) diagnostic test with a drop of finger-prick blood, enabling early and inexpensive diagnosis in remote areas. He led landmark clinical trials that established miltefosine as the first effective oral drug for leishmaniasis. The ease of diagnosis and oral treatment were the major factors in the launch of the Kala-azar Elimination Program (KAEP), jointly launched in 2005 in India, Nepal, and Bangladesh.

4. To find a shorter treatment devoid of Prevailing long and toxic therapy, Prof. Sundar demonstrated the excellent efficacy of one-dose liposomal amphotericin B (AmBisome). This landmark study, published in the New England Journal of Medicine *(*NEJM*)* in 2010*,* demonstrated that a single 10mg/kg dose of AmBisome was safer and more effective than the prevailing one-month treatment. WHO recommended this as a first-line treatment. Thus, there was a paradigm shift in the diagnosis and treatment of KA. Subsequently, the US Manufacturer announced free donation of AmBisome to the three countries participating in KAEP, and other high-endemic African countries. Adoption of this single-dose AmBisome treatment helped India, Nepal and Bangladesh to achieve the target of KAEP between year 2023-24.

5. Prof. Sundar is ranked at the top in the world in the field of leishmaniases and Kala-azar from the year 2013 to date. Over the span of his career, he has published extensively in academic journals, including NEJM, The Lancet, etc. He has the unique distinction of being the only Indian publishing chapters in the World's most renowned medicine textbooks, Harrison's Principles of Internal Medicine and Davidson's Principles and Practice of Medicine.

6. Prof. Sundar has been a recipient of several prestigious accolades. He has been the President of the Association of Physicians of India in 2022, and that of the Clinical Infectious Diseases Society of India in 2015-17. He is an elected Fellow of all three National Science Academies of India. He was honoured as Distinguished International Fellow-2017 and Clara Southmayd Ludlow Medal-2025 by the American Society of Tropical Medicine & Hygiene. The President of India honoured him with the Visitors' Award-2016. He received ICMR's Ambedkar Award, Kamla Memon Award, and PN Raju Award. Ranbaxy Research Foundation Award 2002, and Anne Maurer Cecchini Foundation Award 2010, Switzerland.

प्रो. श्याम सुन्दर

प्रो. श्याम सुन्दर काशी हिंदू विश्वविद्यालय के इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में मेडिसिन के विशिष्ट (मानद) प्रोफेसर हैं। वह संक्रामक रोगों, विशेषकर विसरल लीशमैनियासिस (काला–अज़ार) के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त क्लिनिशियन–वैज्ञानिक हैं। चार दशक से अधिक समय में उन्होंने रोगी देखभाल, शिक्षण और अनुवादात्मक अनुसंधान का सफल समन्वय करते हुए बीएचयू को काला–अज़ार जैसे उपेक्षित उष्णकटिबंधीय रोग के अनुसंधान का वैश्विक केंद्र स्थापित किया है।

2. 30 नवम्बर, 1953 को जन्मे, प्रो. सुन्दर ने बीएचयू से एमबीबीएस और एमडी (मेडिसिन) की डिग्री प्राप्त की और बाद में मेडिसिन विभाग में संकाय सदस्य के रूप में जुड़ गए तथा अब तक वहीं कार्यरत हैं। उनका जन्म और पालन–पोषण बिहार के मुज़फ्फरपुर में हुआ, जो काला–अज़ार का प्रमुख क्षेत्र रहा है, और उन्होंने इस रोग से पीड़ित मरीजों की दुर्दशा को निकट से देखा। उन्होंने 1993 में मुज़फ्फरपुर में "काला–अज़ार मेडिकल रिसर्च सेंटर" नामक एक चैरिटेबल फील्ड यूनिट की स्थापना की। यह संस्था वंचित लोगों को निःशुल्क जांच, उपचार, भोजन और यात्रा व्यय प्रदान करती है। काला–अज़ार मेडिकल रिसर्च सेंटर अब क्लिनिकल अनुसंधान का एक आदर्श केंद्र बन गया है, जिसका काला–अज़ार के निदान और उपचार से संबंधित राष्ट्रीय नीतियों पर वैश्विक स्तर पर प्रभाव पड़ा है। उन्होंने अनेक पीढ़ियों के चिकित्सकों और शोधकर्ताओं का मार्गदर्शन किया है, जो आज भारत और विदेशों के प्रतिष्ठित संस्थानों में कार्यरत हैं।

3. प्रो. सुन्दर ने आरके39रैपिड (10 मिनट) निदान परीक्षण के नैदानिक मूल्यांकन और वैश्विक स्वीकृति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसमें उंगली से रक्त की एक बूंद ली जाती है जिससे दूरदराज़ क्षेत्रों में शीघ्र और सस्ता निदान संभव हो सका। उन्होंने महत्वपूर्ण क्लिनिकल परीक्षणों का नेतृत्व किया, जिनसे मिल्टेफोसिन को लीशमैनियासिस के लिए पहली मुंह से ली जाने वाली प्रभावी दवा के रूप में स्थापित किया गया। आसान निदान और ओरल उपचार काला–अज़ार उन्मूलन कार्यक्रम शुरूआत के प्रमुख कारक बने और इसे वर्ष 2005 में भारत, नेपाल और बांग्लादेश द्वारा संयुक्त रूप से शुरू किया गया।

4. लंबी और विषाक्त उपचार पद्धति के स्थान पर कम अवधि के उपचार की खोज के लिए प्रो. सुन्दर ने लिपोसोमल एम्फोटेरिसिन–बी (एंबीसम) की एकल खुराक की उत्कृष्ट प्रभावशीलता प्रदर्शित की। यह ऐतिहासिक अध्ययन वर्ष 2010 में न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडिसिन में प्रकाशित हुआ, जिसमें यह सिद्ध हुआ कि 10 मि.ग्रा./किग्रा. की एकल खुराक पूर्व प्रचलित एक महीने के उपचार की तुलना में अधिक सुरक्षित और प्रभावी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे प्रथम–पंक्ति उपचार के रूप में अनुशंसित किया। इससे काला–अज़ार के निदान और उपचार में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। इसके बाद अमेरिकी निर्माता ने केएईपी में भाग लेने वाले तीनों देशों तथा अफ्रीका के उच्च–प्रभावित देशों को एंबीसम दान के रूप में देने की घोषणा की। इस एकल–खुराक उपचार को अपनाने से भारत, नेपाल और बांग्लादेश ने वर्ष 2023–24 के बीच केएईपी के लक्ष्य को प्राप्त किया।

5. प्रो. सुन्दर वर्ष 2013 से अब तक लीशमैनियासिस और काला–अज़ार के क्षेत्र में विश्व में शीर्ष स्थान पर रहे हैं। अपने करियर के दौरान उन्होंने द लैंसेट सहित कई प्रतिष्ठित वैज्ञानिक पत्रिकाओं में व्यापक रूप से शोध प्रकाशित किया है। उन्हें यह विशिष्ट गौरव प्राप्त है कि वह एकमात्र भारतीय हैं जिनके विश्व के प्रसिद्ध चिकित्सा ग्रंथों हैरिसनस प्रिंसिपल्स ऑफ इंटरनल मेडिसिन और डेविडसन्स प्रिंसिपल्स एंड प्रैक्टिस ऑफ मेडिसिन में अध्याय प्रकाशित हुए हैं।

6. प्रो. सुन्दर को अनेक प्रतिष्ठित सम्मान प्रदान किए गए हैं। वह वर्ष 2022 में एसोसिएशन ऑफ फिजिसियन्स ऑफ इंडिया के अध्यक्ष रहे तथा वर्ष 2015–17 में क्लीनिकल इन्फेक्शस डिजिसेस सोसाइटी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष रहे। वह भारत की तीनों राष्ट्रीय विज्ञान अकादमियों के निर्वाचित फेलो हैं। उन्हें अमेरिकन सोसाइटी ऑफ ट्रॉपिकल ट्रोपिकल मेडिसिन एंड हाईजीन द्वारा वर्ष 2017 में डिस्टिंगग्विश्ड इंटरनेशनल फेलो और वर्ष 2025 में क्लारा साउथमेड लडलो मेडलसे सम्मानित किया गया। भारत के राष्ट्रपति ने उन्हें वर्ष 2016 में विजिटर्स अवॉर्ड से सम्मानित किया। उन्हें आईसीएम आर का अंबेडकर पुरस्कार, कमला मेनन पुरस्कार और पी.एन. राजू पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। इसके अतिरिक्त उन्हें वर्ष 2002 में रैनबेक्सी रिसर्च फाउंडेशन अवॉर्ड तथा वर्ष 2010 में स्विट्ज़रलैंड का एन्नी माउरेर केशिनी फाउंडेशन अवॉर्ड भी प्रदान किया गया।

DR. S. G. SUSHEELAMMA

Dr. S. G. Susheelamma is a distinguished social worker and Founder-President of Sumangali Seva Ashrama, Bengaluru. For over five decades, she has dedicated her life to the service of abandoned children, distressed women, tribal communities, senior citizens, and the urban poor. Affectionately known as "Amma," she is widely respected for building one of Karnataka's earliest integrated grassroots welfare institutions, providing shelter, education, healthcare, livelihood training, and rehabilitation to marginalized communities. Known for her profound, self-sacrificing compassion, she remains a global symbol of mercy and humanitarian service.

2. Born on 24th May 1939 in Karnataka, Dr. Susheelamma began her career in social service before voluntarily leaving employment to devote herself to social service. In 1975, she established Sumangali Seva Ashrama with the objective of providing holistic care and longterm support to vulnerable sections of society. Starting with limited resources, she built the institution through sustained community participation and personal commitment.

3. Under Dr. Susheelamma's leadership, the Ashrama has established multiple welfare initiatives including Premananda Makkala Kuteera, a residential hostel for orphaned and abandoned girls, Basavananda Higher Primary School, Sumangali Seva Ashrama Girls' High School, and Kanmani Kindergarten providing free education to children from economically weaker families, Sowharda, a short-stay home for women in crisis, Punyakoti Vanaprasthashrama for the care of elderly women, primary health center for urban poor, and a free polyclinic offering primary healthcare and mental health support. Thousands of beneficiaries have received shelter, education, medical care, counseling, and vocational training through these initiatives.

4. Dr. Susheelamma has also implemented extensive rural development and women empowerment programmes across Karnataka, including adult literacy campaigns, formation of self-help groups and Mahila Mandals, vocational and entrepreneurship training, microcredit initiatives, and Panchayat leadership development. She has worked closely with tribal communities such as the Iruligas and kurubas through sustainable agriculture and livelihood projects, and spearheaded the Vrikshamahadasoha environmental movement which has resulted in the plantation of over forty lakh saplings across the State. She has further served on numerous governmental and institutional committees addressing literacy, women's welfare, workplace safety, and community development.

5. Dr. Susheelamma is the recipient of three national and three state honours including the Dr. Babasaheb Ambedkar National Award, National Award for Child Welfare, Dr. Durgabai Deshmukh Award, Basashree Award, Kittur Rani Chennamma Award, Devraj Urs Award, Lakshmi N. Menon Award for Literacy, Nadaprabhu Kempegowda Award, and multiple recognitions for lifetime contribution to social service. She has received Honorable Doctorate Award given by Karnataka State Akka Mahadevi Women's University, Vijayapura.

डॉ. एस. जी. सुशीलम्मा

डॉ. एस. जी. सुशीलम्मा एक प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्ता और सुमंगली सेवा आश्रम, बेंगलुरु की संस्थापक–अध्यक्ष हैं। पांच दशकों से अधिक समय से, इन्होंने अपना जीवन परित्यक्त बच्चों, संकटग्रस्त महिलाओं, जनजातीय समुदायों, वरिष्ठ नागरिकों और शहरी गरीबों की सेवा के लिए समर्पित कर दिया है। प्यार से "अम्मा" के रूप में बुलाई जाने वाली डॉ. सुशीलाम्म का अत्यधिक आदर–सम्मान किया जाता है। इन्होंने कर्नाटक के सबसे पुराने जमीनी स्तर की एकीकृत कल्याणकारी संस्थाओं में से एक संस्था का निर्माण किया था। इस संस्था में हाशिए पर रह रहे लोगों को आश्रय, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, आजीविका प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है और उनके पुनर्वास की व्यवस्था की जाती है। अपनी गहरी और निस्वार्थ सेवा के कारण वह दुनिया भर में दया और मानवता का प्रतीक मानी जाती हैं।

2. 24 मई, 1939 को कर्नाटक में जन्मी, डॉ. सुशीलम्मा ने समाज सेवा के लिए स्वेच्छा से नौकरी भी छोड़ दी ताकि समाज सेवा के लिए समर्पित होकर कार्य कर सकें। वर्ष 1975 में, इन्होंने सुमंगली सेवा आश्रम की स्थापना की, जिसका उद्देश्य समाज के कमजोर वर्गों की समग्र देखरेख और उन्हें दीर्घकालिक सहायता प्रदान करना है। सीमित संसाधनों से शुरुआत करते हुए, इन्होंने सतत सामुदायिक भागीदार और अपनी मेहनत के बल पर इस संस्था का निर्माण किया।

3. डॉ. सुशीलम्मा के नेतृत्व में, आश्रम ने कई कल्याणकारी पहल शुरू की हैं। इनमें प्रेमानंद मक्कल कुटीर, अनाथ और परित्यक्त बालिकाओं के लिए एक आवासीय छात्रावास, बसवानंद उच्चतर प्राथमिक विद्यालय, सुमंगली सेवा आश्रम बालिका उच्च विद्यालय, और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने वाला कनमनी किंडरगार्टन, मुसीबत में फंसी महिलाओं के लिए एक अल्पकालिक आश्रय 'सौहार्द', वृद्ध महिलाओं की देखभाल के लिए पुण्यकोटी वानप्रस्थाश्रम, शहरी गरीबों के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, और प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल और मानसिक स्वास्थ्य सहायता प्रदान करने वाला एक निःशुल्क पॉलीक्लिनिक शामिल है। इन पहलों के माध्यम से हजारों लाभार्थियों को आश्रय, शिक्षा, चिकित्सा देखभाल, परामर्श और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त हुआ है।

4. डॉ. सुशीलम्मा ने कर्नाटक में वयस्क साक्षरता अभियान, स्वयं सहायता समूहों और महिला मंडलों का गठन, व्यावसायिक और उद्यमिता प्रशिक्षण, सूक्ष्म ऋण पहल और पंचायत नेतृत्व विकास सहित व्यापक ग्रामीण विकास और महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम भी शुरू किए हैं। इन्होंने सुस्थिर कृषि और आजीविका परियोजनाओं के माध्यम से इरुलीगा और कुरुबास जैसे आदिवासी समुदायों के साथ मिलकर कार्य किया है, और वृक्षमाहदासोह पर्यावरण अभियान का नेतृत्व किया है जिसके फलस्वरूप राज्य भर में चालीस लाख से अधिक पौधे लगाए गए हैं। इन्होंने साक्षरता, महिला कल्याण, कार्यस्थल सुरक्षा और सामुदायिक विकास से संबंधित कई सरकारी और संस्थागत समितियों में भी कार्य किया है।

5. डॉ. सुशीलम्मा को तीन राष्ट्रीय और तीन राज्य सम्मान प्राप्त हुए हैं जिनमें डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार, बाल कल्याण के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार, डॉ. दुर्गाबाई देशमुख पुरस्कार, बासाश्री पुरस्कार, कित्तूर रानी चेन्नम्मा पुरस्कार, देवराज उर्स पुरस्कार, साक्षरता के लिए लक्ष्मी एन मेनन पुरस्कार, नादाप्रभु केम्पेगौड़ा पुरस्कार और सामाजिक सेवा में आजीवन योगदान के लिए कई पुरस्कार शामिल हैं। इन्हें कर्नाटक राज्य अक्का महादेवी महिला विश्वविद्यालय, विजयपुरा द्वारा सम्माननीय डॉक्टरेट पुरस्कार प्रदान किया गया है।

SHRI N. SWAMINATHAN

Shri N. Swaminathan is an eminent artist in the field of Tamil music. The canonical collection of hymns to Lord Siva in Tamil language, known as Thirumurai, are sung traditionally by Othuvars in Tamil Pann Isai which is the root of present Carnatic music. Of the Othuvars of the present day, he is the supreme artist who is capable of making the audience spell bound during his performances of musical discourse. He is proficient and connoisseur in his art and attracts so many ardent followers across the continents.

2. Born on 6th July,1945, Shri Swaminathan received his early education in his native place at Thanjavur district of Tamil Nadu and started learning Tamil music at Thevara Padasalai of Pichai kattalai estate of Thirukadavur, a famous shrine and then at the school of Dharmapuram Adheenam at Mayiladuthurai. He became a master of the art and served as Othuvar in many temples of Tamil Nadu and later worked at Thiruttani Lord Murugan Temple for nearly 26 years. Hence, the name of the place Thiruttani has prefixed to his name as Thiruthani Swaminathan. He has imbibed and enriched himself in the intricacies of Tamil Pann Isai and became very popular for his stage performances among his devotees.

3. Shri Swaminathan has served as a teacher in V.S. Trust, a charitable trust to Lord Nataraja Temple in Chidambaram and seven students were given intensive training in Thirumurai Isai by him. He has travelled far and wide especially Singapore, Malaysia, Sri Lanka, South Africa, Switzerland etc. He is an 'A' grade artist in All India Radio, Tiruchirappalli. He has so far released more than 100 cassettes and compact discs of Thirumurai Pann Isai. He is now the head of Thevara Padasalai of Dharumapuram Aadheenam and is giving training so students in its above act. He has devoted more than 55 year of his life to this fine art.

4. Shri Swaminathan's integrity and devotion in this field have attracted many institutions to honour him with awards and titles. He has received twelve awards to his credit that includes Kalaimamani Award by the Government of Tamil Nadu; Sangeet Samrat by Bharatiya Vidya Bhavan, Coimbatore; Thirumurai Kala Nidhi by Dharmapuram Adheenam; Dr. Sirgazhi Govindarajan Award by Karthik Fine Arts, Chennai; Thirumurai Isai Kala Nidhi by Thiruvavaduthurai Adheenam; Sandron Virudhu by Sekkizhar Kalai Panpattu Kazhagam, Chennai; Isai Kalai Selvar by Ramalingar Pani Manram, Chennai; Thirumurai pan Isai Semmal by Perur Adheenam, Coimbatore; Thirumurai Isai Maamani by Aran arul, Chennai; Thirumurai Isai Sittar by Kovai Sekkizhar Thirukoottam; Pann Isai Perarignar by Tamil Isai Sangam, Raja Annamalai Mandram, Chennai; Thirumurai Rathna by Malaysia Hindu Sangam, Kuala Lumpur.

श्री एन. स्वामिनादन

श्री एन. स्वामिनादन तमिल संगीत के क्षेत्र के एक प्रतिष्ठित कलाकार हैं। वर्तमान कर्नाटक संगीत के मूल स्रोत तमिल पन्न इसाई में तिरुमुराई नाम से तमिल भाषा में भगवान शिव के भजनों का प्रामाणिक संग्रह पारंपरिक रूप से ओथुवर द्वारा गाया जाता है। वर्तमान समय के ओथुवर में से वह सर्वोच्च कलाकार हैं जो अपनी संगीत प्रस्तुति के दौरान दर्शकों को मंत्रमुग्ध करने में सक्षम हैं। वह अपनी कला में निपुण और पारखी है और विश्वभर में उनके बहुत सारे निष्ठावान अनुयायी हैं।

2. 6 जुलाई, 1945 को जन्मे, श्री स्वामिनादन ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा तमिलनाडु के तंजावुर जिले के अपने मूल गांव में प्राप्त की और तिरुकडावुर के पिचाई कट्टलाई एस्टेट के एक प्रसिद्ध मंदिर थेवरा पदसालाई में और फिर मायिलादुथुराई में धर्मपुरम अधीनम के स्कूल में तमिल संगीत सीखना शुरू किया। कला पारंगत होने के बाद उन्होंने तमिलनाडु के कई मंदिरों में ओथुवर के रूप में सेवा की और बाद में लगभग 26 वर्षों तक तिरुत्तनी भगवान मुरुगन मंदिर में सेवाएं दी। इसलिए, इस स्थान तिरुत्तनी के जुड़ने से उनका नाम तिरुत्तनी स्वामीनाथन हो गया है। उन्होंने तमिल पन्न इसाई की जटिलताओं को आत्मसात किया और स्वयं को समृद्ध किया और अपने भक्तों के बीच मंच प्रदर्शनों के लिए अत्यंत लोकप्रिय हो गए।

3. श्री स्वामिनादन ने चिदंबरम में भगवान नटराज मंदिर के एक धर्मार्थ ट्रस्ट वी.एस. ट्रस्ट में शिक्षक के रूप में कार्य किया है और उनके द्वारा सात छात्रों को तिरुमुराई इसाई में गहन प्रशिक्षण दिया गया था। उन्होंने सिंगापुर, मलेशिया, श्रीलंका, दक्षिण अफ्रीका, स्विट्जरलैंड आदि देशों की यात्राएं की हैं। वह आकाशवाणी, तिरुचिरापल्ली में श्एश् ग्रेड कलाकार हैं। उनकी अब तक तिरुमुराई पन्न इसाई की 100 से अधिक कैसेट और कॉम्पैक्ट डिस्क रिलीज हुई हैं। वह अब धर्मपुरम अधीनम के थेवरा पदसालाई के प्रमुख हैं और छात्रों को प्रशिक्षण दे रहे हैं। उन्होंने अपने जीवन के 55 से अधिक वर्ष इस ललित कला को समर्पित किए हैं।

4. श्री स्वामिनादन की, इस क्षेत्र में निष्ठा और समर्पण से कई संस्थानों ने उन्हें पुरस्कार और उपाधियों से सम्मानित किया है। उन्हें बारह पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिनमें तमिलनाडु सरकार द्वारा कलैएममणि पुरस्कारय भारतीय विद्या भवन, कोयंबटूर द्वारा संगीत सम्राटय कार्तिक फाइन आर्ट्स, चेन्नै द्वारा डॉ. सरगाझी गोविंदराजन पुरस्कारय धर्मपुरम अधीनम द्वारा थिरुमुराई कला निधिय तिरुवादुथुराई अधीनम द्वारा थिरुमुराई इसाई कला निधिय सेक्किझार कलाई पन्नपट्टू कजगम, चेन्नै द्वारा सैंड्रोन विरुधुय रामलिंगर पानी मनराम, चेन्नै द्वारा इसाई कलाई सेल्वरय पेरूर अधीनम, कोयंबटूर द्वारा तिरुमुराई पन्न इसाई सेम्मलय अरन अरुल, चेन्नै द्वारा तिरुमुराई इसाई मामानीय कोवाई सेक्किझार थिरुकूट्टम द्वारा तिरुमुराई इसाई सित्तरय तमिल इसाई संगम राजा अन्नामलाई मंदरम, चेन्नै द्वारा पन्न इसाई पेररिग्नारय मलेशिया हिंदू संगम, कुआलालंपुर द्वारा तिरुमुरई रत्न शामिल हैं।

DR. KEWAL KRISHAN THAKRAL

Dr. Kewal Krishan Thakral is a practicing surgeon based on Ayurvedic principles. He is widely recognized in India for his role in pioneering the Kshar Sutra treatment for fistula in ano and other Kama Vedhan, a small surgical procedure for the treatment of bronchial asthma. This has made Ayurvedic surgery very acceptable to masses.

2. Born on 10th October, 1938, Dr. Thakral received his Bachelor of Ayurveda with Modern Medicine and Surgery degree from the University of Lucknow in 1964 and D.Ay.M. (Shalya Shalakaya) post graduate degree from the Banaras Hindu University, Varanasi, in 1968 and topped his class. He worked as House Officer, Resident Medical Officer, Lecturer, Reader, Professor and Head of the Deptt. Shalya Shalakaya in State Ayurvedic Colleges, Uttar Pradesh.

3. Dr. Thakral moved to San Francisco, U.S.A. in 1976 as a research surgeon, Deptt. of Surgery, School of Medicine, at the University of California and invented (1) macrophage angiogenesis factor, (2) Platelett angiogenesis footer and (3) corpus luteum angiogenesis factor. He then joined as Principal, State Ayurvedic Colleges, Uttar Pradesh and was given the responsibility of Dean of the Faculty of Ayurveda, Kanpur University, Kanpur. He then moved on as Director of Ayurveda and Unani Services, Uttar Pradesh with added responsibility of Director of Ayurveda and Unani (Syllabus Evaluation). He was then appointed as the National Gum at the National Academy of Ayurveda, New Delhi. He mentored numerous Ph.D. and M.D. theses.

4. Dr. Thakral was invited to over 80 seminars and conferences to share his knowledge. A few profile conferences he has been part of, are the International Conference (Nepal)-1991), International Conference, Juntendo University (japan-1992), Chief Guest, Japan Ayurved Society (Japan-1992) and Chief Guest, National Conference, Faculty of Ayurveda (I.M.S., B.H.U. Varanasi, 2015). He has served as a moderator at the Publication Division, C.C.I.M., New Delhi, and is an expert member of the Uttarakhand Public Service Commission, Banaras Hindu University and the Public Service Commission, Uttar Pradesh. He also served as a member of Ayurved Advisory Committee, Central Council of Indian Medicine, Education Committee (C.C.I.M.), National Task Force on Kshar Sutra (Department of Ayush: Ministry of Health and Family Welfare, Government of India), and as the Vice- president of Administrative Council (Kalyanam Karoti-Lucknow). He has served as President, Institutional Ethical Committee (S. Ay. College: Lucknow University) since 2013 and has been nominated by the President of India as his nominee for selection committee for the Faculty of Ayurveda (IMS, BIIU) since 2013.

5. Recognizing this, Dr. Thakral has been awarded with Ayurved Ratnakar - 1991, Ayurved Brihaspati 1992, National Herbal Protection Award - 2010 and Shalya Vigyan Ratna in 2015. Vividh Puraskar- Uttar Pradesh Sanskrit Sansthan, 2014, Lifetime achievement award- International- 2016, Shalya Vibhushan- IMS BHU 2025. He has also been awarded three fellowships: (1) Fellow of International College of Angiology (U.S.A. - 1979), (2) Fellow of Academy of Indian Medicine, B.H.U. - 1997, and (3) Fellow, Rashtriya Ayurved Vidyapeeth, New Delhi - 2001.

डॉ. केवल कृष्ण ठकराल

डॉ. केवल कृष्ण ठकराल आयुर्वेदिक पद्धति के शल्य चिकित्सक हैं। उन्हें भारत में 'क्षार सूत्र' चिकित्सा के माध्यम से भगंदर (fistula in ano) के उपचार और ब्रोन्कियल अस्थमा के उपचार हेतु एक लघु शल्य प्रक्रिया 'कर्म वेधन' के अग्रणी के रूप में व्यापक पहचान प्राप्त है। उनके इन प्रयासों ने जनमानस के बीच आयुर्वेदिक शल्य चिकित्सा की स्वीकार्यता को काफी बढ़ाया है ।

2. 10 अक्टूबर, 1938 को जन्मे, डॉ. ठकराल ने वर्ष 1964 में लखनऊ विश्वविद्यालय से आधुनिक चिकित्सा एवं शल्यक्रिया में आयुर्वेद स्नातक एवं वर्ष 1968 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी से डी.आयु.एम. (शल्य शालाक्य) में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की और अपनी कक्षा में शीर्ष स्थान प्राप्त किया। उन्होंने उत्तर प्रदेश के राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेजों में हाउस ऑफिसर, रेजिडेंट मेडिकल ऑफिसर, व्याख्याता, रीडर, प्रोफेसर और शल्य शालाक्य विभाग के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया ।

3. डॉ. ठकराल वर्ष 1976 में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ मेडिसिन के शल्य चिकित्सा विभाग में एक शोध सर्जन के रूप में सैन फ्रांसिस्को, अमेरिका गए और वहाँ उन्होंने (1) मैक्रोफेज एंजियोजेनेसिस फैक्टर, (2) प्लेटलेट एंजियोजेनेसिस फैक्टर और (3) कॉर्पस ल्यूटियम एंजियोजेनेसिस फैक्टर का आविष्कार किया। इसके उपरांत, वह उत्तर प्रदेश के राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेजों में प्रधानाचार्य के रूप में नियुक्त हुए और उन्हें कानपुर विश्वविद्यालय के आयुर्वेद संकाय के डीन का उत्तरदायित्व सौंपा गया। तदुपरांत, उन्होंने उत्तर प्रदेश के आयुर्वेद एवं यूनानी सेवा निदेशालय में निदेशक के रूप में कार्य किया, जहाँ उनके पास निदेशक, आयुर्वेद एवं यूनानी (पाठ्यक्रम मूल्यांकन) का अतिरिक्त प्रभार भी था। तत्पश्चात उन्हें राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ, नई दिल्ली में 'राष्ट्रीय गुरु' नियुक्त किया गया। उन्होंने अनेक पी.एच.डी. और एम.डी. शोध प्रबंधों का मार्गदर्शन किया ।

4. डॉ. ठकराल को अपने ज्ञान को साझा करने हेतु 80 से अधिक संगोष्ठियों और सम्मेलनों में आमंत्रित किया गया। उनके द्वारा प्रतिभाग किए गए कुछ प्रमुख सम्मेलनों में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन (नेपाल–1991), अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन– जुंटेंडो विश्वविद्यालय (जापान–1992), मुख्य अतिथि– जापान आयुर्वेद सोसाइटी (जापान–1992) और मुख्य अतिथि– राष्ट्रीय सम्मेलन, आयुर्वेद संकाय (आई. एम.एस., बी.एच.यू. वाराणसी, 2015) शामिल हैं । उन्होंने सी.सी.आई.एम., नई दिल्ली के प्रकाशन विभाग में एक मॉडरेटर के रूप में सेवा दी है और वह उत्तराखंड लोक सेवा आयोग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय तथा उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग के विशेषज्ञ सदस्य हैं। उन्होंने आयुर्वेद सलाहकार समिति, भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद, शिक्षा समिति(सीसीआईएम), क्षार सूत्र पर राष्ट्रीय टास्क फोर्स (आयुष विभागरू स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार) के सदस्य के रूप में और प्रशासनिक परिषद (कल्याणम करोति–लखनऊ) के उपाध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया है। वह वर्ष 2013 से संस्थागत नैतिक समिति (राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेजः लखनऊ विश्वविद्यालय) के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं और वर्ष 2013 से ही भारत के राष्ट्रपति द्वारा आयुर्वेद संकाय (आईएमएस, बीआईआईयू) की चयन समिति के लिए राष्ट्रपति द्वारा नामित व्यक्ति के रूप में मनोनीत हैं ।

5. डॉ. ठकराल की सेवाओं को मान्यता देते हुए उन्हें आयुर्वेद रत्नाकर (1991), आयुर्वेद बृहस्पति (1992), राष्ट्रीय हर्बल संरक्षण पुरस्कार (2010) और शल्य विज्ञान रत्न (2015) से सम्मानित किया गया है। उन्हें उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा विविध पुरस्कार (2014), अंतरराष्ट्रीय लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड (2016) और शल्य विभूषण– आईएमएस बीएचयू (2025) से भी नवाजा गया है । उन्हें तीन फेलोशिपः (1) फेलो ऑफ इंटरनेशनल कॉलेज ऑफ एंजियोलॉजी (यू.एस.ए.– 1979), (2) फेलो ऑफ एकेडमी ऑफ इंडियन मेडिसिन, बी.एच.यू. (1997), और (3) फेलो, राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ, नई दिल्ली (2001) भी प्रदान की गई हैं ।

DR. GOPAL JI TRIVEDI (POSTHUMOUS)

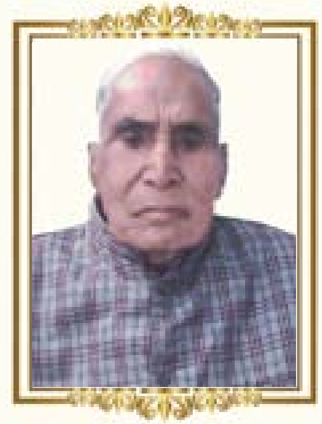

Dr. Gopal Ji Trivedi was an agriculture Scientist and former Vice-Chancellor of Rajendra Agriculture University, Pusa, Bihar.

2. Born on 15th February, 1930, Dr. Trivedi received his Bachelor of Agriculture and Master of Agriculture Extension Education degree from the Agriculture College, Sabaur, Bihar in 1954 and 1958 respectively. He did his Ph.D. in Agricultural Extension Education from the Indian Agricultural Research Institute (IARI), Pusa, New Delhi in the year 1963. Later, he worked as Professor in Tirhut College of Agriculture, Dholi, Bihar. He was Director, Extension Education, at Rajendra Agriculture University, Pusa, Bihar and later became Vice-Chancellor of the same university from 1988 to 1991.

3. The contribution of Dr. Trivedi in developing a socio-economic status scale, popular as Trivedi Scale' for rural families has been pioneering not only in the country but the whole world, which introduced the concept of measurement of qualitative characters into quantitative terms. Popular in the area as Gaon Purush, Kishan Mitra and Karma Yogi, he was living continuously since last 34 years in his village, a rare example for a person of his stature due to his love for rural life and living and interest in farmers prosperity. He helped farmers to improve their productivity and enhance their income.

4. Dr. Trivedi's efforts got 22 farmers to convert their abandoned water logged chaur area of 86 acres for fish-based farming system popularly called as BABA (Bihar Aquaculture Based Agriculture) which helped to increase the level of underground water table in adjoining areas, providing direct employment to marginalized rural population. Muzaffarpur area being famous for litchi cultivation, he introduced the concept of Private-Private partnership (farmers and agro industries) which helped farmers to produce quality litchis. This motivated farmer for setting up litchi processing plant in village itself. He was the first farmer in the State adopting rejuvenation and canopy management in his Litchi Orchard when nobody wanted to cut and prune branches of Litchi trees.

5. Since last five years, on the principle of Think Global, Act Local, Dr. Trivedi initiated a programme to increase the productivity of Maize to USA level (10 ton/ha.) from 5 ton in Bihar State. He took initiatives to convince the farmers towards growing winter maize to enhance the production. With new technology farmers started getting a yield of more than 10 tons, thus increasing the income of farmers and employment.

6. Dr. Trivedi was honoured by Chief Minister, Bihar, for his contribution in the field of Agriculture in a Farmers Conference at Patna in 2012. He was awarded gold medal in 1954 for standing first in the whole state in an essay competition organized by Bihar Rashtra Bhasha Parishad and given by the then Hon'ble President of India, Dr. Rajendra Prasad. He received Krishi Rishi Award (2015) at the Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramoday Vishwavidyalay, Chitrakoot. He was honoured with Life Time Achievement Award by the then Hon'ble President of India, Smt. Pratibha Devi Singh Patil for contribution in agriculture in an International Conference held at Delhi in November, 2011. Excellence in Extension Education Award was given to him by the then Prime Minister of India, Shri Chandrasekhar on the occasion of the International Conference at Delhi in 1991. His outstanding contribution led to his citation as personality of significance in Reference Asia, Asia's Who's Who of Men and Women of Achievements, 1995.

7. Dr. Trivedi passed away on 12th May, 2026.

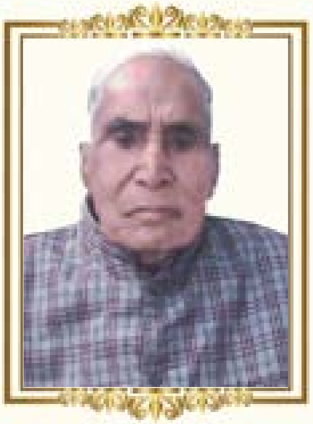

डॉ. गोपाल जी त्रिवेदी (मरणोपरांत)

डॉ. गोपाल जी त्रिवेदी एक कृषि वैज्ञानिक थे और राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा (बिहार) के पूर्व कुलपति रह चुके थे।

2. 15 फरवरी, 1930 को जन्मे, डॉ. त्रिवेदी ने वर्ष 1954 और 1958 में क्रमशः बिहार के सबौर स्थित कृषि कॉलेज से कृषि में स्नातक तथा कृषि प्रसार शिक्षा में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने वर्ष 1963 में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई), पूसा, नई दिल्ली से कृषि प्रसार शिक्षा में पीएच.डी. की। बाद में उन्होंने तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोली, बिहार में प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। वह राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा (बिहार) में प्रसार शिक्षा के निदेशक रहे और बाद में वर्ष 1988 से 1991 तक उसी विश्वविद्यालय के कुलपति बने।

3. डॉ. त्रिवेदी द्वारा ग्रामीण परिवारों के लिए विकसित की गई सामाजिक–आर्थिक स्तर स्केल, जिसे लोकप्रिय रूप से 'त्रिवेदी स्केल' के नाम से जाना जाता है, को देश ही नहीं बल्कि विश्व स्तर पर एक अग्रणी योगदान माना जाता है, जिसने गुणात्मक विशेषताओं को मात्रात्मक रूप में मापने की अवधारणा को स्थापित किया। क्षेत्र में उन्हें 'गाँव पुरुष', 'किसान मित्र' और 'कर्मयोगी' के रूप में जाना जाता है। ग्रामीण जीवन के प्रति उनके गहरे प्रेम और किसानों की समृद्धि के प्रति प्रतिबद्धता के कारण वह पिछले 34 वर्षों से निरंतर अपने ही गाँव में रह रहे थे, जो उनके जैसे उच्च कद के व्यक्ति द्वारा स्थापित एक दुर्लभ उदाहरण है। उन्होंने किसानों की उत्पादकता बढ़ाने और उनकी आय में वृद्धि करने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की।

4. डॉ. त्रिवेदी के प्रयासों से 22 किसानों ने अपने 86 एकड़ के परित्यक्त एवं जलभराव वाले 'चौर' क्षेत्र को मत्स्य–आधारित कृषि प्रणाली में परिवर्तित किया, जिसे लोकप्रिय रूप से बाबा (बीएबीए – बिहार एक्वाकल्चर बेस्ड एग्रीकल्चर) के नाम से जाना जाता है। इस पहल से आसपास के क्षेत्रों में भूजल स्तर में वृद्धि हुई तथा ग्रामीण क्षेत्र के वंचित वर्ग को प्रत्यक्ष रोजगार प्राप्त हुआ। मुजफ्फरपुर क्षेत्र लीची उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ उन्होंने निजी–निजी भागीदारी की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें किसानों और कृषि–आधारित उद्योगों के सहयोग से बेहतर गुणवत्ता की लीची का उत्पादन संभव हुआ। इस पहल से प्रेरित होकर किसानों ने गाँव में ही लीची प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित करने का निर्णय लिया। जब अधिकांश किसान लीची के पेड़ों की शाखाओं की कटाई–छंटाई करने के लिए तैयार नहीं थे, तब उन्होंने अपने ही लीची बाग में पुनर्जीवन और कैनोपी प्रबंधन की तकनीक अपनाकर राज्य में एक अग्रणी उदाहरण प्रस्तुत किया।

5. पिछले पाँच वर्षों से "थिंक ग्लोबल, एक्ट लोकल" के सिद्धांत पर कार्य करते हुए डॉ. त्रिवेदी ने बिहार राज्य में मक्का की उत्पादकता को 5 टन प्रति हेक्टेयर से बढ़ाकर अमेरिका के स्तर (10 टन प्रति हेक्टेयर) तक पहुँचाने के उद्देश्य से एक कार्यक्रम प्रारंभ किया। उन्होंने किसानों को शीतकालीन मक्का उगाने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि उत्पादन बढ़ सके। नई तकनीकों को अपनाने से किसानों को 10 टन प्रति हेक्टेयर से भी अधिक पैदावार मिलने लगी, जिससे उनकी आय और रोजगार के अवसर बढ़े।

6. डॉ. त्रिवेदी को कृषि क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए वर्ष 2012 में पटना में आयोजित एक किसान सम्मेलन में बिहार के मुख्यमंत्री द्वारा सम्मानित किया गया। वर्ष 1954 में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता में पूरे राज्य में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर उन्हें स्वर्ण पदक प्रदान किया गया, जो उस समय के भारत के माननीय राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा दिया गया। वर्ष 2015 में उन्हें चित्रकूट स्थित महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय द्वारा कृषि ऋषि पुरस्कार से सम्मानित किया गया। नवंबर, 2011 में दिल्ली में आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में कृषि क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उन्हें भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल द्वारा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड प्रदान किया गया। वर्ष 1991 में दिल्ली में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर उन्हें भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री चंद्रशेखर द्वारा एक्सीलेंस इन एक्सटेंशन एजुकेशन अवार्ड से सम्मानित किया गया। उनके उत्कृष्ट योगदान के कारण वर्ष 1995 में उन्हें रेफरेंस एशिया – एशियाज हूइज हू ऑफ मैन एंड वुमैन ऑफ अचीवमेन्ट्स में एक विशिष्ट व्यक्तित्व के रूप में भी उद्धृत किया गया।

7. डॉ. त्रिवेदी का 12 मई, 2026 को निधन हो गया।

SHRI ARVIND VAIDYA

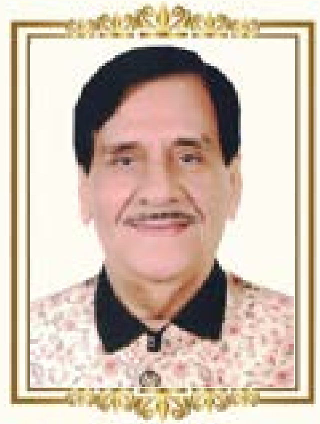

Shri Arvind Vaidya is an eminent artiest, who has lent his presence to Gujarati theatre, Hindi television, and films, embodying characters for over six decades.

2. Born on 3rd May 1941, Shri Vaidya journey began with formal study—a Diploma in Drama from Gujarat University in 1966, earned with first-class distinction at H K Arts College. Soon after, he returned to the same institution as a lecturer, guiding young minds while directing and performing in memorable Gujarati plays such as Paritran and Raigadh Jyare Jaage Chhe. A chapter of service followed at the Indian Space Research Organisation (ISRO), where he contributed as a Production Assistant to meaningful programs. Amid this, he brought nuance to the screen in the widely cherished series 'Bhala Bhusana Bhed Bharam'.

3. Shri Vaidya founded Natya Sampada, his own production company, through which he produced, directed, and acted in more than seventy-five full-length plays. Each work carried the quiet weight of dedication, gathering recognition along the way. In 1993, Mumbai beckoned him opening wider horizons. Multilingual and ever adaptable, he moved fluidly across Gujarati, Marathi, and Hindi theatre, even venturing into a Bhojpuri film. He directed the Marathi television series Harya Narya, extending his craft into new realms.

4. Even at the age of eighty-five, Shri Vaidya remains an active presence—on stage and screen—his spirit undiminished. Across more than three hundred plays directed or performed, and over a hundred television appearances, certain roles linger in memory: plays like Nokhi Mati Ne Nokha Manvi, Antim Adhyay, Paritran, and Amey Barafna Pankhi; beloved shows including Sarabhai vs Sarabhai, Baa Bahu Aur Baby, Khichdi, Saas Bina Sasural, Ladies Special, and the endearing portrayal of Bapuji in Anupamaa.

5. Shri Vaidya is the recipient of Gaurav Puraskar from the Government of Gujarat, best actor and director awards at the All India All Languages Drama Competition in Delhi, repeated recognition from the Gujarat Sangeet Natak Academy.

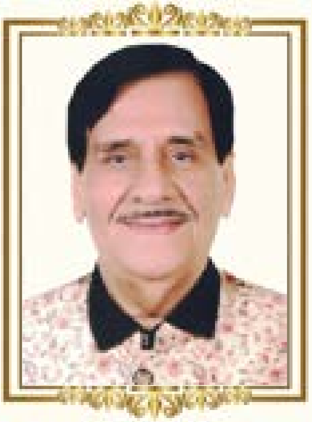

श्री अरविंद वैद्य

श्री अरविंद वैद्य एक प्रसिद्ध कलाकार हैं, जिन्होंने छह दशकों से अधिक समय से गुजराती रंगमंच, हिंदी टेलीविजन और फिल्मों के क्षेत्र में कार्य किया है।

2. 3 मई, 1941 को जन्मे, श्री वैद्य की शैक्षणिक यात्रा औपचारिक अध्ययन के साथ शुरू हुई दृवर्ष 1966 में गुजरात विश्वविद्यालय से नाटक में डिप्लोमा, एच के आट्र्स कॉलेज से प्रथम श्रेणी में डिसटिक्शन के साथ पूर्ण हुई। इसके तुरंत बाद, वह एक व्याख्याता के रूप में उसी संस्थान में लौट आए, उन्होंने परित्राण और रायगढ़ जयारे जागे छे जैसे यादगार गुजराती नाटकों का निर्देशन और उनमें प्रदर्शन करते हुए युवाओं का मार्गदर्शन किया। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) में अपनी सेवाएं प्रदान की, जहां उन्होंने सार्थक कार्यक्रमों के लिए एक प्रोडक्शन असिस्टेंट के रूप में अपना योगदान दिया। इस बीच, वह लोगों के बीच व्यापक रूप से लोकप्रिय श्रृंखला 'भल भूषणा भेद भरम' में बारीकियों को पर्दे पर लेकर आये।

3. श्री वैद्य ने अपनी खुद की प्रोडक्शन कंपनी नाट्य संपदा की स्थापना की, जिसके माध्यम से उन्होंने पचहत्तर से अधिक बड़े नाटकों का निर्माण, निर्देशन किया और उनमें अभिनय किया। प्रत्येक कार्य में उनके समर्पण का भाव दिखाई दिया जिसने उन्हें इस क्षेत्र में पहचान दिलाई। वर्ष 1993 में, मुंबई ने उनके लिए व्यापक अवसरों का रास्ता खोल दिया। बहुभाषी और हमेशा अनुकूलनशील, वह गुजराती, मराठी और हिंदी थिएटर में सहजता से शामिल होते गए, यहां तक कि एक भोजपुरी फिल्म में भी काम किया। उन्होंने मराठी टेलीविजन श्रृंखला हरिया नाराया का निर्देशन किया, जिससे उनकी कला को नया और व्यापक आयाम मिला।

4. पचासी साल की उम्र में भी, श्री वैद्य मंच और पर्दे पर सक्रिय रूप से कार्य करते रहे हैं और उनका उत्साह कम नहीं हुआ। उन्होंने तीन सौ से अधिक नाटकों में निर्देशन किया या भाग लिया और सौ से अधिक टेलीविजन के कार्यक्रमों में कार्य किया, उनके कुछ किरदार हमेशा याद रहते हैं: नोखी माटी ने नोखा मानवी,अंतिम अध्याय, परित्रान और अमेय बरफना पंखी जैसे नाटक; उन्होंने साराभाई वर्सेज साराभाई, बा बहू और बेबी, खिचड़ी, सास बिना ससुराल, लेडीज स्पेशल और अनुपमा में बापूजी के प्यारे चित्रण सहित लोकप्रिय शो में काम किया।

5. श्री वैद्य को गुजरात सरकार से गौरव पुरस्कार, दिल्ली में अखिल भारतीय अखिल भारतीय भाषा नाटक प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता और निर्देशक पुरस्कार और गुजरात संगीत नाटक अकादमी से बार–बार सम्मानित किया गया।

PROF. JUZER VASI

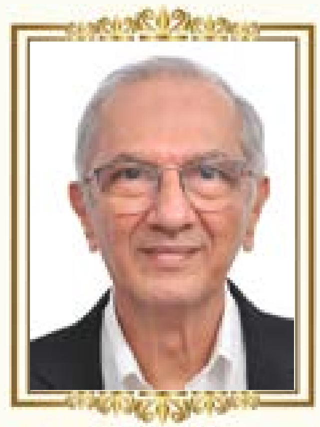

Prof. Juzer Vasi is Professor Emeritus at the Indian Institute of Technology (IIT) Bombay. His research and teaching have been in the areas of semiconductors, microelectronics and solar photovoltaics.

2. Born on 25th August, 1947, in Mumbai, Prof. Vasi received his Bachelor of Technology (B. Tech.) degree from the Indian Institute of Technology, Bombay in 1969, and the Ph.D. degree from The Johns Hopkins University in Baltimore, USA in 1973. After spending a year as a Visiting Assistant Professor at The Johns Hopkins University, he returned to India, and joined IIT Delhi as a Lecturer in 1974, and was promoted to Assistant Professor in 1978. In 1981, he moved to his alma mater, joining the Department of Electrical Engineering at the Indian Institute of Technology Bombay as an Assistant Professor. He was promoted to Professor in 1983. He served as Head of the Department (1992-94) and Deputy Director (2006-09). He retired from IIT Bombay in 2015, and was appointed Professor Emeritus in 2017, in which position he continues.

3. Prof. Vasi started his research in semiconductors during his Ph.D., and continued it first at IIT Delhi and then at IIT Bombay. He started, with colleagues, one of India's first postgraduate programmes in Microelectronics at IIT Bombay in 1983. He taught semiconductors and microelectronics to a large number of students, who now lead major companies in India and abroad. His research focused on CMOS devices, and one of his early projects in the 1990's was developing radiation-hard CMOS technology for space applications. Later, in the 2000's, he and his colleagues set up (with IISc) the state-of-the-art Centres of Excellence in Nanoelectronics, and the ground-breaking Indian Nanoelectronics Users Programme (INUP). The latter opened up the facilities at IIT Bombay to researchers from across India, thereby spreading the culture of semiconductor research throughout the country. In 2010, at the behest of the Principal Scientific Advisor to the Government of India, Prof. Vasi changed his focus from nanoelectronics to solar photovoltaics, co-founding the National Centre for Photovoltaic Research and Education (NCPRE) at IIT Bombay. This in turn led to Prof. Vasi being asked to undertake the solarization of the National Salt Satyagraha Memorial in Dandi, and subsequently IIT Bombay being made the Design Co-ordinating Agency of the Memorial, which was completed in 2019.

4. Throughout his career in both semiconductors and solar photovoltaics, Prof. Vasi stressed the importance of interdisciplinary, collaborative and inclusive research, which he deemed necessary for making an impact on major national missions. He worked with groups of faculty and students in a cooperative mode to ensure success. Their work both in semiconductors and later in solar energy has helped create an ecosystem which supports these critical areas of technology.

5. Prof. Vasi has published 200 papers in leading journals and conferences. He is a Fellow of the Indian National Academy of Engineering (INAE), and a Fellow of the Institute of Electrical and Electronics Engineers (IEEE). He received the Lifetime Achievement Award from IIT Bombay in 2013, and the Lifetime Contribution Award from INAE in 2018. He received the Excellence in Teaching awards from IIT Bombay in 2000, 2009 and 2013, and the IEEE Simon M. Sze Education Award in 2025.

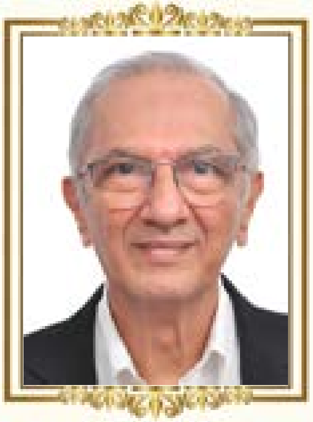

प्रो. जुज़र वासी

प्रो. जुज़र वासी भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) बॉम्बे में प्रोफेसर एमेरिटस हैं। उनका शोध और शिक्षण सेमीकंडक्टर, माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक्स और सोलर फोटोवोल्टिक्स के क्षेत्रों में रहा है।

2. 25 अगस्त, 1947 को मुंबई में जन्मे प्रो. वासी ने वर्ष 1969 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, बॉम्बे से बैचलर ऑफ टेक्नोलॉजी (बी. टेक.) की डिग्री प्राप्त की और वर्ष 1973 में बाल्टीमोर, यूएसए में द जॉन्स हॉपकिंस विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। द जॉन्स हॉपकिंस विश्वविद्यालय में एक वर्ष के लिए विजिटिंग असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में कार्य करने के बाद, वह भारत लौट आए, और वर्ष 1974 में आईआईटी दिल्ली में व्याख्याता के रूप में शामिल हुए, और वर्ष 1978 में सहायक प्रोफेसर के रूप में पदोन्नत हुए। वर्ष 1981 में, वे अपने मातृ शिक्षण संस्थान, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान बॉम्बे में विद्युत इंजीनियरिंग विभाग में एक सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्य करने लगे। उन्हें वर्ष 1983 में प्रोफेसर के रूप में पदोन्नत किया गया । उन्होंने विभाग के प्रमुख (1992–94) और उप निदेशक (2006–09) के रूप में कार्य किया। वह वर्ष 2015 में आईआईटी बॉम्बे से सेवानिवृत्त हुए, और वर्ष 2017 में प्रोफेसर एमेरिटस नियुक्त किए गए, जिस पद पर वे बने हुए हैं।

3. प्रो. वासी ने अपने पीएचडी के दौरान सेमीकंडक्टरों में अपना शोध शुरू किया, और इसे पहले आईआईटी दिल्ली और फिर आईआईटी बॉम्बे में जारी रखा। उन्होंने वर्ष 1983 में आईआईटी बॉम्बे में माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक्स में भारत के पहले स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में से एक की शुरुआत अपने सहयोगियों के साथ की। उन्होंने बड़ी संख्या में छात्रों को सेमीकंडक्टर और माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक्स पढ़ाया, जो अब भारत और विदेशों में प्रमुख कंपनियों का नेतृत्व करते हैं। उनका शोध सीएमओएस उपकरणों पर केंद्रित है, और वर्ष 1990 के दशक में उनकी शुरुआती परियोजनाओं में से एक अंतरिक्ष अनुप्रयोगों के लिए रेडिएशन–हार्ड सीएमओएस प्रौद्योगिकी विकसित करना था। बाद में, वर्ष 2000 के दशक में, उन्होंने और उनके सहयोगियों ने नैनोइलेक्ट्रॉनिक्स में उत्कृष्टता केंद्र (आईआईएससी के साथ), और प्रमुख इंडियन नैनोइलेक्ट्रॉनिक्स यूज़र्स प्रोग्राम (आईएनयूपी) की स्थापना की। इस कार्यक्रम के तहत पूरे भारत के शोधकर्ताओं के लिए आईआईटी बॉम्बे में सुविधाओं को उपलब्ध कराया गया, जिससे पूरे देश में सेमीकंडक्टर अनुसंधान की संस्कृति का प्रसार हुआ। वर्ष 2010 में, भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार के कहने पर, प्रो. वासी ने नैनोइलेक्ट्रॉनिक्स से सौर फोटोवोल्टिक्स पर अपना ध्यान केंद्रित किया, और आई.आई.टी. बॉम्बे में राष्ट्रीय फोटोवोल्टिक अनुसंधान एवं शिक्षा केंद्र (एन.सी.पी.आर.ई.) की सह–स्थापना की। इसके परिणाम स्वरूप प्रो. वासी को दांडी में राष्ट्रीय नमक सत्याग्रह स्मारक के सौरकरण का कार्य करने के लिए कहा गया था, और बाद में आईआईटी बॉम्बे को स्मारक की डिजाइन समन्वय एजेंसी बनाया गया था, जो कार्य वर्ष 2019 में पूरा हुआ ।

4. सेमीकंडक्टर और सौर फोटोवोल्टिक्स दोनों में अपने करियर के दौरान, प्रो. वासी ने अंतःविषयात्मक, सहयोगात्मक और समावेशी अनुसंधान के महत्व पर जोर दिया, जिसे उन्होंने प्रमुख राष्ट्रीय मिशनों पर प्रभाव डालने के लिए आवश्यक माना। उन्होंने सफलता सुनिश्चित करने के लिए संकाय और छात्रों के समूहों के साथ सहयोगात्मक तरीके से काम किया। सेमीकंडक्टर और बाद में सौर ऊर्जा के क्षेत्र में उनके काम ने एक ऐसा इको–सिस्टम बनाने में मदद की है जो प्रौद्योगिकी के इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सहयोग करता है।

5. प्रो. वासी ने प्रमुख पत्रिकाओं और सम्मेलनों में 200 पेपर प्रकाशित किए हैं। वे भारतीय राष्ट्रीय इंजीनियरिंग अकादमी (आईएनएई) और इंस्टीट्यूट ऑफ इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर्स (आईईईई) के सदस्य हैं। उन्हें वर्ष 2013 में आईआईटी बॉम्बे से लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड दिया गया, और वर्ष 2018 में आईएनएई की ओर से लाइफटाइम कॉन्ट्रिब्यूशन अवार्ड मिला। उन्हें वर्ष 2000, 2009 और 2013 में आईआईटी बॉम्बे से शिक्षण में उत्कृष्टता पुरस्कार, और वर्ष 2025 में आईईईई साइमन एम. स्ज़े शिक्षा पुरस्कार प्राप्त हुआ।

DR. NARAYAN VYAS

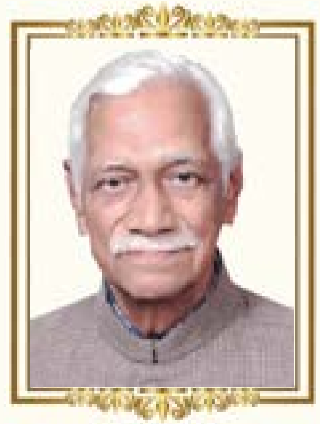

Dr. Narayan Vyas is an archaeologist of global repute, whose contribution towards world heritage sites namely Bhimbetka and Sanchi of MP and Rani ki Vav (stepwell) at Gujarat, created a widespread awareness for India's unique heritage and its preservation and conservation.

2. Born on 5th January, 1949 at Ujjain, Dr. Vyas did his MA in Ancient History & Culture followed by a PG Diploma in Archaeology. His pioneer work on Rani ki Vav of Gujarat earned him a Ph.D, while Rock Paintings of Raisen region and Bhimbetka got a coveted D.Litt.- very first in Hindi in the discipline of Archaeology and is inspiration to new generation. Academic pursuit/research is still ongoing. Academic world uses his association with Spanish Rock Art experts and scientific data collection of over 650 pre-historic tools as study resource for scholars.

3. Dr. Vyas' career began in 1972 with Archaeological Survey of India(ASI). 37 years of illustrious service was spread over Haryana, Uttar Pradesh, Rajasthan, Gujarat, Madhya Pradesh, Maharashtra, Chhattisgarh and UT- Daman & Diu and he was also sent to Myanmar as part of Cultural Exchange Program in 2005. He had key role in excavation at Sanchi, Satdhara, Bes Nagar, Bhimbetka in Madhya Pradesh, Goraj and Rani ki Vav in Gujarat, Thanesar, Sirpur and several another sites. His expertise helped in developing a strong data base and documentation for future use and he also authored book on Bhimbetka. The vast expertise of his career tenure finds utilization in various active roles viz membership/association/headship of learned bodies, antiquity collection, giving lecturers, public outreach, publishing books and several research papers (more than hundreds). His insistence on self-study, constant endeavours and flame of curiosity resulted into rich dividends in the form of association, awards and key roles.

4. Dr. Vyas was associated with National Archives of Indian Historical Record Committee, Domain expert member in National Screening and Evaluation Committee (ASI), National Monument Authority, Maharaja Vikramaditya Shodhpeeth, Ujjain and as a Project Coordinator ASI for documentation of monuments of Madhya Pradesh. Presently he is associated with Wild Life Board (Member), Government of Madhya Pradesh, Itihas Sankalan Samiti, Madhya Bharat Prant (President), Indira Gandhi National Center for Arts, New Delhi and Ujjain Smart City Project and prestigious Centre-D-Estudis, Contestans, Concentaina of Spain which works in comparative study of Rock Arts of India and Spain.

5. Dr. Vyas was awarded with prestigious Dr. Vishnu Shreedhar Wakankar Award (Government of Madhya Pradesh, 2019), Satish Chandra Mittal Smriti Samman (Akhil Bhartiya Itihas Sankalan Yojna, 2022), Kalashri Samman (Sanskar Bharti, 2023) and recognized by ASI on its foundation Day (2011) for his outstanding contribution in Archaeology. His name also finds a mention in Limca Book of Records (2019) for collection of ancient bricks. His lifetime work reflects exceptional dedication to the preservation, study and dissemination of India's rich Archaeological heritage. He stands out for documenting 1500 sculptures of Rani Ki Vav, working with World Heritage Committee of Rani Ki Vav and Bhimbetka and also discovering the Great wall of India in Raisen. He is working tirelessly in promoting use of Hindi in Archaeology and has collected soils from more than 150 freedom fighters' places to enlighten society about the heroes the country is proud of.

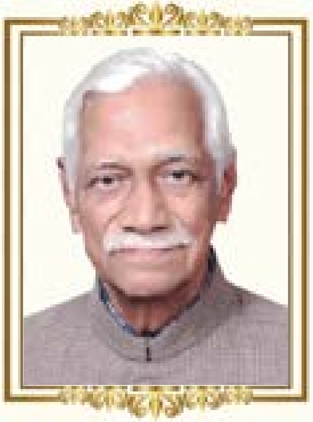

डॉ. नारायण व्यास

डॉ. नारायण व्यास विश्व स्तर पर प्रसिद्ध पुरातत्वविद् हैं, जिनके विश्व धरोहर स्थलों जैसे कि मध्य प्रदेश के भीमबेटका और सांची और गुजरात के रानी की वाव (सीढ़ी कुआँ) के लिए योगदान ने भारत की अनूठी विरासत और इसके परिरक्षण और संरक्षण के लिए व्यापक जागरूकता पैदा की।

2. 5 जनवरी, 1949 को उज्जैन में जन्मे, डॉ. व्यास ने प्राचीन इतिहास और संस्कृति में एमए किया और उसके बाद पुरातत्व में पीजी डिप्लोमा किया। गुजरात के रानी की वाव पर उनके विशेष कार्य ने उन्हें पीएचडी दिलवाई, जबकि रायसेन क्षेत्र और भीमबेटका की रॉक पेंटिंग्स पर उनके कार्य को पुरातत्व विषय में हिंदी में पहली प्रतिष्ठित डी.लिट. मिली और यह नई पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा है। उनके शैक्षणिक खोज / अनुसंधान अभी भी जारी है। शैक्षणिक जगत, स्पेनिश रॉक आर्ट विशेषज्ञों के साथ उनके सहयोग और 650 से अधिक प्रागैतिहासिक उपकरणों के वैज्ञानिक डेटा संग्रह को विद्वानों के लिए अध्ययन संसाधन के रूप में उपयोग करता है।

3. डॉ. व्यास का करियर 1972 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के साथ शुरू हुआ। 37 वर्षों की उनकी शानदार सेवा हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ और संघ राज्य क्षेत्र– दमन और दीव में रही और उन्हें वर्ष 2005 में सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम के एक भाग के रूप में म्यांमार भी भेजा गया था। उन्होंने मध्य प्रदेश में सांची, सतधारा, बेस नगर, भीमबेटका, गुजरात में गोराज और रानी की वाव, थानेसर, सिरपुर और कई अन्य स्थलों पर उत्खनन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी विशेषज्ञता ने भविष्य में उपयोग के लिए एक मजबूत डेटाबेस और प्रलेखन विकसित करने में मदद की और उन्होंने भीमबेटका पर एक किताब भी लिखी। उनके करियर कार्यकाल की विशाल विशेषज्ञता विभिन्न सक्रिय भूमिकाओं जैसे कि विद्वान निकायों की सदस्यता / संघ / प्रमुखता, पुरातनता संग्रह, व्याख्यान देने, सार्वजनिक पहुंच, पुस्तकें प्रकाशित करना और कई शोध पत्र (सैकड़ों से अधिक)में उपयोगी साबित होती है। स्वाध्याय पर उनके बल, निरंतर प्रयासों और जिज्ञासा की ज्वाला ने उन्हें संघ, पुरस्कार और प्रमुख भूमिकाओं के रूप में ख्याति दिलाई।

4. डॉ. व्यास भारतीय ऐतिहासिक अभिलेख समिति के राष्ट्रीय अभिलेखागार, राष्ट्रीय स्क्रीनिंग और मूल्यांकन समिति (एएसआई) के डोमेन विशेषज्ञ सदस्य, राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण, महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ, उज्जैन और मध्य प्रदेश के स्मारकों के दस्तावेजीकरण के लिए परियोजना समन्वयक एएसआई के रूप में जुड़े थे। वर्तमान में वह वन्यजीव बोर्ड (सदस्य), मध्य प्रदेश सरकार, इतिहास संकलन समिति, मध्य भारत प्रांत (अध्यक्ष), इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली और उज्जैन स्मार्ट सिटी परियोजना और प्रतिष्ठित सेंटर–डी–एस्टुडिस, कॉन्टेस्टन्स, स्पेन के कॉन्सेंटाइना, जो भारत और स्पेन की रॉक कला के तुलनात्मक अध्ययन में काम करता है, से जुड़े हैं।

5. डॉ. व्यास को प्रतिष्ठित डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर पुरस्कार (मध्य प्रदेश सरकार, 2019), सतीश चंद्र मित्तल स्मृति सम्मान (अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, 2022), कलाश्री सम्मान (संस्कार भारती, 2023) से सम्मानित किया गया और पुरातत्व में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए एएसआई द्वारा अपने स्थापना दिवस (2011) पर सम्मानित किया गया। प्राचीन ईंटों के संग्रह के लिए उनका नाम लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स (2019) में भी दर्ज है। उनका आजीवन कार्य भारत की समृद्ध पुरातात्विक विरासत के संरक्षण, अध्ययन और प्रसार के प्रति असाधारण समर्पण को दर्शाता है। वह रानी की वाव की 1500 मूर्तियों का दस्तावेजीकरण करने, रानी की वाव और भीमबेटका की विश्व धरोहर समिति के साथ काम करने और रायसेन में भारत की महान दीवार की खोज में लगे हैं। वह पुरातत्व में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं और देश के गौरवशाली नायकों के बारे में समाज को प्रबुद्ध करने के लिए 150 से अधिक स्वतंत्रता सेनानियों के स्थानों से मिट्टी एकत्र कर रहे हैं।

SHRI HALLY WAR

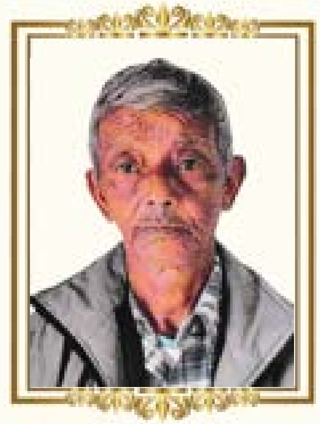

Shri Hally War is a distinguished environmentalist and a venerable custodian of the Khasi people's indigenous knowledge.

2. Born on 5th February 1957, Shri War has emerged as a global symbol of sustainable living and traditional bioengineering. For over five decades, he has dedicated his life to the selfless service of nature and community, bridging the gap between ancestral wisdom and modern ecological conservation.

3. A pioneer in the ancient art of "bio-weaving," Shri War has spent more than fifty years nurturing and building the iconic Living Root Bridges (Jingkieng Jri) of the East Khasi Hills. Since the age of ten, he has meticulously guided the aerial roots of the Ficus elastica tree to create durable, living structures that span rivers and connect isolated mountain communities. His most celebrated work, the Umkar Living Root Bridge, stands as a testament to his patience and profound understanding of natural ecosystems, requiring decades of nurturing to reach maturity while providing safe passage for generations.

4. Beyond his technical mastery, Shri War has been instrumental in the social and economic upliftment of his region. By mentoring local families and passing down the intergenerational skill of root-bridge weaving, he has ensured the survival of a rare cultural heritage. His efforts have significantly enhanced the ecological resilience of the Sohra plateau and paved the way for community-led, sustainable tourism, drawing thousands of visitors to witness the harmony between man and nature. Even as a humble farmer cultivating betel nuts and black pepper, his influence as an "unsung hero" of environmental stewardship has resonated far beyond the borders of Meghalaya.

5. Shri War's lifelong commitment remains an inspiring example of how indigenous practices can provide powerful solutions to modern environmental challenges.

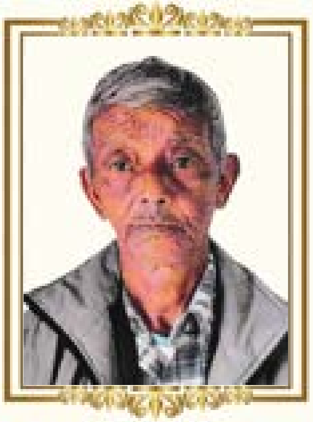

श्री हैली वार

श्री हैली वार एक प्रतिष्ठित पर्यावरणविद् और खासी लोगों के स्वदेशी ज्ञान के एक प्रतिष्ठित रक्षक हैं।

2. 5 फरवरी, 1957 को जन्मे, श्री वार स्थायी और संतुलित जीवन तथा पारंपरिक बायोइंजीनियरिंग के वैश्विक प्रतीक के रूप में उभरे हैं। पांच दशकों से अधिक समय से, उन्होंने पैतृक ज्ञान व आधुनिक पारिस्थितिक संरक्षण के बीच की खाई को पाटते हुए अपना जीवन प्रकृति और समुदाय की निस्वार्थ सेवा के लिए समर्पित कर दिया है।

3. ''जैव–बुनाई'' की प्राचीन कला में अग्रणी, श्री वार ने पूर्वी खासी हिल्स के प्रतिष्ठित लिविंग रूट ब्रिज (जिंगकिएंग जरी) के पोषण और निर्माण में पचास से अधिक वर्षों का समय बिताया है। दस साल की उम्र से, उन्होंने फिकस इलास्टिका पेड़ की हवाई जड़ों को टिकाऊ, जीवित संरचनाएं बनाने के लिए सावधानीपूर्वक निर्देशित किया है जो नदियों के ऊपर फैलती हैं और अलग–थलग पहाड़ी समुदायों को जोड़ती हैं। उनका सबसे प्रसिद्ध काम, उमकर लिविंग रूट ब्रिज, उनके धैर्य और प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र की गहन समझ के प्रमाण के रूप में खड़ा है, जिसे भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित मार्ग प्रदान करते हुए परिपक्वता तक पहुंचने के लिए दशकों के पोषण की आवश्यकता होती है।

4. अपनी तकनीकी निपुणता से परे, श्री वार ने अपने क्षेत्र के सामाजिक और आर्थिक उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्थानीय परिवारों को सलाह देकर और रूट–ब्रिज बुनाई के अंतर–पीढ़ीगत कौशल को आगे बढ़ाकर, उन्होंने एक दुर्लभ सांस्कृतिक विरासत के अस्तित्व को सुनिश्चित किया है। उनके प्रयासों ने सोहरा पठार की पारिस्थितिक प्रतिरोधी क्षमता को काफी बढ़ाया है और समुदाय के नेतृत्व वाले, सतत पर्यटन का मार्ग प्रशस्त किया है, जिससे हजारों आगंतुक मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य को देखने के लिए आकर्षित हुए हैं। सुपारी और काली मिर्च की खेती करने वाले एक साधारण किसान होने के बावजूद, पर्यावरण संरक्षण के "गुमनाम नायक" के रूप में उनका प्रभाव मेघालय की सीमाओं से बहुत दूर तक गूंजा है।

5. श्री वार की आजीवन प्रतिबद्धता इस बात का एक प्रेरक उदाहरण है कि स्वदेशी प्रथाएं किस प्रकार आधुनिक पर्यावरणीय चुनौतियों का प्रभावी समाधान प्रदान कर सकती हैं।

PROF. GAMBIR SINGH YONZONE

Prof. Gambir Singh Yonzone is a distinguished botanist, educationist, environmentalist and institution builder from the Darjeeling hills and the first Indian Nepali (Gorkha) to earn an M.Sc. in Botany (1964, University of North Bengal) and a Ph.D. in Botany (1976, University of Calcutta).

2. Born on 17th November, 1939 in the remote village of Sinji, Kalimpong, Prof. Yonzone rose from modest rural beginnings to achieve international academic distinction, with academic engagements in the United Kingdom, United States, France and Argentina. As a Mondal of Sinji, his father Shri Rithu Bahadur Yonzone, along with his mother Smt. Chandra Maya Yonzone, were his first teachers at home, nurturing in him values and discipline that would later give concrete meaning not only to the Yonzone family of Sinji but also to the entire Darjeeling hill region and the nation, directly and indirectly. Over a remarkable career spanning more than five decades, he became the first hill scholar of Darjeeling to serve as Head of the Undergraduate and Postgraduate Department of Botany at Darjeeling Government College, Principal of Kalimpong College, Chairman of the West Bengal School Service Commission (Hill Region), Fulbright Senior Research Fellow and Visiting Professor at The Ohio State University (USA) and Visitor Scientist in the United Kingdom. He has also served as a Founder Member of the Academic Council of Sikkim Central University and held memberships and fellowships in several prestigious national and international scientific bodies.

3. Prof. Yonzone's contributions to the educational and intellectual advancement of the Darjeeling hill region are pioneering and far-reaching. Between 1962 and 1964, he was instrumental in establishing permanent M.Sc. courses in Botany and Zoology, along with doctoral research facilities, at Darjeeling Government College—an initiative that has enabled more than 1,200 students to pursue higher education in biological sciences and serve in responsible public and professional positions. A passionate advocate of scientific temper and environmental awareness, he led a six-year conservation movement (1978-1984) that successfully halted large-scale destruction of virgin hill forests by the West Bengal Forest Corporation and he played a key role in the establishment of Singalila and Neora Valley National Parks. His commitment to grassroots development is reflected in the establishment of the R.B. Yonzone Memorial Rural Library (1978) in his native village, donation of land for Chandra Maya High School (1983) for disadvantaged children, founding of two animal shelters in Kalimpong and Darjeeling (1992) serving thousands of animals annually and the creation of a Science Centre at Delo, Kalimpong (2008) after decades of sustained effort. An accomplished author and public intellectual, he has published seven books and numerous research and popular articles and has organized over 100 conferences, seminars and public awareness programmes on environmental, educational and socio-political issues of regional and national importance.

4. In recognition of his lifelong dedication to the welfare of the Darjeeling hills and the nation, Prof. Yonzone has received numerous honours at local, national and international levels. These include delivering the Second M.K. Baruah Memorial Lecture (1990), receiving a national award from the Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (1992), inclusion in the Darjeeling Forest Development Committee by the Ministry of Environment and Forests (1993) and the prestigious Fulbright Visiting Professorship at The Ohio State University (1993). He was declared a "Living Treasure of Darjeeling" by INTACH (2001), associated with the Indira Briksha Mitra Award conferred in 2007 during his tenure as Chairman of the Federation of Societies for Environmental Protection and honoured through the establishment of the Dr. G. S. Yonzone Vigyan Manch in 2012.

प्रो. गम्बीर सिंह योन्जन

प्रो. गम्बीर सिंह योन्जन दार्जिलिंग पहाड़ियों के एक प्रतिष्ठित वनस्पतिशास्त्री, शिक्षाविद्, पर्यावरणविद् और संस्थान निर्माता हैं, और वनस्पति विज्ञान में एमएससी (1964, उत्तरी बंगाल विश्वविद्यालय) और वनस्पति विज्ञान में पीएच.डी. (1976, कलकत्ता विश्वविद्यालय) करने वाले पहले भारतीय नेपाली (गोरखा) हैं।

2. 17 नवंबर, 1939 को कलिम्पोंग के दूरदराज गांव सिंजी में जन्मे, प्रो. योन्जन ने लघु ग्रामीण परिवेश से यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस और अर्जेंटीना में अकादमिक व्यस्तताओं के साथ अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक विशिष्टता हासिल की। सिंजी के एक मंडल के रूप में, उनके पिता श्री रितु बहादुर योन्जन एवं उनकी माँ श्रीमती चंद्रा माया योन्जन घर पर उनके पहले शिक्षक थे। उनके माता–पिता ने उनको मूल्यों और अनुशासन की सीख दी, जिसने बाद में न केवल सिंजी के योन्जन परिवार को बल्कि पूरे दार्जिलिंग पहाड़ी क्षेत्र और राष्ट्र को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से ठोस अर्थ दिया। पांच दशकों से अधिक के उल्लेखनीय करियर में, वह दार्जिलिंग के पहले पहाड़ी विद्वान बन गए, जिन्होंने दार्जिलिंग सरकारी कॉलेज में वनस्पति विज्ञान के स्नातक और स्नातकोत्तर विभाग के प्रमुख, कलिम्पोंग कॉलेज के प्रधानाचार्य, पश्चिम बंगाल स्कूल सेवा आयोग (पहाड़ी क्षेत्र) के अध्यक्ष, फुलब्राइट सीनियर रिसर्च फेलो और ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी (यूएसए) में विजिटिंग प्रोफेसर और यूनाइटेड किंगडम में विजिटर साइंटिस्ट के रूप में कार्य किया। उन्होंने सिक्किम केंद्रीय विश्वविद्यालय की अकादमिक परिषद के संस्थापक सदस्य के रूप में भी कार्य किया है और कई प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक निकायों में सदस्यता और फेलोशिप प्राप्त की है।

3. दार्जिलिंग पहाड़ी क्षेत्र की शैक्षिक और बौद्धिक उन्नति में प्रो. योन्जन का योगदान अग्रणी और दूरगामी है। वर्ष 1962 और 1964 के बीच, उन्होंने दार्जिलिंग गवर्नमेंट कॉलेज में डॉक्टरेट अनुसंधान सुविधाओं के साथ–साथ वनस्पति विज्ञान और प्राणीशास्त्र में स्थायी एमएससी पाठ्यक्रम की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह एक ऐसी पहल थी जिसने 1,200 से अधिक छात्रों को जैविक विज्ञान में उच्च शिक्षा प्राप्त करने और जिम्मेदार सार्वजनिक और पेशेवर पदों पर सेवा करने में सक्षम बनाया है। वैज्ञानिक स्वभाव और पर्यावरण जागरूकता के एक उत्साही समर्थक, उन्होंने छह वर्ष तक संरक्षण आंदोलन (1978–1984) का नेतृत्व किया, जिसने पश्चिम बंगाल वन निगम द्वारा वर्जिन पहाड़ी जंगलों के बड़े पैमाने पर विनाश को सफलतापूर्वक रोका और उन्होंने सिंगालीला और नेओरा वैली राष्ट्रीय उद्यानों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जमीनी स्तर के विकास के प्रति उनकी प्रतिबद्धता, उनके पैतृक गांव में आर.बी. योन्जन मेमोरियल रूरल लाइब्रेरी (1978) की स्थापना, वंचित बच्चों के लिए चंद्र माया हाई स्कूल (1983) के लिए भूमि दान, कलिम्पोंग और दार्जिलिंग में दो पशु आश्रयों की स्थापना (1992), जहाँ प्रति वर्ष हजारों जानवरों की सेवा होती है और दशकों के निरंतर प्रयास के बाद डेलो, कलिम्पोंग (2008) में एक विज्ञान केंद्र के निर्माण में परिलक्षित होती है। एक सिद्ध लेखक और लोक बुद्धिजीवी के रूप में उन्होंने सात पुस्तकें और कई शोध और लोकप्रिय लेख प्रकाशित किए हैं और क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय महत्व के पर्यावरण, शैक्षिक और सामाजिक–राजनीतिक मुद्दों पर 100 से अधिक सम्मेलन, सेमिनार और जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए हैं।

4. दार्जिलिंग पहाड़ियों और राष्ट्र के कल्याण के लिए उनके आजीवन समर्पण के सम्मान में, प्रो. योन्जन को स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई सम्मान प्राप्त हुए हैं। इनमें द्वितीय एम.के. बरुआ मेमोरियल लेक्चर (1990), अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करना (1992), पर्यावरण और वन मंत्रालय द्वारा दार्जिलिंग वन विकास समिति में शामिल करना (1993) और ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी में प्रतिष्ठित फुलब्राइट विजिटिंग प्रोफेसरशिप (1993) प्रदान करना शामिल है। उन्हें आईएनटीएसीएच (2001) द्वारा ''दार्जिलिंग का जीवित खजाना'' घोषित किया गया था, जो पर्यावरण संरक्षण के लिए फेडरेशन ऑफ सोसाइटीज के अध्यक्ष के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान वर्ष 2007 में प्रदान किए गए इंदिरा वृक्ष मित्र पुरस्कार से जुड़ा था और वर्ष 2012 में उन्हें डॉ. जी.एस. योन्जन विज्ञान मंच की स्थापना के माध्यम से सम्मानित किया गया था।